छत्तीसगढ़ विधान सभा

की

अशोधित कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

पंचम विधान सभा **षोडश सत्र**

गुरुवार, दिनांक 23 मार्च, 2023

(चैत्र 02, शक सम्वत् 1945)

[अंक 14]

Web copy

छत्तीसगढ़ विधान सभा

गुरूवार, दिनांक 23 मार्च, 2023

(चैत्र 02 , शक् संवत् 1945)

विधान सभा पूर्वाह्न 11.00 बजे समवेत हुई.

{अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए}

निधन का उल्लेख

श्रीमती नीलिमा सिंह टेकाम, छत्तीसगढ़ विधान सभा की पूर्व सदस्य

अध्यक्ष महोदय :- मुझे सदन को सूचित करते हुए अत्यंत दुख हो रहा है कि छत्तीसगढ़ विधान सभा की पूर्व सदस्य श्रीमती नीलिमा सिंह टेकाम का दिनांक 22 मार्च, 2023 को निधन हो गया है । श्रीमती नीलिमा सिंह टेकाम का जन्म का जन्म 1 अगस्त, 1070 को सरेखा जिला सिवनी मध्यप्रदेश में हुआ था । उनका मुख्य व्यवसाय कृषि था । वे भारतीय जनता पार्टी की टिकिट पर डौंडीलोहारा निर्वाचन क्षेत्र से सन् 2008 में छत्तीसगढ़ विधान सभा के लिए निर्वाचित हुई थीं । वे छत्तीसगढ़ विधान सभा की महिलाओं एवं बालकों के कल्याण संबंधी समिति, शासकीय आश्वासनों संबंधी समिति, गैर सरकारी सदस्यों के विधेयकों तथा संकल्पों संबंधी समिति तथा सामान्य प्रयोजन समिति की सदस्य रहीं । उनकी समाज सेवा में विशेष अभिरूचि थी । वे अपने क्षेत्र के विकास के लिए सदैव संघर्षशील रहीं । उनके निधन से प्रदेश ने एक अनुभवी नेता को खो दिया है ।

वन मंत्री (श्री मोहम्मद अकबर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, विधान सभा की पूर्व सदस्य श्रीमती नीलिमा सिंह का दिनांक 22 मार्च, 2023 को निधन हो गया है । मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

नेता प्रतिपक्ष (श्री नारायण चंदेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पिछले दिनों इस विधान सभा की पूर्व सदस्य श्रीमती नीलिमा सिंह टेकाम के निधन की जानकारी आपके माध्यम से प्राप्त हुई । वे हमारी भारतीय जनता पार्टी की कर्मठ कार्यकर्ता थीं। 2008 में वे इस सदन में निर्वाचित होकर पहुंची थी । उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि कृषि से संबंधित थी । वे दुर्ग में जिला सहकारी बैंक की उपाध्यक्ष भी रहीं, सहकारिता आंदोलन से भी वे जुड़ी हुई थीं और अपने क्षेत्र में और पूरे अंचल में जहां वे निवासरत् थीं । सामान्य वर्ग के, गरीबों के, किसानों के और हमारे आदिवासी भाईयों के हितों की लड़ाई वे सदैव लड़ती रहीं । वे बहुत ही व्यवहार कुशल एवं मृदुभाषी थीं। सार्वजनिक जीवन में वे निरंतर सक्रिय रहीं । मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से श्रीमती नीलिमा सिंह टेकाम जी को विनम्र श्रद्धा सुमन अर्पित

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनके परिवारजनों एवं स्नेहीजनों को इस दुख को सहने की शक्ति प्रदान करे ।

श्री मोहन मरकाम (कोंडागांव) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, नारी शक्ति की प्रतीक पूर्व विधान सभा सदस्य श्रीमती नीलिमा सिंह टेकाम का जाना आदिवासी समाज के लिए भी अपूरणीय क्षति है । वे राज परिवार की सदस्य रही हैं और उनके पति श्री लाल महेन्द्र सिंह टेकाम जी भी विधायक रहे हैं । उनके निधन से समाज की भी बड़ी क्षति हुई है । मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से शत् शत् नमन करता हूं और श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- मैं सदन की ओर से शोकाकुल परिवार के प्रति हार्दिक् संवेदना व्यक्त करता हूं । दिवंगत के सम्मान में सदन कुछ देर मौन धारण करेगा ।

(सदन द्वारा कुछ देर खड़े रहकर मौन धारण किया गया)

अध्यक्ष महोदय :- दिवंगत के सम्मान में सदन की कार्यवाही 10 मिनट के लिए स्थगित् ।

(11.04 बजे से 11.14 बजे तक कार्यवाही स्थगित् रही)

समय :
11:14 बजे

(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)

<u>तारांकित प्रश्नों के मौखिक उत्तर</u>

<u>सी.एस.आर. में प्राप्त राशि व स्वीकृत कार्य</u>

[वाणिज्य एवं उद्योग]

1. (*क्र. 1556) श्री नारायण चंदेल : क्या वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- **(क)** जिला, कोरबा, बिलासपुर एवं जांजगीर-चांपा में वर्ष 2021-22 से वर्ष 2022-23 में 15 फरवरी 2023 तक किन-किन औद्योगिक संस्थानों से कितनी-कितनी राशि सी.एस.आर. के तहत प्राप्त हुई ? वर्षवार जानकारी उपलब्ध करावें। **(ख)** प्रश्नांश 'क' के तहत प्राप्त राशि में से कितने कार्य, कितनी राशि के, स्वीकृत किये गये ? स्वीकृत कार्यो में से कितने कार्य पूर्ण एवं कितने अपूर्ण हैं ? अपूर्ण कार्य कब तक पूर्ण कर लिये जावेंगे ? जिलेवार/वर्षवार जानकारी उपलब्ध करावें। **(ग)** प्रश्नांश 'क'

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

के स्वीकृत कार्यो में अनियमितता की कितनी शिकायतें प्राप्त हुई ? प्राप्त शिकायतों पर क्या कार्यवाही की गई ? जिलेवार/वर्षवार जानकारी उपलब्ध करावें।

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री (श्री कवासी लखमा) : (क) कार्पोरेट सोशल रिस्पांसिबिलिटी (सीएसआर) भारतीय कंपनी अधिनियम-2013 की धारा 135 के में परिभाषित है जो कि केन्द्रीय अधिनियम है। राज्य शासन स्तर पर इसके आंकड़े संधारित नहीं है। जिला कलेक्टर कोरबा, बिलासपुर एवं जांजगीर चांपा द्वारा वर्ष 2021-22 से वर्ष 2022-23 एवं 15 फरवरी, तक जिन-जिन औद्योगिक संस्थाओं से सी.एस.आर. के तहत राशि प्राप्त कर कार्य कराये गये हैं, उनकी वर्षवार जानकारी प्रपत्र-अ, ब एवं स पर संलग्न[1] है। **(ख)** प्रश्नांश "ख" के संदर्भ में कोरबा जिले द्वारा स्वीकृत कराये गये कार्यों एवं पूर्णता, अपूर्णता की जानकारी प्रपत्र अ(1), एवं अ(2), पर संलग्न है। बिलासपुर जिले के द्वारा स्वीकृत कराये गये कार्यो एवं पूर्णता, अपूर्णता की जानकारी प्रपत्र ब (1), और ब (2) पर संलग्न है। जांजगीर-चांपा जिले के द्वारा स्वीकृत कराये गये कार्यो एवं पूर्णता, अपूर्णता की जानकारी प्रपत्र स(1) एवं स(2) पर संलग्न है। **(ग)** प्रश्नांश "ग" के संदर्भ में कोरबा एवं बिलासपुर जिले द्वारा कोई शिकायत की जानकारी प्रदान नहीं की गई है। जिला जांजगीर-चांपा के द्वारा सी.एस.आर. मद से कोविड-19 की तीसरी लहर हेतु कोविड सामग्री एवं अन्य उपकरणों की खरीदी में गड़बड़ी एवं अनियमितता के संबंध में प्राप्त शिकायत की जांच के लिए समिति का गठन कर जांच हेतु आदेश दिया गया है।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा प्रश्न सी.एस.आर. से संबंधित है। माननीय मंत्री जी ने उत्तर भी दिया है और कुछ परिशिष्ट में भी आया है। मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाह रहा था कि सी.एस.आर. निधि के तहत किस श्रेणी के उद्योगों को कितनी राशि प्रतिवर्ष व्यय करनी होती है और उसका मापदंड क्या है ? आधार क्या है ?

वन मंत्री (श्री मोहम्मद अकबर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 500 करोड़ या उससे उपर टर्न ओवर 1 हजार करोड़ या प्राफिट का 5 करोड़ जिन कंपनियों का है, उनको दिया जाना है।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यहां की जमीन पर उद्योग लगता है। यहां का पानी उपयोग करते हैं, यहां के लोग प्रदूषण खाते हैं, सारा संसाधन तो यहां का है। लेकिन आज तक छत्तीसगढ़ सरकार की सी.एस.आर. के लिए ऐसी कोई उद्योग नीति नहीं है कि इसका खर्च करने का कोई आधार तय होना चाहिए और उस परिधि में खर्च होना चाहिए। जहां 5 किलोमीटर, 10 किलोमीटर, 15 किलोमीटर पर उद्योग लगा है । वहां पर जनकल्याण के काम होने चाहिए। मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि सी.एस.आर. के तहत संपादित किये जाने वाले कार्य हेतु कार्य एजेंसी तय करने के क्या प्रावधान हैं ? क्या नियम एवं शर्ते हैं ? इसमें राज्य सरकार का नियंत्रण किस प्रकार से होता है ?

[1] परिशिष्ट “अड़सठ”

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सी.एस.आर. क्रियान्वयन के लिए जो कंपनी का बोर्ड है वह यह सुनिश्चित करेगा कि सी.एस.आर. संबंधी क्रियाकलाप कंपनी द्वारा स्वयं अथवा निम्नलिखित के माध्यम से शुरू की जाए। किसी कंपनी द्वारा एकल रूप में अथवा किसी अन्य कंपनी के साथ आयकर अधिनियम 1961 (क) 43 की धारा 12 (क) और 80 (छ) के अधीन अधिनियम की धारा 8 अथवा रजिस्टीकृत सार्वजनिक न्यास अथवा रजिस्ट्रीकृत सोसायटी के अधीन स्थापित कंपनी, यानी जिनके द्वारा यह किया जाना है, उसका यह नार्म्स है। केन्द्रीय सरकार द्वारा अधिनियम की धारा 8 अथवा रजिस्ट्रीकृत न्याय अथवा रजिस्ट्रीकृत सोसायटी के अधीन संसद के अधिनियम अथवा राज्य के विधान के अधीन स्थापित कोई कंपनी आयकर अधिनियम 1961 की धारा 12 (क), 80(छ) के अधीन रजिस्ट्रीकृत न्यास, रजिस्ट्रीकृत सोसायटी अथवा अधिनियम की धारा 8 के अधीन स्थापित कंपनी जिसके पास ऐसे ही क्रियाकलाप शुरू करने का कम से कम 3 वर्ष का अनुभव इनके जरिये किया जाए।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मंत्री जी ने जानकारी दी है और परिशिष्ट में भी है। मैं माननीय मंत्री जी से यह जानना चाहता हूं कि आपने मापदंड क्या बताया, मापदंड के अनुरूप अभी तक कितनी राशि प्राप्त होनी थी व कितनी राशि अभी प्राप्त हुई है ? यदि राशि मापदंड के अनुसार प्राप्त नहीं हुई है तो संबंधित उद्योगों के उपर क्या-क्या कार्रवाई अभी तक की गयी है ?

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जितनी राशि प्राप्त हुई है और जितनी राशि व्यय की गयी है, वह परिशिष्ट में पूरी जानकारी दी गयी है। जहां तक समय समय पर कंपनियों द्वारा यदि कोई राशि नहीं दी गयी है तो उनसे अनुरोध किया जा सकता है और यदि मान लीजिए सी.एस.आर. मद के अंतर्गत कोई कार्रवाई प्राप्त भी नहीं होती तो फिर कार्रवाई भी की जा सकती है। क्योंकि यह बंधनकारी है, यह कानूनी प्रावधान के अंतर्गत है।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष जी।

अध्यक्ष महोदय :- इनका हो जाने दीजिए।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सी.एस.आर. के तहत् संपादित की जाने वाली कार्यक्षेत्र की परिधि आप मेरे को बता दीजिए। दूसरा, उड़ीसा सरकार ने पॉलिसी बनाई है कि सी.एस.आर. मद का वह कैसे खर्च करेगी ? कहां पर खर्च करेगी ? उसकी राशि का वह कैसे मूल्यांकन करेगी ? कैसे आडिट होगा और किसकी अनुशंसा से खर्च होगा ? खर्च करने का आधार क्या है ? आज साढ़े चार साल में छत्तीसगढ़ सरकार ने सी.एस.आर. मद के खर्च करने के लिए कोई स्पष्ट नीति, कोई स्पष्ट प्रावधान नहीं बनाया है। आपकी सरकार की कोई ऐसी योजना है क्या ? क्योंकि सरकार का कार्यकाल तो अब समाप्त होने वाला है।

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, उड़ीसा सरकार की तरफ से क्या नीति बनाई गयी है, जैसे माननीय सदस्य चाहते हैं तो निश्चित रूप से उसको मंगवाकर उसका अध्ययन कर लेंगे और हम लोग उसमें समुचित कार्रवाई करेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- अच्छा, मैं यह जानना चाहता हूं कि जहां उद्योग स्थापित हैं, उसको केन्द्र माने तो उसके कितने किलोमीटर तक उसकी सी.एस.आर. के मद का उपयोग हो सकता है।

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, वर्तमान में बंधनकारी नहीं है।

अध्यक्ष महोदय :- कोई बंधनकारी नहीं है।

श्री मोहम्मद अकबर :- जी।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय जनाब अकबर मोहम्मद वजीरे आजम साहब ने बताया है कि कंपनी अधिनियम 2013 की धारा 135 के अंतर्गत केन्द्र का विषय है। फिर उन्होंने यह कहा कि इसमें राज्य कार्रवाई भी कर सकती है, अनुरोध भी कर सकती है। कार्य आवंटन है, राज्य और केन्द्र का विषय है। अब इनके पास राज्य की नीति भी नहीं है। आपने सी.एस.आर. की राशि का निर्धारण भी बता दिया। कि 5 प्रतिशत या 5 करोड़ रूपये या 20 हजार करोड़ रूपये या जो भी बताया। यदि वह कंपनियों के लिए बाध्यकारी है और यदि वह उसको नहीं देती है या नहीं करती है तो उसके ऊपर आज तक क्या कार्रवाई की गई है और कितनी कार्रवाई की गई है और उसपर कार्रवाई करने के लिए प्राधिकृत अधिकारी कौन है ?

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने संशोधित उत्तर नहीं पढ़ा है। आप जो जानकारी पढ़ कर सुना रहे थे, वह जानकारी संशोधित उत्तर में बदल चुकी है। दूसरी बात, आपने जो कार्रवाई की बात की है तो कंपनी एक्ट के अंतर्गत उस पर कार्रवाई होती है।

श्री अजय चंद्राकर :- ठीक है, मैंने वह जानकारी नहीं पढ़ी है और मैं इसी उत्तर में था। मैंने आपसे यह पूछा है कि यदि वह कंपनी सी.एस.आर. की राशि नहीं देती है और आपने जो न्यास बताया है उसके अंतर्गत नहीं की गई है तो मान लीजिए कि यदि किसी कंपनी को साल में 100 रूपये देना है तो उस कंपनी ने 100 रूपये दिया या नहीं दिया ? यदि उस कंपनी ने 100 रूपये नहीं दिया तो उस पर कार्रवाई और उसकी मॉनिटरिंग कौन अधिकारी करता है ? आज तक कुल कितने लोगों के ऊपर कार्रवाई हुई है ? कृपा करके आप यह बता दीजिए।

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, उन पर कंपनी एक्ट के अंतर्गत कार्रवाई होती है। यदि वह कंपनी एक्ट का पालन नहीं कर रहे हैं तो उनको कंपनी एक्ट का पालन करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है और कहा जा सकता है।

श्री अजय चंद्राकर :- एक मिनट। मतलब, राज्य सरकार के हिसाब से उन कंपनियों के लिए सी.एस.आर. देना बाध्यकारी नहीं है ? आप यह कहिये कि सी.एस.आर. देना बाध्यकारी नहीं है और यह

उनकी मर्जी के ऊपर है या उसको केन्द्र सरकार जानेगी और आपके पास उसकी मॉनिटरिंग के लिए कोई सुसंगत नियम-प्रक्रिया नहीं है। आप इसको स्पष्ट कर दीजिए कि इसमें राज्य सरकार की क्या और कहां तक भूमिका है ? तो यह प्रश्न ही नहीं आएगा। आप अपनी भूमिका को चिन्हित कर दीजिए कि हम यहां तक कर सकते हैं और इसके बाद हम हाथ खड़े कर देते हैं।

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, केन्द्र सरकार का नियम है कि उन पर कंपनी एक्ट के अंतर्गत कार्रवाई होगी। यदि इस राज्य में उनके उद्योग स्थापित हैं तो उनको राज्य सरकार से बहुत सी नीति और अनुमति लेनी है। राज्य सरकार का भी निर्देश होता है कि आप इसमें इस प्रकार से पैसे दीजिए। लेकिन उन पर भारत सरकार के कंपनी एक्ट के अंतर्गत ही कार्रवाई होगी।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने जो प्रश्न पूछा था, माननीय मंत्री जी ने उसी का उत्तर दिया है लेकिन मैंने यह कहा कि यदि कंपनियां राज्य सरकार से एन.ओ.सी. लेती हैं तो राज्य सरकार उनको निर्देशित कर सकती है। सी.एस.आर. के पूरे प्रकरण में राज्य सरकार की क्या भूमिका है ? मेरा आपसे आग्रह है कि आप इसको स्पष्ट बता दीजिए कि वह बाध्यकारी है या नहीं है या आप अनुरोध के अलावा कोई और दूसरी कार्रवाई नहीं कर सकते हैं ? ताकि हम लोग इसको जान सके। चूंकि मैं सी.एस.आर. के बारे में प्रश्न पूछ रहा हूं तो आप यह बता दीजिए कि राज्य सरकार की कंपनियां सी.एस.आर. कर सकती हैं या नहीं कर सकती हैं ?

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपको फिर से पढ़कर सुना देता हूं कि कोई भी कंपनी हो।

श्री अजय चंद्राकर :- नहीं। मंत्री जी, मैंने जितना पूछा है आप उतना ही बता दीजिए।

श्री मोहम्मद अकबर :- कर सकती हैं।

श्री अजय चंद्राकर :- क्या राज्य सरकार की कंपनियां सी.एस.आर. कर सकती हैं ?

श्री मोहम्मद अकबर :- कोई भी कंपनी सी.एस.आर. कर सकती है।

अध्यक्ष महोदय :- चंद्राकर जी, आपका प्रश्न हो गया। प्लीज।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप यह बता दीजिए कि अनुरोध करने के अलावा राज्य सरकार की इसमें क्या भूमिका है ?

श्री मोहम्मद अकबर :- एक मिनट, आप एक बार उत्तर तो सुन लीजिए। चाहे वह राज्य सरकार की कंपनी हो या केन्द्र सरकार की कंपनी हो। एस.ई.सी.एल., भिलाई स्टील प्लांट, एन.एम.डी.सी. जैसी सारी कंपनियों के लिए सी.एस.आर. बंधनकारी है।

श्री अजय चंद्राकर :- मंत्री जी, आप केवल अपनी भूमिका को नहीं बता रहे हैं कि अनुरोध करने के अलावा आपकी कोई और भूमिका नहीं है। राज्य सरकार की भूमिका केवल अनुरोध करने की है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कंपनी एक्ट के अंतर्गत ही कार्रवाई हो सकती है और कंपनी एक्ट भारत का है।

श्री अजय चंद्राकर :- आपने यह बता दिया कि भारत सरकार के कंपनी एक्ट के अंतर्गत ही कार्रवाई होगी। आपकी भूमिका सिर्फ अनुरोध करने की है।

श्री मोहम्मद अकबर :- उनसे अनुरोध करके कहा जा सकता है। राज्य सरकार को इस संबंध में कार्रवाई करने का अधिकार नहीं है।

श्री अजय चंद्राकर :- केवल उतनी ही भूमिका है। नहीं है।

अध्यक्ष महोदय :- बांधी जी।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपका 500 करोड़ रूपये का टर्न ओवर लिमिटेड है। ऐसे उद्योग जिनका टर्न ओवर 200-300 करोड़ है लेकिन वह बहुत ज्यादा मात्रा में प्रदूषण करते हैं और वह बहुत ही हानिकारक हैं। क्या आप ऐसे उद्योगों के लिए सी.एस.आर. मद का निर्धारण करके लोगों को संरक्षित कर सकते हैं और क्या इसमें कोई बाध्यकारी हो सकता है या नहीं हो सकता है?

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सी.एस.आर. मद का निर्धारण राज्य सरकार नहीं कर सकती है। यह भारत सरकार की तरफ से निर्धारित होता है। मैंने इसको पढ़कर सुनाया है और मैं आपको दोबारा बता देता हूं कि जिसका नेट वर्थ 500 करोड़ रूपये है। मैंने आपको पहले ही पढ़कर बताया है कि 500 करोड़ रूपये का लाभ या 1000 करोड़ रूपये का टर्न ओवर है। यह भारत सरकार द्वारा निर्धारित है और इसको राज्य सरकार निर्धारित नहीं कर सकती है।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- नहीं, जैसे इसको भारत सरकार अधिनियमित कर सकती है लेकिन राज्य सरकार भी अपने स्थानीय स्तर पर राज्य के हितों को ध्यान में रखकर अपनी बात को अधिनियमित कर सकती है।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, हो गया। आप प्वाइंटेड प्रश्न करिये। शर्मा जी।

श्री मोहम्मद अकबर :- अध्यक्ष महोदय, कारपोरेट सोशल रिस्पांसिबिलिटी (सी.एस.आर.) केन्द्र सरकार के द्वारा है, राज्य सरकार का नहीं है ।

अध्यक्ष महोदय :- राज्य सरकार का विषय ही नहीं है, इसमें ज्यादा चर्चा क्या करेंगे ? शर्मा जी, आप प्वाइंटेड प्रश्न पूछिए ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जब राज्य सरकार का विषय नहीं है तो फिर शुरूआत से प्रश्न ही निरस्त हो जाना था। इसमें सरकार को यह कहकर उत्तर ही नहीं देना था कि यह हमारा विषय नहीं है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री जी ने भारतीय कंपनी अधिनियम-2013 का उल्लेख करके पल्ला झाड़ने का काम किया है । मेरा जिला ऐसा जिला है, जहां से सबसे ज्यादा सी.एस.आर. की राशि निकलती है ।

अध्यक्ष महोदय :- आप प्रश्न करिए प्लीज़ ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं प्रश्न ही कर रहा हूं । प्रदेश सरकार ने पिछले दो वर्षों में सी.एस.आर. मद की कितनी राशि बलौदाबाजार जिले से ली है ?

श्री मोहम्मद अकबर :- अध्यक्ष महोदय, सबसे पहली बात तो यह है कि आपने संशोधित उत्तर पढ़ा ही नहीं है, जो पुराना उत्तर है, उसके आधार पर आपने प्रश्न पूछ लिया । दूसरा, इसमें बलौदाबाजार से संबंधित प्रश्न उद्‌भूत नहीं होता । ये प्रश्न जांजगीर जिले से संबंधित है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप जांजगीर जिले का ही बता दीजिए । सी.एस.आर. की जो राशि आती है, उसका 40 से 50 प्रतिशत पैसा हमेशा प्रदेश सरकार ले लेती है, लेकिन प्रभावित गांव को लाभ मिलता ही नहीं है । प्रदेश सरकार उस पैसे को लेकर क्या उपयोग करती है, वह भगवान जानें ? ज्यादातर उल्लेख होता है कि हमने वृक्षारोपण में खर्च किया, पर प्रदेश सरकार उसका ज्यादातर दुरूपयोग सी.एस.आर. मद लेने के बाद करती है । सी.एस.आर. का लाभ जो प्रभावित गांव को मिलना चाहिए, वह नहीं मिलता ।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसमें मेरा भी एक प्रश्न था । मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि अगर कम्पनी के अंदर उत्सव मनाया जाता है तो सी.एस.आर. की राशि में से 15 अगस्त और 26 जनवरी को उस पैसे से बूंदी वितरण और मिठाई वितरण किया जा सकता है क्या ?

अध्यक्ष महोदय :- किया जा सकता है । शैलेश पांडे जी ।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- माननीय मंत्री जी, उसका उपयोग कर सकते हैं या नहीं कर सकते ?

श्री शैलेश पांडे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूं, चूंकि यह सोशल रिस्पांसिबिलिटी वाला काम है और सभी विधायकों के लिए रूचिकर है क्योंकि सभी अपने-अपने क्षेत्र से आते हैं । मेरा यह प्रश्न है कि छत्तीसगढ़ में इस सोशल रिस्पांसिबिलिटी में क्या राज्य सरकार उस क्षेत्र के स्थानीय विधायक को तवज्जो देने के लिए या उसकी अनुशंसा पर उस मद को खर्च करने का कोई निर्देश जारी कर सकती है क्या ?

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- पांडे जी, उसका उपयोग विधायक नहीं कर सकते, अधिकारी कर सकते हैं ।

श्री मोहम्मद अकबर :- अध्यक्ष महोदय, कारपोरेट सोशल रिस्पांसिबिलिटी भारत सरकार का कानून है इसलिए इसमें राज्य सरकार विधायकों के लिए बंधनकारी नहीं बना सकती ।

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्री जी से यह जानना चाहता हूं, ठीक है, वह भारत सरकार का कानून है, 500 करोड़ रूपए का है, दुनिया भर की बात है, आपको कोई अधिकार नहीं है । आपको इतना तो अधिकार होगा कि कौन-कौन से उद्योगो ने कौन-कौन से सी.एस.आर. मद में किस-किस काम के लिए, कब-कब, कितना-कितना रूपया मंजूर करके दिया, पूरे प्रदेश से सूची मंगवाकर हम सभी सदस्यों को उपलब्ध करवा देंगे क्या ? अगर वह उद्योगपति यहां का पानी, लिया है, जमीन लिया हुआ है, यहां का कोयला लेता है और अगर सी.एस.आर. मद का पैसा यहां नहीं देता है, भारत सरकार के कहने से या प्रदेश की सरकार के कहने से या किसी के कहने से यहां पैसा देता है तो जानकारी हो तो ऐसे उद्योगों के खिलाफ छत्तीसगढ़ की जनता धरना, प्रदर्शन, आन्दोलन करेगी न । मंत्री जी, आप लिस्ट देंगे या नहीं ? अध्यक्ष महोदय, मान लीजिए कि सी.एस.आर. मद भारत सरकार के मद से दे रहा है तो उसको काम करने के लिए जमीन छत्तीसगढ़ की सरकार देती होगी । इतना तो आपके विभाग को होश होगा कि कम से कम वह कौन सा काम कर रहा है तो यह सूची आप उपलब्ध करा दीजिए, ताकि उद्योगपतियों को ठीक कर दें, प्रदर्शन शुरू करा दें । उद्योगपति कहां जाएंगे ? छत्तीसगढ़ की धरती से पैसा कमाएंगे, हैदराबाद और मुम्बई में बैठकर मजा करेंगे और यहां मंत्री जी भारत सरकार के कायदा कानून बताएंगे तो सी.एस.आर. मद का पैसा छत्तीसगढ़ के लिए है। आप यह लिस्ट भिजवाएंगे क्या ?

श्री बृहस्पत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, मैं सिर्फ एक छोटा सा प्रश्न करना चाहता हूं, एक ही साथ जवाब आ जाएगा ।

अध्यक्ष महोदय :- आपके यहां कौन सा उद्योग है ? जांजगीर का प्रश्न है, आपके यहां बलरामपुर में कहां चला गया ।

श्री बृहस्पत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, सी.एस.आर. मद से क्या-क्या काम कर सकते हैं, मैं सिर्फ यह जानना चाहता हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- धरमलाल जी कौशिक ।

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, पिछले चार साल से कौन-कौन से उद्योग है, जो इसकी श्रेणी में आते हैं, उन्होंने क्या-क्या काम किया है ?

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पूरे छत्तीसगढ़ में सी.एस.आर. मद का सबसे ज्यादा पैसा बलौदाबाजार विधान सभा क्षेत्र में है । मैं आपसे निवेदन करता हूं कि कृपया सी.एस.आर. की राशि की जांच कराएं ।

श्री अरूण वोरा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं जानना चाहता हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- आप बैठिए प्लीज़ । लिस्ट मंगा ली जाये । माननीय धर्मजीत जी, मैं भी कह रहा हूं कि लिस्ट प्राप्त कर लें और यहां जानकारी दी जाये ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- उधर बोलिए ।

अध्यक्ष महोदय :- मैं उधर ही निर्देश दे रहा हूं । कभी-कभी आप मेरी तरफ देखने की बजाय उधर देखते हो । मैं आपको देखकर बोल रहा हूं ।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय ।

अध्यक्ष महोदय :- आप वर्तमान नेता प्रतिपक्ष हैं, पूर्व नेता प्रतिपक्ष का प्रश्न है । मैं चाहता हूं कि उनको उत्तर दिला दूं ।

श्री नारायण चंदेल :- अभी समय है । माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा आग्रह यह है कि आप भी कोरबा लोकसभा क्षेत्र से सांसद रहे हैं, अभी भाभी जी सांसद हैं । वह पूरा औद्योगिक क्षेत्र है । मेरा आशय यह है कि जब भी हम सीएसआर मद की चर्चा किसी उद्योगपति से करते हैं कि वे प्रभावित क्षेत्र में खर्च करे, जनहित में खर्च करें तो उनका एक ही जवाब रहता है कि हम तो राज्य सरकार के निर्देश पर खर्च करते हैं। हम हमारा पैसा तो कलेक्टर को दे देते हैं।

अध्यक्ष महोदय :- आप वही बात शुरू से नहीं बोल रहे हैं।

श्री नारायण चंदेल :- नहीं, मैं वही बात तो बोल रहा हूं।

अध्यक्ष महोदय :- तो आप सीधा-सीधा कहिये कि कलेक्टर पैसा वसूल करता है, कलेक्टर क्या करता है, वह बताओ। यह आपने अभी तक पूछा ही नहीं है।

श्री नारायण चंदेल :- वह प्रदेश सरकार को भेजता है और प्रदेश सरकार के इशारे पर वह खर्च होता है। कई जिलों में कलेक्टर अपनी मनमर्जी से खर्च करता है।

अध्यक्ष महोदय :- तो आप असली बात को छिपा रहे हैं।

डॉ.कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय, उनके कहने पर नहीं होता, अधिकारियों के कहने पर होता है।

श्री नारायण चंदेल :- अध्यक्ष महोदय, सी.एस.आर. मद में जनप्रतिनिधियों की कोई भूमिका नहीं है। उनकी अनुशंसा से कोई काम नहीं होता है।

श्री शिवरतन शर्मा :- अध्यक्ष जी, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि सी.एस.आर. मद का पैसा सबसे पहले प्रभावित गांवों के मूलभूत समस्याओं को दूर करने के लिए खर्च होना चाहिए।

श्री धर्मजीत सिंह :- सब बात सही है। सूची मंगवाओ। (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- इसमें विधायकों, जनप्रतिनिधियों की कोई भूमिका नहीं है। खाली मंत्रियों की भूमिका रहती है। (व्यवधान)

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यहां की जमीन, यहां की हवा, यहां का पानी और यहां के संसाधन का उपयोग होता है। लेकिन उसका राजनीतिकरण किया जाता है। कलेक्टर की स्वेच्छारिता से पैसा, अध्यक्ष महोदय, सी.एस.आर. मद की लूट बंद होनी चाहिए। माननीय मंत्री जी ने जो उत्तर दिया है, उससे हम असंतुष्ट हैं और हम उनके उत्तर के खिलाफ बहिर्गमन करते हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

समय :

11.32 बजे

बहिर्गमन

शासन के उत्तर के विरोध में

(नेता प्रतिपक्ष श्री नारायण चंदेल के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों द्वारा शासन के उत्तर के विरोध में बहिर्गमन किया गया)

अध्यक्ष महोदय :- श्री धरमलाल जी कौशिक।

श्री अमरजीत भगत :- दोनों नेता प्रतिपक्ष पहले और अब में अंतर साफ दिख रहा है।

अध्यक्ष महोदय :- साफ दिख रहा है न। चलिये, श्री धरमलाल जी कौशिक।

श्री धरमलाल कौशिक :- आप चाह रहे थे कि मैं चला जाऊं और मेरा प्रश्न चला जाये।

खेल मंत्री (श्री उमेश पटेल) :- धरम भईया, हमारी पूरी सहानुभूति आपके साथ है।

श्री धरमलाल कौशिक :- क्या है कि मैं कोई [xx] तो हूं नहीं, आप मेरे लिए सहानुभूति रखो।

श्री शैलेश पाण्डे :- सारे उद्योगपतियों के पति ये ही हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- आपके [xx] लोग इधर बैठे हुए हैं। आप उनके लिए सहानुभूति रखो।

श्री उमेश पटेल :- क्या है कि आप हमारे संभाग के नेता हो।

श्री धरमलाल कौशिक :- उनके लिए सहानुभूति करो।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, आपका बढ़िया प्रश्न है, आने दीजिये।

श्री शैलेश पाण्डे :- अध्यक्ष महोदय, सारे उद्योगपतियों के पति ये ही हैं। सारा उद्योग इन्हीं के क्षेत्र में है।

श्री उमेश पटेल :- धरम भईया, आप हमारे संभाग के नेता हो तो हमारी सहानुभूति तो आपके साथ रहेगी।

श्री धरमलाल कौशिक :- इसीलिए मैं बोल रहा हूं कि सहानुभूति मेरे प्रति करने के बजाय इधर करिये।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, प्रश्न आने दीजिये।

डॉ.(श्रीमती) रश्मि आशीष सिंह :- भईया, वह प्रेम बोल रहे थे, प्रेम बोलते-बोलते सहानुभूति शब्द निकल गया।

श्री धरमलाल कौशिक :- सहानुभूति मेरे बजाय अपने पक्ष के जो प्रताड़ित लोग हैं, उनके प्रति दर्ज करें तो ज्यादा अच्छा होगा।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, आप प्रश्न करिये न। बड़ी मुश्किल से समय बचा है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

तारांकित प्रश्नों के मौखिक उत्तर (क्रमश:)

राज्य सरकार द्वारा किये गए एम.ओ.यू

[वाणिज्य एवं उद्योग]

2. (*क्र. 1623) श्री धरम लाल कौशिक : क्या वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- **(क)** प्रदेश सरकार द्वारा उद्योग स्थापना हेतु जनवरी, 2020 से जनवरी, 2023 तक कुल कितने एमओयू, कितनी राशि का निवेश एवं कुल कितने रोजगार सृजन हेतु किये गए हैं ? **(ख)** उक्त अवधि में किये गए कुल कितने एमओयू अंतर्गत कुल कितनी राशि का निवेश जनवरी, 2023 तक प्रदेश में किया गया हैं, कुल कितने उद्योग स्थापित होकर संचालित हैं तथा प्रदेश के कितने लोगों को प्रत्यक्ष रोजगारों प्राप्त हुआ है ? **(ग)** उपरोक्तानुसार एमओयू में कितने एमओयू में निर्धारित समयावधि में राशि निवेश व रोजगार सृजन निर्धारित लक्ष्य के विरूद्व नहीं किया जा सका व कितने एमओयू में उद्योग प्रारंभ/संचालित नहीं हो सकें ? जिलेवार बताएं ।

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री (श्री कवासी लखमा) :(क) प्रदेश सरकार द्वारा उद्योग स्थापना हेतु जनवरी, 2020 से जनवरी, 2023 तक कुल 192 एमओयू, राशि रूपये 96442.47 करोड़ का निवेश एवं कुल 1,24,336 रोजगार सृजन हेतु किए गये है। विस्तृत विवरण जानकारी **पुस्तकालय में रखे प्रपत्र-"अ"**पर दर्शित है। 192 एमओयू में से 9 एमओयू निरस्त किये जा चुके है तथा वर्तमान में 183 एमओयू प्रभावशील है। **(ख)** उक्त अवधि में प्रभावशील 183 एमओयू में से 137 निवेशकों द्वारा क्रियान्वयन प्रारंभ किया जा चुका है, तथा निवेशकों द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार उक्त अवधि जनवरी, 2023 तक प्रदेश में 137 में से कुल 92 एमओयू निष्पादित इकाईयों द्वारा कुल राशि रूपये 5422.91 करोड़ का निवेश किया गया है। विस्तृत विवरण जानकारी **पुस्तकालय में रखे प्रपत्र-"ब"**पर दर्शित है। उक्त 92 इकाईयों में से 19 इकाईयों द्वारा उद्योग स्थापित कर प्रदेश के 4586 लोगों को रोजगार प्रदान किया गया है। विस्तृत विवरण जानकारी **पुस्तकालय में रखे प्रपत्र-"स"**पर दर्शित है। **(ग)** 46 एमओयू में क्रियान्वयन प्रारंभ नही हुआ है। जिलेवार विस्तृत विवरण जानकारी **पुस्तकालय में रखे प्रपत्र-"द"**पर दर्शित है।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्री जी से छोटा-छोटा प्रश्न पूछंगा। मैंने प्रश्न में पूछा था कि वर्ष 2020 से जनवरी, 2023 तक यहां जो उद्योग लगाने वाले हैं, ऐसे कितने लोगों के साथ एम.ओ.यू. हुआ है ? उन्होंने जवाब में 192 एम.ओ.यू. होना बताया है और इससे 1,24,336 लोगों को रोजगार मिलना था। बाद में 9 एम.ओ.यू. निरस्त हो गए और अभी 183 एम.ओ.यू. प्रभावशील है और जिसमें 19 इकाईयों में उत्पादन शुरू हो गया है। मैं 183 एम.ओ.यू. में से 137 निवेशकों के बारे में बात करता हूं। 183 एम.ओ.यू. में से 137 निवेशकों द्वारा क्रियान्वयन प्रारंभ किया

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

जा चुका है और उसमें यह बताया गया है कि 28.02.2020 तक 3 सौ करोड़ रूपया निवेश करना था जबकि 4 करोड़ 50 लाख निवेश किया गया है। रामा पावर को 184 करोड़ निवेश करना था, लेकिन 28-2-2020 में 5 करोड़ 20 लाख निवेश किया गया है, 1 करोड़ 80 लाख निवेश किया है, 7 करोड़ 50 लाख...।

अध्यक्ष महोदय :- वैसे बहुत हैं ।

श्री धरमलाल कौशिक :- और यह वर्ष 2020 का है । मैं पूरा नहीं पढ़ रहा हूँ, 2-3 का मैं बताया हूँ । वर्ष 2020 में आपने उनको सब कुछ सौंप दिया है । सौंपने के बाद 300 करोड़ जो निवेश होना था, वह निवेश किया है, 4 करोड़ 50 लाख । मैं मंत्री जी से जानना चाहता हूँ कि इसकी जो अवधि है, जो एम.ओ.यू. करते हैं, काम कब तक प्रारंभ किया जाना है, समय क्या रहता है, आप मेंरे को पहले यह बता दे ?

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, निवेश करने के लिये पांच साल का समय होता है ।

अध्यक्ष महोदय :- 5 वर्ष का समय होता है ।

श्री धरमलाल कौशिक :- 5 वर्ष है कि 2 वर्ष है ?

अध्यक्ष महोदय :- 5 वर्ष है ।

श्री धरमलाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, अब इसमें जो जानकारी दी गई है, उन्होंने बहुत अच्छा लिखा है, निवेशकों के द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार उक्त अवधि में वर्ष 2023 तक प्रदेश में 137 में 92 एम.ओ.यू.निष्पादित किये हैं, उसमें यह जो निवेश हुआ है, मैं मंत्री जी से पूछना चाहता हूँ कि जो जानकारी निवेशकों के द्वारा दिया गया है, उसका जवाब आपने विधान सभा में दिया है । क्या यह आपने उसे निवेशकों के कहने पर दिया है और उसे आपने विभाग के द्वारा या सरकार के द्वारा सत्यापित किया है ?

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक बार यदि एम.ओ.यू. यदि हो गया । उदाहरण के तौर पर 1000 करोड़ का एम.ओ.यू. हुआ, 5 साल का समय है, 5 साल में लगातार कितना खर्च किया, कितना नहीं किया, 6 माह की प्रगति ली जाती है । 6 माह की प्रगति के आधार पर ही इस प्रकार के जवाब हम लोगों ने दिया है ।

श्री धरमलाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, मैं तो केवल यह पूछ रहा हूँ, जो निवेशक है, उन्होंने जानकारी दे दी है, दो साल में आपको जो जानकारी दी गई है, आपने जो जानकारी दी है, उनके कहने के आधार पर जानकारी दी है । क्या सरकार के द्वारा या विभाग के द्वारा इसको सत्यापित किया गया है ? इसमें कितनी सच्चाई है या बढ़ाकर बोले हैं या कम बोले हैं, ऐसा आपने कुछ किया है क्या ?

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री मोहम्मद अकबर :- अध्यक्ष महोदय, जो प्रगति है, उसे 6 माह के भीतर निरीक्षण किया जाता है ।

अध्यक्ष महोदय :- थैंक्यू । अब संभव नहीं है । (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- छोटा-छोटा प्रश्न पूछ रहे हैं । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- आप ही थोड़ी हैं ? (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- विधान सभा से रिलेटेड हैं । (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं छोटा-छोटा ही प्रश्न पूछ रहा हूँ । मैं कोई आरोप नहीं लगा रहा हूँ ।(व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- आराम से पूछिये, कोई दिक्कत नहीं है । प्रश्न इतना लंबा हो सकता है तो उत्तर तो.....। (व्यवधान)

श्री अरूण वोरा :- अध्यक्ष महोदय, आपके छोटे-छोटे प्रश्न का बड़ा-बड़ा उत्तर देना पड़ता है ।

अध्यक्ष महोदय :- अरूण जी बैठिये ।

श्री धरमलाल कौशिक :- छोटा-छोटा प्रश्न है और छोटा-छोटा उत्तर है ।

अध्यक्ष महोदय :- आप पढ़कर नहीं है ।

श्री धरमलाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, मैं पढ़कर आया हूँ, मैं उस हिसाब से मंत्री जी को पूछ रहा हूँ।

अध्यक्ष महोदय :- वर्तमान नेता प्रतिपक्ष का प्रश्न आया था, पूर्व नेता प्रतिपक्ष का प्रश्न आया था, दोनों नेता के प्रश्न में थोड़ा सा कन्फ्यूजन हो रहा है । इसका उत्तर देना है ।

श्री कुलदीप सिंह जुनेजा :- आधा घंटा नेता प्रतिपक्ष का चला है, अब इनका चल रहा है । अभी तक दो ही प्रश्न आये हैं ।

श्री अमरजीत भगत :- अध्यक्ष महोदय, दोनों को एक साथ बैठा दीजिए । दोनों पारी-पारी पूछ लेंगे ।

श्री धरमलाल कौशिक :- इसमें जो आंकड़ा दिया गया है, आंकड़े दिये जाने के बाद में यह कहना चाहता हूँ, सरकार ने उनको जमीन दी है, कुछ शासकीय जमीन गई, कुछ प्रायवेट जमीन गई, आपने जो यह कहा है, इसमें जो 9644 करोड़ रूपया का रोजगार मिलना था और 96442 करोड़ रूपये का निवेश करना था । इसमें 1 लाख 24 हजार 336 को इसमें रोजगार पाना था । आपने जो जवाब दिया है, वह जवाब दिया है, आपने जो जवाब दिया है उसमें वर्ष 2020 के बाद में 4849 लोगों को रोजगार दे पाये हैं, उसका प्रतिशत निकालेंगे तो निवेश 3 प्रतिशत है और रोजगार 6 प्रतिशत है । मैं माननीय मंत्री जी से पूछना चाहता हूँ, आपने 96442 करोड़ का जो लक्ष्य रखा है और जो 01 लाख 24 हजार 336 लोगों को रोजगार देने का लक्ष्य रखा है, इसकी प्राप्ति कब होगी ?

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, निवेश और रोजगार के प्रतिशत की तुलना नहीं हो सकती है। यदि एक बहुत कम्पनी है, वह दो कम्प्यूटर में काम कर रहे हैं तो दो रोजगार में काम चल जायेगा। लेकिन जो बाकी रोलिंग मिल है, उसमें बहुत बड़े पैमाने में मजदूर लगेंगे तो उसका प्रतिशत का निर्धारण कैसे हो पायेगा। वह नहीं हो सकता।

श्री धरमलाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, इनके प्रश्न में यह जवाब आया है, मैं आपको बता देता हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- अब हो गया।

श्री धरमलाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, मेसर्स बजरंग एलायंस में कितने लोगों को रोजगार मिलना है तो आपने उसमें जवाब दिया हुआ है कि 158 लोगों को। जब 158 लोगों को रोजगार देना है तो उस समय जो एम.ओ.यू. हुआ है, उसमें कितना रोजगार मिलेगा, उसमें यह भी लिखा हुआ है।

अध्यक्ष महोदय :- बजरंग एलायंस लिमिटेड रायपुर में तो सिर्फ 110 लिखा हुआ है।

श्री धरमलाल कौशिक :- उसमें लिखा हुआ है कि रोजगार मिला है लेकिन रोजगार मिलने के बाद भी वह लक्ष्य से कोसो दूर है। इनको उत्पादन प्रमाण पत्र जारी किया जाता है। मैं वर्ष 2019 की बात बोल रहा हूं, इसमें जो उत्पादन प्रारंभ किये गये हैं, उसमें कितने लोगों को प्रमाण पत्र जारी हुआ है और कितने लोगों को जारी नहीं हुआ है ? आप थोड़ा-सा बतायेंगे।

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, प्रमाण पत्र के संबंध में प्रश्न ही नहीं है। बाकी यह जिन विषयों पर बोल रहे हैं कि कितना एम.ओ.यू. हुआ, कितनों को रोजगार मिला, कितना निरस्त हुआ, उसकी पूरी डिटेल्स रिजन दी जा चुकी है।

श्री धरमलाल कौशिक :- आपने जवाब में दिया है..।

अध्यक्ष महोदय :- अब आगे उसको इतना लंबा मत करिये।

श्री कुलदीप जुनेजा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी जितने एम.ओ.यू. हुए हैं, सबमें काम हो रहे हैं, सब लक्ष्य पूरा हो रहा है। मैंने इनके पिछले कार्यकाल में सुबह-सुबह पेपर में देखा तो 05 हजार करोड़ का एम.ओ.यू. हुआ है, यह छपा था। मैं उसको फोन लगाया और पूछा तो मेरी बस्ती का कार्यकर्ता था। मैंने पूछा कि आपने इतना कैसे कर लिया तो बोला सूट और कार किराये से लेकर गया था और 05 हजार करोड़ का एम.ओ.यू. करके आया हूं। (हंसी)

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपको बता देता हूं कि मेसर्स नाकोड़ा पाइप प्रा. लि., रायपुर, उत्पादन प्रमाण पत्र हेतु कार्यालय में प्रस्तुत प्रक्रियाधीन है। मैं आपको ऐसे तीन-चार नाम बता सकता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये बहुत लंबा, विस्तृत प्रश्न है।

श्री धरमलाल कौशिक :- एक गोदावरी इलेक्ट्रिक मोटर प्रा.लि., प्रक्रियाधीन है। उनको कितनी अवधि में प्रमाण पत्र मिलना चाहिए ?

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपको यह जानकारी अलग से दे दूंगा।

अध्यक्ष महोदय :- अलग से जानकारी दे देंगे।

श्री धरमलाल कौशिक :- आपके जवाब में है।

अध्यक्ष महोदय :- वह आपको अलग से जवाब दे देंगे। वह इस विभाग के असली मंत्री नहीं है, अभी कार्यभार संभाले हुए हैं। लखमा जी बाद में जवाब दे देंगे।

श्री शिवरतन शर्मा :- अध्यक्ष महोदय, वही असली है, वही असली है।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये जल्दी बोलिये।

श्री धरमलाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, एक्च्यूअल में तो जो नहीं आये हैं, उनको कार्यभार मंत्री बोल सकते हैं। बाकी मंत्री जी तो जवाब देने में सक्षम है।

अध्यक्ष महोदय :- वह नहीं आये हैं। आपका प्रश्न बहुत विस्तृत है। आप शाम को लखमा जी के घर में बैठकर इसको तय कर लीजियेगा।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा कुल मिलाकर एक लाइन में यह कहना है कि आपने जो उद्योग नीति बनायी और इन्होंने लोगों को यह कहा कि हमने 05 साल में बहुत अच्छा काम किया है। आपने 05 साल में कौन-सा बहुत अच्छा काम किया कि आपने सरकार के द्वारा 96442.47 करोड़ रूपये का एम.ओ.यू. किया। आपने 01 लाख 24 हजार 336 नौकरी देने की बात की। परिणाम यह आया कि 4586 लोगों को रोजगार दिया गया, तो "खोदा पहाड़ निकली चुहिया"। मैं यही पूछ रहा हूं कि आपने जो एम.ओ.यू. किया है, वह कितना प्रतिशत सफल है ? यह केवल सरकार के बताने के लिये हैं। उसके बाद आपने जो उद्योग नीति बनाई और आप जिसको छत्तीसगढ़ मॉडल कहते हैं, यही छत्तीसगढ़ मॉडल है ? कि आप 96442.47 करोड़ रूपये की बात करते हैं, 01 लाख 24 हजार 336 लोगों को रोजगार देने की बात करते हैं और उसमें 5422.91 हजार करोड़ का निवेश हो रहा है, और 4586 लोगों को नौकरी मिल रही है तो मैं मंत्री जी से इसी विषय में जानना चाहता हूं कि जिन्होंने एम.ओ.यू. करने के बाद काम प्रारंभ नहीं किया है या जो काम प्रारंभ नहीं करना चाह रहे हैं, आपने उसके खिलाफ क्या कार्रवाई की और आपके उसके खिलाफ क्या कार्रवाई करेंगे ?

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह लक्ष्य का निर्धारण नहीं है। यह एम.ओ.यू. में प्रावधान होता है, कई बार 05 हजार करोड़ का एम.ओ.यू. हुआ है। यह फाइनेंशियल पोजिशन नहीं है। बैंक ने कर्ज नहीं दिया। उद्योग नहीं लग पाये। तो आप उसकी तुलना कैसे कर सकते हैं ? यह केवल एक प्रस्ताव है जो एम.ओ.यू. में Understanding है। यह बंधन कार्य नहीं है।

श्री धरमलाल कौशिक :- क्या आप उनके खिलाफ में कोई कार्रवाई करेंगे, आप उनको बेदखली करेंगे, जमीन दूसरे को देंगे ? आप कुछ तो करेंगे।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- अध्यक्ष महोदय, एक छोटा-सा प्रश्न है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने अनुमति दी थी।

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं अब पुरानी बातों पर जाऊंगा तो ये बाहर निकल जायेंगे।

श्री शिवरतन शर्मा :- नहीं, बाहर नहीं जायेंगे।

श्री मोहम्मद अकबर :- आपके समय में ग्लोबल इन्वेस्टर मीट हुआ था, उसमें कितने लोगों का रोजगार था ? आप बताईये।

श्री धरमलाल कौशिक :- आप पिछले 15 साल का तब पूछ लेना जब हम उधर बैंठेंगे।

श्री मोहम्मद अकबर :- अध्यक्ष महोदय, वही तो बात है ।

श्री धरमलाल कौशिक :- हम उसका जवाब हमारे कार्यकाल में देंगे। अभी तो मैं जो आपके 04 साल का पूछ रहा हूं, आप उसका जवाब दो।

श्री कुलदीप जुनेजा :- इनके बस्ती का एक आदमी 05 हजार करोड़ का एम.ओ.यू. करके आया था।

श्री मोहम्मद अकबर :- एक मिनट, आप मेरी बात सुन लीजिये।

श्री रविन्द्र चौबे :- अब पूरा सुनाओ।

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक फेरल इनजीनियरिंग कंपनी थी, उसका एम.ओ.यू. करने के लिये अमेरिका से लोग आये थे। यहां के लोगों ने कहा कि वहीं पहुंचों, वहीं आकर एम.ओ.यू. करेंगे। वह 05 हजार करोड़ रूपये का था। न एक रूपये का निवेश हुआ, न एक रोजगार हुआ, आप क्या बोलेंगे।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय,भूषण स्टील में साथ जोगी जी के समय क्या हुआ था ?

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह एम.ओ.यू. है। यह अण्डरस्टैडिंग हुई है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय,भूषण स्टील में साथ जोगी जी के समय क्या हुआ था ? उसकी जानकारी दीजिए। जोगी जी के समय भूषण स्टील के साथ एम.ओ.यू. हुआ था, वह कैसा था बताई ?

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप जिस विभाग का जवाब दे रहे हैं ?

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह जो एम.ओ.यू. होता है, यह memorandum of understanding है। यह आपसी समझ है। यह बंधनकारी नहीं है। कोई 5 हजार करोड़ रूपये का बोलकर, 5 रूपये भी नहीं लगाया तो कुछ नहीं कर सकते। कोई नियम नहीं है।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एम.ओ.यू. में भी घोटाला होता है। यह मंत्री जी कनाडा में ऑटो मोबाईल सेक्टर का निवेश लाने के लिए गये थे। यहां समाचार पत्रों में बड़ा-बड़ा छपा कि ऑटो मोबाईल सेक्टर में निवेश लेकर आ रहे हैं। एक नट बोल्ट बनाने का एक रूपया का निवेश आया।

श्री शैलेश पाण्डे :- आप लोग बैंकाक जाते थे तो..।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह 9 एम.ओ.यू. निरस्त किए हैं। वह कौन-कौन से हैं और किन कारणों से निरस्त किया और दूसरा आपने बताया है कि 4849 लोगों को रोजगार मिला है। आपने वर्ष 2019 से 2024 की उद्योग नीति बनाई है, उसके तहत 4849 लोगों में कितने लोग प्रबंधकीय पद में हैं, उनमें से जो 40 प्रतिशत को देना है और जो उनको नियोजित करते हैं तो उन्होंने प्रबंधकीय पद या कुशल अकुशल में नियोजित किया, इसके जांचने, अध्ययन करने की प्रक्रिया क्या है और यदि इसका पालन नहीं करते हैं तो आप क्या कार्यवाही करेंगे?

अध्यक्ष महोदय :- आपका उत्तर और इनके प्रश्न का उत्तर एक साथ आएगा।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं जो एक प्रश्न करना चाहता था, वह माननीय अजय चन्द्राकर जी ने कर लिया। यह 9 एम.ओ.यू. कौन-कौन से हैं और किन कारणों से निरस्त हुए है, यह बता देंगे।

अध्यक्ष महोदय :- अच्छा दोनों का एक ही प्रश्न है।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय,माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा दूसरा प्रश्न यह है कि माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा आपकी उपस्थिति में कुछ उद्योगों को लगाने से एक क्षेत्र विशेष में मना किया गया है। वह उद्योग कौन-कौन से हैं ?

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह पता नहीं, कहां-कहां का अलग-अलग जोड़-जोड़ कर पूछ रहे हैं लेकिन ठीक है। मैं एक मिनट बता रहा हूँ आप उसको पूरा ही सुनना मैं उसे पूरा पढ़ूंगा। जो उन 9 उद्योगों को निरस्त किया गया है। आप लोग पूरा सुनिए।

क्र	इकाई का नाम	एम.ओ.यू. का दिनांक	प्रस्तावित संयंत्र/उत्पाद एवं वार्षिक क्षमता	प्रसतावित पूंजी निवेश करोड़ रू. में	रोजगार	एम.ओ.यू. निरस्तीकरण दिनांक	रिमार्क
1	मे. प्रकाश इण्डस्ट्रीज हिसार,	28.02.2020	वायर राड/टीएमटी/ रोल्ड प्रोडक्ट्स- 30 लाख टीपीए	320	6100	24.12.2020	निवेशक द्वारा अपने पत्र क्रमांक पीआईएल/रायपुर/एमओयू/ 2020-21/158, दिनांक

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

							30.11.2020 से स्टील मार्केट में अस्थिरता बताते हुए उक्त परियोजना को स्थगित करते हुए एमओयू निरस्त करने का अनुरोध करने के फलस्वरूप दिनांक 24.12.2020 को एमओयू निरस्त किया गया।
2.	मे. नूतन इस्पात एण्ड पावर प्रायवेट लिमिटेड, रायपुर	04.11.2020	बेनीफिशियेशन ऑफ आयरन ओर- 20 एलटीपीए, पैलेट प्लांट-16, एलटीपीए, स्पंज आयरन-6, एलटीपीए, केप्टिव पॉवर प्लांट-90 मेगावाट, स्टील मेल्टिंग शॉप-6 एलटीपीए, रोलिंग मिल-6 एलटीपीए, फेरो एलायज- 50000 टीपीए, क्लिंकर ग्राइंडिंग-9 एलटीपीए	980	900	31.12.2020	निवेशक द्वारा पत्र (आवक क्रमांक 1014, दिनांक 23.11.2020) के माध्यम से इकाई के संचालकों में वैचारित मतभेद बताते हुए एमओयू निरस्त करने अनुरोध किया गया है। तदनुसार दिनांक 31.12.2020 को एमओयू निरस्त किया गया।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हो गया ?

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप पूरा सुनिए। ऐसे 9 एमओयू की सूची है।

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पूरा उत्तर पढ़ा जाए।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आपने प्रश्न किया है तो पूरा उत्तर सुनिए।

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मंत्री जी का पूरा उत्तर आने दीजिए। (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय मंत्री जी का पूरा उत्तर आने तक पढ़ने दीजिए।

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मंत्री जी का पूरा उत्तर आने दीजिए।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप केवल उद्योग का नाम और कहां स्थान प्रस्तावित था, बस इतना ही बता दीजिए।

श्री कुलदीप जुनेजा :- 4 मिनट का उत्तर बचा है। आप पूरा उत्तर सुनिए।

अध्यक्ष महोदय :- देखिए। मैं जहां तक समझता हूँ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जी से अनुरोध है कि माननीय मंत्री जी के द्वारा पूरा उत्तर पढ़ा जाये ताकि हम लोग भी समझ सकें। संपूर्ण उत्तर पढ़ा जाए। हम लोग भी समझ सकें।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्यों के प्रश्न पूछने का कारण यह है कि [xx] कि 1 करोड़ रूपए का एम.ओ.यू. होगा तो [xx] जिन्होंने पैसा नहीं दिया उनका एम.ओ.यू. कैंसिल कर दिया। माननीय मंत्री जी यह बता दें कि [xx] जो सरकारी खजाने में नहीं, [xx] ।

अध्यक्ष महोदय :- श्रीमती इंदु बंजारे जी।

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय मंत्री जी संपूर्ण उत्तर पढ़ा जाये।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय मुख्यमंत्री जी ने क्षेत्र विशेष में उद्योग लगाने से मना किया था, वह .कौन-कौन से उद्योग लगे हैं, इसकी जानकारी दे दें।

श्री शैलेश पांडे :- माननीय अध्यक्ष जी, इस बात को विलोपित किया जाये।

अध्यक्ष महोदय :- विलोपित कर देंगे।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- बी.जे.पी. शासित राज्यों में क्या बीजेपी लोगों की जेब में गया।

अध्यक्ष महोदय :- इंदु बंजारे जी, आप प्रश्न पूछें। हो गया, बहुत हो गया।

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं अभी पूरा पढ़ा ही नहीं हूं, 9 इकाइयां हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- मेरा प्रश्न सुने ही नहीं।

श्री मोहम्मद अकबर :- प्रश्न पूछने समय सोचना चाहिए न कि क्या पूंछू।

श्री शिवरतन शर्मा :- मैंने आपसे प्रश्न किया कि माननीय मुख्यमंत्री जी ने क्षेत्र विशेष में उद्योग लगाने से मना किया था, वह कौन-कौन से उद्योग हैं ?

श्री मोहम्मद अकबर :- कितने एम.ओ.यू. हुए, किस कारण से निरस्त हुए, आप पूरी जानकारी सुनिये न। यह अधूरा कैसे होगा।

श्री शिवरतन शर्मा :- आप खाली किस कारण से निरस्त हुए और एम.ओ.यू. का नाम बात दो।

श्री मोहम्मद अकबर :- आप पूरा सुनिये।

श्री बृहस्तप सिंह :- पूरा उत्तर दिया जाये ताकि हम लोग समझ सकें।

श्री मोहम्मद अकबर :-

क्रमांक	इकाई का नाम	एम.ओ.यू. क दिनांक	प्रस्तावित संयंत्र/ उत्पादत एवं वार्षिक क्षमता	प्रस्तावित पूंजी निवेश करोड़ रुपये में	रोजगार/एम ओ यू निरस्तीकरण दिनांक	रिमार्क
03	मेसर्स जोओएस इस्पात प्रायवेट लिमिटेड, रायपुर	09.11.2020	स्पंज आयरन-9 एवटीपीए, केप्टिव पावर प्लांट- 70 मेगावाट, एस एम एस- 9 एलटीपीए, रोलिंग मिल- 9	850.00	550/ 31.12.2020	निवेशक अपनेपत्र क्रमांक जीओएस/2020/एमओयू., दिनांक 07.12.2020 द्वारा उक्त एमओयू को निरस्त करने अनुरोध किया गया है। तदनुसार एमओयू दिनांक 31.12.2020

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

			एलटीपीए, फेरो एलायज-50000 टीपीए, बेनीफिसियेशन एंड पेलेटाइजिंग आफ आयर ओर-9 एलटीपीए, कोल वाशरी- 9.6 एमटीपीए,स्टी फेब्रीकेशन एंड गेल्वेनाइजिंग- 4 एलटीपीए			को निरस्त किया गया।

अध्यक्ष महोदय :- आप लोग सुनिये न। आप लोग कहां सुन रहे हैं। आप इतना बड़ा प्रश्न करना चाहते हैं।

श्री मोहम्मद अकबर :- मैं पढ़ूंगा न, आपने पूछा क्यों ?

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय मंत्री जी संपूर्ण उत्तर पढ़ा जाये, ताकि हम लोग भी समझ सकें।

अध्यक्ष महोदय :- आप गलत बात कर रहे हैं।

श्री बृहस्तप सिंह :- आपने प्रश्न पूछा है तो आप लोग उत्तर भी सुनें।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष जी, इसका कवासी लखमा जी जवाब देते तो वह कैसे देते, यह बताईये।

अध्यक्ष महोदय :- वह बता रहे हैं न।

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बोलते समय विधान सभा में उत्तर संशोधित होता है। प्रश्न संशोधित करने का कोई प्रावधान नहीं है। जो आपने प्रश्न पूछा है उसका पूरा उत्तर सुनना पडेंगा।

अध्यक्ष महोदय :- आप पूरा सुनाना चाहते हैं।

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं पूरा उत्तर पढ़ देता हूं। पूरे 09 इकाईयों के नाम हैं। उन्होंने पूछा है तो मैं क्या करूं।

श्री बृहस्पत सिंह :- शर्मा जी, आपने प्रश्न किया है तो उत्तर क्यों नहीं सुन रहे हैं ?

अध्यक्ष महोदय :- आप उत्तर सुना दीजिए। 12 बजे तक उत्तर सुनाईये।

श्री शिवरतन शर्मा :- हमारा जो प्रश्न है, उस प्रश्न में हमने खाली एक बात है कौन से उद्योग का एम.ओ.यू. निरस्त हुआ, उसका कारण क्या है ?

श्री मोहम्मद अकबर :- मैं वही तो बता रहा हूं।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अध्यक्ष महोदय :- वही तो बता रहे हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- आप पूरा पढ़ रहे हैं।

श्री मोहम्मद अकबर :- आपने पूरा उदाहरण पूछा। उदाहरण सहित तो बतलाना पड़ेगा न।

श्री कुलदीप जुनेजा :- आप लोग विस्तार से पूछ रहे हैं, पूरा विस्तार से सुनिये न।

अध्यक्ष महोदय :- बताईये। आप इनको पूरा बताईये। 07 मिनट तक जरा धीमी गति से बताईये।

श्री मोहम्मद अकबर :-

04.	मेसर्स जोओएस इस्पात प्राइवेट लिमिटेड, रायपुर	09.11.2020	स्पंज आयरन-2 एलटीपीए, एमएमएस-2 एलटीपीए, रोलिंग मिल-2 एलटीपीए, फेरो एलायज- 50000 टीपीए, केप्टिव पावर प्लांट 32 मेगावाट	280.00	400/ 31.12.2020	निवेशक अपने पत्र क्रमांक जीओएस/2020/एमओयू, दिनांक 07.12.2020 द्वारा उक्त एम.ओ.यू. को निरस्त करने अनुरोध किया गया है। तदुनसार एमओयू दिनांक 31.12.2020 को निरस्त किया गया है।

अब पांचवा बता रहा हूं। टोटल 09 हैं।

अध्यक्ष महोदय :- आप बोलिये।

श्रीमती इंदु बंजारे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम लोग नये सदस्य हैं, हम लोगों का बहुत कम प्रश्न लगता है। 3 लाख जनता ने हमें चुनकर भेजा है। इस उम्मीद के साथ भेजा है कि हम अपने क्षेत्र की समस्याओं को यहां पर उठा सकें। लेकिन हम लोगों को समय नहीं मिलता, यह दुख की बात है।

अध्यक्ष महोदय :- आप इनको कहिये न। आप मुझे तो बता रही हैं।

श्रीमती इंदु बंजारे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम लोगों का निवेदन है कि हम लोगों का लगातार प्रश्न लगता है लेकिन हम लोगों को समय ही नहीं मिल पाता है। हमारे क्षेत्र के लोग हमें एक उम्मीद के साथ भेजते हैं कि हम अपनी समस्याओं को यहां पर रख सकें। उनकी सुख-दुख की बातों को रख सकें। लेकिन हमें समय नहीं मिल पाता है। आपसे मेरा निवेदन है कि हम लोगों को स्पेशल समय दिया जाये।

अध्यक्ष महोदय :- आप अपना उत्तर बोलते जाईए न। आप उत्तर सुन लीजिए।

श्रीमती इंदु बंजारे :- पूरे उत्तर में ही समय खत्म हो जायेगा। नये सदस्यों को अपनी बात रखने के लिए मौका मिलना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय :- प्लीज आप बैठ जाईये। मंत्री जी का उत्तर आ रहा है। कोई डिस्टर्ब न करें।

श्री मोहम्मद अकबर :-

क्र.	इकाई का नाम	एम.ओ.यू. का दिनांक	प्रस्तावित संयंत्र/उत्पाद एवं वार्षिक क्षमता	प्रस्तावित पूंजी निवेश करोड़ रू. में	रोजगार	एम.ओ.यू. निरस्तीकरण दिनांक	रिमार्क
5.	मे. गोयल	28.02.2020	इंटीग्रेटेड फूड	28.61	214	01.02.202	निवेशक के पत्र दिनांक

	जेनिथ एग्रो प्रायवेट लिमिटेड, रायपुर		चेन प्रोजेक्ट			1	26.12.2020 अनुसार भारत सरकार, खाद्य प्रसंस्करण मंत्रालय द्वारा उनकी परियोजना को निरस्त करने के फलस्वरूप एम.ओ.यू. निरस्तीकरण हेतु अनुरोध किया गया। तद्दुनसार दिनांक 01.02.2021 को एम.ओ.यू. निरस्त किया गया।
6.	मेसर्स स्काई एलायज एंड पावर प्रायवेट लिमिटेड, रायपुर	09.11.2020	स्पंज आयरन - 175000 टीपीए, केप्टिव पावर प्लांट - 20 मेगावाट, स्टील मेल्टिंग शाप - 150000 टी.पी.ए., रोलिंग मिल - 250000 टी.पी.ए.	300.00	400	01.02.2021	निवेशक का पत्र आवक दिनांक 13.01.2021 अनुसार प्रस्तावित एकीकृत इस्पात परियोजना को नवीन कंपनी गठित कर क्रियान्वित की जावेगी, अतएव एम.ओ.यू. निरस्तीकरण हेतु अनुरोध किया गया।
7.	मे. एस.के.एस. इस्पात एंड पावर लिमिटेड, मुंबई (873)	28.02.2020	स्पंज आयरन - 4 लाख टीपीए, केप्टिव पावर प्लांट - 52 मेगावाट, फेरो एलायज - 66000 टी.पी.ए., आयरन और पैलेट प्लांट - 6 लाख टी.पी.ए.	990.00	700	31.05.2021	निवेशक के अनुरोध पर एम.ओ.यू. आदेश क्रमांक 96 दिनांक 31.05.2021 द्वारा निरस्त किया गया
8.	मेसर्स एस.एन.ए. फन प्रायवेट लिमिटैड, बिलासपुर	15.12.2020	डी.आर.आई. प्लांट 210000टी.पी.ए., आयरन और बेनिफिकिकेशन - 200000 टी.पी.ए., प्लैट प्लांट - 1200000, इंडक्शन फर्नेस - एंड एस.एम.एस. विथ कास्टर - 180000 टी.पी.ए.,	470.67	471	31.05.2021	निवेशक के अनुरोध पर एम.ओ.यू. आदेश क्रमांक 97 दिनांक 31.05.2021 द्वारा निरस्त किया गया।

			रोलिंग मिल - 1 80000 टी.पी.ए., केप्टिव पावर प्लांट - 40 मेगावाट				
9.	मेसर्स पारस पावर एंड कोल बेनीफिसियेशन लिमिटेड, बिलासपुर	22.03.2021	स्पंज आयरन - 270000 एम.टी.पी.ए., केप्टिव पावर प्लांट - 65 मेगावाट, स्टल मेल्टिंग शाप8 - 270000 एम.टी.पी.ए., रोलिंग मिल - 270000 एम.टी.पी.ए.	481.00	393	11.05.2022	निवेशन के अनुरोध पर एम.ओ.यू. आदेश क्रमांक 210, दिनांक 11.05.2022 द्वारा निरस्त किया गया।

इस प्रकार कुल मिलाकर 9 इकाई पर किया गया।

अध्यक्ष महोदय :- श्रीमती इंदू बंजारे।

श्री अजय चंद्राकर :- अध्यक्ष महोदय, नीचे में दस्तखत (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- चंद्राकर जी। प्लीज। हो गया। बहुत हो गया।

<u>डॉ. भीमराव अम्बेडकर महाविद्यालय, पामगढ़ के स्वीकृत, कार्यरत एवं रिक्त पद</u>

[उच्च शिक्षा]

3. (*क्र. 1683) श्रीमती इंदू बंजारे : क्या उच्च शिक्षा मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- डॉ. भीमराव अम्बेड़कर महाविद्यालय, पामगढ़ में दिनांक 15 फरवरी, 2023 की स्थिति में प्राध्यापक, सहायक प्राध्यापक, अन्य स्टाफ के स्वीगकृत, कार्यरत एवं रिक्त पदों की जानकारी देवें।

उच्च शिक्षा मंत्री (श्री उमेश पटेल) : (क) डॉ. भीमराव अम्बेड़कर महाविद्यालय, पामगढ़ में दिनांक 15 फरवरी, 2023 की स्थिति में प्राध्यापक, सहायक प्राध्यापक, अन्य स्टाफ के स्वीकृत, कार्यरत एवं रिक्त पदों की जानकारी प्रपत्र पर संलग्न[2] है।

---

[2] परिशिष्ट “एक”

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्रीमती इंदू बंजारे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने माननीय मंत्री जी से जो प्रश्न पूछा था, वह डॉ. भीमराव अंबेडकर महाविद्यालय, पामगढ़ में कितने पद स्वीकृत एवं कितने पद रिक्त हैं? इसमें माननीय मंत्री जी ने स्वीकार किया है कि प्राचार्य और प्राध्यापक राजनीति शास्त्र, प्राध्यापक अंग्रेजी और लेब टेक्निशिन, लाइब्रेरियन नहीं हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्या महोदय, इसमें पूछने का कुल मिलकार एक ही विषय था। मैं मंत्री जी से फिर पूछना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय:- हो गया। श्रीमती इंदू बंजारे।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 444 करोड़ रूपये में 1 लाख 24 हजार 300 लोगों को रोजगार और इसमें आपने 7000 लोगों को 2200 रूपये मिले तथा 4549 का लक्ष्य प्राप्त कब तक करेगी, यह मंत्री जी बतायेंगे?

श्रीमती इंदू बंजारे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इन लोगों के 2 प्रश्न में एक घंटा निकल जाता है और नये सदस्यों को बोलने का अवसर नहीं मिल पाता। इन लोगों की राजनीति के कारण हम लोगों को समय नहीं मिल पाता है। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके मायम से निवेदन करती हूं कि पूरे सदस्यों को मौका मिलना चाहिए। (मेजों की थपथपाहट) क्योंकि हम लोग इतने अनुभवी नहीं हैं, इतने जानकार नहीं हैं, लेकिन हमें भी अपनी क्षेत्र की समस्याओं को रखने का अधिकार है तो हमें भी समय मिलनी चाहिए। हम लोग अपनी क्षेत्र की समस्याओं को रखने के लिए इतनी दूर से आते हैं और इन लोगों की राजनीतिक स्वार्थ के कारण हम लोगों को समय नहीं मिल पाता है। यह बहुत लज्जा की बात है।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, बोलिये। प्रश्न करिये न।

श्री उमेश पटेल :- बहुत कम समय है। सीधा प्रश्न पूछ लीजिये।

श्री इंदू बंजारे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने माननीय मंत्री महोदय जी से जो प्रश्न पूछा था उसमें उन्होंने स्वीकार किया है कि 11 पद स्वीकृत हैं, लेकिन 11 पद रिक्त हैं। तो मेरा आपके माध्यम से माननीय मंत्री महोदय जी से विशेष निवेदन है कि यह बच्चों के भविष्य का मामला है। इसे जल्द से जल्द रिक्त पदों को भर्ती किया जाए। साथ ही मेरा दूसरा प्रश्न है। चूंकि समय कम है। अध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से मेरा मंत्री महोदय से निवेदन है कि वहां बहुत बच्चे एम.एस.सी. के लिए इधर-उधर भटक रहे हैं। एम.एस.सी. का प्रारंभ हो जायेगा तो उनके भविष्य के लिए बहुत अच्छी बात होगी।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह जो पद रिक्त हैं, उसमें कार्रवाई चल रही है। उसमें बहुत जल्द पद भर लिये जायेंगे। वैसे अभी सहायक प्राध्यापक पद की भर्ती हुई है, वह इनके क्षेत्र में स्पेशल कई लोगों को भेजा गया है। माननीय सदस्य उनसे जरूर संतुष्ट होंगी और जो एम.एस.सी. का पद रिक्त है, उसमें सरकार विचार करेगी।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री इंदू बंजारे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से सहायक प्राध्यापक के बारे में बोली थी। मैं एक निवेदन भी करना चाहूंगी कि आपने पूर्व में जो 1384 पद का भर्ती किया था, उसमें कई ऐसे बहुत सारे पद हैं, जो वेटिंग लिस्ट में है। वह भी इंतजार कर रहे हैं। यदि इसको भी देख लेंगे तो ज्यादा अच्छा रहेगा।

श्री उमेश पटेल :- माननीय सदस्य, वह प्रक्रिया में है। जैसे प्रक्रिया के अनुरूप भर्ती ..।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्नकाल समाप्त ।

(प्रश्नकाल समाप्त)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

समय :

12:00 बजे

श्री कुलदीप सिंह जुनेजा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी नवरात्र चल रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी के सभी सदस्यों ने आज एक माता का, बहन का दिल दुखाया है ।

अध्यक्ष महोदय :- पत्रों का पटल पर रखा जाना ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा एक व्यवस्था का प्रश्न है ।

अध्यक्ष महोदय :- मैं इसके बाद सुनूंगा ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- नहीं-नहीं । माननीय अध्यक्ष महोदय, आप ले लीजिये ।

अध्यक्ष महोदय :- पहले मुख्यमंत्री जी को प्रस्तुत करने दीजिये । मैं उसके बाद सुन लूंगा । पत्रों का पटल पर रखा जाना । माननीय मुख्यमंत्री जी ।

समय

12.00 बजे

<u>पत्रों का पटल पर रखा जाना</u>

<u>(1) बजट अनुमान 2022-2023 के संदर्भ में प्रथम एवं द्वितीय तिमाही की आय तथा व्यय की प्रवृत्तियों की समीक्षा</u>

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं छत्तीसगढ़ राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजट प्रबंध अधिनियम, 2005 (क्रमांक 16 सन् 2005) की धारा 6 की उपधारा (1) की अपेक्षानुसार बजट अनुमान 2022-2023 के संदर्भ में प्रथम एवं द्वितीय तिमाही की आय तथा व्यय की प्रवृत्तियों की समीक्षा पटल पर रखता हूं ।

<u>(2) अधिसूचना क्रमांक 97/सी.एस.ई.आर.सी./2022, दिनांक 22 दिसम्बर, 2022 द्वारा अधिसूचित छत्तीसगढ़ राज्य विद्युत नियामक आयोग (नवीकरणीय क्रय प्रतिबद्धता एवं आर.ई.सी. पद्धति का क्रियान्वयन) (प्रथम संशोधन)विनियम, 2022</u>

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं विद्युत अधिनियम, 2003 (क्रमांक 36 सन् 2003) की धारा 182 की अपेक्षानुसार अधिसूचना क्रमांक 97/सी.एस.ई.आर.सी./2022, दिनांक 22 दिसम्बर, 2022 द्वारा अधिसूचित छत्तीसगढ़ राज्य विद्युत नियामक आयोग (नवीकरणीय क्रय प्रतिबद्धता एवं आर.ई.सी. पद्धति का क्रियान्वयन) (प्रथम संशोधन)विनियम, 2022 पटल पर रखता हूं ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

पृच्छा

श्री बृजमोहन अग्रवाल (रायपुर नगर दक्षिण) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रश्न यह है । चूंकि प्रश्नकाल में व्यवस्था का प्रश्न नहीं उठता है । माननीय सदस्य ने पूछा कि कितने एम.ओ.यू. निरस्त किये गये और उसके कारण क्या हैं ? यदि मंत्री जी उसमें लगभग 15-20 मिनट पढ़कर समय जाया करें तो मुझे लगता है, चूंकि आप भी नाराज होकर पढ़िए-पढ़िए, आप उनको पढ़वा रहे थे तो यह स्थिति अच्छी नहीं है । प्रश्नकाल में जितना प्रश्न पूछा जाये उतना ही जवाब मिले ।

अध्यक्ष महोदय :- मेरा इसमें कहना है, आपसे निवेदन है कि विधायकगण सिर्फ इतना लंबा ही प्रश्न पूछें । किसी जानकारी विशेष के लिये पूछें कि उसमें सदन का एक घंटे का उत्तर खराब न हो तो मैं अध्यक्ष होने के नाते प्रतिपक्ष से और पक्ष से दोनों से निवेदन करना चाहता हूं कि प्रश्न भी संतुलित रखें और उत्तर भी संतुलित रखें । धन्यवाद । (व्यवधान)

श्री कुलदीप सिंह जुनेजा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, क्या प्रश्नकाल में केवल 2-3 लोगों को ही बोलने का अधिकार है ?

समय :
12.02 बजे **(उपाध्यक्ष महोदय (श्री संतराम नेताम) पीठासीन हुए)**

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हम लोगों ने स्थगन प्रस्ताव दिया है । पूरे प्रदेश में कानून व्यवस्था की स्थिति जर्जर हो गयी है और छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में तो ऐसी स्थिति हो गयी है कि दिनदहाड़े हत्या की कोशिश, परिजनों ने थाना घेरा । लगातार एक्सीडेंट के माध्यम से वाहनों के चालान नहीं होने के कारण एक्सीडेंट हो रहे हैं । कल 12 बाईकों से कुछ नौजवान रायपुर शहर में ऐसा आतंक पैदा कर रहे हैं । हमारी गाड़ियों के सामने से भी इतनी तेज गति से कट मारते हुए और बम्बार्डिंग आवाज के साथ में गाड़ियों को ले जाते हैं और वही अपराधी होते हैं । आखिर पुलिस उनके ऊपर कार्यवाही क्यों नहीं कर पाती है ? हमारे कोरबा जिले में थाने के अंदर में एक पुलिस इंस्पेक्टर की हत्या हो जाती है, वह रात को 2 बजे तक ड्यूटी में रहता है । आखिर पूरे छत्तीसगढ़ में यह स्थितियां पैदा क्यों हो रही हैं ? आज नक्सल के मामले में तो हम कुछ कह नहीं सकते क्योंकि सरकार तो नक्सलवादियों की समर्थक बन गयी है, परसों सड़क बनाने वाली 11 गाड़ियों को वहां पर जला दिया गया । माँ सड़क पर तड़पती रही, पिता बेहोश सिसकता रहा । सड़क के किनारे ऐसा मार्मिक दृश्य कि एक 5 साल का बच्चा अपने माता-पिता के एक्सीडेंट के बाद सिसकता रहा और वहां पर पुलिस नहीं पहुंचती है, एक्सीडेंट हो रहे हैं । इतने महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा हो रही है तो थोड़ा मंत्रिगण,

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

मुख्यमंत्री जी चूंकि यह कानून व्यवस्था का मामला है ।

उपाध्यक्ष महोदय :- थोड़ा सा देख लीजियेगा ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, कानून व्यवस्था के मामले में लगातार इस सदन में हम बात को उठा रहे हैं । हम आपसे आग्रह कर रहे हैं कि आप चर्चा करवायें परंतु चर्चा नहीं हो रही है । पूरा छत्तीसगढ़ बेहाल है, बदहाल है, चाकू चल रहे हैं । ऐसी-ऐसी हत्याएं हो रही हैं । रायपुर में एक दुल्हा-दुल्हन शादी के आधे घंटे बाद उनकी हत्या हो गयी । आज तक उसके अपराधी नहीं पकड़े गये । पोस्टमार्टम रिपोर्ट नहीं आती है । 307 का जुर्म दर्ज होना चाहिए तो कहते हैं कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद करेंगे । 302 का जुर्म दर्ज होना चाहिए तो कहते हैं कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद करेंगे । जो थानेदारों की, एस.पी. की इनके द्वारा अपराधियों को संरक्षण देकर । चूंकि हम लोग लगातार उठाते रहे हैं अफीम, चरस, गांजा, स्मेक स्कूलों के पास में बिक रहा है । हमारी नयी पीढ़ी बर्बाद हो रही है । पूरे देश में जिस प्रकार के अपराध नहीं होते, वैसे अजीब अपराध अब छत्तीसगढ़ में होना शुरू हो गये हैं । भिलाई में गैंगवार, छत्तीसगढ़ में कभी गैंगवार नहीं होता था । 2 की हत्या हो गयी । 6 लाख के गांजे के साथ पकड़े गये । आखिर यह छत्तीसगढ़ में क्या हो रहा है ? चाकू से गोदकर हो गई । 6 लाख के गांजे के साथ पकड़े गए । आखिर छत्तीसगढ़ में क्या हो रहा है ? चाकू से गोदकर दो युवकों की हत्या । आखिर छत्तीसगढ़ में यह क्या हो रहा है ? आज छत्तीसगढ़ की कानून व्यवस्था बर्बाद हो गई है । लोगों का जीवन असुरक्षित हो गया है । चोरियों की तो इंतेहा हो गई है । यहां तक कि एक परिवार के बूढ़े मां-बाप को घर में घुसकर चाकू कर दिया गया ।

उपाध्यक्ष महोदय :- चालिए, लगभग लगभग आपकी बातें आ गई हैं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- चाकू की नोक पर राहगीरों से लूटपाट । ये सब बेखौफ हो रहा है । जेल के सामने चाकू चल रहा है ।

उपाध्यक्ष महोदय :- 2 मिनट में अपनी बात समाप्त करेंगे ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- राजधानी में चाकू मारकर मजदूर की हत्या

उपाध्यक्ष महोदय :- शून्यकाल में दो मिनट में अपनी बात कहें ।

श्री अमरजीत भगत :- शून्यकाल में भाषण हो रहा है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- राजधानी में 6 दिन बाद फिर से मर्डर । आखिर हम छत्तीसगढ़ को कहां ले जा रहे हैं ?

उपाध्यक्ष महोदय :- ठीक है सर, आपकी पूरी बात आ गई है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- राजधानी की युवती की हत्या, मारकर उड़ीसा के जंगल में फेंक दिया गया । इतनी अजीबो गरीब घटनाएं हो रही हैं । बच्चे नहीं बच रहे हैं, बुजुर्ग नहीं बच रहे हैं ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- उपाध्यक्ष महोदय, यह तो शून्यकाल में भाषण दे रहे हैं ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- इसको लेकर हमने स्थगन प्रस्ताव दिया है । विशेष रूप से राजधानी का बहुत बुरा हाल है । सरकार की नाक के नीचे, राजधानी जो कि सबसे ज्यादा सुरक्षित होना चाहिए । वह राजधानी सबसे ज्यादा अपराधों का गढ़ बन गई है । हम चाहेंगे कि इस स्थगन प्रस्ताव पर चर्चा कराएं ।

उपाध्यक्ष महोदय :- बिल्कुल । चलिए माननीय शर्मा साहब ।

श्री शिवरतन शर्मा (भाटापारा) :- माननीय उपाध्यक्ष जी, शांति का टापू छत्तीसगढ़ । इन साढ़े चार सालों में अपराध के गढ़ के रूप में परिवर्तित हो गया है। दुनिया में घटित होने वाला कोई ऐसा अपराध नहीं है जो हमारे प्रदेश की राजधानी और न्यायधानी में घटित न होता है । मुख्यमंत्री निवास के 100-200 मीटर के अंदर लूट और हत्या की घटनाएं होती हैं । माननीय मुख्यमंत्री जी के निर्वाचन क्षेत्र में सरेआम हत्या की घटना होती है । रायपुर शहर में चाकूबाजी की इतनी ज्यादा घटनाएं हो गई हैं कि लोग रायपुर शहर का नाम परिवर्तित करके चाकूपुर कहने लगे हैं । चाहे न्यायधानी हो, चाहे राजधानी हो । नशे का व्यापार बढ़ा है । माननीय मुख्यमंत्री जी के गृह जिले से महादेव एप का संचालन हो रहा है जो पूरे प्रदेश की नई पीढ़ी को बर्बाद करने में लगा हुआ है । जुआ, सट्टा सब प्रकार का नशा चाहे अफीम हो, हेरोइन हो, चरस हो सब प्रकार के नशे यहां बहुत आसानी से उपलब्ध हो रहे हैं । पूरे प्रदेश की कानून व्यवस्था की स्थिति समाप्त हो गई है । उपाध्यक्ष जी, सबसे ज्यादा घटनाएं घटित हो रही हैं तो दुर्ग जिले में घटित हो रही हैं । जहां से 5-5 मंत्री चुनकर आते हैं । माननीय मुख्यमंत्री जी के निर्वाचन क्षेत्र में घटनाएं घटित हो रही हैं । माननीय गृहमंत्री जी के निर्वाचन क्षेत्र में घटनाएं घटित हो रही हैं । नशे के चलते जहां परिवार में हिंसक घटनाएं हो रही हैं वहीं नशे के चलते लोग आत्महत्या के लिए प्रेरित हो रहे हैं । इस विषय में स्थगन दिया है उसको स्वीकार करके चर्चा कराएं ।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिए, शून्यकाल में भाषण जैसा नहीं बोला जाता । श्री धर्मजीत सिंह ।

श्री धर्मजीत सिंह (लोरमी) :- उपाध्यक्ष महोदय, पूरे प्रदेश में एकाएक अपराध बढ़ा हुआ है । सूदखोरों के आतंक से लोग आत्महत्या कर रहे हैं । हत्याएं हो रही हैं। शूटर बुलाए जा रहे हैं, शूटर गिरफ्तार नहीं हुए हैं । पुलिस के थानेदार की थाने के अंदर ही हत्या कर दी गई है, अपराधी गिरफ्तार नहीं हुए हैं । अब तो और ज्यादा इंतेहा हो गई है खालिस्तान का नारा लगाते हुए रायपुर शहर में लोग अमृतपाल के समर्थन में जुलूस निकाल रहे हैं । यहां पर खालिस्तान जैसे नासूर को पैदा करने की कोशिश हो रही है । मामले तो बहुत हैं, आप इस पर चर्चा कराएंगे तो सारे सदस्य तर्क रखेंगे कि सरकार कानून और व्यवस्था को संभाले । यहां तो अपराधियों के हौसले बुलंद हैं और छत्तीसगढ़ में अपराधियों को कुचलना बहुत जरूरी है । इसलिए इस पर चर्चा होनी चाहिए ।

उपाध्यक्ष महोदय :- ओके ।

श्री अजय चन्द्राकर (कुरूद) :- उपाध्यक्ष महोदय, मैं शून्यकाल में दो बातें कहूंगा । चूंकि

शून्यकाल के बाद बोलना चाहता था । माननीय धर्मजीत जी ने खालिस्तान का विषय उठाया । माननीय मुख्यमंत्री जी इस सदन में हैं, कानून व्यवस्था की हमारी सूचना को स्वीकार करना या न करना आपका विषय है, उस पर आप चर्चा के बाद निर्णय करेंगे । देश में चरम स्थिति में कोई विघटनकारी देश विरोधी घटनाएं घट रही थीं, तो भी छत्तीसगढ़ में कभी ऐसा जुलूस नहीं निकला । यह छत्तीसगढ़ के लिए अलार्मिंग है और मैं इसमें गृहमंत्री को नहीं, माननीय मुख्यमंत्री जी को स्वत: संज्ञान लेते हुए इस सदन में बयान देना चाहिए। यह बहुत गंभीर घटना है, समाज संयम का परिचय दें, भाईचारा बनाएं रखें और उसके लिए जो अधिकतम कार्रवाई हो सकती है, माननीय मुख्यमंत्री जी छत्तीसगढ़ प्रदेश की जनता को आश्वस्त करें कि हम विघटनकारियों के साथ नहीं हैं, देश की अखंडता, एकता हमारा सर्वोच्च विषय है।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिए, व्यवस्था दे रहा हूं।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अब सुन लीजिए। सबसे पहली बात मैं आपको बता देता हूं कि छत्तीसगढ़ में हो क्या रहा है ? छत्तीसगढ़ में अभ्यारण्य हो गया है। दुनिया में जितने प्रकार के अपराध होते हैं, वह अपराधी यहां क्यों आ रहे हैं ? जैसे, अंडरवर्ल्ड का सुटर छत्तीसगढ़ में पकड़ा गया। इन लोगों ने उस भाषण में नहीं कहा। साईबर ठगी, आठ पेपर में है, मैंने उसमें ट्वीट भी किया है। छत्तीसगढ़ में नकली नोट आ चुके हैं, उसके दर तय हैं, 50 हजार की गड्डी इतने में मिलेगी, 20 हजार की गड्डी इतने में मिलेगी, 10 हजार की गड्डी इतने में मिलेगी। नैतिकता में कितनी गिरावट है ? मुझको लज्जा आ रही है। शासन पक्ष को क्या महसूस होता है, यह मैं नहीं जानता। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, गंदी बात बोल रहा हूं। जिगोलो बनने के लिए, पुरूष सेक्स वर्कर, हिंदी में बोल देता हूं, छत्तीसगढ़ में उसके लिए भी आमंत्रण देकर ठगी हो रही है। माननीय मुख्यमंत्री जी बैठे हैं। मैंने यातायात की मृत्यु में 139 की सूचना दी है, हो सकता है कल आप लें। यहां आदमी अपराध, हत्या, एक्सीडेंट, नशे, मैं गाजर मूली बोल रहा हूं। कहीं पर भी हम घर से निकलेंगे तो आज यह स्थिति नहीं है कि अपराधी के कारण, एक्सीडेंट के कारण हम घर सुरक्षित पहुंचेंगे।

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यहां स्थगन पर चर्चा शुरू हो गयी है क्या, मैं आपके माध्यम से जानना चाहता हूं ?

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिए, बैठ जाईए। दो मिनट में समाप्त करिए।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, 40 प्रतिशत लोग अवसादग्रस्त हैं और सबसे ज्यादा नशे का सेवन इन पांच सालों में बढ़ा है। सिर्फ छत्तीसगढ़ में बढ़ा है।

उपाध्यक्ष महोदय :- चंद्राकर साहब, आपकी सभी बातें लगभग आ गयी है, मैं अपनी व्यवस्था दूं।

श्री अजय चंद्राकर :- यदि इस सदन में छत्तीसगढ़ के जीवन पर चर्चा नहीं होगी, जीवन के सुरक्षा पर चर्चा नहीं होगी तो किस पर होगी ? आप निर्णय लीजिए।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सभापति महोदय :- चलिए। आप दो मिनट में बोल दीजिए।

श्री धरमलाल कौशिक (बिल्हा) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ में अपराध का नशा, नशे के बाद जमीन के मामलों में जिस प्रकार से लगातार वृद्धि हो रही है, चाहे वह चाकू के माध्यम से हो, नशे के कारण हो, छोटी-छोटी बातों पर हत्याएं हो जाती है। मतलब कोई बड़ी घटना की संभावना नहीं है, चाकू चल जाती है। इसके पीछे जो कारण है, उस कारण में हम जाएंगे तो सब स्पष्ट दिखाई दे रहा है। हम लोग चाहते हैं कि अपराध रूके। वास्तव में कल की घटना कोई छोटी घटना नहीं है। खालिस्तान के पक्ष में यदि नारा लगाकर रैली निकल जाए, पुलिस के सी.बी.आई.,एल.आई.बी. को मालूम नहीं है, इनके खुफियातंत्र को मालूम नहीं है। आखिर पुलिस सोई हुई है, पुलिस कहा हैं ? एक बार में आ करके रैली निकल जाए और नारा लगाते पूरे शहर में चले जाए तो पुलिस कहां पर है ? दूसरी बात, आप लगातार देख रहे हैं कि अवैध गांजा की तस्करी हो रही है, अवैध शराब की तस्करी हो रही है। उसके बाद लगातार लूट, डकैती, हत्या की घटनाएं बढ़ती जा रही है, आम लोग सुरक्षित नहीं हैं। यदि कोई शादी में गया है, कोई कार्यक्रम में गया है, जब वापस आएंगे तो उनका घर देखेंगे खाली हो जाएगा। आखिर वे जितने चौकन्ने हैं, उतने चौकन्ने हमारे पुलिस क्यों नहीं है और अपराधी गिरफ्त में क्यों नहीं आ रहे हैं? उनका मनोबल क्यों बढ़ रहा है, जनता हतोत्साहित क्यों हो रही है ? इसलिए हमने स्थगन दिया है और यह स्थगन स्वीकार करेंगे तो हम इसमें विस्तार से चर्चा करेंगे।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिए, नेता प्रतिपक्ष जी।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष जी।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय संसदीय कार्य मंत्री जी, एक चीज आपकी ध्यान में लाता हूं। हमारे विधायक क्लब बने हैं, उसमें गोली चली है। आप तीन साल में कुछ नहीं कर पाए। एक क्लब में एक टिनेजर ने गोली चलाई तो आपने मुकदमा कायम करने के बजाय उसको पुलिस अभिरक्षा में बाहर भेजा। थोड़ी सी हिम्मत है तो जहां विधायक जाते थे, वहां गोली चली, उस स्थान का क्या हुआ, नई बात को छोड़ दीजिए। क्विंन्स क्लब है।

श्री रविन्द्र चौबे :- चंद्राकर जी, क्विन्स क्लब में गोली चली है तो उधर पूछिये। आप इधर क्यों पूछ रहे हैं ? हर काम में संसदीय कार्य मंत्री जी। (हंसी)

श्री अजय चंद्राकर :- संसदीय कार्य मंत्री जी, उनको किसका संरक्षण प्राप्त है ? जो टिन ऐजर था, जिसको आपने पुलिस अभिरक्षा में छत्तीसगढ़ के बाहर छोड़ा है तो उसको आपका संरक्षण प्राप्त था, इसलिए उस पर कार्रवाई नहीं हो रही है। चूंकि आप संसदीय कार्य मंत्री हैं इसलिए आप सुनेंगे।

उपाध्यक्ष महोदय :- आप बैठ जाइये। क्या आप कुछ बोल रहे हैं ? आप बोलिये।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप रायपुर जिले के प्रभारी मंत्री हैं। रायपुर जिले में सबसे ज्यादा अपराध हो रहे हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

उपाध्यक्ष महोदय :- संसदीय मंत्री जी बोल रहे हैं। प्लीज, आप सुनिये।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप अपराधियों को छोड़वाने का काम करते हैं। आपके प्रभार जिले में खालिस्तानी जुलूस निकालते हैं, देश विरोधी नारे लगाते हैं। क्या आपने एस.पी. को बुलाकर उनसे पूछा? क्या आपके पास इंटेलीजेंस नहीं था कि 500 लोग देश विरोध नारे लगाते हुए निकल जाएंगे और किसी राजनीतिक दल के कार्यालय तक पहुंच जाएंगे।

श्री रविन्द्र चौबे :- आपको क्या लगता है कि सरकार ने इसके बारे में नहीं पूछा होगा ? क्या माननीय मुख्यमंत्री जी ने इसकी जानकारी नहीं ली होगी, बैठक नहीं ली होगी ? पूरा नियंत्रण करने के निर्देश दिये हैं। माननीय मुख्यमंत्री जी लगातार बैठक कर रहे हैं। क्या यहां पर हर जानकारी देना जरूरी है ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- यह मुख्यमंत्री जी की जानकारी में नहीं था। नहीं था। मुख्यमंत्री जी से पत्रकारों ने पूछा कि खालिस्तानियों का जुलूस निकला है तो मुख्यमंत्री जी ने कहा कि मुझे मालूम नहीं है। ऐसा है।

श्री धरमलाल कौशिक :- जब इतनी जानकारी थी तो जुलूस कैसे निकल गया ? ऐसे में तो जुलूस निकलना ही नहीं था। (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी बोल रहे हैं, आप लोग बैठ जाइये। (व्यवधान)

श्री रविन्द्र चौबे :- लगातार सुरक्षा हो रही है। (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- सुन लीजिए। मैंने आप लोगों की बात सुन ली है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- कल मुख्यमंत्री जी पत्रकारों से मिलने गये थे और उसके बाद मैं भी गया था। जब पत्रकारों ने मुख्यमंत्री जी से पूछा कि खालीस्तानियों का जुलूस निकला है तो मुख्यमंत्री जी ने कहा कि मुझे पता नहीं है। ऐसे तो हमारे प्रदेश के मुख्यमंत्री हैं। ऐसा इंटेलीजेंस है कि उनको पता नहीं है। (व्यवधान)

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जब यह कई दिनों से चल रहा है तो क्या भारत सरकार सोयी है? गृहमंत्री जी यहां आने वाले थे, क्या वह सोये हैं? (व्यवधान)

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय मुख्यमंत्री जी लगातार बैठक कर रहे हैं। (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- इनको भी पता नहीं है। मंत्री जी को भी पता नहीं है। (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- उनकी पुलिस के इंटेलीजेंस को पता नहीं है। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि मैं इसके बारे में पता करता हूं।

श्री रविन्द्र चौबे :- असत्य कथन। (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- असत्य नहीं, यह सही कथन है। उनके असत्य में भी सही कथन है।

उपाध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी, क्या आप कुछ बोल रहे हैं?

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यदि आपको पता था तो क्या आपके संरक्षण में वह जुलूस निकला है? यदि आपको पता था तो क्या पुलिस के संरक्षण में वह जुलूस निकला? (व्यवधान)

श्री रविन्द्र चौबे :- बिल्कुल चला। (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, कहीं कोई जुलूस नहीं निकला है। (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- तो फिर जुलुस कैसे निकला?

श्री रविन्द्र चौबे :- उसी को तो नियंत्रित करने के लिए...। (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- तेलीबांधी चौक में उपस्थित होकर खालिस्तानी नारे लगा रहे थे। क्या आपके पुलिस को इतनी भी जानकारी नहीं थी?

उपाध्यक्ष महोदय :- कौशिक जी, आप अपनी बात रख चुके हैं। आपकी बात आ गई है। मैं 2-3 लोगों की बात सुन लेता हूं। (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- क्या पैसे देंगे तो क्या उसको जुलूस बोलेंगे? (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- यदि जानकारी तो क्या आपके संरक्षण में जुलूस निकला? (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- यदि आपकी प्रशासनिक व्यवस्था ऐसी होगी। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आप सुन लें, हमारा आपसे आग्रह है कि हमारी बात सुनने के बाद कम से कम देश विरोधी खालिस्तानियों के द्वारा यहां पर जो जुलूस निकाला गया और भय पैदा किया उसके बारे में मुख्यमंत्री जी का वक्तव्य आना चाहिए कि वह राष्ट्रभक्त हैं और क्या वह देश विरोधियों को सबके सिखाएंगे?

उपाध्यक्ष महोदय :- अब मंत्री जी कुछ कह रहे हैं।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपने कह दिया कि यदि किसी क्लब में गोली चली तो उसके लिए संसदीय कार्य मंत्री जिम्मेदार हैं।

श्री अजय चंद्राकर :- जो भी घटना घटेगी, उसके लिए आप जिम्मेदार हैं।

श्री रविन्द्र चौबे :- दूसरा, लंदन में हमारे दूतावास के सामने जिस तरीके से प्रदर्शन किया गया। (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- मंत्री जी, आप छत्तीसगढ़ की बात कीजिए। आपका नाम मिश्री भैया है आप जलेबी जैसे मत कीजिए। आप छत्तीसगढ़ की बात कीजिए। ऐसे नहीं चलेगा। (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- शर्मा जी, आप मंत्री जी को बोलने दीजिए।

श्री रविन्द्र चौबे :- आप मुझे बोलने दीजिए।

उपाध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी को बोलने दीजिए।

श्री अजय चंद्राकर :- आप लंदन के प्रभारी नहीं हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री शिवरतन शर्मा :- आप लंदन के प्रभारी मंत्री नहीं हैं आप रायपुर जिले के प्रभारी मंत्री हैं। (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- जब सुनने की बारी आती है तो आप लोगों में सुनने का साहस नहीं है। (व्यवधान)

श्रीमती संगीत सिन्हा :- जब मंत्री जी बोल रहे हैं तो आप थोड़ा सुन तो लीजिए। (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- लंदन में भारत के दूतावास से सुरक्षा कैसे हटी और वहां से झण्डा कैसे उतरा ? (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय संसदीय कार्यमंत्री जी, यहां छत्तीसगढ़ की बात हो रही है लंदन की बात नहीं हो रही है। यह गंभीर मामला है। आप लंदन की बात कर रहे हैं। (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- बात होगी। (व्यवधान)

डॉ. रश्मि आशिष सिंह :- अच्छा, आपके काल में...। (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- मैं व्यवस्था दूंगा। (व्यवधान)

डॉ. रश्मि आशिष सिंह :- हिंदुस्तान में खालिस्तानी फिर से जिंदा हो रहे हैं। हिंदुस्तान में खलिस्तानी फिर से ज्यादा हो रहे हैं और यह हिंदुस्तान की बात करते हैं। (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- बांधी जी, आप बोलिये। आप रूक जाइये। (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आप इनको बोलिये। यह क्या तरीका है?

उपाध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी, नहीं तो फिर मैं आगे बढ़ाऊंगा।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- सब तरफ की चर्चा होगी। केवल भाटापारा की चर्चा नहीं होगी। पूरे देश की चर्चा होगी। (व्यवधान)

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपसे आग्रह है कि आप बोलने का वातावरण बना दीजिए ताकि हम बोल सके।

उपाध्यक्ष महोदय :- आप लोग एक-एक करके दो-दो मिनट में अपनी बात समाप्त कीजिए।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया है और मेरा नाम लेकर पुकारा है इसलिए मैं बोल रहा हूं।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, आप बोलिये।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं कहीं बाहर की बात नहीं कह रहा हूं। आपने कह दिया कि यहां जूलूस निकाला गया तो आप उसके लिए आप दोषी हैं। लंदन में हमारे खिलाफ हो रहा है तो उसके लिए कौन दोषी हैं ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- लंदन दोषी है। लंदन की सुरक्षा का दोष है। हम दोषी नहीं हैं। हम यहां पर लंदन की बात नहीं करते हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

डॉ. रश्मि आशिष सिंह :- नहीं, हिंदुस्तान में भी हुआ है। (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- यह विधान सभा हिंदुस्तान और छत्तीसगढ़ के लिए है। (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- [xx] दोषी हैं। (व्यवधान)

श्री रविन्द्र चौबे :- क्या हम [xx] और [xx] के ऊपर आरोप लगा रहे हैं? (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- पूरे देश के लिए है। (व्यवधान)

डॉ. रश्मि आशिष सिंह :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जो घटना पंजाब में हुई थी, उसके परिप्रेक्ष्य में रायपुर में हुई है। (व्यवधान)

श्री रविन्द्र चौबे :- हम प्रधानमंत्री के उपर आरोप लगा रहे हैं क्या, केन्द्रीय गृहमंत्री के ऊपर आरोप लगा रहे हैं क्या ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- यह विधान सभा छत्तीसगढ़ के लिए है, यह विधान सभा हिन्दुस्तान और पूरे प्रदेश के लिए है । (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- उपाध्यक्ष महोदय, पूरे देश के लिए है, ।

डा. रश्मि आशिष सिंह :- जो घटना पंजाब में हुई थी, उसके परिप्रेक्ष्य में पूरे रायपुर में हुआ है । (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- किस कारण से [xx] का नाम ले रहे हैं । छत्तीसगढ़ में घटना हो रही है तो [xx] दोषी कैसे हो गए । (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- आप लोग बैठिए । संसदीय कार्यमंत्री की बात पूरी होने दीजिए । (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अगर देश विरोधी ताकत कहीं सिर उठा रहा है तो प्रधानमंत्री [xx] की नाकामयाबी है । (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- एक बार संसदीय कार्यमंत्री जी की बात पूरी होने दीजिए।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय शिवरतन जी, आप गलतफहमी मत पालिए । [xx] हिन्दुस्तान के प्रधानमंत्री हैं, वे हमारे भी प्रधानमंत्री हैं, हम उनका सम्मान करते हैं । हमने उनका नाम नहीं लिया ।

श्री शिवरतन शर्मा :- आपके पीछे शिव डहरिया जी ने लिया ।

उपाध्यक्ष महोदय :- शर्मा जी, मंत्री जी की बात आने दीजिए, उनकी बात पूरी होने दीजिए, उसके बाद आप बोलिएगा ।

श्री शिवरतन शर्मा :- शिव डहरिया जी ने नाम लिया है इसलिए हमने उसको विलोपित करने की बात की है । (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- आप लोग नहीं सुनेंगे तो कैसे काम चलेगा ।

श्री शिवरतन शर्मा :- डहरिया जी ने तीन बार [xx] का नाम लिया है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- हमारा आदमी भी गलत करता है तो उसको भी सजा दी जाती है । मैंने नाम लिया है, जिम्मेदारी से नाम लिया है ।

उपाध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी, आप संसदीय कार्यमंत्री जी की बात होने दीजिए, उनकी बात आनी चाहिए ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- उपाध्यक्ष महोदय, कल खलिस्तानियों के द्वारा रायपुर में जुलूस निकाला गया, देश विरोधी नारे लगाए गए, क्या उसके बारे में संसदीय कार्यमंत्री जी वक्तव्य दे रहे हैं ? (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- आप एक बार सुन तो लीजिए कि वे क्या बोल रहे हैं ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- उसके बारे में वे सरकार की तरफ वे वक्तव्य दें ।

श्री रविन्द्र चौबे :- अभी आपने कहा कि संसदीय कार्यमंत्री दोषी हैं । आपने वक्तव्य की मांग मुझसे तो नहीं की । आपने कहा कि संसदीय कार्यमंत्री दोषी हैं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप लोगों की सामूहिक जिम्मेदारी है, आप वक्तव्य दे दो ।

उपाध्यक्ष महोदय :- आपने टोका इसलिए वे जवाब दे रहे हैं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप वक्तव्य दे दो ।

श्री रविन्द्र चौबे :- उपाध्यक्ष महोदय, देश विरोधी गतिविधियों में कोई भी संलग्न रहे, कहीं भी संलग्न रहे, हम उसको विरोध करेंगे । जहां तक आपने कहा, माननीय मुख्यमंत्री जी सतत् मानीटरिंग कर रहे हैं, लगातार बैठकें कर रहे हैं, सक्षम निर्देश जारी कर रहे हैं । छत्तीसगढ़ में इस प्रकार से देश विरोधी गतिविधियों में संलग्न किसी को सिर उठाने नहीं दिया जाएगा । यह केवल राजनीतिक बात करने के लिए इस प्रकार से बात करते हैं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- क्या बात करते हो ? जुलूस निकालना तो राजनीति है। फिर आप जुलूस निकलवाकर राजनीति करवा रहे हैं ।

श्री कुलदीप जुनेजा :- मैं जुलूस में था । कोई देश विरोधी नारा वहां पर किसी ने नहीं लगाया । (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- जब-जब केन्द्र में कांग्रेस की सरकार रहती है तो देश पूरी तरह से सुरक्षित रहता है । भड़काने का काम आप लोग करते हैं । (व्यवधान)

श्री कुलदीप जुनेजा :- जो अमृतपाल है, उसके लिखाफ नारा लगाया गया था । किसी ने भी देश विरोधी नारा नहीं लगाया है । आप लोग गलत और भ्रामक बात कर रहे हो । किसी ने भी देश विरोधी नारा नहीं लगाया है । कोई भी समाज का व्यक्ति हो या कोई भी व्यक्ति हो, अगर वह देश विरोधी नारा

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

लगाता है तो मुख्यमंत्री जी उसको नहीं बक्शेंगे, उसके ऊपर कड़ी से कड़ी कार्रवाई की जाएगी । (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- आप लोग बैठ जाईए ।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी (मस्तूरी) :- उपाध्यक्ष महोदय, आपसे आग्रह है कि कानून व्यवस्था जो है, आप भी सदस्यों की भावनाओं से आहत हैं कि कितने वीभत्स तरीके से, कितने देशद्रोही तरीके से आंकड़े आ रहे हैं । यह छत्तीसगढ़ की तासीर के अनुरूप नहीं है और जिस तरीके से प्रतिदिन घटनाएं बढ़ रही हैं, चाहे उस घटना का उल्लेख कर लीजिए, आईपीसी एक्ट में या एनसीबी में छत्तीसगढ़ की हमारी स्थिति क्या है? इस एक, दो महीने के अंदर तिथिवार छत्तीसगढ़ में क्या-क्या घटनाएं घटी है, उसे हम आपके समक्ष सदन में प्रस्तुत करना चाहते हैं । हमने उसमें स्थगन लाया है, ताकि आप स्वीकार करें । आप एक भी स्थगन स्वीकार करिए, यह महत्वपूर्ण स्थगन है । आपसे आग्रह है कि आप स्वीकार करिए ।

उपाध्यक्ष महोदय :- ठीक है, मैं व्यवस्था दे रहा हूं ।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू (धमतरी) :- उपाध्यक्ष महोदय, इस प्रदेश में कानून व्यवस्था है या नहीं ? इस प्रदेश में लगातार घटनाएं हो रही हैं और अजीबोगरीब घटनाएं हो रही हैं । सत्तापक्ष वाले तो मजाक में लेते हैं, ये अपने आप को समझते क्या हैं ? हर चीजों को मजाक में लेते हैं । इतने अपराध हो रहे हैं, बच्चियों के साथ दुष्कर्म हो रहे हैं, ये तो सबको मजाक में ले रहे हैं । ये लोग अहंकार में हैं कि हम सत्ता में हैं । यही अहंकार इनको खाएगा । सरकार के संरक्षण में अपराधियों के हौसले इतने बुलंद हैं कि थाने में जाकर टी.आई. को मारा जा रहा है, सरकारी अस्पताल में घुसकर डॉक्टरों को मारा जा रहा है । अब तो टी.आई. डरता है कि रिपोर्ट लिखूं कि नहीं लिखूं ? इतने बड़े होली त्यौहार में एस.पी., एडिश्नल एस.पी., टी.आई. फोन बंद करके रखते हैं । ऐसे समय में यदि हम जाएं तो कहां जाएं, आम जनता जाए तो कहां जाएं ? यदि इनको सरकारी नम्बर मिला है तो सरकारी नम्बर का उपयोग करें, अन्यथा सरकारी नम्बर इनसे वापिस लिया जाये ।

श्री रजनीश कुमार सिंह (बेलतरा) :- उपाध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ में पिछले चार सालों को छोड़ दें, नेशनल क्राईम ब्यूरों के हिसाब से पिछले तीन-चार महीनों का आंकड़ा देखें तो चाहे हत्या हो, चाहे अनुसूचित जाति, जनजाति के साथ हो, चाहे अपहरण की घटना हो, वह इतना अधिक हो रहा है कि यदि रोज पेपर निकालें तो खाली इस तरह की घटनाओं को छोड़कर दूसरा कोई समाचार नहीं रहता । छत्तीसगढ़ में प्रेस में, मीडिया में, सोशल मीडिया में आने लगा है कि अब छत्तीसगढ़ में भी योगी मॉडल लाना चाहिए । अपराधियों के हौसले इतने बड़े चुके हैं, मैं कहां-कहां की बात नहीं कर रहा हूं माननीय मंत्री जी, यह सच है। आप स्वीकार करें या ना करें। लेकिन इतने गंभीर वारदात हो रहे हैं, जो छत्तीसगढ़ में पहले कभी नहीं हुआ। जो छत्तीसगढ़ मे कभी नहीं हुआ है, इस तरह के अपराध हो रहे हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इस विषय में स्थगन दिया हुआ है। आपसे आग्रह है कि आप सब काम को रोककर इस पर चर्चा करायें, इसमें और बहुत सारे तथ्य आयेंगे।

श्री पुन्नूलाल मोहले (मुंगेली) :- माननीय उपाध्यक्ष जी, छत्तीसगढ़ में कानून व्यवस्था बिगड़ चुकी है। कानून व्यवस्था बनाये रखने हेतु कार्यवाही करने में अक्षम है। जितनी घटनाएं घटी हैं, वह दिनांकवार दिया है। घटनाओं से लोगों में असंतोष है। इसलिए स्थगन पर चर्चा कराई जाये।

डॉ. रमन सिंह (राजनंदगांव) :- अध्यक्ष महोदय, कभी शांति का टापू कहलाने वाला छत्तीसगढ़, अपराधगढ़ में बदल चुका है। जिस प्रकार हत्याएं, लूट, बलात्कार ना केवल राजधानी मुख्यालय में, बिलासपुर-दुर्ग मुख्यालय में घटनाएं, हत्याएं हो रही हैं, उसके पीछे शराबलॉबी और अपराध करने वाले लोगों का गिरोह है। इनको पैसा कहां से मिल रहा है, फण्डिग कहां से आ रहा है, ? शराब के अवैध कमाई से इस प्रकार के अपरध बढ़े हैं। एन.सी.आर.बी. की जो रिपोर्ट आ रही है, उस रिपोर्ट के अनुसार छत्तीसगढ़ में 2021 में ही 1 लाख 11 हजार आपराधिक मामले दर्ज किए गए। एन.सी.आर.बी. report against child I.P.C.. के तहत special and local law के तहत 2021 में 6 हजार मामले दर्ज किए गए। उपाध्यक्ष महोदय, आश्चर्य होता है जब एन.सी.आर.बी. की रिपोर्ट आती है और इस रिपोर्ट में पिछले एक साल में छत्तीसगढ़ में 1,716 बलात्कार की घटनाएं, गैंगरेप की 60 घटनाएं होती हैं, यह छत्तीसगढ़ की हालत है। यह छत्तीसगढ़ का नक्शा है। राजधनी में इस साल 61 से ज्यादा मर्डर, 149 से ज्यादा रेप और 398 से ज्यादा लोगों का अपहरण हो चुके हैं। राजधानी की हालत ये है कि कानून व्यवस्था की स्थिति पूरी चरमरा चुकी है, जर्जर हो चुकी है। पूरे छत्तीसगढ़ मे कानून व्यवस्था की वही स्थिति है। क्योंकि यदि एस.पी. की पोस्टिंग में मापदण्ड बदल जाता है, गुणवत्ता के आधार पर पोस्टिंग नहीं किया जाता है, जब अधिकारियों को ताश के पत्ते की तरह फेटा जाता है, उनको फिक्स टेन्योर नहीं दिया जाता, अधिकारियों को काम करने के लिए समय नहीं दिया जाता और छत्तीसगढ़ में अधिकारियों को जाने के लिए मापदण्ड बने हैं, वह शर्मनाक करने वाली है। इस स्थिति में बदलाव के लिए स्थगन दिया गया है। स्थगन पर पूरी चर्चा होनी चाहिए।

नेता प्रतिपक्ष (श्री नारायण चंदेल) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है कि जब से छत्तीसगढ़ में आपकी सरकार बनी है, कोरबा जिले के बांगों थाना, जहां बांगो डेम है, वहां पर थाना है, वहां पिछले दिनों, एक सप्ताह पहले 12 बजे दिन तक वह ए.एस.आई. थाने में था, बाद में उसका मृत शरीर संदिग्ध परिस्थितियों में पाया गया। पूरा थाना बंद हो गया। गांव के लोगों में दहशत का वातावरण था, आसपास के मार्केट बंद हो गए। उधर लोग गांव से पलायन करना शुरू कर दिए। ऐसी परिस्थिति छत्तीसगढ़ में पहली बार बनी है। क्या मुख्यमंत्री जी, गृह मंत्री जी ने संज्ञान लिया ? इसके पीछे कौन है ? कैसे वारदात हुई ? जब थाना सुरक्षित नहीं है, तो छत्तीसगढ़ कैसे सुरक्षित होगा ?

माननीय उपाध्यक्ष जी, यहां की आई.बी., एल.आई.बी. यहां का गुप्तचर विभाग क्या कर रहा था ? दिन में, रात में नहीं, दिन में राजधानी रायपुर में देश विरोधी नारे लगाये जाते हैं। खालिस्तानी समर्थक जुलूस निकालते हैं। पुलिस और प्रशासन मौन होकर देखते रहती है। क्या उनकी गिरफ्तारी हुई है ? क्या उन पर कार्यवाही हुई है ? यह बड़ी विचित्र बात है। इस प्रकार से छत्तीसगढ़ संचालित हो रहा है।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, रोज नित नई किस्म की घटनाएं घटित हो रही हैं। छत्तीसगढ़ अपराधियों का पनाह स्थल हो गया है। यहां पर बाहर से लोग आकर अपराध को अंजाम देकर अपने प्रदेशों को पलायन कर रहे हैं। आप अपराधी यहां पर सुरक्षित महसूस करते हैं। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हमारे सारे साथियों ने सिलसिलेवार जिक्र किया है। कानून और व्यवस्था सरकार की पहली जिम्मेदारी होती है, पहली प्राथमिकता होती है। जब यहां का आम आवाम सुरक्षित नहीं है, यहां के लोग सुरक्षित नहीं है, ऐसी सरकार पर भी [xx] है । यह सरकार की प्राथमिक जिम्मेदारी है, इसलिये माननीय उपाध्यक्ष महोदय, कानून और व्यवस्था को लेकर अपराधियों ने छत्तीसगढ़ को चुनौती दी है कि हम रोज नये नित्य किस्म के अपराध करेंगे, लेकिन आज भी पुलिस और प्रशासन मौन है । हम पंजाब में सुन रहे हैं, खालीस्तानी समर्थक थाने से छुड़ाकर अपराधी को ले गये, लेकिन रायपुर में जुलूस कैसे निकाल लिये ? कैसे एकत्रित हो गये ? यह गंभीर विषय है, इस गंभीर विषय पर भारतीय जनता पार्टी ने स्थगन प्रस्ताव दिया है, हमारा आपसे निवेदन है, सदन की कार्यवाही को रोक कर इस महत्वपूर्ण प्रस्ताव पर चर्चा करायें ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- उपाध्यक्ष जी, छत्तीसगढ़ में एक नवाचार आयोग बनाया गया है, उस नवाचार आयोग में नये-नये तरीके से अपराध कैसे किये जायेंगे, यह सिखाया जायेगा क्या ?

उपाध्यक्ष महोदय :- मैंने इस बात को सुन लिया है । मैं व्यवस्था दे रहा हूँ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- इसके ऊपर में चर्चा करवायें । माननीय मुख्यमंत्री जी इसके ऊपर में जवाब दें ।

उपाध्यक्ष महोदय :- मैं व्यवस्था दे रहा हूँ, आप बैठिये । प्रदेश में बिगड़ती कानून व्यवस्था के संबंध में माननीय नेता प्रतिपक्ष श्री नारायण चंदेल और अन्य सदस्यों द्वारा प्रस्तुत स्थगन प्रस्ताव एवं शून्यकाल में माननीय प्रतिपक्ष के सदस्यों के द्वारा व्यक्त विचारों को सुनने के पश्चात् मैंने प्राप्त स्थगन प्रस्ताव विचारोपर्यन्त अग्राह्य कर दिया है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष जी, ऐसा नहीं चलेगा । खालीस्तानियों के जुलूस के मामले में देश विरोधी ..(व्यवधान) छत्तीसगढ़ अपराध का गढ़ बन रहा है..(व्यवधान) मुख्यमंत्री जी का बयान आना चाहिये ..(व्यवधान) छत्तीसगढ़ में भी खालीस्तानी समर्थक आ गये...(व्यवधान) मुख्यमंत्री जी का जवाब आना चाहिये ? (व्यवधान)

नेता प्रतिपक्ष (श्री नारायण चंदेल) :- इस पर बयान आना चाहिये ...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- अब नियम 138 (1) के अधीन ध्यानाकर्षण की सूचनायें लूंगा । सभा की कार्यवाही 5 मिनट के लिये स्थगित ।

(12.33 बजे से 12.45 बजे तक कार्यवाही स्थगित रही)

समय :
12.45 बजे **(उपाध्यक्ष महोदय (श्री सन्तराम नेताम)पीठासीन हुए)**

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, प्रदेश में पहली बार खालीस्तान का जुलूस निकला।

श्री कुलदीप जुनेजा :- उपाध्यक्ष महोदय, कोई खालीस्तान का जुलूस नहीं निकला है। यह गलत बात बोल रहे हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- छत्तीसगढ़ में ऐसी अफवाहों वाली घटना नहीं घटी है। वस्तुस्थिति क्या है ?

श्री कुलदीप जुनेजा :- अमृतपाल के खिलाफ में जुलूस निकला है। यह सदन के अंदर में गलत बात कर रहे हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय मुख्यमंत्री जी सदन में है, विधान सभा के अंदर है। इस बारे में उनको बयान देना चाहिए।

श्री कुलदीप जुनेजा :- उन्होंने वहां पर जुलूस में कहा है कि जो लोग उनके निर्देश बोर्ड में खड़े थे, पुलिस ने उनको गिरफ्तार किया है, उनके ऊपर कार्रवाई न हो।

श्री अजय चन्द्राकर :- छत्तीसगढ़ में ऐसी अलगाववादी घटना कभी नहीं घटी है। छत्तीसगढ़ सामाजिक समरसता का टापू रहा है।

श्री कुलदीप जुनेजा :- उन्होंने अमृतपाल के खिलाफ जुलूस निकाला था। (व्यवधान) रायपुर शहर में कोई जुलूस नहीं निकला है। यह गलत बात है।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, मैं ध्यानाकर्षण लूंगा।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हम लोगों ने बहुत गंभीर विषय पर स्थगन लाया है। यहां पर माननीय मुख्यमंत्री और माननीय गृहमंत्री दोनों उपस्थित है।

श्री अमरजीत भगत :- चन्द्राकर जी, यह अमृतपाल किसके शासन काल में पैदा हुआ है ? यह किसकी पैदाइश है।

श्री नारायण चंदेल :- उनका इस विषय पर बयान आना चाहिए। पूरे प्रदेश की जनता इस सदन की तरफ देख रही है कि इस विषय पर सरकार का क्या वक्तव्य आता है।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अमरजीत भगत :- उसको पालपोश कर किसने बड़ा किया है ? जब तक केंद्र में हमारी सरकार थी, कभी कोई इस प्रकार का खालिस्तानी समर्थन सिर नहीं उठाया है।

श्री कुलदीप जुनेजा :- उपाध्यक्ष महोदय, आप सदन के अंदर में गलत बात कर रहे हैं। आप सदन के अंदर क्यों डर का माहौल पैदा करना चाहते हैं ? (व्यवधान)

श्री नारायण चंदेल :- हमारा आपसे आग्रह है कि आप आसंदी से निर्देशित करें..।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हो सकता है कि यदि ऐसी स्थिति होती तो .. (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- माननीय संसदीय कार्यमंत्री कुछ बोल रहे हैं। (व्यवधान)

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- यह अचानक कहां से आ गया ? (व्यवधान)

श्री कुलदीप जुनेजा :- उपाध्यक्ष महोदय, गलत जानकारी दे रहे हैं। आप इसको विलोपित करवाईये।

श्री विकास उपाध्याय :- (व्यवधान) आप इस विषय को दूसरी दिशा में ले जाना चाहते हैं।

उपाध्यक्ष महोदय :- माननीय संसदीय कार्यमंत्री जी, आप कुछ बोल रहे हैं क्या ?

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- इसको किसने पाला ?

श्री कुलदीप जुनेजा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, खालिस्तान के समर्थन में जुलूस नहीं निकाला गया है। आप इनके कथन को विलोपित करवाईये।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, माननीय कुलदीप जी जो भी बोल रहे हैं कि जुलूस निकालने वाले अमृतपाल के विरोध में थे, वह खालिस्तानी समर्थक नहीं थे तो सरकार का वक्तव्य आ जाये।

श्री अमरजीत भगत :- एक झूठा श्रेय लेने के लिये, एक वाहवाही लेने के लिये, (व्यवधान) लेने के लिये इस प्रकार का स्टेटमेंट और इस प्रकार का मुद्दा उठाते हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- प्रदेश की जनता में जो भय का वातावरण है।

श्री कुलदीप जुनेजा :- एक मिनट, चौबे भैया बोल रहे हैं।

उपाध्यक्ष महोदय :- हां, मंत्री जी कुछ बोल रहे हैं।

श्री रविन्द्र चौबे :- उपाध्यक्ष महोदय,..।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- कुछ खालिस्तानी समर्थकों ने जुलूस निकाला। यदि वह खालिस्तानी समर्थक नहीं थे, यदि वे अमृतपाल के विरोधी थे तो सरकार का वक्तव्य आ जाये।

उपाध्यक्ष महोदय :- माननीय संसदीय कार्यमंत्री जी बोल रहे हैं। बृजमोहन जी आप सुन तो लीजिये।

श्री रविन्द्र चौबे :- उपाध्यक्ष महोदय, अब सुनोगे तब तो..।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- सरकार बता दें कि वास्तव में छत्तीसगढ़ में जो भय का वातावरण निर्मित हुआ है, खालिस्तानी समर्थकों ने यहां पर जुलूस निकाला है, उस भय के वातावरण को दूर करने के लिये मुख्यमंत्री जी का वक्तव्य आ जाये।

उपाध्यक्ष महोदय :- आप एक बार सुन लीजिये।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, (व्यवधान) नहीं तो दर्शनपाल यहां आ जायेगा।

श्री रविन्द्र चौबे :- मैं करा रहा हूं।

श्री कुलदीप जुनेजा :- मंत्री जी जवाब दे रहे हैं ना। कोइ भय का वातावरण नहीं है। आप लोग भय का वातावरण बनाने का प्रयास कर रहे हैं।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आदरणीय बृजमोहन जी और हमारे प्रतिपक्ष के साथियों ने निश्चित रूप से जो बात कही है। माननीय मुख्यमंत्री जी आज सदन में है और विनियोग पर चर्चा होनी है। यहां गृहमंत्री जी भी है। यदि सदन की गरिमा बढ़े और आप चाहते भी हैं तो मैं आपको आश्वस्त करना चाहता हूं। अभी दोनों ध्यानाकर्षण हो जाये। माननीय मुख्यमंत्री जी स्वयं आकर इसमें अपना वक्तव्य दे देंगे।

श्री अजय चन्द्राकर :- ठीक है।

सदन को सूचना

उपाध्यक्ष महोदय :- आज विनियोग विधेयक का पारण किया जाना है। यह बहुत महत्वपूर्ण कार्य है। कृपया सदन में आप सब लोग का सहयोग हो तब विनियोग आयेगा। विपक्ष से 13 सदस्य हैं। चलिये अब मैं नियम 138 (1) के अधीन ध्यानाकर्षण की सूचना लूंगा। माननीय अजय चन्द्राकर जी।

समय :
12.47 बजे

ध्यानाकर्षण सूचना

(1) छत्तीसगढ़ स्टेट वेयर हाउसिंग कार्पोरेशन द्वारा गोदाम निर्माण कार्य का टेंडर अपात्र ठेकेदारों को दिया जाना।

श्री अजय चन्द्राकर (कुरूद) :- अध्यक्ष महोदय, मेरी ध्यान आकर्षण सूचना का विषय इस प्रकार है, छत्तीसगढ़ स्टेट वेयर हाऊसिंग कार्पोरेशन के टेंडर क्रमांक 71639 के अनुसार गोदाम निर्माण कार्य ग्रुप नं (4) बारादवार सक्ती में 22200 मीट्रिक टन के निर्माण कार्य का ठेका तकनीकी समिति द्वारा अपात्र ठेकेदारों को औसतन टर्न ओव्हर 4.036 करोड़ की शर्त में दे दिया गया, जबकि इस

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

निविदा में कई शासकीय अधिकारियों, कर्मचारियों के साथ सरकारी तंत्र भी सम्मिलित है। इसकी विभागीय जांच एवं महालेखाकार के ऑडिट में भी अनियमितता का उल्लेख किया जा चुका है, इसके बाद भी शासन-प्रशासन स्तर पर अभी तक कोई कार्यवाही नहीं की गयी है। राज्य सरकार इस प्रकरण के संबध में सभी जानकारी होने के बावजूद कोई कार्यवाही नहीं कर रही है, जिससे अधिकारियों, कर्मचारियों के साथ ही ठेकेदारों का मनोबल भी बढ़ा हुआ है। इससे जनता में सरकार के प्रति काफी रोष एवं आक्रोश व्याप्त है।

खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ वेयर हाऊसिंग कार्पोरेशन के टंडर क्रमांक 71639 के अनुसार ग्रुप 4 के अंतर्गत शाखा बाराद्वार में 15000 मे.टन एवं सक्ती में 7200 मे.टन कुल 22200 मे.टन. गोदाम निर्माण कार्य हेतु निविदा कार्यवाही की गई थी। निविदा शर्त अनुसार विगत 3 वर्षों का औसत वार्षिक टर्न ओवर 4.036 करोड़ वाछित था। निविदाकार द्वारा चार्टर्ड एकाउन्टेट द्वारा प्रमाणित टर्न ओवर में ईयर इन्डेक्स लगाकर रू. 4.361 करोड़ का औसत वार्षिक टर्न ओवर प्रस्तुत किया गया है, जिसे निगम के निविदा समिति द्वारा मान्य किया गया था। महालेखाकार कार्यालय से ऑडिट आब्जर्वेशन में लेख कर तथ्यात्मक जानकारी पत्र दिनांक 10.02.2023 द्वारा मांगी गई। छ.ग. स्टेट वेयर हाऊसिंग कार्पोरेशन तथ्यात्मक जानकारी पत्र क्रमांक 2387 दिनांक 02.03.2023 द्वारा प्रस्तुत की गई है। उपरोक्त प्रकरण के जांच प्रतिवेदन में उल्लेखित तथ्यों के आधार पर छत्तीसगढ़ स्टेट वेयरहाउसिंग कार्पोरेशन के निविदा समिति सदस्यों को स्पष्टीकरण प्रस्तुत करने हेतु दिनांक 14.03.2023 को कारण बताओं नोटिस जारी किया गया है। प्रकरण में जांच कार्यवाही प्रक्रियाधीन है। अत: छत्तीसगढ़ राज्य गृह भंडार निगम द्वारा कृत कार्यवाही के आधार पर जनता में सरकार के प्रति कोई रोष एवं आक्रोश व्याप्त नहीं है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आप उत्तर को पढ़ लीजिए। यह बड़ा हास्यास्पद है।

उपाध्यक्ष महोदय :- मैंने इसे पढ़ा है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह ध्यानाकर्षण लगने के बाद दिनांक 14.03.2023 को इसमें कारण बताओं नोटिस जारी किया है। माननीय मंत्री जी प्रकरण में जांच कार्यवाही प्रक्रियाधीन बता रहे हैं। अब मैं जो प्रश्न पूछ रहा हूँ क्या यह सच है कि जो औसत वार्षिक टर्न ओवर 4.036 करोड़ के स्थान पर 3.66 करोड़ के टर्न ओवर को किस आधार पर माने कम जो पात्रता है उसको किस आधार पर स्वीकार करके दिया गया? जो दिया गया है वह सही है या गलत? चूंकि जो दिया जा चुका है, उसमें बन गया है। अब आपने उसमें जांच की घोषणा की है ।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, ध्यानाकर्षण के उत्तर में यह स्पष्ट लिखा गया है निविदा शर्त अनुसार विगत 3 वर्षों का औसत वार्षिक टर्न ओवर 4.036 करोड़ वांछित था।

निविदाकार द्वारा चार्टर्ड एकाउन्टेट द्वारा प्रमाणित टर्न ओवर में ईयर इन्डेक्स लगाकर रू. 4.361 करोड़ का औसत वार्षिक टर्न ओवर प्रस्तुत किया गया है, जिसे निगम के निविदा समिति द्वारा मान्य किया गया था। जिसे निगम के द्वारा जो निविदा समिति बनी हुई है, उसके द्वारा मान्य किया गया और उनको काम दिया गया।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, उसके द्वारा मान्य किया गया तो फिर किस बात की जांच कर रहे हैं ? दिनांक 14.03.2023 को जांच कर रहे हैं जब मान्य कर दिया गया, काम हो गया तो उसकी जांच किस आधार पर,कौन-कौन से बिन्दु पर और क्यों जांच कर रहे हैं ? मैं फिर प्रश्न पूछूंगा।

श्री अमरजीत भगत:- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह तो सामान्य प्रक्रिया है कि कोई भी टेण्डर हो या अगर कहीं पर कोई भी काम होता है, कोई शिकायत आये तो उसकी जांच की जाती है। इसमें जो शिकायत आयी थी उस शिकायत की जांच चल रही है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैंने यह कहा। जब मैंने पहले प्रश्न किया तो उन्होंने कहा कि प्रमाणित टर्न ओवर में ईयर इन्डेक्स लगा है इसलिए यह मान्य किया गया। जब यह मान्य कर दिया गया तो इनको शिकायत प्राप्त हुई। तो यह शिकायत कब, किन-किन बिन्दुओं पर प्राप्त हुई और मान सब कुछ होने के बाद दिनांक 14.03.2023 को किन बिन्दुओं पर जांच के आदेश दिए गए ? आपको शिकायत कब और किन बिन्दुओं पर प्राप्त हुई और किन बिन्दुओं पर जांच के आदेश दिए। हमें रेण्डमली सुनना है कि यह प्रक्रिया है और शिकायत आती है तो जांच होती है।

श्री अमरजीत भगत:- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आप प्रिजिसडियस क्यों होते हैं ? आप सुनिए। आप जो प्रश्न उठा रहे हैं उसका उत्तर मिलेगा। आप निश्चिंत रहे। इसमें दिनांक 22 जून, 2022 को जो पहली शिकायत आई थी, इसमें श्याम अवतार केडिया संचालक मण्डल के सदस्य हैं इन्होंने शिकायत की थी। दूसरा दिनांक 01.08.2022 को शिकायत की थी। यह भी श्याम अवतार केडिया ने शिकायत की थी। तीसरा दिनांक 28.11.2022 को यह वी.के. दास ने शिकायत की थी। दिनांक 04.12.2022 को वी.के. दास ने शिकायत की है। दिनांक 08.12.2022 को वी.के. दास ने शिकायत की है। दिनांक 05.01.2023 को शासन की ओर से तथ्यात्मक प्रतिवेदन,इसमें प्रबंधन संचालक को भेज भी दिया गया। दिनांक 12.12.2022 को शासन की ओर से स्मरण पत्र भी लिख दिया गया। दिनांक 03.1. को वी.के. दास ने फिर शिकायत की, इसके बाद दिनांक 17.01.2023 को, इसमें भण्डार गृह निगम के द्वारा नस्ती भी फोटो प्रति प्राप्त सहित भेज दी गई। फिर इसके बाद इसमें वी.के. दास ने दिनांक 06.01 को फिर शिकायत भेजी। इसके बाद इसमें दिनांक 03.02.2023 को वी.के. दास ने शिकायत की । इसके बाद व्ही.के. दास ने ही फिर 03.01 को शिकायत किया। इसमें समय-समय पर कई शिकायतें आई हैं और सब शिकायतें खाद्य सचिव को संबोधित थीं और उसमें जांच की प्रक्रिया प्रक्रियाधीन है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मेरा आपसे आग्रह है कि प्रश्नों की गिनती मत हो, मैंने पूछा है कि किन-किन बिन्दुओं में शिकायत हुई और किन-किन बिन्दुओं पर जांच की जा रही है, मैंने बिन्दु पूछा है।

उपाध्यक्ष महोदय :- आप बिन्दु बता दीजिए।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, उन्होंने शिकायकर्ता का नाम भर बताया। किन-किन बिन्दुओं में शिकायत हुई और किन-किन बिन्दुओं में जांच की घोषणा की गई और मैंने यह भी पूछा था कि किसके द्वारा जांच की जा रही है?

श्री अमरजीत भगत :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जांच का जो निर्देश है, MDSWC ने दिया है और जो शिकायत आई थी, इसमें जांच प्रक्रियाधीन है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, बहुत स्मार्ट मिनिस्टर हैं, किन्-किन बिन्दुओं में शिकायत प्राप्त हुई और किन-किन बिन्दुओं मे जांच होगी, प्रक्रियाधीन है, यह तो उत्तर में बता दिये हैं। किन-किन बिन्दुओं में शिकायत हुई और किन-किन बिन्दुओं में जांच हो रही है?

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- खाओ, पिओ मंत्री से उत्तर ठीक नहीं है। खाने वाला मंत्री है, पीने वाला नहीं है इसलिए ठीक उत्तर नहीं आ रहा है।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, बता दीजिए किन-किन बिन्दुओं पर जांच हुई।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इसमें ध्यानाकर्षण का मूल विषय यही है कि टर्नओवर पर प्रश्न लगा है और शिकायत भी उसी में हुई है कि टर्नओवर के विपरीत उतना नहीं था, उनको काम दे दिया गया। जबकि इसमें जिस सिस्टम से दिया गया है, ईयर इंडेक्स लगा करके काम करने की जो बीट केपिसिटी होनी चाहिए थी, उतना वह पूरा करना था, इसलिए उसको काम दिया गया है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, एक तो ध्यानाकर्षण लगाने के बाद जांच घोषित की। इंडेक्स तो बता दिये, उसमें तो मैं पूछ ही नहीं रहा हूं। मेरा एक साधारण सा प्रश्न है कि किन-किन बिन्दुओं पर शिकायत प्राप्त हुई और किन-किन बिन्दुओं पर जांच करवा रहे हैं? मैं फिर दूसरा प्रश्न कर लूंगा।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, शिकायत का मूल आधार ही वही है उतने की बीट केपिसिटी नहीं थी और उनको काम दे दिया गया। इसका मूल विषय ही यही थी।

उपाध्यक्ष महोदय :- एक ही विषय था।

श्री अमरजीत भगत :- जी, एक ही विषय था और उसमें अनियमितता बरती गई, ऐसा आरोप लगाया गया है, उसके लिए जांच के निर्देश दे दिये गये हैं। जैसे जांच पूर्ण होगी फिर आगे की कार्यवाही की जायेगी।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

उपाध्यक्ष महोदय :- आप बिन्दुओं की जानकारी चाह रहे हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- वह तो इन्होंने सही माना है। जो वह बता रहे हैं उसको उत्तर के हिसाब से तो वह सही माने हैं। वार्षिक इंडेक्स लगा है।

उपाध्यक्ष महोदय :- ठीक है। उनका कहना है कि सामूहिक जांच हो रही है, बिन्दु नहीं है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, सुनिये न, शिकायकर्ता का नाम बताया। शिकायकर्ता क्या सिर्फ टर्नओवर पर भर शिकायत किये हैं? अब दूसरी बात मैंने पूछी है उसको क्लीयर बताना चाहिए कि दोनों शिकायकर्ता टर्नओवर भर में शिकायत किये हैं। दूसरा आप यह बता दीजिए कि जांच के क्या-क्या बिन्दु तय किये हैं? एक तरफ आप कह रहे हैं कि इंडेक्स लगाये हैं इसलिए वह सहीं हैं और दूसरी तरफ आप जांच भी स्थापित करते हैं। दोनों बाते थोड़ी सी कंट्रोवर्सी हैं। इसलिए जांच के बिन्दु जो दोनों शिकायतकर्ताओं ने की है, एक ही है क्या ? उसके बाद आपने जांच का आदेश किन-किन बिन्दुओं पर दिया?

समय :
12.58 बजे **(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरण्दास महंत) पीठासीन हुए)**

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि जिनको टेंडर काल किया गया था, जो एप्लीकेपल हुआ, जिसका सही पाया गया, उसको काम दिया गया। इसके बाद शिकायत हुई और शिकायत में जांच संस्थित की गई है और जांच पूर्ण होगी तो आगे की कार्यवाई की जायेगी।

श्री अजय चन्द्राकर :- देखिये, बहुत स्मार्ट मिनिस्टर हैं, वह पल-पल खड़े होते हैं। मैं बार-बार एक ही बात पूछ रहा हूं दूसरा प्रश्न भी नहीं किया हूं। जांच में शिकायकर्ताओं ने यदि आप कह रहे हैं कि शिकायत के एक ही बिन्दु है तो एक ही बिन्दु बता दीजिए। मैं संतुष्ट हो जाऊंगा।

अध्यक्ष महोदय :- क्या आपसे ज्यादा स्मार्ट हैं?

श्री अजय चन्द्राकर :- मेरे से 100 गुना स्मार्ट हैं मैं तो उनका शिष्य हूं। उसके बाद आपने जांच संस्थित की है तो जांच संस्थित की है तो उसके बिन्दु तो बता दीजिए। प्रक्रियाधीन है, कौन सी जांच प्रक्रियाधीन है और कौन से बिन्दु पर जांच हो रही है, उसको तो बता दीजिए।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मुख्य रूप से जो शिकायत है, वह टर्नओवर को लेकर ही है, उसकी गणना को लेकर के की गई है। टर्नओवर और बीट केपिसिटी के साथ-साथ उसमें जो शिकायत की गई है कि विज्ञापन नहीं छपवाया गया, उसकी जो पात्रता है, उसका जो अनुभव है, उस पर प्रश्नचिन्ह खड़ा किया गया है। निविदा में समय-सीमा कम दी गई है । उसमें तताम कई बिंदुओं पर लोगों ने आरोप लगाया है। जिसकी जांच संस्थित की गई है और जांच की प्रक्रिया ..।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चंद्राकर :- जांच के बिंदु तो बता दीजिये।

श्री अमरजीत भगत :- मैंने बता तो दिया।

श्री अजय चंद्राकर :- आपने तो शिकायत की बिंदु बताया।

श्री अमरजीत भगत :- मैं बताया न।

श्री अजय चंद्राकर :- आपने तो शिकायत की बिंदु बताया है। अब शिकायत की बिंदु बताईये।

श्री अमरजीत भगत :- इसमें जांच करने का निर्देश दे दी गई है। जैसे ही जांच कंप्लीट होगी, इसमें एयर हाउसिंग के कंपनी जो एम.डी. है, उन्होंने जांच के निर्देश दिए हैं और जैसे ही जांच कंप्लीट होगा तो बाकी आगे की कार्यवाही होगी।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अब मैं आपको बता देता हूं कि वह ईमानदारी से बात को नहीं बता रहे हैं। आपके माध्यम से दिलवायेंगे तो अच्छा है, नहीं दिलवायेंगे तो अच्छा है। विद्वान की कमी तो नहीं है । शिकायत मिली, ध्यानाकर्षण लगा।

श्री शिवरतन शर्मा :- सर्वेसर्वा विद्वान बैठे हैं। सीधा उन्हीं से क्यों नहीं पूछ लेते। चेयरमेन बैठे हैं।

श्री अजय चंद्राकर :- वह बेचारे नहीं जानते।

अध्यक्ष महोदय :- प्लीज-प्लीज। जल्दी करिये।

श्री अजय चंद्राकर :- साहब, जल्दी कर रहा हूं। देखिये, मैंने ध्यानाकर्षण लगाया तो 14.03. को जांच संस्थित हुई। अब इस बीच में सारी शिकायतें मौजूद थीं। उस दौरान शिकायत से जांच संस्थित करने तक कितने लोग थे और उनकी जानकारी में था, उनका कितना भुगतान किया गया? पूरा भुगतान कर दिया गया है या शिकायत के कारण, जांच के कारण भुगतान रोके गये हैं?

अध्यक्ष महोदय :- यह दूसरा प्रश्न है।

श्री अजय चंद्राकर :- यह दूसरा प्रश्न है।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी दोनों काम में सक्ती, बाराद्वार में जो निर्माण काम हो रहे हैं, उसमें भुगतान ..।

अध्यक्ष महोदय :- यह मेरे क्षेत्र का कार्य है।

श्री अमरजीत भगत :- जी-जी। पूरा भुगतान नहीं हुआ है। सक्ती में जो काम चल रहा है, उसमें 72 हजार मीट्रिक टन का 3 करोड़ 26 लाख व्यय हुआ है। गोदाम निर्माण का कार्य पूर्ण हो गया है और अभी भण्डारण का कार्य प्रारंभ हो चुका है। दूसरा, बाराद्वार में 15 हजार मीट्रिक टन, इसमें अभी व्यय की राशि 8 करोड़ 18 लाख है, और गोदाम निर्माण पूर्णता पर है। अभी 23 अप्रैल तक कार्य पूर्ण होन की संभावना है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं बोल रहा हूं कि गुणवत्ता की भी शिकायत हुई है, बीट केपिसिटी की भी शिकायत हुई है, टर्न ओवर की भी शिकायत हुई है, विज्ञापन की भी शिकायत हुई है।

अध्यक्ष महोदय :- इसमें ठेकेदार महाराज कहां के हैं? आपने इसका नाम पूछ लिया?

श्री अजय चंद्राकर :- मैं नाम नहीं पूछा हूं। साहब, मैं ठेकेदारी वाला नहीं पूछता।

अध्यक्ष महोदय :- जब वित्तीय बात है तो पूछ लीजिये न कि ठेकेदार महाराज कहां के हैं?

श्री अजय चंद्राकर :- अध्यक्ष महोदय, मेरा यह कहना है कि ..।

अध्यक्ष महोदय :- जब आप मेरे क्षेत्र का पूछ ही रहे हैं तो आप यह भी पूछ लीजिये कि ठेकेदार कौन हैं, कहां का है?

श्री अजय चंद्राकर :- अध्यक्ष जी स्वत: पूछ रहे हैं। मंत्री जी, आप बता दीजिये कि ठेकेदार कौन है?

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसमें जो पहला टेंडर हुआ था, उसमें 3 लोग participate किये थे।

श्री अजय चंद्रकार :- अभी कौन कार्य कर रहा है, आप उसको बता दीजिये न?

श्री अमरजीत भगत :- आप जानना भी चाहेंगे और सुनेंगे भी नहीं तो ऐसे कैसे होगा।

श्री शिवरतन शर्मा :- ठेकेदार कोने हे तेला बताना ग।

श्री अमरजीत भगत :- हाँ ता मैं पढ़हू तब न सुनबे भाई। पढ़े ला देबे तब न ।

अध्यक्ष महोदय :- आपके हाथ इतने लंबे है कि मेरे क्षेत्र तक पहुंच गया।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पहला टेडर में तीन लोग participate किये थे। एक चंद्रा निर्माण प्राईवेट लिमिटेड, रायपुर। दूसरा, अशोक खंडेलवाल, धमतरी और तीसरा, राम निवास अग्रवाल, नैला। इसमें से केवल दो लोग अपात्र हो गये। सिंगल टेडर होने के कारण इसको दोबारा टेंडर किया गया। उसमें द्वितीय टेंडर में भी चार लोग फार्म भरे। एक अरोड़ा कंस्ट्रक्शन, बिलासपुर, अशोक खंडेलवाल, धमतरी, रामनिवास अग्रवाल, नैला और अशोक केजरीवाल, सारंगढ़। इसमें पूछेंगे कि कौन-कौन अपात्र पाये गये थे तो ..।

अध्यक्ष महोदय :- नहीं, हम तो सिर्फ यह पूछ रहे हैं कि यदि आप पैसे का भुगतान कर चुके हैं तो उसको कौन बना रहा है?

श्री अमरजीत भगत :- अध्यक्ष महोदय, अरोड़ा कंस्ट्रक्शन बिलासपुर।

अध्यक्ष महोदय :- दोनों में अरोड़ा कंस्ट्रक्शन।

श्री अमरजीत भगत :- जी-जी।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चंद्रकार :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे एक ही लाईन का निवेदन करूंगा कि निचले स्तर के कर्मचारी ..।

अध्यक्ष महोदय :- अभी आपके दूसरे पिछले प्रश्न का उत्तर आ गया न?

श्री अजय चंद्राकर :- नहीं आया है। उसमें तो वह नहीं दे रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- अच्छा। ठीक है।

श्री अजय चंद्राकर :- अध्यक्ष जी की कृपा हो रही है तो मैं आपसे फिर से पूछ लेता हूं कि आपने पूरी शिकायत बिंदु के बावजूद बिना जांच करवाये निर्माण कार्य की स्वीकृति भी दी और भुगतान भी किया। शिकायत के जांच किये बिना वह भुगतान नियमानुकूल थे या नियम के प्रतिकूल थे, यह आप बता दीजिये।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह दोनों अलग-अलग प्रक्रिया है। एक टेंडर एलाट होना, उनको काम एलाट होना और भुगतान करना यह टेण्डर की प्रक्रिया को ही चेलेंज किये हैं और उसमें जांच की मांग कर रहे हैं । कभी भी गुगतान रोकने के लिये इस प्रकार की बात जब प्रक्रिया में गलत पायी जायेगी उसमें अगर गलत ढंग से काम होगा तो बाकी कार्यवाही होगी ।

अध्यक्ष महोदय :- शिकायत टेण्डर देने के खिलाफ है । आपको काम के खिलाफ शिकायत नहीं है । काम के खिलाफ आपको कोई शिकायत नहीं मिली है, टेण्डर एलाटमेंट के खिलाफ शिकायत है ।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं वही बोल रहा हूं कि टेण्डर की प्रक्रिया को चेलेंज किया गया है और भुगतान के ऊपर इस प्रकार की बात नहीं आयी है । जब प्रक्रिया सही होगी तो बाकी का प्रश्न ही नहीं उठता है ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे ध्यानाकर्षण लगाने के बाद दिनांक 14 मार्च को इसी महीने जांच संस्थित की गयी । निर्माण कार्य कब से चल रहा है ? बिंदु इनके पास हैं, 2-3 एम.डी. बदल गये । लेकिन उसको भुगतान किया गया और ये पूरी तरह एक गड़बड़ी है और विभाग ही जांच कर रहा है । माननीय अध्यक्ष महोदय, जिन लोगों ने गड़बड़ी की है वही लोग इसकी जांच कर रहे हैं तो मेरी आपके द्वारा माननीय मंत्री जी से मांग है कि क्या इस पूरी प्रक्रिया की ई.ओ.डब्ल्यू. या किसी दूसरी एजेंसी से जांच करवायेंगे ?

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, माननीय मंत्री जी । यह आपका अंतिम प्रश्न है ।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसका कोई औचित्य नहीं है। यह उद्भुत नहीं होता है ।

श्री अजय चंद्राकर :- मैं आपको इसका औचित्य भर बता देता हूं ।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे यहां विभागीय स्तर पर कार्यवाही चल रही है और विभाग उसके लिये सक्षम है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय मंत्री जी, आप यह बताईये कि जो एम.डी. रहे हैं । जो ई.ई. हैं, जो एस.जी.ओ. हैं । उसके जो लेखाधिकारी हैं वे सब उसमें शामिल हैं और वही लोग जांच करेंगे । आप मेरे हिसाब से किये हैं तो मेरी मांग है कि फिर आप जांच को हटा लीजिये । यदि वही गड़बड़ीकर्ता लोग ही जांच कर रहे हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- आप ऐसी मांग मत करिये जो स्वीकार कर लिया जाये । प्लीज ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, तो इस जांच का कोई औचित्य नहीं है न । जो गड़बड़ कर रहे हैं, वही जांच करेंगे तो इसका औचित्य क्या है ?

अध्यक्ष महोदय :- मैं समझ रहा हूं । उसको अब मैं भी देखूंगा । चूंकि मेरे क्षेत्र का मामला है, मैं भी देखूंगा ।

<u>(2) जिला-नारायणपुर के नारायणपुर-छोटे डोंगर सड़क अत्यंत जर्जर होना</u>

श्री चंदन कश्यप (नारायणपुर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरी ध्यानाकर्षण सूचना का विषय इस प्रकार है :- जिला नारायणपुर का नारायणपुर-छोटेडोंगर मार्ग अत्यंत जर्जर एवं क्षतिग्रस्त हो चुका है। विगत् वर्ष ग्राम छोटेडोंगर में निको जायसवाल लौह अयस्क खदान के क्रियाशील होने के फलस्वरूप उक्त मार्ग में वाहनों की आवाजाही बहुत अधिक बढ़ गई है। जिला मुख्यालय नारायणपुर से विकासखण्ड मुख्यालय ओरछा अबूझमाड़ क्षेत्र तक 20 एम.एम. की बी.टी. सड़क निर्माण कार्य, लोक निर्माण विभाग द्वारा किया गया है। पूर्व में उक्त सड़क पर भारी वाहनों का आवागमन कम था, तब 20 एम.एम. मोटाई की सड़क पर्याप्त थी, किन्तु वर्तमान में व्यवसायिक गतिविधियों के कारण उक्त सड़क में भारी वाहनों के आवागमन से नारायणपुर-छोटेडोंगर सड़क अत्यंत जर्जर हो गयी है। मार्ग जर्जर होने से प्राय: दुर्घटनाएं भी होती रहती हैं, जिससे उक्त क्षेत्र के ग्रामवासियों द्वारा चक्का जाम एवं धरना प्रदर्शन किया जा रहा है। नारायणपुर जिले के अबूझमाड़ क्षेत्र के ग्रामीणों की सुविधा एवं कानून व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए उक्त सड़क की मरम्मत एवं भारी वाहनों के आवागमन हेतु सड़क का मजबूतीकरण सह डामरीकरण कार्य कराया जाना अत्यंत आवश्यक है। इस संबंध में जिला प्रशासन एवं क्षेत्रीय जनप्रतिनिधियों द्वारा बार-बार सड़क निर्माण कराये जाने की मांग की जा रही है। आमजन की मांग अनुरूप सड़क निर्माण नहीं होने के कारण शासन के प्रति लोगों में काफी आक्रोश व्याप्त है।

लोकनिर्माण मंत्री (श्री ताम्रध्वज साहू) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, नारायणपुर विधान सभा क्षेत्र के नारायणपुर से छोटेडोंगर होते हुए ओरछा की दूरी 63.00 कि.मी. है । पल्ली-छोटेडोंगर-आरेछा मार्ग मुख्य जिला मार्ग है, जिसकी लंबाई 31.00 कि.मी. है । नारायणपुर-पल्ली-बारसूर राज्य मार्ग के 32वें कि.मी. में ग्राम- पल्ली (धौड़ाई) स्थित है, जहां से पल्ली-छोटे डोंगर- ओरछा मार्ग प्रारंभ होती है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

नारायणपुर-पल्ली-बारसुर मार्ग निर्माणाधीन है । इसमें पुल पुलिया का कार्य प्रगति पर है तथा सड़क कार्य पूर्ण हो चुका है । पल्ली छोटेडोंगर ओरछा मार्ग में 20 एम.एम. मोटाई का डामरीकरण कार्य पूर्ण कराया गया है । जिसमें 01 से 12 तक परफार्मेंस गारंटी की अवधि समाप्त हो चुकी है । पल्ली-छोटे डोंगर-ओरछा मार्ग के कि.मी. 12 में निको जायसवाल लौह अयस्क खदान (अमदई घाट) अप्रेल 2022 से प्रारंभ होने के कारण मार्ग के यातायात घनत्व में अनायास अत्यधिक वृद्धि हुई है जिसके कारण मार्ग का कुछ भाग क्षतिग्रस्त हो गया है । पल्ली-छोटेडोंगर-आरेछा मार्ग के किलोमीटर 0-12 धौड़ाई से अमदई घाटी के सुदृढ़ीकरण हेतु वर्ष 2022-23 के तृतीय अनुपूरक बजट में इसे शामिल किया गया है । प्रशासकीय स्वीकृति हेतु प्राक्कलन तैयार किया जा रहा है । प्रशासकीय स्वीकृति की कार्यवाही होते ही मार्ग का सुदृढ़ीकरण का कार्य प्रारंभ हो जाएगा । अत: शासन के प्रति कोई आक्रोश व्याप्त नहीं है ।

श्री चंदन कश्यप :- माननीय अध्यक्ष महोदय, नारायणपुर से ओरछा अबूझमाड़ क्षेत्र है । वहां के रहवासियों को सुख सुविधा के साधन, वहां तक नहीं पहुंचेगा । जो पल्ली-बारसूर रोड बता रहे हैं, वह रोड धौड़ाई से अलग हो जाती है ।

अध्यक्ष महोदय :- आप प्रश्न पूछिये ना या सुझाव दीजिए, जो भी है ।

श्री चंदन कश्यप :- मैं चाहता हूं कि नारायणपुर से ओरछा मार्ग जो निको जायसवाल का खदान से नारायणपुर तक बहुत गाड़ियां चलती हैं, रोड काफी जर्जर है कि उसको बनाना बहुत आवश्यक है । कब तक बनेगा, यह आश्वासन चाहता हूं ?

अध्यक्ष महोदय :- पूछ लीजिए कब तक बनेगा, कितनी जल्दी बनेगा और जल्दी से जल्दी बनाएं ?

श्री ताम्रध्वज साहू :- अध्यक्ष महोदय, रोड खराब होने की जानकारी हमको जैसे ही मिली हमने तृतीय अनुपूरक में उसको जोड़ दिया है । 18 करोड़ से अधिक की राशि का एस्टीमेट उसमें जुड़ गया है । प्रशासकीय स्वीकृति के बाद टेंडर करेंगे और काम शुरू कर देंगे ।

श्री चंदन कश्यप :- धन्यवाद् मंत्री महोदय ।

समय :
1.12 बजे

वक्तव्य

रायपुर के गुरूद्वारे से निकले जुलूस के संबंध में

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी शून्यकाल में माननीय सदस्यों ने यहां रायपुर के गुरूद्वारे में जो जुलूस निकला उसके बारे में सदन का ध्यान आकर्षित किया । अध्यक्ष महोदय, कल की जो घटना घटी है । जब भी कोई जुलूस या प्रदर्शन होता है तो पुलिस को, प्रशासन को सूचना दी जाती है । लेकिन इसमें बिना सूचना दिये, अचानक 35-40 लोग नारा लगाते हुए निकले ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय, जहां तक सिख समाज की बात है । उनकी देश भक्ति और उनके बलिदान को उनकी सेवा को कभी भुलाया नहीं जा सकता । यदि कुछ लोग, इस प्रकार से नारे लगाते हुए या खालिस्तान की जो बात कर रहे हैं, उसकी बात करें तो देश कभी उसको बर्दाश्त नहीं करता । जहां तक छत्तीसगढ़ की बात है, छत्तीसढ़ में इस प्रकार से देश विरोधी किसी भी गतिविधि को न प्रश्रय दिया जाएगा, न उसे बर्दाश्त किया जाएगा (मेजो की थपथपाहट) । जो भी व्यक्ति देश विरोधी गतिविधि में संलिप्त होगा उसके विरूद्ध सख्त से सख्त कार्रवाई की जाएगी । पुलिस को मैंने निर्देश दिया है, उनके सारे फुटेज खंगाले जा रहे हैं, यदि उनमें से किसी ने भी, एक भी व्यक्ति ने राष्ट्र विरोधी नारा लगाया हो तो उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी । मैं सदन को यह आश्वासन देता हूं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय,1 मिनट ।

श्री भूपेश बघेल :- रिएक्शन नेता प्रतिपक्ष जी देंगे भाई ।

श्री अजय चन्द्राकर :- रिएक्शन नहीं दे रहा हूं, आप सुन तो लीजिए । आपने वक्तव्य दिया, आप सुन तो लिया करें, आप सदन के नेता हैं । माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी ने कल के जुलूस और कल की घटना पर बयान दिया है । उसको हम प्रस्ताव पर ले लेते हैं और छत्तीसगढ़ विधान सभा की यह भावना है और यह प्रस्ताव हम सर्वसम्मति से पारित करते हैं, ऐसा कर लिया जाए । यह मेरा प्रस्ताव है (मेजो की थपथपाहट)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष जी, पूरे देश में दो ही स्थानों पर इस प्रकार के जुलूस निकले हैं । एक जुलूस निकला पंजाब में और दूसरा छत्तीसगढ़ में । इसलिए बहुत गंभीर बात है । माननीय अजय जी ने जो प्रस्ताव दिया है कि छत्तीसगढ़ की जनता राष्ट्र भक्त है । यदि यहां पर ऐसी गतिविधियां करने वाले लोग हैं तो उनको कुचल दिया जाएगा, उनको बर्दाश्त नहीं किया जाएगा । क्योंकि इससे पूरे देश में छत्तीसगढ़ की बदनामी हुई है । माननीय अजय चंद्राकर जी ने जो प्रस्ताव दिया है कि माननीय मुख्यमंत्री जी ने जो वक्तव्य दिया है, हम सब उसको प्रस्ताव मानते हुए उसको सर्वसम्मति से पारित करें और हम इस घटना की निंदा करें। क्योंकि इससे पूरे देश में हमारी बदनामी हुई है । आज अखबरों में फ्रंट पेज में यह छपा है, सिर्फ पंजाब और छत्तीसगढ़ के अलावा कहीं भी ऐसी घटना घटित नहीं हुई है । आपसे ऐसा आग्रह है कि हम ऐसा प्रस्ताव पारित कर दें तो मुझे लगता है कि यह औचित्यपूर्ण होगा ।

श्री भूपेश बघेल :- ठीक है, अध्यक्ष महोदय ।

संसदीय कार्य मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- अध्यक्ष जी, माननीय मुख्यमंत्री जी ने जो स्टेटमेंट के रूप में बातें कही, प्रतिपक्ष का भी पूरा ह्रदय से सम्मान है, मैं आपको धन्यवाद भी देता हूं। माननीय मुख्यमंत्री जी ने देश विरोधी गतिविधियों के लिए जिस तरीके से भावनाएं व्यक्त की। आपने अपने आपको शरीक करते हुए कहा, इसको प्रस्ताव के रूप में ले लिया जाए और आदरणीय मुख्यमंत्री जी ने

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

सहमति दी तो माननीय अध्यक्ष महोदय, इसको प्रस्ताव के रूप में ही मान लिया जाए, इसमें हम सबकी सहमति है। (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मुख्यमंत्री जी के वक्तव्य को जिस प्रकार से प्रतिपक्ष ने लिया है और इसे प्रस्ताव के रूप में सम्मिलित करने का निवेदन किया है, मैं इसे सम्मिलित करने की अनुमति देता हूं। मुझे विश्वास है, सदन सहमत होगा।

(सदन द्वारा सहमति प्रदान की गयी)

समय :
1:16 बजे

नियम 267 "क" के अधीन शून्यकाल की सूचनाएं

अध्यक्ष महोदय :- निम्नलिखित सदस्य की शून्यकाल की सूचना सदन में पढ़ी गई मानी जायेगी तथा इसे उत्तर के लिए संबंधित विभाग को भेजा जायेगा :-

1. श्री नारायण चंदेल
2. श्री सौरभ सिंह
3. डॉ. विनय जायसवाल
4. श्री गुलाब कमरो

समय :
1:16 बजे

शासकीय विधि विषयक कार्य

छत्तीसगढ़ विनियोग (क्रमांक-2) विधेयक, 2023 (क्रमांक 6 सन् 2023)

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि छत्तीसगढ़ छत्तीसगढ़ विनियोग (क्रमांक-2) विधेयक, 2023 (क्रमांक 6 सन् 2023) पर विचार किया जाए।

अध्यक्ष महोदय :- आज वित्तीय वर्ष 2023-2024 के आय-व्ययक से संबंधित विनियोग विधेयक पर विचार होगा।

मेरे पास विनियोग विधेयक पर 22 वक्ताओं के नाम प्राप्त हुए हैं।

नियम 158 के उप नियम (2) की अपेक्षानुसार सायं 5:00 बजे तक विनियोग पर चर्चा संपन्न होना निर्धारित है।

सभी सदस्यों से अनुरोध है कि समय का ध्यान रखते हुए अपनी बातें रखें।

अध्यक्ष महोदय :- अजय चंद्राकर जी, आपने सुन ली ना। आपने मेरी बात सुन ली ना।

श्री अजय चंद्राकर :- आपने तो मुझे बोलने के लिए पुकारा नहीं है, मैं उसे बाद सुनूंगा।

अध्यक्ष महोदय :- सभी सदस्यों से अनुरोध है कि समय का ध्यान रखते हुए अपनी बात रखें, यह सुनने वाली बात है।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चंद्राकर :- सबके लिए है।

अध्यक्ष महोदय :- सबके लिए है। (हंसी) 5:00 बजे तक समाप्त करना है।

<u>सदन को सूचना</u>

अध्यक्ष महोदय :- आज भोजन की व्यवस्था माननीय वन मंत्री (श्री मोहम्मद अकबर) की ओर से माननीय सदस्यों के लिए लॉबी स्थित कक्ष में एवं पत्रकारों के लिए प्रथम तल पर की गयी है, कृपया सुविधानुसार भोजन ग्रहण करें।

<u>शासकीय विधि विषयक कार्य (क्रमश:)</u>

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, परसों जो 4 बजे पुनर्स्थापन हुआ, वैसे ही हम लोग 5 बजे का भी मान लेंगे और मान करके चर्चा शुरू कर देंगे।

श्री अजय चंद्राकर (कुरूद) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय संसदीय कार्य मंत्री सबसे पुराने सदस्यों में से हैं, आप भी सबसे पुराने सदस्यों में से हैं, माननीय मुख्यमंत्री जी भी मध्यप्रदेश की विधान सभा में रहे हैं। आपने उस दिन शिथिलीकरण किया, हम स्वीकार कर लिए। आपने 7 बजे तक बैठने की व्यवस्था दी, हम 9-9, 10-10 बजे तक बैठे। माननीय मुख्यमंत्री जी के अनुदान मांग में बहुत सारे लोग बोलना चाहते हैं, उसको समय के बंधन के बजाय जितने बजे समाप्त हो, जल्दी से जल्दी जितने बजे समाप्त हो। आप यह व्यवस्था दें और नहीं तो फिर....।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, आप अपनी बात तो शुरू करिए। (हंसी)

श्री भूपेश बघेल :- आप बिदक क्यों जाते हो।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप उनको बिदका देते हो।

श्री अजय चंद्राकर :- जी-जी। माननीय अध्यक्ष जी, मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को सबसे पहले बधाई देना चाहता हूं। उनको गांधी परिवार की 6वीं पीढ़ी के अभिनंदन का अवसर मिला और छत्तीसगढ़

के आमंत्रण का अवसर मिला। यह देश के पहले कांग्रेस व्यक्ति हैं जो 6वीं पीढ़ी को पेंटिंग के शो लगाने के लिए छत्तीसगढ़ आमंत्रित किए हैं। वैसे भी पेंटिंग के जो शो लगते हैं, वह राणा कपूर जी को बड़े प्रिय हैं। आप राणा कपूर को जानते होंगे।

अध्यक्ष महोदय :- कौन ?

श्री अजय चंद्राकर :- राणा कपूर। राणा कपूर यश बैंक थे, डिफाल्टर हो गए। एक पेंटिंग 6 करोड़ में खरीदी थी।

अध्यक्ष महोदय :- ऐसे लोगों से मेरा परिचय नहीं है। (हंसी)

श्री अजय चंद्राकर :- मैंने आपको बताया।

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- अभी बोल रहे थे कि वहां का नाम नहीं लूंगा। छत्तीसगढ़ की बात करना है। अभी दूसरी जगह की बात शुरू कर दिए हो।

श्री अजय चंद्राकर :- मैंने मुख्यमंत्री जी को बधाई दी। माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे भाषण का थीम है, गोबर ही सार है, बाकी सब बेकार है। आप समझ रहे हैं। कृषि मंत्री जी आपके विभाग का है।

कृषि मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- अध्यक्ष जी, मुझे यह सुन करके भी अच्छा लग रहा है, इनके पास कोई मुद्दा बचा नहीं।

अध्यक्ष महोदय :- अच्छा नारा दिया है।

श्री रविन्द्र चौबे :- यह जिस गोबर की बात कर रहे हैं, नीति आयोग ने, देश के प्रधानमंत्री जी ने उनकी प्रशंसा की है।

श्री अजय चंद्राकर :- इसलिए तो बोला, गोबर ही सार है, बाकी सब बेकार है। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने पहले दिन भाषण में विक्टिमहुड शब्द उपयोग किया था। मैं आपको विक्टिमहुड को पढ़कर सुनाना चाहता हूं। मुख्यमंत्री जी ने उसको बड़ी सहजता से लेते हुए टाल दिया कि मैं अंग्रेजी नहीं जानता, वह सब जानते हैं। वे खिलाड़ी आदमी हैं, कोई ऐसी विधा नहीं है, जिसको मुख्यमंत्री जी ना जानते हों। (हंसी) विक्टिमहुड का अर्थ है, किसी उत्पीड़ित व्यक्ति की तरह महसूस करना व्यवहार करना। यह सोचना की आप किसी मोर्चे पर मिली विफलता या विफलताओं की सीरीज आपकी गलतियों से नहीं बल्कि दूसरों की साजिश का परिणाम है। मैंने उस दिन कहा था कि माननीय मुख्यमंत्री जी की छवि यही है। आप इस वर्ष के इनके पूरे भाषण को निकाल कर देख लीजिए, जो इन्होंने राज्यपाल महोदय के अभिभाषण या बजट भाषण पर दिये हैं। माननीय मोहम्मद अकबर जी कल भी बोल रहे थे और आज भी याद कर रहे थे कि वर्ष 2012-2013 में यह हुआ, वर्ष 2018-2019 में यह हुआ, वर्ष 2014-2015 में यह हुआ, वर्ष 2016-2017 में यह हुआ, वर्ष 2018-2019 में यह हुआ और वर्ष 2022-2023 में यह हुआ। अब यह साबित कैसे होगा? यह आगे साबित होगा। जो विक्टिम हुड से पीड़ित होते हैं। विक्टिम हुड का एक बड़ा उदाहरण है।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमको यह बताना पड़ता है कि हमने यह काम किया और पिछले समय यह काम हुआ था और पिछले समय की अपेक्षा हमारी स्थिति यह है। तुलना तो करना ही पड़ेगा। मैं अपने कामों की तुलना बाहर से तो नहीं कर रहा हूं। मैं इनके कार्यकाल से ही तुलना कर रहा हूं। शिवरतन शर्मा जी तो वहां पर बैठे-बैठे 3 साल के कार्यकाल को 15 साल तक बोलते रहें। हमारे तो 5 साल भी पूरे नहीं हुए हैं और यह अपने 15 साल के कार्यकाल को याद दिलाते हैं। हमें बहुत तकलीफ होती है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चंद्राकर :- नहीं, बिल्कुल तकलीफ नहीं होती है। मुख्यमंत्री जी हमारे मुख्यमंत्री जी हैं और आप विक्टिम हुड से मुक्त हैं। आप किसी से उत्पीड़ित नहीं हैं और आप अच्छा निर्णय लें। मैं आपको विक्टिम हुड का उदाहरण बता रहा हूं कि द्वितीय विश्व युद्ध में जीत रही जर्मनी विक्टिम हुड के कारण हार गई। इस बात को सारे इतिहासकार बोलते हैं। वैसे ही ये भी विक्टिम हुड के कारण अगला चुनाव हारने वाले हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, यह प्रदेश कैसे चल रहा है? यह प्रदेश नियम-कानून और संविधान से नहीं चल रहा है। मैं इसमें इनको माननीय नहीं बोलूंगा। लेकिन इसको वैसे ही बोला जाता है। मैं बाकी समय इनको माननीय बोल दूंगा। भूपेश डॉक्ट्रिन। यह प्रदेश भूपेश डॉक्ट्रिन से चल रहा है। भूपेश जी का सिद्धांत। डॉक्ट्रिन का अर्थ सिद्धांत होता है।

श्री उमेश पटेल :- डॉक्ट्रिन होता है।

श्री अजय चंद्राकर :- थैंक्यू। आपने उच्चारण सुधार दिया उसके लिए आपको धन्यवाद। माननीय अध्यक्ष महोदय, पहले मैं ई.डी. में बोलता हूं।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पेपर कटिंग चर्चा का आधार नहीं हो सकता है। जिस पेपर कटिंग को यह खोज रहे हैं, उसके आधार पर यह भाषण देंगे। क्या आपके पास कोई और सूचना का तंत्र नहीं है ? क्या आपकी तैयारी नहीं है ? यदि आपकी तैयारी नहीं है तो आप बैठ जाइये। (हंसी)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इनकी कोई तैयारी नहीं है इसलिए यह पढ़-पढ़ कर बोल रहे हैं। कहां तैयारी है ? कल आप बोल रहे थे कि पढ़ कर क्यों बोल रहे हैं और आज आप क्या कर रहे हैं ? आप पढ़कर क्यों बोल रहे हैं ? पेपर को रखिये। यह पढ़-पढ़ कर बोल रहे हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- आज आप लोग दो ही हैं। आपका तीसरा गायब है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- नहीं, मैं इस बात को बता रहा हूं कि कल यह मुझे बोल रहे थे कि आप पढ़कर बोल रहे हैं तो आज यह क्या कर रहे हैं ? इनको बिना पढ़े ज्ञान हो जाता है। यह आ गये हैं, आप चिंता मत कीजिए। मैं तोर बर अकेला काफी हो। तोर बर डॉ. शिवकुमार डहरिया काफी हे।

श्री शिवरतन शर्मा :- संसदीय कार्यमंत्री जी, यह अकबर के 9 रत्न में से हैं या गांधी जी के 3 में से हैं ?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- शिवरतन भाई, मैं तोर बर अकेला पर्याप्त हो।

श्री शिवरतन शर्मा :- मोर प्रश्न के उत्तर दे। मैं यह पूछ रहा हूं कि यह अकबर के 9 रत्न में से हैं या गांधी जी के 3 में से हैं ?

अध्यक्ष महोदय :- देखिये, इससे भाषण देने वाले का लय टूटता है इसलिए आप डिस्टर्ब मत करिये।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- मैं अकेला तोर बर काफी हो। ते चिंता मत कर।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं एक गलती कर बैठा इसलिए मैं ई.डी. से अपनी बात शुरू कर रहा हूं। तुलसीदास जी ने जब मानस लिखी। बंदऊ महीसुर के चरना। मतलब, दुनिया के तमाम खलों तक की वंदना की है। लेकिन मैं सत्तारूढ़ दल के कुछ विद्वान लोगों की वंदना करके अपनी बात फिर से शुरू करूंगा। मैं माननीय बृहस्पत सिंह जी की वंदना करता हूं। माननीय अमरजीत भगत जी की वंदना करता हूं। माननीय डहरिया जी की वंदना करता हूं। माननीय उनके तुलसी कवासी लखमा जी की वंदना करता हूं।

श्री अमरजीत भगत :- सुनिये न, आप तुलसीदास जी की जगह कबीरदास जी की वाणी से अपनी बात शुरू करते।

कबीरा खड़े बाजार में, मांगे सबकी खैर।

न काहूं से दोस्ती, न काहूं से बैर।।

आप यहां से शुरू कीजिए।

श्री भूपेश बघेल :- एक मिनट। यह दोहा के बारे में बोल तो रहे हैं लेकिन इनको वह दोहा याद नहीं आ रहा है। (हंसी)

बंदऊं संत असज्जन चरना। दु:खदप्रद उभय बीच कछु बरना।।

बिछुरत एक प्रान हरि लेहीं। मिलत एक दु:ख दारून देहीं।।

यह दोहा है और आप इसको विस्तृत करते रहिये।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक उभरती नेत्री हैं और वह भी खड़ी होती हैं, मैं श्रीमती संगीता सिन्हा जी की भी वंदना करता हूं। (हंसी) इसके साथ मैं अपनी बात फिर से शुरू करता हूं ।

श्री अमरजीत भगत :- करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान, रसरी आवत-जात के, सिल पर परत निशान । तुम प्रयास करो ।

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, मैं यह बोत देता हूं कि E.D. का जो *conviction rate* है, वह 96 प्रतिशत है । जो उन्होंने चालान प्रस्तुत किया, जिसमें बात हुई, वह 96 प्रतिशत है और उन्होंने लिखा है, यह इंडियन एक्सप्रेस की कटिंग है। (कटिंग दिखाते हुए) MPA, MP Or other politician इसमें कुल प्रकरण का 2.98 प्रतिशत केस ही बनाया गया । छत्तीसगढ़ में जो घटनाएं हुईं, उसमें एक भी राजनीतिक व्यक्ति नहीं है, उसमें से एक व्यक्ति कांग्रेस का सदस्य है । वह भी कई रास्तों से पहुंचकर माननीय मुख्यमंत्री जी की निकटता प्राप्त कर लिया है । माननीय मुख्यमंत्री जी ने E.D. के बारे में बोलते हुए कहा कि जो गलत थे, वे जेल चले गए, कोई बात नहीं । अब बाहर के लोगों को परेशान कर रहे हैं । मैं यह जानना चाहता हूं कि जब आप ऐसा बोलते हैं कि गलत कर रहे थे तो

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

गलत आपके नाक के नीचे हो रही थी या नहीं हो रही थी ? तो भूपेश डाक्ट्रिन में एक नया सिद्धान्त उपजा है कि देश की जो नियामक एजेंसियां हैं, जिसका रिकार्ड मैंने बताया । लालू प्रसाद यादव जी का, बसपा की मायावती जी का यूपीए के समय का है । यदि नेशनल हेरॉल्ड केस बना है तो सुब्रह्मण्यम *स्वामी* के व्यक्तिगत प्रकरण में बना है । कुछ पार्थ चटर्जी ऐसे लोग थे, जहां लोगों को अरबों रूपए मिले । यहां भी जितनी नकदी मिली है, उसका उल्लेख छोड़ दीजिए, वह आपके विभाग में काम करता था । और बता देता हूं, मैं आरोप लगा रहा हूं । मैंने उनको कहा है कि वही व्यक्ति जो जेल में है, सिर्फ और सिर्फ आई.ए.एस का ठप्पा है, वह नाम का भ्रष्टाचारी है । सेल्स टैक्स विभाग में 40 सब इंस्पेक्टर की भर्ती करके तोला कर लिया । आप जो भी कहें, मैं उस प्रमाण को आपको दूंगा । दूसरा डाक्ट्रिन यह है कि आपने ओल्ड पेंशन स्कीम लाया है ।

अध्यक्ष महोदय :- इतने आक्रोश में बात करेंगे तो ठीक रहेगा ?

श्री अजय चन्द्राकर :- यह मेरी आवाज है, धोखे से आक्रोशित नहीं हो गया । यह मेरी आवाज है, मैं क्षमा मांग लेता हूं ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अध्यक्ष महोदय, आज तो चन्द्राकर जी पढ़कर बोल रहे हैं । इनका धार खत्म हो चुका है, कुछ नहीं है । वह अजय चन्द्राकर नहीं है, जो पहले थे । इनका पूरा धार खत्म हो चुका है । अब वे पढ़-पढ़कर बोल रहे हैं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने ओल्ड पेंशन स्कीम के बारे में कहा था, माननीय मुख्यमंत्री जी ने जवाब नहीं दिया। कांग्रेस के समय के उपाध्यक्ष मोनटेक सिंह आहलूवालिया ने कहा था कि जो भी राज्य ओल्ड पेंशन स्कीम अपनाएगी, वह कर्जदार हो जाएगा, 10 साल में बरबाद हो जाएगा, उसका परिणाम 10 साल में दिखेगा । एक प्रवीण चक्रवर्ती हैं, जो माननीय राहुल गांधी जी की टीम में डाटा एनालिसिस्ट थे । उन्होंने यह लेख लिखा, लेख की प्रति भी मेरे पास है । इसमें उच्च और निम्न स्तर के दो राज्य हैं, उनकी आर्थिक स्थिति में इतनी असमानता उपस्थित हो जाएगी कि देश में कहीं पर सूडान होगा तो कहीं पर पश्चिम जर्मनी होगी । यह स्थिति इस देश में बन जाएगी, यदि दीर्घकालीक रूप से इसको लागू किया जाएगा तो यह परिणाम आएंगे । राजनीतिक कारणों से इन्हीं की पार्टी के रामचन्द्र सिंहदेव जी ने जब छोड़ा तो आज कितना कर्ज है, भूपेश डाक्ट्रिन में चर्चा करने के बाद मैं उसको बताता हूं ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, अब एक नई ठेका पद्धति आई है । हम जितने अपराध में चर्चा कर रहे थे, किसी भी चीज में चर्चा करें, ठेका पद्धति का शासन यह है कि एस.पी., कलेक्टर और दुनिया में पहली बार ऐसा हुआ कि बाजार में चर्चा हो रही है कि इसकी पोस्टिंग रायगढ़ हो रही है, इसकी पोस्टिंग कोरबा हो रही है, इसकी पोस्टिंग कोरिया में हो रही है, इसकी पोस्टिंग जांजगीर में हो रही है या दंतेवाड़ा में पोस्टिंग हो रही है । यदि एस.पी. और कलेक्टर के पोस्ट नीलाम होते हों, मैं बता रहा हूं, शिक्षा मंत्री

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

जी बैठे हैं । एक अधिकरी ने प्रमोशन के पहले यह कहकर 5 करोड़ रूपए वसूल लिया कि यहां-यहां पोस्टिंग दूंगा । ऐसा कौन सा विषय नहीं है, जिसमें शिक्षा विभाग में वसूली नहीं होती । एक निर्णय बता दीजिए । जहां पर एक सिस्टम में वसूली होती है, वहां पर ठेका पद्धति काम कर रही है । यह प्रशासन की बिल्कुल नई शैली है । अब आपको यह बता दूं कि संवैधानिक संस्थाओं, राज्यपाल के ऊपर आरोप लगाना, एजेंसियों के ऊपर आरोप लगाना, स्थिति यहां तक गिर गई कि अभिभाषण को राजनीतिक कारणों से बदल देना, आप शासन को कल तक देने के लिए कहे, उसके बाद एक संवैधानिक पद पर बैठा हुआ व्यक्ति आंदोलनकारी है। मुख्यमंत्री जी, आंदोलनकारी हैं। राजभवन के घेराव में जाते हैं, दिल्ली में जाते हैं। यह प्रशासन का भूपेश डाक्ट्रिन है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, राज्यपाल के ऊपर मुकदमा दायर करने वाली यह पहली सरकार है। जिसकी सुनवाई के लिए बड़े वकील चार्टर प्लेन से आते हैं, उसके लिए पैसा कौन से फण्ड से जा रहा है ? माननीय अध्यक्ष महोदय, यह सबसे बड़ी है। क्वांटीफाइबल डाटा आयोग यहां क्यों प्रस्तुत नहीं कर सकते हैं ? यदि दिल में चोर नहीं है, छत्तीसगढ़ के लोगों का हित चाहते हैं, तो ऐसा कौन सा दस्तावेज है, भारत पाकिस्तान के सरेण्डर की शर्तें नहीं हैं, जापान-अमेरिका के बीच की संधि नहीं है कि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद दुनिया को नहीं बताया जा सकता, वह विधानसभा को नहीं बताया जा सकता, आपको नहीं बताया जा सकता। राजनीति करने के लिए हमने भा.ज.पा. विधायक दल की ओर से उस दिन भाषण में सुझाव दिया कि आप साहब, सुप्रीम कोर्ट में नियमित सुनवाई का निवेदन कर लीजिये, जो भी निर्देश आये, फिर से लेजिसलेशन कर लीजिये। परन्तु राज्यपाल केस के लिए चार्टर प्लेन से वकील ला सकते हैं, सुप्रीम कोर्ट में जनता के हित के लिए यह भलाई नहीं कर सकते हैं।

श्री बृहस्पत सिंह :- आराम से बोलो भाई, आराम से बोलो, गुस्से में क्यों बोल रहे हो, थोड़ा मुस्करा कर बोलो, प्यार से बोलो।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में एक महीने का टाईम मांगा है। ये तरह-तरह के आरोप लगाते हैं कि डॉ. रमन सिंह जी प्रवक्ता हो गये, बृजमोहन जी प्रवक्ता हो गये, नेता प्रतिपक्ष जी प्रवक्ता हो गये। अध्यक्ष महोदय, हम किसी शासकीय संस्था के प्रवक्ता नहीं हैं। हम उनका सम्मान करते हैं। मैं 10 बार यहां तक बोला हूं कि मैं अपने मुख्यमंत्री जी का प्रदेश के बाहर आलोचना नहीं करूंगा।

माननीय अध्यक्ष महोदय, अब मैं आपको बता दूं, प्रशासन की कुछ चीजें ऐसी हैं। मुख्यमंत्री विकास अधोसरंचना, उन्नयन प्राधिकरण बना है। उसका कोई नियम कानून नहीं है, कोई वित्तीय मापदण्ड नहीं है। उनको दो साल में 808 करोड़ रूपये दे दिए गए। कई प्रकार के सेस लगे हैं, उसके अतिरिक्त है। वित्त विभाग ऐसी स्वीकृति देता है कि जैसे यह विधानसभा भवन बनेगा, मान लो एक हजार करोड़ रूपये का टी.एस. है, तो उसकी स्वीकृति इतने लागत है, इसलिए इस समिति के द्वारा की

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

जायेगी। सी.सी. रोड बनाना है तो सौ मीटर का इतना रेट होगा। कोई भी निर्माण कार्य हो, वित्त में जाता है तो उसके स्टण्डर्ड टी.एस. बने रहते हैं। हजार करोड़ रूपये से ज्यादा खर्च कर दिया गया, भूपेश डाक्ट्रिन के इस सिद्धांत में, इसमें वित्त का यह नियम लागू नही होता है। माननीय मुख्यमंत्री जी जो बोले, वह इस प्रदेश में कानून है। उसकी इच्छा का सम्मान करना, चाहे वह संविधानेत्तर हो, यहां प्रशासन जड़मत हो गया है। उनका सम्मान करना ही नियम और कानून है।

श्री बृहस्पत सिंह :- अध्यक्ष जी, चन्द्राकर जी, मुख्यमंत्री जी के खास आदमी हैं। हम लोगों के सामने सिर्फ गरजकर बोलते हैं, अंदर से ये खूब पटाकर रखते हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- हो गया न, मैं फिर से आपके चरणों की वंदना करता हूं।

श्री उमेश पटेल :- अजय भईया, ये सारे विषय तो बजट भाषण में आ गये हैं, विनियोग में कुछ नया लाईये न।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- और दूसरा बोल रहे हो तो अभी दिन में ऐसे-ऐसे दोनों हाथ क्यों कांप रहा है ? ऐसा-ऐसा क्यों कर रहा है ? भले शाम को ऐसे-ऐसे होता तो चल जाता।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, डाक्ट्रिन में ऐसी चीज आई , माननीय सत्यनारायण शर्मा जी की विशेषज्ञता में एक कमेटी बना दी गई। मैं पहले भाषण दिया था, आप उसको निकाल लीजिये, यह लहर गिनने वाली सरकार है, बीरबल से ज्यादा बुद्धिमान है। मैंने पहले दिन कहा था कि यह उसी को बनायेगी और उसकी लागत को बढ़वायेगी और अपने इच्छित कम्पनी को देगी। मेरे पहले बजट सत्र का भाषण निकलवाकर देख लीजिये, वही घटा। माननीय अध्यक्ष महोदय, वर्धा की तर्ज पर बापू ग्राम बनेगा। पेपर में उसके फोटो आ गए, राशि का अता-पता नहीं है, अमर ज्योति जवान के शिलान्यास हो गये, राम भगवान के थ्री डी फोटो आयेंगे,किसी का अता-पता नहीं है । अध्यक्ष महोदय, जेम्स ज्वेलरी पार्क के 48 दुकानों के फोटो बिक गये थे, उसमें इतने दुकान बिक गये, विश्व स्तरीय सेन्ट्रल स्कूल बनेगी, उसके नक्शे को कितनी बार पेपर में आ गये, अता-पता नहीं है ? आज छप गया, इस सत्र में उसकी पढ़ाई शुरू नहीं होगी, काम हुआ नहीं है । जैसे उदाहरण बता देता हूँ, कैसे लोकप्रियता हासिल करती ? देश भर में करोड़ों का विज्ञापन आ गया, 275 स्कूल खोले, उसके नीचे लिख देना था, जैसे बोर्ड में लिखते हैं ना, मैं तो आज तक बोर्ड नहीं लगाया, विधायक और नीचे में छोटा अक्षर में भूतपूर्व लिखा रहेगा, लिख देना था उसमें 175 शिक्षक हैं...।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- अध्यक्ष महोदय, हम लोग कुनकुरी घोटाले का जांच करने जा रहे थे । धर्मजीत भईया भी थे, शक्राजीत नायक थे । धर्मजीत भईया के साथ जब गये, आपके विधान सभा से गुजरते हुये निकले तो उसमें लिखा हुआ था पार्षद, बहुत बड़ा-बड़ा लिखा था और नीचे में लिखा था प्रतिनिधि । (हंसी)

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, जांजगीर में एक और देखा, प्रथम विधायक के प्रतिनिधि । (हंसी)

श्री अरूण वोरा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक जगह तो और लिखा गया कि विधायक का पड़ोसी । (हंसी)

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय मुख्यमंत्री जी के डाक्ट्रीन में यह हिस्सा है कि 15 लाख क्विंटल टेरा का दान हो जाता है । एसेसमेंट कर लीजिए, 15 लाख क्विंटल में कितने एकड़ की खेती लगी थी, कितने दूर से उसको ढुलाया जायेगा । शेष के पैसे से उसमें 35 करोड़ लग गया । माननीय अध्यक्ष महोदय, बहुत सारी बातें कही है । अध्यक्ष महोदय, 82 हजार 125 करोड़ का ऋण है और निगम की प्रत्याभूति 20 हजार करोड़ समथिंग बताई है । आप 30 हजार करोड़ आप मार्कफेड का 3 साल से नहीं पटाये हैं, कुल ऋण 1 लाख 33 हजार करोड़ रूपये है, जिसका प्रतिवर्ष ब्याज भुगतान 10 करोड़ जायेगा । प्रति व्यक्ति कर्ज भार जो वर्ष 2018 में 14,457 रूपया था, वह आज 36,139 रूपया छत्तीसगढ़ में हो गया है । पंजाब के बजट का 25 प्रतिशत भाग प्रतिवर्ष ऋण और ब्याज में जाता है । आप यह देखियेगा, लोक कल्याणकारी राज्य में इन चीजों को प्राथमिकता देनी चाहिये और माननीय भूपेश बघेल की प्राथमिकता किस ओर है ? आप यह देख लीजिएगा, जो-जो चीजें मैंने बताई है, हम कर्ज पटाने की स्थिति में भी नहीं रहेंगे । माननीय अध्यक्ष महोदय, आपको विद्‍यत उत्पादन का एक चीज बता देता हूँ, मैं ज्यादा आंकड़े नहीं बोलूंगा, माननीय मुख्यमंत्री जी बैठे हैं, इसको कभी नहीं बताया गया है कि 51,265.61 करोड़ की बिजली खरीदी गई । इस प्रदेश की स्थिति 4 साल में यह रही है कि बिजली उत्पादन घटा, यह बढ़ेगा इसका कोई ठिकाना नहीं है, 446 मेगावाट की बिजली उत्पादन कम हुई, यह सरप्लस स्टेट की स्थिति है ? 12 साल में इसकी तुलना कभी नहीं करेंगे ?

श्री उमेश पटेल :- सत्यनारायण भईया, नवरात्रि शुरू हो गयी है नवरात्रि ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, स्टेट पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी को 1668 करोड़ रूपया लेना है, स्टेट पॉवर जनरेशन कंपनी को 6563 करोड़ रूपया लेना है, छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी को राज्य सरकार से या प्रायवेट सेक्टर के लोगों से 5033 करोड़ रूपया लेना है । माननीय मुख्यमंत्री जी वित्त मंत्री भी हैं, इनकी देने की हालत नहीं हैं । राज्य का बिजली विभाग, इनका कर्ज और इनके छूट, जैसे कल क्रेडाई दबाव में जमीन लाये थे ना, 9 परशेंट 15 परशेंट करने का, ऐसे लोगों के दबाव में यह बिजली का निगम बैठ जायेगा । अभी 51 हजार करोड़ की बिजली खरीदी गई है, आगे और ज्यादा खरीदी जायेगी । बिजली की खपत बढ़ना निरन्तरता का काम है । अब सेटलमेंट में बात हो गई, मैं उसमें नहीं जाता ।

अध्यक्ष महोदय :- कुछ-कुछ छोड़ते जाईये तब पूरा होगा।

श्री अजय चन्द्राकर :- हां, हां, छोड़ रहा हूं। आपको एक बात बता देता हूं, मोटी चीज बता देता हूं। केंद्र सरकार ने जल जीवन मिशन में 74 लाख 20 हजार 564 का लक्ष्य तय किया था, जिसको राज्य सरकार ने 42 लाख 23 हजार 324 किया है। अब यह बताईये कि गरीबों के पानी में भी कटौती होती है। यह बड़ा बोलते हैं कि इसके लिये पैसे की कोई कमी नहीं है। मैं तो इसीलिये बाहर भाषण में बोलता हूं कि यह गरीबों से घृणा करने वाली सरकार है। सब चीज के लिये पैसा है। गोठान समिति के लिये पैसा है, मितान क्लब के लिये पैसा है, लेकिन गरीबों को पानी पिलाने के लिये पैसा नहीं है, उसका लक्ष्य कटौती करेंगे। माननीय आवास एवं पर्यावरण मंत्री जी बैठे हैं। मैं आपको बताते हुए चलता हूं कि प्रदेश में बिना लाइसेंस के जो अवैध प्लाटिंग हो रही है। प्रदेश में प्राप्त 296 शिकायतों में से 13 लोगों के ऊपर एफ.आई.आर. हुई है। हैं। रकबा 145 हेक्टेयर है। यदि आप वास्तविक स्थिति देखेंगे, तो जो बताई गई है उससे चार गुना ज्यादा है। इसीलिये हम बोलते हैं कि इस प्रदेश में कानून का शासन नहीं है, इस प्रदेश में भू-माफिया का शासन है। यदि भू-माफिया का शासन है, वह भी चलता यदि सरकार उस पर कार्रवाई करती। लेकिन यह सरकार के द्वारा नियंत्रित, पोषित, पालित, संरक्षित लोग हैं। मैंने तो उस दिन बोला कि कोई चौंक नहीं है, यदि सीने में गोली चलेगी तो चल जायेगी, उसमें क्या है। मेरे गुरूजी ने मुझको सिखाया है कि एक ही आदमी मृत्यु दे सकता है और एक ही आदमी जन्म दे सकता है। आपके राज में एजाज हो रहा है, चमत्कार हो रहा है।

श्री रविन्द्र चौबे :- यह चौथी बार है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सबसे बड़ा मजाक रोजगार चाहने वालों का है। उस लड़के ने चर्चा हो गयी, इसलिये आपत्ति ली, ठीक है। उसमें 18 लाख लोग हैं लेकिन आपने उसमें इंट्रेस्ट लिया था कि उसमें 01 तारीख तक सर्वे हो जायेगा। उसके नियम प्रकाशित हो जायेंगे। प्रारंभिक तौर पर नियम में जो बातें आई है, उसमें तो छत्तीसगढ़ में कोई बेरोजगार ही नहीं बचेंगे। जैसे आप कलाकारों को सहायता देते हैं लेकिन उसके नियम क्या रखते हैं कि जिनकी इनकम 60 हजार रूपये हो। किस कलाकार को उससे फायदा मिलेगा ? आप ऐसा नियम बनाते हैं कि फायदा देना ही न पड़े। चुनाव का साल है तो कुछ भी कर लेंगे। यदि छत्तीसगढ़ की नौजवानी को नशे मे धकेलने वाली कोई सरकार है तो माननीय भूपेश बघेल जी की सरकार है।

श्री बृहस्पत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, चन्द्राकर जी आपसे निवेदन करूंगा कि 15 साल आप सरकार में रहे और आप 15 सालों तक मंत्री रहे। आप नौजवानों के लिये कितना चिंता किये, कितना रूपये दिये ? आप जरा यह भी बता दीजिये ना, बड़ी कृपा होती।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक बार कहा गया कि राजीव मितान क्लब का पंजीयन नहीं हुआ है। एक बार खेल मंत्री जी के द्वारा कहा गया कि राज्य स्तर पर पंजीयन हुआ है। पंजीयन की नियम शर्तें क्या है ? पंजीयन की वित्तीय व्यवस्था कैसे होगी ? पंजीयन की साधारण बैठकें

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

कैसे होगी और असाधारण बैठकें कैसी होगी ? नियुक्ति की अहर्ताएं क्या होंगी ? उसके ऑडिट कितने दिन में होंगे और उसका वित्त पोषण कैसे होगा ? कभी इसमें विधान सभा में खेल मंत्री जी ने और माननीय मुख्यमंत्री जी ने चर्चा की ? इसमें इस साल 175 करोड़ रूपये का बजट है। यह चुनावी साल है। यह पानी में बहाने वाला बजट है, मैं इस बात को बताऊंगा।

माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी यहां के खिलाड़ियों का दल 2022 में उज्जैन में खेलो इंडिया में गये थे। वहां 21 खिलाड़ियों का दल गया था, जिनको इन्होंने एक रूपया का पारिश्रमिक नहीं दिया। मैंने दूसरे खेल की तो चर्चा कर ली। उत्कृष्ट खिलाड़ी का पुरूस्कार नहीं दिया, चलिये उसको भी छोड़ दें। मैं आपसे शुरू से यह कहना चाहता हूं कि आप छत्तीसगढ़ के हैं, आप छत्तीसगढ़ी, छत्तीसगढ़ियां, ऐसा-ऐसा क्या-क्या बोलते हैं। आप इन खेलों को नियमित, निगमित क्यों नहीं करते ? इनको संस्थागत क्यों नहीं करते हैं ? यह आखिरी साल ही क्यों करते हैं, यह नियमित क्यों नहीं होना चाहिए ? आप उसके लिये संघ बनाईये, आप पैरलल ओलंपिक संघ बनाईये, किसने मना किया है। उसके कोर चलाईये। उसको सेवा भर्ती नियमों में स्थान दीजिये। जो पिट्ठुल जितेगा, उसको यह नौकरी दी जायेगी, जो सूर जीतेगा उसको यह नौकरी दी जायेगी। पिट्ठुल और खेल जीतने वालों को इन-इन नंबरों में पी.एस.सी. की इंटरव्यू में इतना स्थान दिया जायेगा। । कौन ने मना किया है ? आपने राजभाषा आयोग बनाया है। आप छत्तीसगढ़ के हैं। आपने तुरंत "गढ़बो छत्तीसगढ़" लिख दिया। आज तक एक भी नोटशीट छत्तीसगढ़ी में चली है। सब अधिकारियों को छत्तीसगढ़ी में बोलने, लिखने का प्रशिक्षण दिया जायेगा ताकि आम जनता को तकलीफ न हो। आप जरा यूटीडी देखकर आईए कि एम.ए. छत्तीसगढ़ी में कितने बच्चें पढ़ रहे हैं। तो छत्तीसगढ़ के नाम पर छत्तीसगढ़ी और छत्तीसगढ़िया के नाम पर मैंने माननीय अकबर जी से पूछा, वह मौन साध गये। मैंने सटीक उत्तर वाले मंत्री जी से पूछा, वह पेनाल्टी कॉर्नर में गोल दागते हैं तो उनका निशाना चूकता नहीं है। मैंने उनसे कहा कि आपके कंसलटेंट कहां के हैं ? आप बता दीजिएगा कि उनकी क्या योग्यता है ? उन्होंने उस लाईन को ही पार कर दिया। उन्होंने बताया ही नहीं। आपने पर्यावरण में जो कंसलटेंट रखा है, वह कहां के लोग हैं ? साहित्य परिषद में दो लोगों के नाम बताए, वह कहां के लोग हैं ? मैं उनको अच्छे से जानता हूँ। आप छत्तीसगढ़, छत्तीसगढ़ी और छत्तीसगढ़िया के नाम पर जो खेल, खेल रहे हैं उसको सब समझ रहे हैं। आपने हिन्दी ग्रन्थ एकादमी की क्या गत बनायी है, वह तय है। आपने इसके लिए क्या किया है, वह तय है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, वेलफेयर स्टेट में शिक्षा, स्वास्थ्य सबसे प्राथमिक क्षेत्र होते हैं। मुझे कहना नहीं चाहिए लेकिन आप देखिएगा मैं कृषि में भी आप ही के द्वारा बताई गई चीजें बताऊंगा क्योंकि आप उसमें किसान-किसान करते हैं। उच्च शिक्षा विभाग में 5,795 पद, तकनीकी शिक्षा विभाग में 5 हजार 6 पद, चिकित्सा शिक्षा विभाग में 17854 पद, कृषि शिक्षा विभाग में 4938 पद, स्कूल शिक्षा विभाग में 74 हजार व्याख्याता शिक्षकों के पद रिक्त हैं । 1 लाख, 7 हजार 593 पद रिक्त हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

आप वर्ष 2022-23 के सभी प्रतिवेदनों को पढ़ लीजिए। अब छत्तीसगढ़ की शिक्षा कहां जाएगी ? छत्तीसगढ़ के लोग क्या बनायेंगे, मैं इसीलिए बोला।

खाद्य मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :-माननीय अध्यक्ष महोदय माननीय अजय चन्द्राकर जी बहुत अच्छा भाषण दे रहे हैं, लेकिन थोड़ा सा इनको संज्ञान में लेना पड़ेगा कि आरक्षण विधेयक अटका हुआ है इसलिए यहां भर्ती नहीं हो पा रही है। इसलिए यहां ऐसी स्थिति है। इसलिए हमारा आपसे आग्रह है कि आरक्षण विधेयक को पारित करने के लिए वहां से माननीय राज्यपाल के दस्तख्त हो जाए, आप इसके लिए प्रयास करिये।

उच्च शिक्षा मंत्री (श्री उमेश पटेल) :- माननीय अजय भईया, आप रिक्त पदों की बातें कर रहे हैं। आप यह भी बताईये कि आप वर्ष 2017-18 में कहां छोड़कर गये थे ? आप इन्हें क्या स्थिति में छोड़ कर गये थे।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, वर्ष 2018 के पहले इस पृथ्वी या इस छत्तीसगढ़ में दो-तीन चीजें थीं। एक माननीय भूपेश बघेल थे, एक उनके पुन्नी नाहने का चौंरा था और उनको साकड़ देने वाले विरेन्द्र ठाकुर और भरोसा राम ठाकुर थे। बाकी सब शून्य था। इन 4 सालों में सारी जगह माननीय भूपेश बघेल जी की दया, कृपा से ही है और वह चार ही लोग थे। यहां पाटन था, माननीय मुख्यमंत्री जी, उनके पुन्नी नाहने का चौंरा था, उनको साकड़ देने वाले दो लोग थे। बाकी ..।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अजय भईया, क्या है कुछ लोग ऐसे भी हैं जो यह बोलते हैं कि हमें वर्ष 2014 के बाद आजादी मिली है। आप समझ रहे हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 2 दिसम्बर को जिस दिन विशेष सत्र हुआ । जब से यह सरकार आयी है, आज से शुरू दिन के प्रतिवेदन पढ़ लीजिए। इनकी प्राथमिकता में शिक्षा था ही नहीं। मैंने उस दिन आपके विभाग में तो नहीं बोला, लेकिन मैंने बहुत सारी चीजें बोली थी। उन्होंने 3 चीजों का उत्तर दिया, उन्होंने क्या चीजों का उत्तर दिया, उसके भाषण रिकॉर्ड हैं बाकी चीजें जो मैंने उठायी थी, वह सब गोल हो गई। चलिए, कोई बात नहीं। हमें बजट को पारित करना था। मैं आपको शिक्षा विभाग का एक उदाहरण बता रहा हूँ माननीय संसदीय कार्यमंत्री जी एक किलोल पत्रिका है। स्कूलों को आजीवन खरीदने के लिए विभाग से ऑर्डर निकाला गया था। 10 हजार रूपये तक का पैकेज निर्धारित किया गया था। वितरण और विक्रय विच टू फ्लाई सोसायटी रायपुर द्वारा कराया गया। वह बैठे हैं नहीं तो चीफ सेक्रेटरी बैठे हैं आप फाईल निकलवा कर मंगवा लीजिए। आपने आजीवन खरीदी की इसमें 100 करोड़ रूपए की कमाई की । इसलिए मैंने कहा कि हर जगह केवल आप बीरबल हैं। आप फाईल मंगवा लीजिए मैं किलोल पत्रिका बोल रहा हूँ। मैंने सोसायटी का नाम बताया।

श्री बृहस्पत सिंह :- वाह, अकबर भाई, आपने बहुत जोरदार बीरबल की कहानी सुनाई।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय राजा साहब, आप मेरे साथ गये थे। मैंने किस शैली में मेडिकल कॉलेज खुलवाया था और उस निर्धारित अवधि में मेडिकल कॉलेज खुल गया था, इसके आप गवाह हैं। चंदूलाल चन्द्राकर मेडिकल कॉलेज को आप अधिग्रहित कर रहे हैं, बाकी मेडिकल कॉलेज कब खुलेंगे उसको भगवान भी नहीं जानता है। आप समझ रहे हैं। आप उसको मॉडल बना लीजिए, खुला है, कब खुलेगा, जितनी प्रक्रिया है उसको मैंने पढ़ा है, डी.एम.ई. को भी बुलाकर पूछवा दीजिए, सब विधायक जान जायेंगे। भाषण देने के बजाय आप 04 की स्वीकृति ले लेते और बोलते कि हम एक मेडिकल कॉलेज को खोलेंगे, एक मेडिकल कॉलेज खोलने लायक हमारी वित्तीय स्थिति है और जो सबसे ज्यादा जरूरी है, उसको आप खोल लेते। आपकी प्राथमिकता में राजनीति है, छत्तीसगढ़ की सेवा नहीं है।

श्री बृहस्पत सिंह :- ज्यादा मेडिकल कॉलेज खोलने से आपको तकलीफ हो रही है, जांजगीर-चांपा में अगर मेडिकल कॉलेज खुल रहे हैं तो उससे आपको तकलीफ है।

स्वास्थ्य मंत्री (श्री टी.एस.सिंहदेव) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, नये मेडिकल कॉलेज के संदर्भ में दिल्ली से भी बात हुई है और उन्होंने भी कहा है कि जल्दी से जल्दी प्रस्ताव दीजिए।

श्री अजय चन्द्राकर :- हम लोग यथा संभव, जल्दी से जल्दी, समय बताया जाना संभव नहीं है।

श्री बृहस्पत सिंह :- महाराज साहब, आप दिल्ली की बात बता दिये। चन्द्राकर जी, आप मेरी बात तो सुनिये।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप उधर देखकर बोलिये न।

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, महाराज साहब, दिल्ली की याद करवा दिये। अब यह दिल्ली दौड़ लगायेंगे कि किसी भी कीमत पर मेडिकल कॉलेज की स्वीकृति न हो। जिस तरह से आरक्षण का विधेयक पास करते समय तो छत्तीसगढ के लोगों से डर से इन्होंने हाथ उठाकर सर्वसम्मति से पास किया लेकिन लगातार माननीय राज्यपाल महोदय से रूकवाने का काम किया। इसी तरह से फिर दौड़ लगायेंगे। चन्द्राकर जी, आपसे आग्रह है कि आप दिल्ली दौड़ मत लगाईये, यहां मेडिकल कालेज खुलने दीजिए।

श्री शिवरतन शर्मा :- बृहस्पत सिंह जी, राजा साहब दिल्ली दौड़ लगा रहे हैं पर दिल्ली दौड़ का उनको प्रतिफल नहीं मिल रहा है। दिल्ली दौड़ लगाने मे कसर थोडी छोड़े हैं।

श्री अरूण वोरा :- चन्द्राकर जी, मैं आपसे यह कहना चाहता हूं कि 04 साल में दिल्ली ने किस-किस योजना के अंतर्गत कितना पैसा दिया? आप छत्तीसगढ़ की तो बात कर रहे हैं, छत्तीसगढ़ का विकास हो रहा है। यह छत्तीसगढ़ की जनता देख रही है।

श्री अजय चन्द्राकर :- दुर्ग से राजनांदगांव फोरलेन बन रहा है न, उसको 25 साल पहले [xx] स्वीकृत कराया था। (हंसी)

श्री अरूण वोरा :- [xx] सब काम किये हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आरक्षण के बारे में भी बतायें।

अध्यक्ष महोदय :- प्लीज, डिस्टर्ब न करिये।

श्री बृहस्पत सिंह :- [xx] जो करके गये हैं न, [xx] बहुत सम्मानित नेता थे, छत्तीसगढ की आन-शान और सम्मान थे। उनके पैर की धूल के बराबर भी नहीं हो। आप उनको चुनौती मत दीजिए।

श्री अरूण वोरा :- नहीं है, आप धर्मजीत सिंह जी से पूछ लीजिए।

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय अध्यक्ष जी, [xx] ऐसी भाषा का उपयोग करना बिल्कुल ठीक नहीं है।

खाद्य मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- [xx] हमारे सम्मानित नेता थे, मुख्यमंत्री, सांसद और केन्द्रीय मंत्री रहे।

श्री बृहस्पत सिंह :- [xx] हमारे अविभाजित मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री थे। (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- भारतीय जनता पार्टी में कोषाध्यक्ष बनकर बताईये।

श्री देवेन्द्र यादव :- आपको बिल्कुल अधिकार नहीं है। हमें इस बात से आपत्ति है। इसके लिए आपको खेद जताना चाहिए।

श्री अमरजीत भगत :- [xx] सम्मानपूर्वक नाम लिया जाना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, आप लोग बैठिये।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आपको गर्व से सम्मान करना चाहिए।

श्री बृहस्पत सिंह :- [xx]

अध्यक्ष महोदय :- देखिये, वोरा जी का मैं भी भक्त हूं। उनके सम्मान में कोई बात आई होगी तो मैं सब विलोपित कर दूंगा।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम लोग [xx] का मुकाबला कर ही नहीं सकते। हम लोग सब कर सकते हैं, जीवन में दल-बदल नहीं कर सकते। हम समाजवादी से कांग्रेसी नहीं हो सकते।

श्री अरूण वोरा :- माननीय आप [xx] के बारे में जानते क्या हैं ?

श्री शिवरतन शर्मा :- मै पूरा जानता हूं। हम लोग जीवन में दल-बदल नहीं कर सकते, यह बात नोट कर लो।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- वह जनता से जुड़े हुए व्यक्ति थे।

श्री अरूण वोरा :- आप कुछ नहीं जानते। [xx] अपने आप में एक ग्रंथ हैं। उसको आप कभी नहीं पढ़ सकते। आप रमन सिंह जी से पूछिये।

अध्यक्ष महोदय :- अरूण जी, अगर [xx] के असम्मान में कोई भी बात होगी तो मैं उसको विलोपित कर दूंगा। आप परेशान मत होईये।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने उनके असम्मान में कहा ही नहीं है।

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय अध्यक्ष जी, लेकिन कैसा व्यंग्यात्मक रूप से [xx] के बारे में बोले हैं।

अध्यक्ष महोदय :- आप लोग बैठिये। आप उनको भाषण देने दीजिए न। अभी समय कम है।

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय अध्यक्ष जी, इनका क्या व्यंग्य है। [xx] बहुत ऊंचे व्यक्ति थे और उन्होंने पूरे प्रदेश की चिंता की। [xx]

अध्यक्ष महोदय :- बृहस्पत सिंह जी, सबसे पहले आपका ही चरणवंदन किया है। कम से कम इतना तो शांति बनाये रखिये।

श्री धर्मजीत सिंह :- वह समझते ही नहीं कि चरणवंदन क्या है ?

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जो चंदूलाल चन्द्राकर महाविद्यालय का अधिग्रहण हो रहा है जो सबसे अच्छे आदमी थे, वह अब नहीं रहे।

संसदीय कार्य मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- माननीय अध्यक्ष जी, माननीय अजय जी बेहद विद्वान सदस्य हैं। कल अमितेश जी इधर बैठे थे तो उनको सपने में पंडित रविशंकर शुक्ल और श्यामाचरण शुक्ल जी आये थे। अब आज इधर अरूण जी बैठे हैं तो उनको सपने में [xx] याद आ रहे हैं। यह लोग इस प्रदेश के बड़े निर्माता रहे हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- साहब, मैं अपमानजनक बोला जी नहीं हूं। आप क्यों उसको इधर-उधर घूमा रहे हैं।

श्री रविन्द्र चौबे :- मैं कहां कुछ घुमा रहा हूं। मैं कह रहा हूं कि आप सम्मान से ही बोले हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- सम्मान से ही बोलता हूं।

श्री रविन्द्र चौबे :- आप सम्मान से ही बोले हैं। लेकिन आप सपनों की राजनीति क्यों कर रहे हैं ? जो लोग यहां हैं उनकी बात करिये न।

श्री अजय चन्द्राकर :- ठीक है, आपके निर्देश का पालन होगा। माननीय अध्यक्ष महोदय, एक एडिशनल कलेक्टर लेवल की अधिकारी ने चंदूलाल चन्द्राकर कालेज का मूल्यांकन किया। जब वह सबसे अच्छे आदमी थे तो भरोसा भी था कि गडबड़ नहीं होगा, कुछ नहीं होगा। वह लड़की जो कर रही थी, उसको एम.आर.आई. कितनी टेस्ला का होता है, सी.टी. स्केन की केपिसिटी कितनी थी, यह भी मालूम नहीं होगा। आप पारदर्शिता के साथ अधिग्रहण कीजिये।

श्री टी.एस. सिंहदेव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, वह पूरी समिति थी, जिसमें तकनीकी दक्ष लोग उसके सदस्य थे। उन्होंने वह मूल्यांकन किया है। वह उसके एक सदस्य थे।

श्री बृहस्पत सिंह :- सर, उसमें सभी विशेषज्ञ थे। इतना जरूर था कि चंद्राकर जी जैसे विद्वान नहीं थे।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- आपसे ज्यादा विशेषज्ञ कोई नहीं होगा। अभी जितने विशेषज्ञ आपके हैं।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- माननीय अध्यक्ष महोदय, दो स्वास्थ्य मंत्री हैं। यह ज्यादा चतुर स्वास्थ्य मंत्री हैं।

श्री अमरजीत भगत :- आज पूरा लाईन लेंथ बिगड़ा हुआ है। आज आप आउट ऑफ ट्रेक जा रहे हैं। आपको क्या हो गया है? (हंसी)

श्री अजय चंद्राकर :- हमने कहा कि आफताब आलंपी कमेटी की रिपोर्ट रख दीजिये। हमने कहा कि क्वांटिफायबल डाटा की रिपोर्ट रख दीजिये। यदि सरकार में नैतिकता है, यदि उन्होंने अच्छा काम किया है तो रिपोर्ट को टेबल पर रख देना चाहिए। जैसा कि हमने अच्छा काम किया। माननीय मुख्यमंत्री जी ने वक्तव्य देने की बात कही, उसको प्रस्ताव में बदल दिया। हम लोग भी उसमें सहमति दे देते। तो इतनी पारदर्शी सरकार है तो उसको पारदर्शिता के साथ सामने रखना चाहिए। अच्छी बात है कि हमको 120, 150 सीट ऊपर मिलेगी। डॉक्टरों की कमी है। हम समर्थन करते तो क्या बुरा था? माननीय अध्यक्ष महोदय, नरवा, गरूवा, घुरूआ, बाड़ी योजना में अब तक 1342 करोड़ रूपये खर्च हो चुका है। यह मेरे प्रश्न के उत्तर में है। मैंने इसको लाया है। मैंने उस दिन बताया था। बड़ी-बड़ी संस्थाओं से अध्ययन करवाते हैं। सिंचाई परियोजनाओं का जल विद्युत के लिए कंपनी रखते हैं। सर्वे बनाने के लिए बेरोजगारी में एक निजी संस्था के रिपोर्ट को स्वीकार करते हैं। इनकी कितनी अच्छी योजना है, प्रधानमंत्री जी इनकी प्रशंसा कर रहे हैं तो 15 लाख टन पेरा कहां से मिला, किससे मिला, कौन-कौन सी जगह से मिला और इसमें सोसियोलाजी टेक किसी अच्छी संस्था से करवा लें कि कितना उपयोग हुआ है, कितना उपयोग नहीं हुआ है? गरूवा नाम से गरूवा नहीं होने दिया है तो जब आपने मनरेगा में गरूवा शब्द का उपयोग किया है तो मनरेगा और गरूवा का क्या संबंध है? आप सीधे-सीधे क्यों नहीं बोलते कि मैं चारागाह के नाम से बनाया हूं और छत्तीसगढ़ के किसी गौठान में चारागह नहीं है। उस दिन इस बात को बोला था।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष जी, उत्तर में ही स्पष्ट है कि मनरेगा के जो नार्म्स है, उसी हिसाब से काम हुए हैं। इसलिए दिल्ली पैसा देता है।

श्री अजय चंद्राकर :- बिल्कुल नहीं।

श्री रविन्द्र चौबे :- अलग-अलग योजनाओं का पैसा है। आप जो 1100 करोड़ रूपये कह रहे हैं, वह भी उत्तर में स्पष्ट है कि किन-किन मदों का कितना-कितना पैसा लगा हुआ है।

श्री रामकुमार यादव :- अध्यक्ष जी, गोबर के नाम से मजाक उड़ात हे। छत्तीसगढ़ के गरीब मन ला 200 करोड़ रूपये से ऊपर गोबर ला बेचे के पैसा मिले हे।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, नैतिक साहस है, नैतिकता है या वास्तव में काम किया है तो थर्ड पार्टी एसेसमेंट करवा लें न। मैं तो कहता हूं कि यदि और बड़ी बात है तो अभी चुनाव

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

आयुक्त नियुक्ति में सुप्रीम कोर्ट ने स्ट्रक्चर पास किया है कि यह-यह रहेंगे। जिसमें विवाद भी हुआ है। नेता प्रतिपक्ष को रख लें और इस संस्था को बुला लें और इसका एसेसमेंट करवा लें कि कितना चारागाह है, कौन-कौन से गौठान में। छत्तीसगढ़ की जनता को पता लग जायेगा ।

श्री रविन्द्र चौबे :- भैया, आप तो खुद पंचायत मंत्री रहे हैं। मनरेगा में खर्च हुआ है। पहले सोशल ऑडिट होता है। सारे खर्चों के अलग-अलग नार्म्स हैं।

श्री अजय चंद्राकर :- आपने कंवर्जेंस से बनाया है। सिर्फ मनरेगा में नहीं किया है। कंवर्जेंस में बनाया है। आप सिर्फ मनरेगा का उपयोग करते तो मैं आपकी बात मान लेता।

श्री रविन्द्र चौबे :- मैंने सभी योजनाओं का कहा।

श्री अजय चंद्राकर :- विद्वान आदमी खड़े हो गये।

श्री बृहस्पत सिंह :- अध्यक्ष जी, यह बात सच है कि जब हम लोग विपक्ष में थे, उधर बैठे थे तो पंचायत विभाग का बहुत चर्चा था कि 10 प्रतिशत से नीचे का मंत्री नहीं सुनता है। तो वह चर्चा अब सुनने को नहीं मिल पा रहा है, यह बात सच है।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय संसदीय कार्य मंत्री जी, हम लोग जानना चाह रहे हैं कि नव रत्न कौन से हैं और तीन बंदर कौन से हैं?

श्री रविन्द्र चौबे :- हे देवी, मैंने आपका प्रश्न नहीं समझ पाया। (हंसी)

श्री टी.एस. सिंहदेव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी गौठान की बात हो रही है। मैं अपने ही गृह ग्राम की बता बता रहा हूं। केशवपुर हर्राडिकरा में ..।

श्री शिवरतन शर्मा :- संसदीय कार्य मंत्री जी, आप रंजना जी का प्रश्न नहीं समझ पाये। उन्होंने प्रश्न किया है कि अपके नव रत्न कौन से हैं और गांधी जी के तीन कोन से हैं?

श्री रविन्द्र चौबे :- श्रीमान, मेरे पहले रत्न में तो आप ही शामिल हैं। (हंसी)

श्री अरूण वोरा :- नहीं, वह बंदरों में हैं।

अध्यक्ष महोदय :- चर्चा होने दीजिये।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, नरवा, गरूवा, घुरूवा बाड़ी में एक रूपया राज्य शासन का नहीं है। यह जितने कंपोनेंट हैं, पढ़ लीजिये।

श्री रविन्द्र चौबे :- हमने उत्तर में दिया है कि बजट में अलग से प्रावधान नहीं है । सारी योजनाओं का जहां-जहां से पैसा लगा है, वह आपके पास है ।

श्री अजय चंद्राकर :- आपका काम क्या है ? डिस्टार्ट और डॉयवर्ट, असली । जो संसदीय कार्यमंत्री का काम होता है ।

उच्च शिक्षा मंत्री (श्री उमेश पटेल) :- अजय भैया, एक्चुअली क्या है न । आपका चश्मा अलग हो गया है । आप चौबे जी के चश्में से लगाकर देखेंगे तो आपको साफ-साफ नजर आयेगा । (हंसी)

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, फसलों का क्षेत्रफल 66 लाख 64,000 हेक्टेयर बताया गया है ।

अध्यक्ष महोदय :- अब इसमें कई बार तो बात हो चुकी है ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप सुन तो लीजिये । मैं आगे बढ़ रहा हूं ।

खाद्य मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- What you say ? My friend is very confused. (हंसी)

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जैविक उत्पाद हैं । उसकी ब्रांडिंग करते हैं करके रिपोर्ट में लिखा है तो कौन-कौन से जैविक उत्पाद हैं, कौन सा जिला कर रहा है ? एक उत्पाद, एक जिला बताये हैं । वह कहीं पर दिखता नहीं है । माननीय मंत्री जी उत्तर देंगे तो बतायेंगे कि जैविक उत्पाद कौन-कौन से हैं, कहां बनती है, कितनी बनती है और कितनी राशि हुई और जितने हेक्टेयर कृषि भूमि बतायी गयी है और जितने किसान बताये गये हैं, उतनी भूमि में खेती नहीं होती तो फिर किसानों की संख्या कैसे बढ़ गयी ?

अध्यक्ष महोदय :- चलिये न, जल्दी-जल्दी करिये ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अब मैं आपको बता देता हूं कि सिंचाई क्षमता में अपने भाषण में इन्होंने लिखा कि 4 साल में 3 लाख हेक्टेयर बढ़ गयी और उसका उदाहरण दे रहे थे कि इस-इस स्त्रोत से बढ़ी । इनके प्रश्न के उत्तर में इसी साल के 13 मई के प्रश्न में बता देता हूं कि आपने क्या उत्तर दिया है । वित्तीय वर्ष 2021-22 में वास्तविक सिंचाई क्षमता 16,974 हेक्टेयर की कमी आयी । वहीं वर्ष 2022-23 में...।

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इनका भाषण जम नहीं रहा है । एक घंटे से ज्यादा हो गया है । (हंसी)

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 29,762 हेक्टेयर की कमी आयी । यह आपने कहा है और आप एक-तरफ यह छापते हैं कि सिंचाई क्षमता बढ़ी। जितने जल-विवाद हैं । मैं चाहता हूं कि चूंकि माननीय मुख्यमंत्री जी को मालूम है कि पोलावरम में वकील खड़े होगा कि नहीं होगा या समय लेंगे ? आप बता दीजियेगा कि कब खड़े होगा ? सुप्रीम कोर्ट में आपको जो इंद्रावती जल विवाद में जाना है, अभी तक गये हैं कि नहीं गये हैं ? अभी तक तो गये नहीं हैं । आपका पक्ष रखने के लिये पोलावरम में कोई खड़ा हुआ नहीं है तो आप तो बड़े जोरदार आदमी हैं।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, वे अपने भाषण में सब बता देंगे ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं दो मिनट में अपनी बात समाप्त करता हूं । 200 फूट पार्क में एक फूट पार्क सुकमा में बना । ऐसी जगह में बना जहां कितना खर्चा हुआ है, क्या बनेगा ? उसको किसी ने नहीं देखा है । एक आदमी ने नहीं देखा है, सिर्फ और सिर्फ कवासी लखमा जी । माननीय अध्यक्ष महोदय, वाणिज्य कर उद्योग । मैंने बोला न कि आज की तारीख में माननीय

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

मुख्यमंत्री जी के पास गोबर हिसार है, बाकी बेकार है । दुनिया स्टार्टअप की तरफ जा रही है, मैं यह नहीं जानता हूं कि आप छत्तीसगढ़ सरकार का कोई स्टार्टअप समझते हैं कि नहीं समझते हैं ? पॉलिसी बनाना तो दूर की बात है । एम.ओ.यू. में हमेशा अलग-अलग उत्तर आते हैं, मैंने इसी प्रश्न में हमेशा बोला कि आपके नेतृत्व में इस विधानसभा की गरिमा को गिराये जाने का षड़यंत्र है । मैं एक प्रश्न को पढ़ देता हूं । आपने आज का सुना है, एम.ओ.यू. कुल 185, 18 को भूमि आवंटित, 17 में उत्पादन प्रारंभ, 168 को भूमि आवंटन नहीं तथा रोजगार सृजन 40,448 लोगों को देने हेतु मात्र 3256 को दिया गया । आपने दिनांक 03 मार्च, 2023 की प्रश्नोत्तरी और आज की प्रश्नोत्तरी सुनी है । कौन सी बात सही है और यह विधानसभा की अवमानना है कि नहीं है ? क्या यह गलत उत्तर है ? हमारी बार-बार आपत्ति के बाद क्या कभी एक आदमी को निलंबित किया गया, एक आदमी को प्रताड़ित किया गया? एक आदमी ने खेद व्यक्त किया ? हमने आपको एक और गलत-सही जानकारी को लिखकर दिया है ।

श्री बृहस्पत सिंह :- आप क्या चाहते हैं कि वे प्रताड़ित हों ? क्या आप यह चाहते हैं कि उनको प्रताड़ित किया जाये ?

अध्यक्ष महोदय :- प्लीज, बैठिए ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक दिन माननीय मोहम्मद अकबर जी बोल रहे थे कि केंद्र सरकार से एक रूपये नहीं मिलता है । धरमलाल कौशिक जी के प्रश्न के उत्तर में आया है कि केंद्र सरकार से हमको 51,566.47 करोड़ रूपए प्राप्त हुआ और राज्य सरकार का 11,148 करोड़ रूपये किसानों को दिया गया, यह लिखित प्रश्न का उत्तर है ।

परिवहन मंत्री (श्री मोहम्मद अकबर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं फिर से इस बात को दोहराता हूं और आप उनकी पूरी पुरानी कार्यवाही को निकालकर देखिये। मैंने कहा कि ध्यान से सुनना । धान खरीदी के लिये छत्तीसगढ़ सरकार को केंद्र सरकार एक रूपये नहीं देती । जो हम पूरा कस्टम मीलिंग कराकर खरीदी करते हैं, पूरी व्यवस्था करते हैं । चावल जमा करते हैं उसका देती है । मैं फिर से इस बात को दोहराता हूं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- सुनिये, मैं आपसे एक मिनट के लिए सहमत हो जाता हूं । अब आप प्रश्नोत्तरी निकालिए । 22 जुलाई, 2022, प्रश्न संख्या 8 (क्र.476) इसी विधान सभा की । कुल धान खरीदी के अंतर्गत, धान खरीदी के अंतर्गत यह लिखा है । चावल खरीदी के अंतर्गत और चावल जमा करने के बाद नहीं लिखा है । जब आप दो दिन से बोल रहे हैं तो फिर आप जो दोषी है उसके खिलाफ कार्रवाई करने की घोषणा कीजिए । जब आप दो दिन से बोल रहे हैं तो फिर कार्रवाई करने की घोषणा कीजिए ।

श्री अमरजीत भगत :- केन्द्र सरकार धान खरीदी के लिए एक ढेला पैसा नहीं देती है । राज्य सरकार अपने संसाधन से, बैंक से लोन लेकर खरीदी करती है । जब चावल जमा करते हैं उसका पैसा मिलता है । इसमें इतने जोर जोर से बोलने का क्या मतलब है ।

श्री बृहस्पत सिंह :- चंद्राकर जी, एक आदेश की कॉपी दिखा दीजिए । जब धान खरीदने के लिए भारत सरकार ने पैसा दिया हो ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, चंद्राकर जी।

श्री अजय चंद्राकर :- मैं जल्दी कर रहा हूं ।

श्री अमरजीत भगत :- अगर समझ में नहीं आ रहा होगा तो आप मुझसे पूछ लीजिए, बृहस्पत जी से पूछ लीजिए, आपको समझ में आ जाएगा ।

श्री बृहस्पत सिंह :- वही तो पूछ रहा हूं कि एक आदेश की कॉपी दिखा दो कि मोदी जी ने धान खरीदने के लिए पैसा दिया हो ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अध्यक्ष जी, यह सब बजट भाषण में बोल चुके हैं, उसी को तो दोहरा रहे हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, खत्म करने दीजिए भाई ।

श्री बृहस्पत सिंह :- एक ऑर्डर की कॉपी दिखा दो ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- कहां खत्म कर रहे हैं ?

अध्यक्ष महोदय :- कर रहे हैं भाई ।

श्री अजय चन्द्राकर :- हां कर रहा हूं मैं । सहकारी आंदोलन की यह स्थिति है कि 994 पैक्स घाटे में हैं । यदि पैक्स घाटे में चलते हों तो सहकारी आंदोलन की क्या स्थिति होगी ? ब्याज माफी का पैसा अभी तक बहुत सी सोसायटियों को लौटाया नहीं गया है । अध्यक्ष महोदय, दारू की बिकी, सेस के एक साल को छोड़कर आप लगातार बढ़ रहे हैं ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अध्यक्ष जी, पटल पर रखवा दीजिए इन्होंने जो बजट भाषण में बोला है वही बोल रहे हैं । कुछ भी नया नहीं बोल रहे हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- कुछ भी बोलने दीजिए, खत्म करने दीजिए ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आनुपातिक रूप से आप सर्वोच्च बिक्री करने वाले राज्य हो गए । यह रिपोर्ट है । [XX][3] प्रदेश में 35.6 प्रतिशत लोग शराब का सेवन करते हैं, [XX] 6 महीने में बढ़ी हैं, यह चिंता जनक स्थिति है ।

श्री अमरजीत भगत :- [XX]

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- रंजना ।

---

3 [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- रिपोर्ट आई है, रिपोर्ट बता रहे हैं ।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- [XX]

डॉ. रश्मि आशिष सिंह :- कौन सी एजेंसी अधिकृत है सर्वे करने के लिए ।

श्री बृहस्पत सिंह :- [XX]

श्री अमरजीत भगत :- [XX]

श्री रामकुमार यादव :- [XX]

श्री बृहस्पत सिंह :- [XX]

अध्यक्ष महोदय :- मैं सब विलोपित करता हूं ।

श्री शिवरतन शर्मा :- अध्यक्ष जी, [XX] प्रदेश के शिक्षा मंत्री का भाषण है ।

अध्यक्ष महोदय :- आप लोग जो भी उनके भाषण में खलल डाल रहे हैं सब विलोपित । शर्मा जी आप अपना भाषण दीजिए ।

श्री अजय चन्द्राकर :- छत्तीसगढ़ की कंपनी को 44 करोड़ रूपए का अर्थदंड लगाया गया । झारखंड में ब्लैक लिस्टेड कर दी गई, अब एक ही साल में जब वहां घाटा हुआ है ।

श्री अमरजीत भगत :- लेकिन असली बात आई नहीं है [XX]

अध्यक्ष महोदय :- हो गया, खत्म कर रहे हैं, क्यों उनके पीछे पड़े हो ?

श्री अमरजीत भगत :- [XX]

अध्यक्ष महोदय :- मैंने कहा कि छोड़ दीजिए । मैंने सब विलोपित कर दिया । आपने भी जो कहा उसको भी विलोपित कर दिया ।

श्री बृहस्पत सिंह :- [XX]

श्री अमरजीत भगत :- [XX] [4]

डॉ. रश्मि आशिष सिंह :- [XX]

अध्यक्ष महोदय :- आप लोग समझे नहीं । उनके भाषण में जो आया है वह विलोपित, आप मंत्रिगण ने भी जो कहा, वह सब विलोपित । बात खत्म । अब उनको भाषण खत्म करने दीजिए ।

डॉ. विनय जायसवाल :- अध्यक्ष महोदय, कम से कम यह तो बता दें कि ये आंकड़े कौन सी एजेंसी ने जारी किये हैं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, यदि आप बेरोजगारी के आंकड़े को सदन में उल्लेख करने की अनुमति दे सकते हैं ।

[4] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- अब नही दूंगा यार ।

श्री अजय चन्द्राकर :- सुनिये आप, आग्रह है । तो मैं जिस रिपोर्ट के आधार पर इसको पढ़ रहा हूं । उस रिपोर्ट को भी मुझे पटल पर रखने की अनुमति दीजिए । मैं [XX] करता हूं । यदि यह सरकार [XX] करती तो आज तक दारू प्रतिबंधित कर देती । गली-गली, गांव-गांव में अवैध शराब बिक रही है। सरकारी संरक्षण में बिक रही है । मैंने एस.पी. को नाम दिया कि यह-यह आदमी है तो कहा गया कि वह आदमी शराब नहीं बेचता ।

श्री बृहस्पत सिंह :- [XX]

श्री अजय चंद्राकर :- मैंने शराबी नहीं कहा, आप थोड़ा काम साफ करवा कर आओ। बेकार बात मत करो।

अध्यक्ष महोदय :- चलो ना अब हो गया।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अब मैं खत्म कर रहा हूं। माननीय गृह मंत्री जी नहीं हैं, 1719 से 1748 तक मुगल काल में मोहम्मद शाह रंगीला बैठते थे। नादीर शाह करनाल तक आ गए।

श्री अमरजीत भगत :- [XX]

श्री अजय चंद्राकर :- वे मुर्गे की लड़ाई देख रहे थे। वे बोले की अभी आने दीजिए। कोई चिंता की बात नहीं है। वह ऐसे राजा थे, उस दिन धर्मजीत जी बता रहे थे, दरबारी जनता को मिलाने के लिए उससे घूस लेते थे और वह अपने दरबारियों से घूस लेता था। नादीर शाह की आई उसको तीन तमाचा देकर नीचे उतारी और दिल्ली में जो लूट हुई, वह इतिहास की सबसे बड़ी लूट है। महोदय, इनके संरक्षण में हर तरह का अपराध इस छत्तीसगढ़ में पनप रहा है, हम कब मर जाएंगे उसका ठिकाना नहीं है। हमारे बच्चे कब बिगड़ जाएंगे ठिकाना नहीं है। मैं इनको दस बार बोल चुका हूं। मेरे गांव में चलिए, क्या नशा चाहिए, मैं आपको उपलब्ध करा दूंगा। इस बात को कितनी बार बोलूं ? आज स्थगन में सारी बातें आई है। आप छत्तीसगढ़ को कहां ले जाना चाहते हैं ?

श्री अमरजीत भगत :- [XX][5]

श्री देवेन्द्र यादव :- [XX]

अध्यक्ष महोदय :- आप समाप्त करिए। (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :-:- मैं समाप्त कर रहा हूं। यह मससूस हो। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- आप समाप्त करिए, उधर कान बंद करिए।

---

[5] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चंद्राकर :- मैं समाप्त कर रहा हूं लेकिन थोड़ा हल्ला गुल्ला में रूकना तो पड़ता है।

अध्यक्ष महोदय :- उनका सब विलोपित। सब विलोपित। आप बात करिए।

श्री अमरजीत भगत :- [XX]

अध्यक्ष महोदय :- चलिए चलिए।

श्री अजय चंद्राकर :- जो बोलना है वह बोल लीजिए।

अध्यक्ष महोदय :- आप भी खतरनाक हैं, यह बता रहे हैं।

श्री अजय चंद्राकर :- छत्तीसगढ़ के प्रति, दिल्ली के तथ्य के प्रति जो जिम्मेदारी होनी चाहिए, उन्होंने मुर्गा लड़ाई में समय को खराब किया।

श्री रामकुमार यादव :- [XX]

श्री अजय चंद्राकर :- आज यदि माननीय मुख्यमंत्री जी चाहते...।

अध्यक्ष महोदय :- आप फिर गरम कर रहे हैं।

श्री अजय चंद्राकर :- नहीं-नहीं। मुख्यमंत्री जी चाहते, उधर एक से सेक लोग हैं। छत्तीसगढ़ में कोई रसूफ वाला कोई रीढ़ की हड्डी वाला गृह मंत्री बैठता तो स्थिति दूसरी होती। जो ठेका पद्धति का शासन बताया, वह ठेका पद्धति का शासन नहीं होता तो दुनियाभर के अपराधियों का छत्तीसगढ़ अभ्यारण्य नहीं बनता।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी जो नाटू-नाटू जीते हैं। अब दो लाईन में खत्म कर रहा हूं।

अध्यक्ष महोदय :- आप नाचेंगे क्या ? (हंसी)

श्री अजय चंद्राकर :- आप सुनिए ना, प्रेम रक्षित जी, उसके कोरियोग्राफर हैं, किरवानी जी, उसके संगीतकार हैं और राजमौली जी तो आर.आर. के डायरेक्टर हैं, आप जानते हैं। उनको छत्तीसगढ़ बुलाया जाए। जो कनक्लूजन निकल रहा है, उसमें नाटू-नाटू को अब छत्तीसगढ़ लूटो-लूटो करना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए धन्यवाद।

श्री अजय चंद्राकर :- अध्यक्ष महोदय, एक मिनट बस और बोल रहा हूं।

श्री बृहस्पत सिंह :- [XX][6]

श्री अजय चंद्राकर :- छत्तीसगढ़ में इन चर्चाओं के बाद (व्यवधान)।

डॉ. रश्मि आशिष सिंह :- [XX]

[6] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चंद्राकर :- इतने पढ़ने के बाद यदि माननीय भूपेश बघेल जी के डॉक्ट्रीन में संस्कृति विकसित हुई है, कार्यशैली विकसित हुई है, तो वह सिर्फ लूट की संस्कृति विकसित हुई है।

श्री बृहस्पत सिंह :- [XX]

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय मुख्यमंत्री जी, उस दिन हां ना पूछ रहे थे। हाथी, भैंस का रामकुमार जी उदाहरण बता रहे थे। मैं दो बात कहकर अपनी बात समाप्त करता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- समाप्त करने दीजिए।

श्री अजय चंद्राकर :- अध्यक्ष महोदय, हाथी बैठ भी जाए तो गधे से ऊंचा होता है। दूसरी बात बता देता हूं, यदि चार दिन आसमान में बाज नहीं उड़े तो वह आसमान कबूतरों का नहीं होता। बाज ही राजा होता है। (मेजों की थपथपाहट) अंत में यह सुन लीजिए, पाकिस्तान के परमाणु हथियार के बारे में चिंता रहती है कि आतंकियों के हाथ मत लग जाए, चिंता रहती है कि आतंकियों के सुरक्षित नहीं हैं।

श्री बृहस्पत सिंह :- [XX]

श्री अजय चंद्राकर :- यह देश के सभी प्रमुख राष्ट्रों ने कहा। यह बजट हम विनियोग के माध्यम से दे रहे हैं। यह उपहार और संस्कृति जो रेवड़ी बांटने का काम हुआ और इससे यह जनता का बजट न होकर कांग्रेस का बजट हो जाएगा। यह परमाणु हथियार की तरह हो जाएगा कि यदि गलत हाथ में पड़ गया तो जनसंहार हो जाएगा। यदि गलत हाथ में पड़ा तो इस बजट की लूट हो जाएगी। इस लूट को रोकना आपका भी काम है और हमारा भी काम है। मैं इस बजट का विरोध करते हुए अपनी बात को समाप्त करता हूं। (मेजों की थपथपाहट)

श्री बृहस्पत सिंह :- वाह भाई। माननीय अध्यक्ष महोदय, यदि कोई सदन में असत्य बोलता है तो चंद्राकर जी बोलते हैं। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- देवेन्द्र यादव जी।

डॉ. विनय जायसवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यदि किसी व्यक्ति को यह लगे कि मुझे यहां से खतरा है, यहां से खतरा है तो दो बातें होती हैं या तो वह व्यक्ति इलुजन नाम के मानसिक विकास से पीड़ित है या तो भांग का जो तीसरे स्टेज का नशा होता है, उसको वह नशा है। आपसे निवेदन है कि आप इन दोनों बातों की जांच कराएं।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- आप यह बताइये कि आपको कहां से खतरा महसूस हो रहा है ?

श्री अरूण वोरा :- अजय चंद्राकर जी, आपके भाषण को सुनने के बाद ऐसा लगता है कि काठ की हाण्डी बार-बार नहीं चढ़ती है।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- भैया, आप बात की गहराई को समझ नहीं पाये हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अरूण वोरा :- मैं समझता हूं। चंद्राकर जी 2 घण्टे तक क्या बोले, मुझे यही समझ में नहीं आया।

श्री देवेन्द्र यादव (भिलाई-नगर) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मुख्यमंत्री जी के द्वारा प्रस्तुत बजट के समर्थन में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। पिछले लगभग सवा घण्टे से हम विपक्ष के सम्माननीय सदस्यों के भाषण को सुन रहे थे।

श्री अजय चंद्राकर :- एक मिनट। माननीय मुख्यमंत्री जी, मैंने तो शुरूआत के लिए आपके लिए एक लाइन छोड़ दी। मैं आपसे उसका आग्रह कर देता हूं कि मैंने सारे विधायकों की ओर से बोला था कि यह विनियोग में आखिरी बजट भाषण है। जिंदगी में पहली बार मैंने भी एक कागज दिया है। विधायक महोदय जनहित में जो भी बोलेंगे, वह जनहित के हैं और आज हाऊस की गरिमा बढ़ाएंगे। आप इनके चक्कर में राजनीतिक भाषण मत दीजिएगा।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अभी तक आप क्या किये और क्या भाषण दिये ? इन्होंने विनियोग में तो एक बात भी नहीं बोला है।

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, पिछले सवा घण्टे से हम लोग विपक्ष के सम्माननीय सदस्यों के अभिभाषण सुन रहे थे। भाषण में हमको एक कुंठित मानसिकता के अलावा कुछ नहीं दिखा। हमें सुनाई दिया, पाकिस्तान, हमें सुनाई दिया कि छत्तीसगढ़ की बहनें शराब पीती हैं। हमें सुनाई दिया, जान का खतरा। विपक्ष के सदस्यों के ने पिछले सवा घण्टे में यही सारी बातें बोलीं। इन्होंने जोर-जोर से और चिल्ला-चिल्ला कर एक शब्द का उपयोग किया और एक गाना गया-लूटो-लूटो। इन्होंने जो लूटो-लूटो शब्द का इस्तेमाल किया, उससे मुझे एक बात याद आ गई। मैं उस बात को आप सबके समक्ष रखना चाहता हूं। लूटो-लूटो क्या ? याद कीजिए कि यदि छत्तीसगढ़ में लूट हुई है तो सबसे बड़ी लूट भारतीय जनता पार्टी ने 15 साल तक छत्तीसगढ़ की जनता के साथ, छत्तीसगढ़ के आम लोगों की भावनाओं के साथ किया है। यह क्या लूटते थे ? आप इनकी लूट का तरीका देखिये। मैं आपको उदाहरण के रूप में बताता हूं। हमारे जो आदिवासी भाई-बहन हैं। हमारे यहां जो वनोपज की खरीदी होती थी, उसका यह 2,400 रूपये प्रति मानक बोरा के हिसाब से उनको पैसे देते थे। उसी 4,000 रूपये प्रति मानक बोरा में जो 1,600 रूपये बचता था, उसमें यह अपना चप्पल बांटने और साड़ी बांटने का तिहार मनाते थे। यह ऐसा क्यों करते थे ? क्योंकि यह नहीं चाहते थे कि जनता अपने पैसे से अपनी पसंद से अपनी चीजें खरीदे। इसलिए उसमें से पैसे निकालकर यह साड़ी और चप्पल खरीदते थे ताकि इसमें से इनको [xx] मिले। यह अपनी रैलियां कराते थे ताकि इनका राजनीतिक मापदण्ड पूरा हो। इन्होंने यह लूट का काम किया है। इन्होंने 15 साल तक लूट की है और वैचारिक रूप से लूट की है। मैं आपको अपने पिछले दिनों का एक वाकया बताता हूं कि मैं अपने क्षेत्र के एक पुराने स्कूल में गया और वहां के प्रिंसीपल के साथ बैठा तो मैंने उनसे पूछा कि कैसे चल रहा है तो वह बोले कि जब से आप लोगों की सरकार आई है, तब

से हमारे प्राईवेट स्कूल में बच्चों की संख्या कम हो गई है । मैंने कहा कैसे ? तो उन्होंने कहा कि आपका जो स्वामी आत्मानंद स्कूल है, उसकी जो गुणवत्ता है, उसके कारण जितने मध्यम वर्गीय परिवार हैं या बीपीएल परिवार हैं, ये सारे लोग अपने बच्चों को एडमिशन वहीं करवा रहे हैं। मैंने कहा कि पहले कैसा था तो उन्होंने कहा कि पहले 15 साल की शिक्षा व्यवस्था थी, वह पहले हमारे नियंत्रण में रहती थी और मैं उस स्कूल का नाम बता दूं ? उस स्कूल का जो प्राध्यापक था, वह सरस्वती शिशु मंदिर का था । इन लोगों ने पिछले 15 साल जान-बूझकर हमारी स्कूल की शिक्षा को पीछे रखा, ताकि इनके शिशु मंदिर के स्कूल फल-फूल सकें और आर.एस.एस. की इनकी जो विचारधारा है, वह बचपन से बच्चों के अंदर डालें, यह बात मैं आपके समक्ष रखना चाहता हूं । इन्होंने हमारे प्रदेश के बच्चों के साथ लगातार लूट की, जिस तरीके से शासकीय स्कूल के बच्चों का ग्रोथ होना था, इन्होंने जान-बूझकर शासकीय स्कूल में सुविधाएं प्रदान नहीं कीं । उनको नहीं पढ़ाया, ताकि इनके स्कूल चल सकें । वहां पर वैचारिक जहर बच्चों के अंदर घोल सकें । मैं पिछले समय का याद दिलाना चाहता हूं कि इस सरकार ने क्या काम किया है, यह देश के अंदर एक उदाहरण के रूप में हो गया है । हम कोरोना के समय को याद करते हैं, जब पूरे देश के अंदर त्रासदी मची थी, हाहाकार मचा था, जहां-जहां इनकी सरकारें हैं, वहां पर नदियों के किनारे लाशों की ढेर को यूं ही दफना दिया जाता था, लेकिन छत्तीसगढ़ की इकलौती सरकार, जिसने हर विषय पर, कोरोना जैसे समय में भी हर चुनौती का सामना किया और देश के अंदर उदाहरण बन गया । उस समय भी पूरे देश में किसी राज्य को ऑक्सीजन की जरूरत पड़ती थी तो छत्तीसगढ़ की सरकार अपनी नैतिक भूमिका निभाने के लिए उनके साथ खड़ी थी । कई राज्य सरकारें उस समय गिड़गिड़ा रही थीं, लेकिन छत्तीसगढ़ की सरकार अपनी प्रदेश की जनता और भारत की जनता के साथ खड़ी थी। मैं कहना चाहता हूं कि इन्होंने लूट की बात कही है । अगर आपने लूट किया है तो आप याद करें कि इन्होंने बस्तर के आदिवासियों के साथ लूट किया है । पहले जितने लोग दुर्घटना या नक्सली हमले में अपनी जान गंवाते थे, उनसे ज्यादा मलेरिया में लोग जान गंवाते थे । आप याद कीजिए, आपने मलेरिया जैसे बीमारी का कोई समाधान वहां पर नहीं कर पाये और हमारी सरकार आई तो बस्तर में मलेरिया मुक्त अभियान चलाया और देखिए, बस्तर के लोग सुकून, शांति से वहां पर रह रहे हैं। अगर आप एडमिनिस्ट्रेशन में, विजन में, वर्किंग में आप अंतर देखना चाहते हैं तो आपको बहुत अंतर मिलेगा । पिछले सरकार का विजन, विजन ही नहीं था, वह पड़ोसी के भरोसे चलता था । उनका कोई दृष्टिकोण ही नहीं था, कोई निर्णय लेने की क्षमता नहीं थी । वे केवल और केवल उपकृत करके अपने लिए वोट बैंक लाना चाहते थे । उन्होंने किसानों को 1 रूपये और 2 रूपये किलो चांवल देकर लुभाया, उनको कभी उठाने की कोशिश नहीं की कि उनका जीवन स्तर उठे, लेकिन हमारी सरकार, हमारे मुखिया के पास विजन है कि वे उनकी जीवन शैली को भी उठाने की कोशिश करते हैं । इसलिए कर्ज माफी हुई, इसलिए हम धान का बोनस दे रहे हैं और इसीलिए लगातार हम अपनी योजनाओं का क्रियान्वयन कर रहे हैं ।

आप पहले के दिनों को याद करो, पहले हमारे प्रदेश के किसानों तरसाया जाता था, हम लोग विपक्ष में खड़े होकर यह कहते थे कि किसानों को बोनस दो, किसानों का बोनस दो । आज आप यह बात नहीं कह पाएंगे क्योंकि हमने कभी छत्तीसगढ़ के किसानों को तरसाने का काम नहीं किया । आपने उनकी हाय ली है, आपने उनके साथ गद्दारी की है । आपने उनको तरसाया है । जिस वर्ष चुनाव होता था, उस दिन पता नहीं क्या करके आपकी केन्द्र सरकार किसान सम्मान निधि बढ़ा देती है, पेट्रोल, डीजल का पैसा कम कर देती है, लेकिन चुनाव जैसे ही खतम होता था तो वापस रेट बढ़ जाता है । यही अंतर है । आपकी राजनीति चुनाव के बेस पर है, हमारी जो विचारधारा है, हमारी जो कार्यशैली है, उसे हम लोगों ने लोगों के जीवन को आगे बढ़ाने की दिशा में हमेशा काम किया है । आपके कार्यकाल को याद करूंगा तो बहुत सारी बातें आएंगी ।

अभी पिछले समय आप E.D. की बात कर रहे थे । E.D. कार्यवाही कर रही है, हमें भी बुलाया गया । बहुत सारी बातें चल रही है । आपने खूब आरोप लगाए । मै आपसे पूछना चाहता हूं कि छत्तीसगढ़ की आम जनता से चिटफंड कम्पनियों से 500, 1000 करोड़ रूपये से ज्यादा आम लोगों का पैसा लिया गया और आपके नेताओं ने, आप लोगों ने जा-जाकर वहां पर फीता काटा और आम जनता को भरोसा दिलाया कि यहां जो निवेश कर रहे हो, वह सही निवेश है। तो क्या यह जांच के दायरे में नहीं आता है ? क्या इसका बंदरबांट नहीं हुआ है ? लेकिन आप इस पर कुछ नहीं कहेंगे। आप लगातार सरकार की कार्यप्रणाली को रोकने की कोशिश इन संस्थाओं के द्वारा कर रहे हैं। पूरा देश देख रहा है, पूरा देश जानता है। लेकिन आप इसमें सफल नहीं होंगे। आज ई.डी., सी.बी.आई., आई.टी. का क्या दुरूपयोग हो रहा है ? यह पूरी जनता जानती है और जनमानस में यह बात पहुंच चुकी है। उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि आप जांच कराईये, आप ई.डी., सी.बी.आई., आई.टी. आपके किसी पुराने मंत्री के घर घुस गई तो वहां ट्रक भर कागज और दस्तावेज और न जाने क्या-क्या मिलेगा। लेकिन आपकी ई.डी., सी.बी.आई., आई.टी. यहां पर भी औंधे मुंह जा रही है। क्योंकि हम छत्तीसगढ़ के लोग छत्तीसगढ़ की भावना के लिए काम करते हैं। मैं आपको बोलना चाहता हूं कि पिछले समय आप लोगों ने लोगों की भावनाओं को ताक पर रखते हुए केवल अपने राजनीतिक फायदे का लाभ लिया है। आपने रामजी का नाम लिया, लेकिन प्रभु श्रीराम जी के विचारों को बढ़ाने के लिए कभी काम नहीं किया है। प्रभु श्रीराम जी, हमारी कौशल्या माता जी का मंदिर आपके मुख्यमंत्री जी कभी नहीं गये ? यहीं रायपुर के पास है, लेकिन आपका कोई मंत्री वहां जाकर किसी स्थान को देखना, उसका जीर्णोद्धार करने का काम नहीं किया। हमारी जो संस्कृति है, जो हमारी धार्मिक भावना है, उसको लेकर कभी काम नहीं किया। लेकिन हमारी सरकार ने उस पर ध्यान दिया और आज एक उदाहरण के रूप में क्षेत्र में है और लोगों की भावनाएं जुड़ी हुई है। आज कौशल्या माता मन्दिर और श्रीराम वन गमन पथ पर बड़ा-बड़ा

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

मेला लगता है। वहां जाकर लोग अराधना करते हैं और प्रभु श्रीराम को याद करते हैं। ये लोग क्या बात करेंगे।

मानननीय उपाध्यक्ष महोदय, अगर शिक्षा व्यवस्था की बात की जाये, तो इन्हीं के समय पी.एम.टी. पेपर लीक हुआ था। उस समय जिस तरीके से बंदरबांट होता था, जिस तरीके से यूनिवर्सिटीज में सेटिंग्स होती थी, आज वह सारी चीजें नहीं दिखती हैं। ये पिछले समय कालोनाइजर एक्ट की बात कर रहे थे। हमने कालोनाइजर एक्ट में संशोधन किया है तो क्या गलत किया ? मैं आप लोगों से पूछना चाहता हूं। आप लोगों ने 15 साल सरकार चलाई, आपने एक योजना लाई, अगर उसके माध्यम से जनता का समाधान हो सकता था, तो अभी तक हो जाता, लेकिन नहीं हुआ। आज जितने भी कालोनाइजर्स हैं, भले ही वह शासकीय हो, हाऊसिंग बोर्ड हो, हमारे पुलिस संस्थान की कालोनी हो या प्रायवेट कालोनाइजर हो, वह आज तक नगरीय निकाय से जुड़ ही नहीं पाया। क्योंकि आपने ऐसे क्लॉज रखे हैं, जिसके कारण समाधान नहीं हो पाया। अगर हमारी सरकार कोई नया नियम लाती है, कोई नया कानून लाती है और उससे जनता को लाभ हो सकता है तो आपको क्या आपत्ति है, मुझे यह समझ में नहीं आता। आज आप छत्तीसगढ़, छत्तीसगढ़ियां कहते हैं, यह हमारी छत्तीसगढ़ की संस्कृति है। आप सन् 2000 से 2018 तक का छत्तीसगढ़ और 2018 से आज तक के छत्तीसगढ़ में बहुत परिवर्तन है। देश भर में परिवर्तन है और लोगों के देखने के नजरिये मे परिवर्तन है। आज हमारे छत्तीसगढ़ का राज्य गीत है। हमारे छत्तीसगढ़ का गमछा, हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी भले ही प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति चाहे किसी से भी मिलने जाये, बड़े स्नेहपूर्वक, किसी भी मंच पर जाये, वह छत्तीसगढ़ का गमछा पहनाते हैं तो हमें गर्व होता है कि यह हमारी पहचान है। आप इसको क्यों नहीं सोच पाये ? क्योंकि आप सोच वैसी नहीं है। आप लोग एक ही दृष्टि से देखते हो, आपको व्यापक सोचना नहीं आता है। देखिये, छत्तीसगढ़ महतारी हम लोगों से है। हम लोग यहां रहते हैं, जो जीते हैं, हम सभी की भावनाओं से छत्तीसगढ़ महतारी, भारत माता बनती है। लेकिन आप लोग ऐसा नहीं सोचते हैं। हमारे समाज में एक जो वर्ग है, उसकी जो सोच है, केवल उसके प्रचार-प्रसार में काम करते हैं और उसी की दिशा में आगे बढ़ते हैं। आपको जनभावनाओं से कोई मतलब नहीं है। हम लोगों ने इस सरकार में उन सभी विषयों को हल किया है, जो जरूरी थे। आप शिक्षाकर्मी भर्ती करते थे, हम शिक्षकों की भर्ती करते हैं। आपकी यह हिम्मत नहीं है कि आप शिक्षकों की भर्ती कर पाते। आप हमारे पढ़े-लिखे बच्चों को शिक्षाकर्मी बनाते थे और उनको शिक्षक बनाने का काम हमारी सरकार करती है।

श्री शिवरतन शर्मा :- उपाध्यक्ष महोदय, आपके ध्यान में ला देता हूँ, शिक्षा कर्मी की भर्ती भारतीय जनता पार्टी की सरकार में शुरू नहीं हुई थी, दिग्विजय सिंह जी मुख्यमंत्री थे, मध्यप्रदेश में शिक्षा कर्मी का कान्सेप्ट शुरू हुआ था, माननीय भूपेश बघेल जी, उस सरकार में मंत्री थे ।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- भर्ती का थोड़ी बोल रहे हैं शिवरतन भईया, नियुक्ति में भ्रष्ट्राचार का बोल रहे हैं ।

श्री बृहस्पत सिंह :- रेगुलर करने का काम भूपेश बघेल की सरकार ने किया है। आपने 15 साल तक नहीं किया साहब, उसका नियमितीकरण करने का काम भूपेश बघेल सरकार ने किया है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- हम लोगों ने शिक्षाकर्मियों का संविलियन करके वर्ष 2018 में शिक्षक बनायें । आप लोगों ने कितने लोगों को बनाया है, मैक्जीमम शिक्षा कर्मी रेगुलर करने का काम भारतीय जनता पार्टी सरकार ने किया है । यह भारतीय जनता पार्टी के कार्यकाल में हुआ है ।

श्री देवेन्द्र यादव :- मैं जानता हूँ, ये सच सुनना पसंद नहीं करते हैं ।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह तो शिक्षा कर्मी के जो आंदोलन थे, मैं प्रदेश अध्यक्ष था, उनके समर्थन में था । यह तो जितने शिक्षाकर्मी के नेता थे, उनको जेल में ठूंस दिये थे । उसके बाद कांग्रेस पार्टी ने उस आंदोलन को हाथ में लिया । इन्होंने डर के मारे संविलियन किया है, फिर जो बचे थे, उसको हम लोगों ने संविलियन कर दिया । देवेन्द्र जी, जो बात कह रहे हैं, शिक्षा कर्मी की भर्ती करते थे, हम लोगों ने शिक्षकों की भर्ती की है । गलत क्या बोलें हैं, बिल्कुल सही बात बोले हैं । (मेजों की थपथपाहट)

श्री शिवरतन शर्मा :- देवेन्द्र जी को जो कहा ना, शिक्षा कर्मी की भर्ती की शुरूआत माननीय दिग्विजय सिंह जी की सरकार में शुरू हुई थी । उस सरकार में आप मंत्री थे ।

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मुझे ढंग से याद है, जब हम लोग वहां बैठते थे, पूरे प्रदेश में नारा लगता था, कैसी ये बेशर्मी है, शिक्षक ठेका कर्मी है, यह नारा लगता था । यह हम लोगों ने देखा है, हम लोग उनके साथ जाते थे । आदरणीय भूपेश बघेल साहब हमारे अध्यक्ष हुआ करते थे ।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, देवेन्द्र यादव जी ।

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जैसा कि मैं कह रहा था कि न ये सच सुनना चाहते हैं और न समझना चाहते हैं । अगर इनके विचार के खिलाफ कोई भी बात हो तो ये उसको राष्ट्र से जोड़ देते हैं, राष्ट्रभक्ति से जोड़ देते हैं । पिछले दिनों में भीड़ एक मूवी रिलीज हो रही थी, उसमें कोरोनाकाल में क्या-क्या हुआ, उसके बारे में उल्लेख किया गया है । चूंकि इनकी केन्द्र की सरकार को लगा कि इससे जनता में कोई दूसरा मैसेज जा सकता है, इन्होंने इसके ट्रेलर रूकवा दिये । जब उस पर विरोध होने लग गया, तब बड़ी मुश्किल से रिलीज करने की बात कर रहे हैं । सच को दबाने की इनकी आदत है । जैसे कान्फीडेंस से इन्होंने मेरी बात को दबाये, ऐसे ही ये जनता की बात को दबाते हैं ।

डॉ.रश्मि आशीष सिंह :- बी.बी.सी.मूवी की भी चर्चा कर लो देवेन्द्र । बी.बी.सी. की मूवी को भी रोक दिये हैं ।

श्री देवेन्द्र यादव :- सच सुनने का इसमें जिगर नहीं है, इसलिये यहां पर कोई बैठा नहीं है । हमारे बाबूजी बैठे हुये हैं, मैं उनका सम्मान करता हूँ, बाकी तो सारे चले गये हैं ।

डॉ.रश्मि आशीष सिंह :- कहीं न कहीं उन लोग बैठकर देख रहे होंगे । उनका भी मन नहीं लगता है ।

श्री बृहस्पत सिंह :- क्या हो गया है, आजकल इन लोगों का पलायन करने की आदत हो गई है ।

श्री देवेन्द्र यादव :- देखिये, अगर मैं कहूं कि शिवरतन भईया आ गये हैं...।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जैसे इनके ओपनर अजय चन्द्राकर जी थे, मैंने उनका भाषण सुना । परम्परा तो यही है उपाध्यक्ष महोदय, जब इस पक्ष से कोई पहला बोले, उसकी बात पूरी सुननी चाहिये, बैठना चाहिये, पलायन नहीं करना चाहिये । अजय जी को देखता हूँ तो बहुत नियम, परम्परा और कानून की बात करते हैं, लेकिन खुद पालन नहीं करते हैं । धन्यवाद ।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, देवेन्द्र जी ।

श्री शिवरतन शर्मा :- ओपनर का भाषण महत्वपूर्ण नहीं रहता है, भाषण सदन के नेता का महत्वपूर्ण होता है । उसको हम सारे लोग बैठकर सुनेंगे ।

डॉ.लक्ष्मी ध्रुव :- उपाध्यक्ष महोदय, ये हमारे विपक्षी सामने बैठकर तारीफ नहीं करते हैं, इन लोग कैसे कर लिये करके तारीफ करते रहते हैं ।

श्री शिवरतन शर्मा :- हमारी बहन जी जो तखतपुर से हैं, वह बी.बी.सी. के संबंध में बोल रही थी । आप अपने पार्टी का इतिहास देख लो कि किस्सा कुर्सी का किसने जलाया था ? नहीं हो तो माननीय मुख्यमंत्री जी को जानकारी होगी ?

डॉ.रश्मि आशीष सिंह :- किस्सा कुर्सी का बाद में देख पाये थे कि नहीं देख पाये थे ? आधी पिक्चर थियेटर में देखे थे कि नहीं देथे थे ? कांग्रेस के राज में लोकतंत्र था ।

उपाध्यक्ष महोदय :- देखिये, देवेन्द्र भाषण जारी रखिये ।

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जिस तरह से हमारी सम्मानित वक्ता मूवी की बात कह रही थी, ऐसे अनेक एक्जाम्पल है। इनकी गलती नहीं है, ये जिस नर्सरी में पढ़ रहे हैं, वहां शिक्षा ही यही दी जाती है । एक्च्यूली जो बेसिक डिफरेंस है, वह वैचारिक डिफरेंस है। जो कांग्रेस पार्टी है, हमारी सरकार है, वह सभी की भावनाओं से चलती है। यदि इनकी कोई सरकार होती है, तो वह एक व्यक्ति या एक ग्रुप ऑफ पिपुल की भावनाओं से चलती है। इन्होंने पिछले 15 साल लूट मचाई और जो नाटो-नाटो का लूटो-लूटो है, वह इनके पूर्व मुख्यमंत्री और इनके जो भारतीय जनता पार्टी के नेता है, उनके ऊपर ही यह तस्वीर सुरक्षित और सही दिखती है । यह हमारी सरकार, हमारे मुख्यमंत्री जी के लिये बहुत सारे शब्द इस्तेमाल करते हैं। यह एक ए.टी.एम. शब्द का भी इस्तेमाल करते थे। मैं ए.टी.एम. और

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

मुख्यमंत्री जी के व्यक्तित्व और उसके फुलफॉर्म के बारे में सोच रहा था तो मुझे लगता है कि उसका फुल फॉर्म ऑल टेंशन माइंड है, मतलब मैं सारी समस्याओं का समाधान करूंगा। माननीय मुख्यमंत्री जी इस भावना के साथ काम करते हैं (मेजों की थपथपाहट)। आज किसान हो, आज नौजवान हो, आज महिलाएं हो, आज हमारे कर्मचारी हितों की बात हो, यदि जनता को हर एक विषय में डायरेक्ट बेनिफिट देने का काम किसी सरकार ने किया है, वह हमारी सरकार ने, आदरणीय भूपेश बघेल जी की सरकार ने किया है और किसी ने नहीं किया है, किसी में वह हिम्मत नहीं है, किसी में वह हौसला नहीं है। जो 13 है तुझको अर्पण, यह भावना यदि कहीं है तो आदरणीय भूपेश बघेल जी की सरकार में है। यह काम हमारी सरकार ने किया है।

उपाध्यक्ष महोदय :- वोरा जी कुछ कह रहे हैं।

श्री अरूण वोरा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं जो भी बात कहता हूं वह दिल से कहता हूं। मैं शिवरतन जी से यह कह रहा हूं कि हमारे मुख्यमंत्री जी ने तो 04 साल में पूरे भारत में दो बार सबसे सक्रिय और क्रियाशील मुख्यमंत्री का पुरूस्कार जीता । (मेजों की थपथपाहट) उन्होंने जो कार्य किया, भूपेश जी है तो भरोसा है, आप भी इस बात को कहते हैं, जब मैं बाहर निकलता हूं और आपके साथ खाना खाने बैठता हूं। हां यार अरूण काम तो बहुत बढ़िया हो रहा है। (हंसी) आप जो यह बात कहते हैं कि जो कहा सो किया। यह मैं शत् प्रतिशत कहता हूं। मैंने पहले ही बोल दिया कि मैं दिल से कह रहा हूं। मैं झूठ कभी नहीं बोलता।

श्री देवेन्द्र यादव :- यह अरूण भैया ने तो अंदर की बात निकाल दी।

श्री शिवरतन शर्मा :- (हंसी) क्या है। अरूण जी, कक्ष के अंदर जो चर्चा होती है, उसका जिक्र कभी सदन में नहीं होता है। आप कक्ष के बाहर जो बोलते हो, यदि मैं वह बोल दूंगा तो आपका सी.आर. खराब हो जायेगा, आपकी टिकट कट जायेगी। आप बाहर रहते हो तो बोलते हो कि हम मुख्यमंत्री से बड़े दु:खी है, हमारी सुनते ही नहीं है पर सदन के अंदर साथ देना हमारी मजबूरी है।

उपाध्यक्ष महोदय :- यह जो बाल पका है, आपका इसलिये जल्दी बाल पक गया।

श्री अरूण वोरा :- उपाध्यक्ष महोदय, मैंने भूपेश बघेल जी को भी कहा और सार्वजनिक तौर पर स्पष्ट रूप से कहता हूं कि मैंने अपने पिता श्री मोतीलाल वोरा को कार्य करते हुए देखा है और यदि दूसरे किसी को कार्य करते देखा है तो भूपेश बघेल जी को देखा है। (मेजों की थपथपाहट) उन्होंने जिस ढंग से काम किया, उन्होंने जिस तरीके से काम किया।

श्री शिवरतन शर्मा :- मतलब आप सोनिया जी और राहुल जी को भूल गये।

श्री अरूण वोरा :- राहुल जी को, मैं अपने प्रदेश की बात कर रहा हूं।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री शिवरतन शर्मा :- नहीं, आपने पहले बोला कि पहले पिता जी को काम करते हुए देखा। मतलब आप सोनिया जी को, राहुल जी को और दिग्विजय सिंह जी को भूल गये। तुम्हारे समय के चलते इतना मत बदलो भाई।

श्री अरूण वोरा :- राहुल जी तो हमारे देश के नेता है।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये हमारे वरिष्ठ सदस्य कुछ कह रहे हैं।

श्री ननकीराम कंवर :- उपाध्यक्ष महोदय, पूर्व के माननीय अध्यक्ष जी ने माननीय मुख्यमंत्री जी को सर्टिफिकेट दिया है। इस विधान सभा में दिया है।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये बहुत बढ़िया है।

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हम लोग बड़े खुशनसीब है कि छत्तीसगढ़ की जनता को एक ऐसा नेतृत्व मिला है, एक ऐसा लीडर मिला है जो हर विषय के समाधान की ओर आगे बढ़ते हैं। आप देखिये कि हमारी सरकार हर्डल ब्रेकर सरकार है। हमारी सरकार में किसी भी किसी भी तरह हम लोग लिंगर ऑन पॉलिसी में काम नहीं करते हैं, जैसा पिछले समय होता था। हम लोग हर चीज के समाधान की ओर जाते हैं। जिस तरीके से बस्तर के दूरंचल की बात हो, वहां पर भी यदि आप देखें तो हम पहले देखते थे, सरकारों का वहां के आदिवासियों के पास पहुंचने का संपर्क नहीं हो पाता था। हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी ने...।

श्री शिवरतन शर्मा - देवेन्द्र जी। एक मिनट..।

श्री देवेन्द्र यादव :- मुझे कहने दीजिये। बहुत हो गया। मेरी रिक्वेस्ट है, प्लीज। मुझे कहने दीजिये। मैंने आप लोगों के भाषण में कोई रोका-टोकी नहीं की थी। मेरा इस पर कहना है कि सरकार आदिवासी समाज के लोगों तक कैसे पहुंचे, इसके लिये जो थॉट निकला। जैसे हाट बाजार है, वहां पर लोग पहुंचते थे, हमारी सरकार ने क्या किया। हमारी सरकार को, माननीय मुख्यमंत्री जी को इस बात का ध्यान था कि वहां लोग पहुंचते हैं, हमारी सरकार ने हाट बाजार क्लिनिक योजना चालू कर दी। अब क्या होता है। जनता वहां अपने आप पहुंचती है, वहां कोई आया, यदि किसी को थोड़ी खांसी हैं, बुखार है, वहीं पर चेकअप करा लिये। यदि किसी को आगे के इलाज के लिये जाना है तो उसके लिये वहीं पर पर्ची दे दी गयी। यह सोल्यूशन है। हमारी सरकार ने ऐसे छोटे-छोटे माइक्रो लेवल पर सोल्यूशन किया है। आप देखिए जैसे प्रधानमंत्री आवास योजना की बहुत बड़ी-बड़ी बातें हुई है, यहां बहुत व्यापक चर्चा की, उस पर घेराव भी हो गया। यहां पर लोगों ने भी आकर पुलिस के साथ मारपीट की, मैंने बहुत सारे विडियों देखे थे, पुलिस कर्मियों का गला पकड़कर भी खिंचा गया। मैं नहीं जानता कि यह इनके पदाधिकारी थे, इनके कार्यकर्त्ता थे या इन्होंने उन्हें अपने साथ लाया था कि पुलिस के साथ ऐसा बर्ताव करना है,लेकिन आप समझिए प्रधानमंत्री आवास योजना के नाम पर केवल और केवल लोगों को दिगभ्रमित कर रहे हैं क्योंकि इनके पास कोई मुद्दा नहीं है। यह प्रधानमंत्री आवास योजना का जो विषय है उसमें भी समझिए। पहले

वही प्रधानमंत्री आवास योजना, इंदिरा आवास योजना के नाम से जाना जाता था और जब वह इंदिरा आवास योजना के नाम से जाना जाता था तो केन्द्र सरकार से 85 प्रतिशत पैसा आता था और राज्य सरकार का 15 प्रतिशत अनुदान रहता था। अब यह रेश्यो 60/40 हो गया। कोई बात नहीं कि यह रेश्यो 60/40 हो गया, लेकिन मैं आपके माध्यम से इन्हीं से सवाल करना चाहता हूँ कि क्या वर्ष 2007-08 से अभी तक जो सेंसेक्स की काऊंटिंग पेंडिंग है, वह होनी चाहिए या नहीं होनी चाहिए? वर्ष 2011 की जो जनगणना हुई उसको मूल आधार बनाना चाहिए या नहीं बनाना चाहिए? आज हमारे पास कितनी माताएं, बहनें और लोग आते हैं और यह कहते हैं कि भई, मेरे पति का देहांत हो गया, मुझे पेंशन नहीं मिल रही है। मेरे पास कोई कमाने वाला नहीं है, मेरे दो छोटे-छोटे बच्चे हैं, मैं क्या करू?लेकिन हम उनको मदद नहीं कर पाते, हम उनकी मदद क्यों नहीं कर पाते क्योंकि पहले इनकी सरकार लोगों की आंख में पट्टी बांधकर रखना चाहती थी, अगर यह हौंसला, जिगर किसी सरकार में है तो कांग्रेस पार्टी की भूपेश बघेल जी के सरकार में है। जो आज सेंसेक्स सर्वे भी करवा रही है और जिसके माध्यम से पारदर्शिता आएगी कि हमें किन फोकस लोगों पर ज्यादा काम करना है, जिनकी जीवन शैली को ऊपर उठाने की जरूरत है। हमारी सरकार यह काम कर रही है। यह हमसे प्रधानमंत्री आवास योजना की बात करते हैं। हमने, हमारी सरकार ने शहरी में मैं भिलाई की बात करूं तो भिलाई और वैशाली नगर विधान सभा के क्षेत्र के कम से कम 15 हजार लोगों को renewal और पट्टा, खरीदी-बिक्री पट्टा का नाम ट्रासंफर और नया पट्टा निर्माण से लाभ मिलेगा। ऐसा पूरे प्रदेश में न जाने कितने लोगों को लाभ मिल रहा है। यह प्रधानमंत्री आवास योजना की बात करते हैं। यह उसमें क्या चाहते थे ? यह चाहते थे कि इनका जो ठेकेदार है, वह उपकृत हो। वहां पर जो लोग 40-50 सालों से रह रहे हैं, उनकी बस्तियों को निकाल दिया जाए, वहां से उनके मकान तोड़ दिये जाएं, शहर से कहीं 15 किलोमीटर दूर एक जगह पर 6 माले की बिल्डिंग बना दी जाए और वहां पर उनको ठूंस दिया जाए। जो केन्द्र से इनके कॉन्ट्रेक्टर आते हैं वह वहां पर इनके पी.पी.पी. मॉडल पर कामर्शियल कॉम्पलेक्स बनायेंगे और बेचेंगे। आप ऐसी नीति मत बताईए। हम लोगों को खुशी से जीने दो। हमें हमारे हिसाब से जीने दो। आप यह मत बताईए कि हमें कैसे जीना है? अगर इस प्रधानमंत्री आवास योजना में सबसे अच्छा काम हुआ है तो हमारी सरकार में हुआ है क्योंकि हमने पट्टा भी दिया। मोर जमीन मोर मकान के लिए पैसे भी दिए और इस सर्वे के बाद जो लोग बचेंगे, उनको हम लोग आवास भी दिलायेंगे। हमारी सरकार इस तरीके से काम कर रही है। ऐसे सैकड़ों उदाहरण हैं। अगर इस प्रदेश को एक दिशा, दशा, नीति, नियत के साथ लेकर कोई चल रहा है तो हमारे भूपेश बघेल जी की सरकार, हमारी कांग्रेस पार्टी की सरकार ले कर चल रही है। आज देश या विश्व के पटल पर छत्तीसगढ़ और छत्तीसगढ़िया की बात होती है, हमारे खान-पान की बात होती है। मैं बहुत अच्छे से कहना चाहता हूँ। मेरा स्कूलिंग, कॉलेज सब भिलाई में हुआ। हम लोग छात्र राजनीति में रहे, हम कल्चर को बहुत ज्यादा नहीं समझ पाये थे, लेकिन हमने समय से समझा। आज हमें खुशी होती है कि हम एक

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

ऐसी छत्तीसगढ़ की धरती पर रहते हैं, जो हमको आत्मीयता सिखाती है, अपनापन सिखाती है। इसका कल्चर इतना प्यारा है जो लोगों को सद्भाव से जोड़कर चलता है। यह आपसी प्रेम व्यवहार बढ़ाने की बात करता है। यह छत्तीसगढ़ है और यह छत्तीसगढ़िया है और यहां की हमारी जो सरकार है। अगर हमारे नेता अंबिकापुर के लोग हैं दूर अंचल वाड्रफनगर के लोग हैं, उनकी जो भावनाएं हैं, उनके हिसाब से अपनी नीति बनाते हैं और यहां सुकमा दूर अंचल में भी जो हमारे आदिवासी लोग रहते हैं, वह क्या अपने जीवन में परिवर्तन चाहते हैं, वह क्या सरकार से मदद चाहते हैं? उसके आधार पर हमारी सरकार काम करती है। हम नारायणपुर की बात करते हैं। आज अबूझमाड़ की बात करूं तो यह हमारी सरकार की हिम्मत है कि हजारों की संख्या में बच्चे अबूझमाड़ तक भी पहुंच जाते हैं, क्योंकि पहले किसी की हिम्मत नहीं होती थी कि अबूझमाड़ जैसे गहन क्षेत्रों में आम जनता का जाना सार्वजनिक किया जा सकता है, लेकिन हमारी सरकार आने के बाद यह इस तरीके से लोगों का मॉरल बनाया गया, उनको प्रोत्साहित किया गया, उनको बताया गया कि आप मुख्यधारा में हो और आप कैसे सबसे एक साथ जुड़ सकते हो। उसके सब समाधान दिये गये। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं इनके समय की कुछ बातें याद करता हूं। हम लोग छात्र राजनीति में थे। हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी उस समय संगठन के महामंत्री थे। इंदिरा प्रियदर्शिनी घोटाला हुआ, बड़ा घोटाला हुआ, बडा स्कैम हुआ। उसमें सी.डी. भी आ गई। नार्को टेस्ट हुआ था।

श्री बृहस्पत सिंह :- नार्को टेस्ट हुआ था जिसका आप वीडियो देखे होंगे, वह सभी के मोबाइल में था। नार्को टेस्ट साफ-साफ बोल रहा है कि कितनी राशि किसको हमने दिया। आम जनता की गाढ़ी कमाई, उनकी जिंदगी का जो भविष्य था, वह पैसा जमा था। उसको भी इन लोगों ने लूट लिया। वह बैंक बंद हो गया। जब सारे लोगों ने किया तो हाईकोर्ट के निर्देश पर नार्को टेस्ट हुआ। बैंक मैंनेजर ने किसको-किसको कितना पैसा पहुंचाया, वह वीडियो आज भी देख सकते हैं। सार्वजनिक हुए थे, वह वीडियो आज भी चल रहे हैं। गांव की कहावत है हमारे सरगुजा में आटा चालने वाली को चलनी बोलते हैं। चलनी के छेद को देखकर सूप हंसे तो हंसे, चलनी भी हंसने वाली कहावत है।

उपाध्यक्ष महोदय :- देवेन्द्र भाई, आधे घंटे से ज्यादा हो गया है, अब समाप्त करें। 20 वक्ता हैं।

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अगले दो-तीन मिनट में अपनी बात खत्म करूंगा। वैसे बृहस्पत भैया ने अच्छा दोहा बोल दिया। मैं रामकुमार यादव जी को देख रहा था कि यह कुछ बतायेंगे, लेकिन ये नहीं हैं। बृहस्पत भैया ने बहुत अच्छा बोल दिया। तो ऐसी नीति इनकी रही है। अगर तस्वीरों में नार्को टेस्ट में भी कोई चीज आ जाये उसके बाद भी अगर हिम्मत से असत्य बोलकर असत्य को सच कह कर दिखाना है तो इनसे सीखने की जरूरत है। लेकिन इनका समय खत्म हो चुका है। जनता इनको समझ चुकी है। जनता ने इनको दरकिनार कर दिया है। और खुशी की यह बात है कि इनके भी जो प्रमुख नेता हैं और ये लोग खुद भी इस बात को पूरी तरह मान चुके हैं, दबी जबानों में,

अपने व्यक्तिगत कार्यक्रमों में यह इस बात को भी कहते हैं कि भूपेश है तो भरोसा है। यह इस बात को जान चुके हैं इनको अभी की तैयारी नहीं करनी है, यह 2028 के लिए तैयारी कर रहे हैं। मैं माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा प्रस्तुत विनियोग विधेयक का पूर्ण समर्थन करते हुए अपनी वाणी को विराम देता हूं। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपने बोलने का समय दिया, बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री शिवरतन शर्मा (भाटापारा) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा प्रस्तुत विनियोग मांगों का विरोध करने के लिए खडा हुआ हूं। माननीय गांधी जी के विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए यह सरकार सेवाग्राम की तर्ज पर छत्तीसगढ में आश्रम का निर्माण करने वाली है। इसका भूमिपूजन हो चुका है। मैं गांधी जी के विचारों से ही अपनी बात को शुरू करता हूं। गांधी जी सभी तत्वों में से सत्य को सर्वोपरि मानते थे। सत्य ही किसी भी राजनीतिक संस्था, सामाजिक संसथान का केन्द्र होना चाहिए। वे अपने किसी भी राजनीतिक निर्णय को लेने से पहले सच्चाई के सिद्धांतो का पालन अवश्य करते थे। गांधी जी ने कहा था कि मेरे पास दुनिया वालों को सिखाने के लिए कुछ भी नया नहीं है। सत्य और अहिंसा तो दुनिया में उतने ही पुराने हैं जितने हमारे पर्वत हैं। सत्य, अहिंसा, मानवीय स्वतंत्रता, समानता, न्यास एवं उनकी निष्ठा उनकी निजी जिंदगी के उदाहरणों से अच्छे ढंग से समझा जा सकता है। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, माननीय गांधी जी के जीवनकाल में उनके परिवार में एक दुखद घटना घटी थी। वह दुखद घटना यह हुई थी कि महात्मा गांधी जी के बड़े सुपुत्र हरिभाई गांधी थे जिनने गांधी जी के जीवनकाल में धर्मांतरण किया और धर्मांतरण करके उनने मुस्लिम धर्म ग्रहण किया। जिस दिन गांधी के सुपुत्र ने धर्मांतरण किया, गांधी जी बहुत दुखी थे। गांधी का ये कथन था कि जो व्यक्ति अपने धर्म का नहीं हुआ, वह दुनिया में किसी का नहीं हो सकता। जो व्यक्ति जिस धर्म में है उस धर्म का उसको निष्ठापूर्वक पालन करना चाहिए। माननीय उपाध्यक्ष जी, आप छत्तीसगढ़ में हो क्या रहा है, छत्तीसगढ में सरकार के नियंत्रण में धर्मांतरण लगातार हो रहा है। अभी दो दिन पहले घटना घटी है । आपके बस्तर संभाग की तोकापाल ब्लॉक के ग्राम भेजरी पदर की घटना है। एक की मृत्यु हुई। ग्राम सभा में पेशा कानून लागू है। ग्राम के आदिवासियों ने कहा कि हमारे मरघट में जो आदिवासी रीति-नीति से शव को दफनायेगा, उसको हम अनुमति देंगे। गांव में विवाद की स्थिति बनी हुई है। कहां अंतिम संस्कार होगा, यह राजस्व रिकार्ड में अंकित होता है और उस परिवार ने अपने घर में दफनाने का काम किया। गांव में विरोध चल रहा है। लगभग 5 हजार लोग उपस्थित थे। लाठीचार्ज हुआ, विरोध करवो लों के खिलाफ कार्रवाई हुई, गिरफ्तारी हुई। वहां अभी भी पुलिस फोर्स पड़ी हुई है और पूरे क्षेत्र में वातावरण अशांत बना हुआ है। महात्मा गांधी धर्मांतरण के विरोधी थे। पर सरकारी संरक्षण में धर्मांतरण हो रहा है और सरकारी संरक्षण मे धर्मांतरण का सबसे उदाहरण क्या है। एक विधानसभा में हमारा प्रश्न था। उस प्रश्न में यह जवाब आया कि वर्ष 2019 से 2023 के मध्य धर्मांतरण की 35 शिकायतें प्राप्त हुई हैं और उसमें 13 लोगों के विरूद्ध प्रकरण पंजीबद्ध किया गया है। माने यह सरकार धर्मांतरण को स्वीकार ..।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

उच्च शिक्षा मंत्री (श्री उमेश पटेल) :- उपाध्यक्ष महोदय, सरकारी संरक्षण में धर्मांतरण। आप समझ रहे हैं कि आप क्या आरोप लगा रहे हैं?

श्री शिवरतन शर्मा :- हाँ, मैं बोल रहा हूं।

श्री उमेश पटेल :- यह धर्मांतरण हुआ है या नहीं हुआ है, आप अपनी बात रखिये, लेकिन मैं यह दावे के साथ कह सकता हूं कि सरकारी संरक्षण में कोई धर्मांतरण नहीं हुआ। न आपके समय में हुआ, न हमारे समय में हो रहा है। मैं इस बात को आपके समय का भी उल्लेख कर रहा हूं और अभी के समय का भी उल्लेख कर रहा हूं। आपने फोर्सफुल्ली कराया, न हमने फोर्सफुल्ली धर्मांतरण कराया । कोई स्वेच्छा से करेगा, वह अलग विषय है।

श्री राजमन बेंजाम :- माननीय मंत्री जी, एक मिनट।

श्री शिवरतन शर्मा :- आपके विधानसभा की घटना है?

श्री राजमन बेंजाम :- मेरे विधानसभा की घटना है। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, 19 तारीख को सुबह 6 बजे एक 51 वर्ष महिला की मृत्यु होती है। उसके बाद हमारे आदिवासी परंपरा में है कि शव को एक दिन तक रखने का और दूसरे दिन उसके दाह संस्कार करते हैं। यह धर्मांतरण की बात कर रहे हैं। वहां तीन चर्च हैं। एक चर्च वर्ष 2007 में, एक चर्च वर्ष 2008 में और एक और वर्ष चर्च 2012 में बना तो हमारी सरकार के समय में कहां से धर्मांतरण हुआ है? और वहां कोई भी सरकारी संरक्षण में धर्मांतरण नहीं हुआ है। वहां पर शासन पूरी व्यवस्था के साथ उसका दाह संस्कार किया गया है। यह 5000 लोग असत्य कह रहे हैं। वहां पर मुश्किल से 500 लोग थे और उसी गांव के लोग थे। इन लोग जबरदस्ती यहां से जांच कमेटी बनाकर उसको उकसाने के लिए, धर्मांतरण कराने के लिए दबाव बनाने के लिए यहां से जांच कमेटी भेजें। वहां ऐसा कोई धर्मांतरण नहीं हुआ। (शेम-शेम की आवाज)

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष जी, हमारे प्रदेश में कानून बना हुआ है।

श्री ननकी राम कंवर :- उपाध्यक्ष महोदय, मेरे पहुंचने के पहले से वहां 5000 लोग इकट्ठा थे। अपने क्षेत्र का तो कम से कम सही बोलिये।

श्री राजमन बेंजाम :- माननीय सदस्य महोदय, आप बहुत अच्छा वरिष्ठ सदस्य हैं। मैं आपको लाइव देख रहा था। आप ऐसा मत कहिए कि मैं आपके क्षेत्र में नजर नहीं रखा। आप कहां जा रहे हैं, कहां लोगों को भड़का रहे हैं, कहां सरपंच बनाऊंगा बोल कर वहां के आदिवासी लोगों को भड़का रहे हैं। आपके जाने के बाद वहां पर हिंसा भड़का है। (शेम-शेम की आवाज) आप जबरदस्ती रात-रात को जाते थे। आपके पूर्व विधायक रात को जाते थे। मैंने उनको रात को रोका।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यदि कोई व्यक्ति धर्मांतरण करना चाहता है तो (व्यवधान) देना पड़ता है और धर्मांतरण की कार्रवाई हो चुकी है।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, मेरे यहां बेलर में भी इन लोग ऐसा करने का प्रयास किये।

श्री ननकी राम कंवर :- उपाध्यक्ष महोदय, यह गलत जानकारी दे रहा है। (व्यवधान)

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- संविधान में जो धर्मनिरपेक्षता है, उसका पालन करिये। चाहे कोई भी पार्टी हो।

श्री उमेश पटेल :- लक्ष्मी जी, एक मिनट। उन्होंने अपनी बात कही, जो वहां के हैं और अच्छी बात यह है कि आपके करतूतों को सभापति भी जानते हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- ऐसा है कि बाहर कौन क्या बोलता है, मैं उस बात का जिक्र नहीं करूंगा, पर धर्मांतरण से बस्तर के सारे प्रतिनिधि चाहे कांग्रेस के हो, चाहे बी.जे.पी. के हो, सारे जनप्रतिनिधि चिंतित हैं। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अगर किसी व्यक्ति को धर्मांतरण करना है। हमारा राष्ट्र पंथ-निरपेक्ष राष्ट्र है। धर्म परिवर्तन के लिए स्वतंत्र है, पर धर्म परिवर्तन करने की एक नीति बनी हुई है। उस नियमों में जाकर वह धर्मांतरण करें। पर आज छत्तीसगढ़ में क्या हो रहा है। कुछ भी प्रलोभन दो, धर्मांतरण करवा लो। यह सरकार बात-बात में सर्वे की बात करती है कि हमको प्रधानमंत्री आवास बनाना है तो हम सर्वे करवायेंगे । हम यह सर्वे करवायेंगे तो इस ज्वलंत मुद्दे पर जिससे पूरा बस्तर जल रहा है । बस्तर में कानून व्यवस्था की स्थिति निर्मित हो रही है । सरकार इसका सर्वे क्यों नहीं करवाती है कि कितने लोग धर्मांतरित हुए ? मैंने अभी मेरे प्रश्न के उत्तर में आपको बताया कि आपका जवाब है कि वर्ष 2019 से 2023 के बीच कुल धर्मांतरण की 35 शिकायतें प्राप्त हुईं और 13 लोगों के खिलाफ मामला पंजीबद्ध किया गया । वहां कुछ गांव तो ऐसे हैं जहां पूरे गांव के गांव का धर्मांतरण हो गया । आपको लगता है कि नहीं लगता है या यह सरकार गलत जानकारी दे रही है ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, गांधी के विचारों पर चलने की बात करते हैं । यह सिर्फ और सिर्फ दिखावा है जबकि यह सरकार गांधी के विचारों के विपरीत काम करने वाली सरकार है । वर्तमान सरकार गांधीवादी विचारधारा का अनुसरण कर रही है । गांधी टोपी पहनने से और गांधी जी के नाम से संगोष्ठी कर लेने से गांधी के विचारों का अनुसरण नहीं हो जाता । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इनके माननीय विधायक कहां गये हैं जिनकी पहली वंदना माननीय अजय चंद्राकर जी ने की थी । एक मंत्री पर हत्या का आरोप लगाते हैं । क्या यह गांधीवादी विचारधारा है ? जनप्रतिनिधि अपने अधिकार की बात करें तो उस जनप्रतिनिधि के खिलाफ पुलिस का केस बन जाये, क्या यह गांधीवादी विचारधारा है ? सदन में मंत्री और मंत्रिमण्डल के सदस्य असत्य कथन करें और असत्य कथन के दसों प्रमाण आ चुके हैं । क्या यह गांधीवादी विचारधारा है ? भ्रष्टाचार लगातार प्रदेश में होता रहे और भ्रष्टाचार को सरकार संरक्षण देती रहे । क्या यही गांधीवादी विचारधारा है ?

श्री शैलेश पाण्डे :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य विनियोग पर बात करें न ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं तो इस पर बोल रहा हूं कि यह सरकार

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

गांधी जी के विचारों पर चलने वाली सरकार है । अब विनियोग की बात करें, ये खर्च की बात करते हैं । मेरे सारे विषय विनियोग से संबंधित हैं । आखिर इनको खर्च करने की अनुमति क्यों दी जाये ? बहुत से विभाग ऐसे हैं जिनको पिछले कार्यकाल में बजट प्रावधानित किया गया, उसमें खर्च ही नहीं कर पाये । बाल श्रमिक सर्वेक्षण के लिये 1 करोड़ 12 लाख का बजट दिया गया । इसमें पिछले साल का खर्च जीरो है । बाल श्रमिकों के पुनर्वास के लिये बजट प्रावधान किया गया और खर्च जीरो है । बंधक मजदूरों के पुनर्वास के लिये बजट दिया गया, उसमें कुल 4 लाख रूपये का खर्च हुआ और तो और माननीय दोनों वर्तमान और पूर्व पंचायत मंत्री बैठे हैं । मुख्यमंत्री समग्र ग्रामीण विकास के लिये 500 करोड़ रूपये का बजट प्रावधानित किया गया जिसकी मांग सबसे ज्यादा जनप्रतिनिधि करते हैं उसमें आपने 200 करोड़ रूपये खर्च किये हैं । बजट से कलाकार कल्याण कोष के लिये आपका सवा लाख रूपये खर्च हुए हैं और सार्वजनिक पुस्तकालय के लिये जो बजट प्रावधान था उसमें आपने 173 लाख रूपये खर्च किये हैं । आप खर्च के लिये राशि मांग रहे हैं, जो बजट प्रावधान किया गया । वह आप खर्च कर नहीं पा रहे हैं तो आपको किस काम के लिये राशि दें ? माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैंने भ्रष्टाचार का जिक्र किया । प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना में 5 हजार करोड़ रूपये का भ्रष्टाचार। डी.एम.एफ. की राशि में स्वार्थपूर्ण बंटवारे का आरोप मैंने नहीं लगाया है, सत्तापार्टी के विधायक आदरणीय मोहन मरकाम जी ने लगाया है । तेंदूपत्ता संग्राहकों पर यह सरकार लूट मच रही है, कल स्थगन पर हमने मांग की थी उसमें चर्चा की बात आयी थी । एक दिन या दो दिन तेंदूपत्ता की तोड़ाई होती है, बाकी तोड़ाई नहीं होती । कहावत थी कि रेत से तेल निकाला जाता है लेकिन यह सरकार तो कोयले से भी तेल निकालने में लगी हुई है और ई.डी. की कार्यवाही और उसमें जो लोग बंद हैं यह इसका सबसे बड़ा प्रमाण है । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, एन.एस.यू.आई. के नेता । बोलें तो क्लिपिंग पेश कर दूंगा । धमकी देकर पैसे मांगने का ऑडियो भी वायरल हुआ है । स्कूलों में चाहे खेल सामग्री खरीदने की बात हो, चाहे रानी लक्ष्मीबाई आत्मरक्षा योजना की बात हो। एक भ्रष्टाचार का अड्डा बन गया है । डी.एम.एफ. में कोरबा जिले में जो गड़बड़ी हुई है, इसकी शिकायत हम लोग नहीं कर रहे हैं । प्रदेश के राज्य सरकार के वरिष्ठ मंत्री आदरणीय जयसिंह अग्रवाल जी सार्वजनिक रूप से प्रेस को इंटरव्यू दे रहे हैं, सार्वजनिक रूप से लिखित में शिकायत कर रहे हैं । डी.एम.एफ. में भ्रष्टाचार । एकलव्य आदिवासी विद्यालय में जो भ्रष्टाचार हो रहा है यह बताने की जरूरत नहीं है । रश्मि जी चलीं गयीं, तखतपुर में किसानों की क्या स्थिति है ? किसान, मैं जिंदा हूं, मुझे जिंदा रहने का प्रमाण पत्र दे दो, यह कहकर भटक रहे हैं, रिकॉर्ड में उनको मृत घोषित कर दिया गया है । बिलासपुर में 354 मृत किसानों के नाम पर एक योजना में 70 लाख रूपए का भुगतान हो चुका है । यह सरकार सिर्फ और सिर्फ भ्रष्टाचार में लगी हुई है । तो इनको खर्च करने के लिए राशि क्यों दें ?

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

माननीय खेल मंत्री जी, पिछले 3 सालों से उत्कृष्ट खिलाड़ियों की घोषणा नहीं हुई है । उत्कृष्ट खिलाड़ियों को जो लाभ मिलना चाहिए था, वह लाभ नहीं मिल रहा है । संसदीय प्रणाली में लोकतंत्र की हत्या करने का काम यह सरकार कर रही है । राज्यपाल पर आरोप, राज्यपाल के अभिभाषण में परिवर्तन और एक बात जो इस सदन में बार-बार चर्चा में आ चुकी है । इनका जन घोषणा पत्र । मैं फिर से चुनौती दे रहा हूं । गांधी के विचारों पर चलते हो, सत्य की बात करते हो । 36 बिंदुओं के साथ आपने जो अपना जन घोषणा पत्र जारी किया था । उसको आप पूरा करने में पूरी तरह से असफल रहे हो । उसका दुष्परिणाम क्या हो रहा है ? आज सारे कर्मचारी संगठन रोज हड़ताल पर जा रहे हैं । पंचायत कर्मियों ने 16 तारीख से कलमबंद हड़ताल कर रखी है । जब पंचायत कर्मियों के लिए घोषणा हुई तो माननीय बाबा साहब गए थे । सारे लोगों से मिलकर जन घोषणा पत्र किया गया था । आप बता दें आपने पंचायत कर्मियों के लिए क्या किया ? एक साल पहले रोजगार सहायकों का बड़ा सम्मेलन किया गया और उनका वेतन बढ़ाने की घोषणा की गई, लेकिन आप वह भी नहीं कर पाए । मैं प्रधानमंत्री आवास की चर्चा नहीं करता । मैं अपने भाटापारा की चर्चा करता हूं । भाटापारा में माननीय मुख्यमंत्री जी का भाषण हुआ था कि हमारी सरकार बनेगी तो हम जिला बनाएंगे । माननीय अकबर साहब का भाषण हुआ था कि हमारी सरकार बनेगी तो हम जिला बनाएंगे । स्वर्गीय नंदकुमार पटेल जी ने भाटापारा में कहा था कि हमारी सरकार बनेगी तो हम जिला बनाएंगे । अब मुख्यमंत्री जी का जवाब क्या आता है, शिवरतन को हरा दोगे तो जिला बनाएंगे। अनियमित, संविदा, दैनिक वेतन भोगी कर्मचारियों के नियमितिकरण का क्या हुआ ? 50 हजार से ज्यादा सफाई कर्मचारी हैं, उनका क्या हुआ ? शिक्षक संवर्ग में वेतन विसंगति का मामला था, मैंने विधान सभ में उठाया तो मंत्री जी जवाब देने की स्थिति में नहीं थे । जब उनकी हड़ताल चल रही थी तो मुख्यमंत्री जी बोल रहे थे कि हमारे जाने के कारण, हमने आंदोलन हाथ में लिया तो शिक्षा कर्मियों का संविलयन करने के लिए सरकार बाध्य हुई । आपके तो घोषणा पत्र में यह बात थी ना कि वेतन विसंगति को दूर करेंगे, क्या हुआ उसका ? प्रेरक और विद्‌यामितानिन को लेकर आपने तो ट्‌वीट किया है, क्या हुआ प्रेरक और विद्‌या मितानिन का ? दिवंगत शिक्षकों का परिवार मुंडन कराने के लिए बाध्य हो गया लेकिन अनुकंपा नियुक्ति नहीं मिली । पिछले 160 दिनों से ..।

श्री उमेश पटेल :- शिवरतन भइया, ये सारी बातें आप बजट भाषण में भी कर चुके हैं । घोषणा पत्र के न आगे बढ़ते हो न पीछे हटते हो । आप विनियोग में भाषण दे रहे हो, कुछ तो नया करो ।

श्री रविन्द्र चौबे :- आखिरी बजट सत्र का आखिरी विनियोग । शिवरतन भइया, पांच साल तक कांग्रेस के घोषणा पत्र को बिल्कुल घोट डाले । एकाध लाईन तो इससे बाहर जाओ और हर लाईन में महाराज साहब को दोष लगाते हो । उन्होंने बनाया तो हम लोग इनको धन्यवाद्‌ देते हैं ।

श्री शैलेश पांडे :- और ये चिट्‌ठी कलेक्टर हो गए हैं । ये वाली चिट्‌ठी पढ़कर सुनाता हूं ।

श्री शिवरतन शर्मा :- ऐसा है, आप लोग अपने घोषणा पत्र को भूल गए । हम लोग याद दिलाते रहते हैं कि आपको कुछ याद आ जाए और उस बहाने भला कर दो लेकिन हमारे याद दिलाने के बाद भी आपको याद नहीं आ रहा है ।

श्री रविन्द्र चौबे :- उपाध्यक्ष जी, लोकतंत्र में अपने अपने घोषणा पत्र को सबको पढ़ना चाहिए । हम लोग अपना घोषणा पत्र पढ़कर क्रियान्वित करते हैं । दो करोड़ लोगों को रोजगार देंगे, बहुत हुई महंगाई की मार, कहां गई मोदी सरकार । इनके घोषणा पत्र में ये सब चीजें थीं, अपना घोषणा पत्र को नहीं पढ़ते । हमारे इतने सीधे सादे महाराज साहब हैं । हर लाईन में महाराज साहब को दोष लगा देते हो ।

उपाध्यक्ष महोदय :- दादा जी आ गए, कवासी लखमा जी ।

श्री शिवरतन शर्मा :- जनता का मेंडेड हमारे घोषणा पत्र में नहीं मिला । आपके जन घोषणा पत्र में मिला । इसलिए आपके आपके घोषणापत्र को याद रखना और आपको याद दिलाना हमारा नैतिक दायित्व है ।

उपाध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी, आप कुछ कह रहे हैं।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- माननीय उपाध्यक्ष जी, महाराज जी बोल रहे थे कि हर समय घोषणा पत्र को घोंट डाले हो। घोंटने का मतलब क्या होता है, आपको मालूम है। (हंसी) आप समझ लीजिए, जब आदमी दही को घोंटता है, तो घी निकलता है। हम लोग घी निकालना चाहते हैं।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिए, भाषण जारी रखिए।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय संसदीय कार्य मंत्री जी, आपकी घोषणा पत्र को हम लोग घोंट डाले हैं, उसका अर्थ मामा श्री ने बता दिया, अब बताने की जरूरत नहीं पड़ेगी। माननीय उपाध्यक्ष जी, मैं पुलिस विभाग में अपनी बात रखता चाहता हूं। वर्ष 2018 में हम लोगों की यह स्थिति थी कि जब हम लोग वोट मांगने जाते थे तो कुछ स्थानों पर तो भाजपा के लोगों को घूसने नहीं दिया गया। उसके पीछे कारण क्या था, आपका बड़ा लोक लुभावना जन घोषणा पत्र। पुलिस वालों के लिए आपने क्या घोषणा नहीं की थी, साप्ताहिक छुट्टी देंगे, पेट्रोल का भत्ता देंगे, आवास की व्यवस्था करेंगे, ऐसी नीति निर्धारित करेंगे की लोगों को पूरे समय बस्तर में ना रहना पड़े। आपने चार साल में किया क्या है ? जो लोग आपका स्वागत कर रहे थे, वह आने वाले समय में 2023 में आपका फिर से स्वागत के लिए तैयार बैठे हैं। माननीय उपाध्यक्ष जी, कुल मिलाकर मेरे बोलने के पीछे भाव यह है कि जो-जो कहा, उसके विपरीत काम इस सरकार ने किया है। उसके चलते हम इनके विनियोग विधेयक का विरोध कर रहे हैं।

सभापति महोदय :- शर्मा जी, 20 मिनट हो गए हैं, अब समाप्त करिए। 18 वक्ता और हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- उपाध्यक्ष महोदय, पांच मिनट में समाप्त कर रहा हूं। कुछ रिक्त पदों का जिक्र आदरणीय अजय चंद्राकर जी ने किया था, कुछ रिक्त पदों का जिक्र मैं कर देता हूं जो छूट गए हैं।

श्रमायुक्त कार्यालय जो संगठन अमला है, स्वीकृत पद 590 हैं और रिक्त पद 275 हैं। माननीय मोहम्मद अकबर जी चले गये। संचनालय नगर तथा ग्राम निवेश स्वीकृत पद 398 है, रिक्त पद 227 है। शासकीय मुद्रणालय राजनांदगांव में स्वीकृत पद 207 है, रिक्त पद 160 हैं। शासकीय मुद्रणालय नवा रायपुर स्वीकृत पद 107 है, रिक्त पद 93 है। संचनालय चिकित्सा शिक्षा स्वीकृत पद 14093 है, रिक्त पद 8420 है। राज्य में चिकित्सा विशेषज्ञ स्वीकृत पद 1633 है, रिक्त पद 1200 हैं। खादी ग्रामोद्योग रायपुर स्वीकृत पद 142 हैं, रिक्त पद 102 है। छत्तीसगढ़ हस्तशिल्प बोर्ड स्वीकृत पद 125 है, रिक्त पद 91 हैं। स्वर्गीय हेमचंद यादव विश्वविद्यालय स्वीकृत पद 193 है, रिक्त पद 170 है। माननीय मंत्री जी, खेल एवं युवा कल्याण मैदानी अमला, स्वीकृत पद 218 है और रिक्त पद 160 है। मैं यह बाकी विभागों की जानकारी दे रहा हूं। कुल मिलाकर जो सेटअप स्वीकृत है, वित्त विभाग की अनुमति है, उसके बाद आप भर्ती नहीं कर पा रहे हैं। जब भर्ती की बात करेंगे तो आप बोलते हैं आरक्षण। आरक्षण का मामला तो सिंतबर 2022 में आया, उसके पहले आप चार साल सरकार चला चुके थे। आपने चार साल में क्या किया, जरा यह बता दीजिए। उस चार साल में आपने क्या भर्ती की है, यह बता दीजिए। सिर्फ बहाना करने से कुछ नहीं होता। आपकी भर्ती करने की मानसिकता ही नहीं थी। इसका सबसे बड़ा प्रमाण क्या है, 14,885 शिक्षक की जो भर्ती की बात हुई, उस 14885 शिक्षकों की भर्ती साढ़े चार साल में आज तक पूरी नहीं कर पाए। आज भी ढाई हजार लोगों की भर्ती बाकी है। केन्द्र की सारी योजना अच्छी है। इसका लाभ जनता को मिलना चाहिए। वह सारी योजनाओं को रोकने का काम कर रहे हैं। प्रधानमंत्री आवास की बहुत चर्चा हो चुकी है। प्रधानमंत्री उज्जवला गैस, प्रधानमंत्री गरीब अन्न कल्याण योजना। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि में भी यह सरकार डंडा मारने का काम कर रही है।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय उपाध्यक्ष जी, ओ गैस सिलेण्डर के भाव ला एमन अइसने बढ़ा देहे कि गांव के मन हा छत में टांग के राखय है, नई बौरत हे।

श्री शिवरतन शर्मा :- इस सरकार की सबसे बड़ी उपलब्धि है, वह प्रदेश को अपराध का गढ़ बनाने की उपलब्धि है। विगत् चार वर्षों में छत्तीसगढ़ में 3081 हत्या हुई है, चार वर्षो में आत्महत्या के 24162 प्रकरण हुए हैं। सिर्फ जनवरी 2023 में 90 हत्या और 681 आत्महत्या के प्रकरण हुए हैं। ऑनलाइन ठगी 1467, वर्ष 2022 में दुष्कर्म के मामले 2,990, वर्ष 2022 में महिला उत्पीड़न 3,064, वर्ष 2022 में लूट 497, अपहरण 2,819। इस सरकार की नाकामियों के चलते शांति का टापू छत्तीसगढ़ अपराध के गढ़ के रूप में परिवर्तित हो गया है। हमारा प्रदेश अनुसूचित जनजाति बाहुल्य प्रदेश है। यदि यहां सबसे ज्यादा कोई वर्ग पीड़ित हुआ है तो अनुसूचित जाति और जनजाति वर्ग हुआ है। जनवरी, 2021 से नवंबर, 2022 तक सिर्फ 11 महीने में 258 अनुसूचित जाति की बच्चियों और महिलाओं के साथ अत्याचार और दुराचार किया गया। वहीं अनुसूचित जनजातियों की 471 बच्चियों के साथ दुराचार की घटना हुईं। ऐसी 729 घटनाएं इन 11 महीनों में हुई हैं। यह मैं नहीं बोल रहा हूं। हमारे दल के सदस्य

माननीय बांधी जी के प्रश्नों के जवाब में माननीय मंत्री जी ने इसे स्वीकार किया है। सड़क दुर्घटना से छत्तीसगढ़ में प्रतिदिन औसतन 17-18 लोगों की मौत हो रही है। विगत 3 माह की स्थिति में मार्च महीने में 158 मौत, 246 घायल हुए। छत्तीसगढ़ की यह स्थिति बनी हुई है। आज एम.ओ.यू. के संबंध में चर्चा हो रही थी। माननीय मंत्री जी ने कहा कि 192 एम.ओ.यू. हुए, उसमें से 9 निरस्त किये गये। उन्होंने उसके चालू होने की भी कुछ संख्या बताई। माननीय मुख्यमंत्री जी हमारे क्षेत्र में जाकर घोषणा करके आये थे। उद्योग मंत्री आ चुके हैं लेकिन इनके तो कुछ पल्ले ही नहीं पड़ता है। क्या है कि इनको यहां छाछ मिल रही है बाकी मलाई कहीं और जा रही है। परंतु इनको एक जगह लूटने की स्वतंत्रता मिल गई है। एक जगह लूटने की स्वतंत्रता है बाकी यह छाछ से ही प्रसन्न हैं।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं एम.ओ.यू. की बात कर रहा था। छत्तीसगढ़ में उद्योगपति काम करने के लिए कैसे आएंगे ? क्योंकि एम.ओ.यू. होता है तो पहले कटमनी की बात होती है। जो कटमनी नहीं देता है उसका एम.ओ.यू. निरस्त कर दिया जाता है। यदि कोई काम करने आ गया तो हर खिड़की में बड़ी डिमाण्ड होती है। कहीं पर कोई काम नहीं होता है। मैं आपके सामने इण्डियन एक्सप्रेस की एक रिपोर्ट रख देता हूं। पिछले कुछ समय पहले कर्नाटक में 1 लाख 63 हजार करोड़ रूपये का विनिवेश हुआ है। महाराष्ट्र में 1 लाख 40 हजार करोड़ रूपये का विनिवेश हुआ है। दिल्ली में 60 हजार करोड़ रूपये का विनिवेश हुआ है। तमिलनाडू में 22 हजार करोड़ रूपये का विनिवेश हुआ है। हरियाणा में 20 हजार करोड़ रूपये का विनिवेश हुआ है। गुजरात में 20 हजार करोड़ का विनिवेश हुआ है और छत्तीसगढ़ में 600 करोड़ रूपये का विनिवेश हुआ है। यह आपकी कथनी और करनी के अंतर को बताता है।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, आप एक मिनट में अपनी बात समाप्त कीजिए। अभी 20 और वक्ता हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- उपाध्यक्ष महोदय, राष्ट्रीय योजनाओं में छत्तीसगढ़ की क्या स्थिति है ? जल जीवन मिशन में हमारा रैंक 29वां है। जल जीवन मिशन में 34 में हम 29वें रैंक पर हैं। शिक्षा गुणवत्ता में हमारा रैंक 34वां है। सबसे लास्ट। प्रति व्यक्ति आय में भी हम राष्ट्रीय औसत से पीछे हैं। छत्तीसगढ़ में सिंचाई योजना में हम राष्ट्रीय औसत से बहुत पीछे हैं। माननीय मंत्री जी का बड़ा जोरदार भाषण हुआ था कि हम सिंचाई का रकबा डबल करेंगे। वर्ष 2022 में माननीय मुख्यमंत्री जी का बजट भाषण हुआ तो उन्होंने कहा हमने 13 लाख 58 हजार हेक्टेयर में सिंचाई की व्यवस्था की है। अभी वर्ष 2023 के बजट भाषण में माननीय मुख्यमंत्री जी ने कहा कहा कि हम 13 लाख 5 हजार हेक्टेयर में सिंचाई की व्यवस्था कर रहे हैं। सिंचाई में आप 1 साल में 50 हजार हेक्टेयर कम दर्शा रहे थे। इन्होंने जो भी कहा, उसको पूरा करने में यह असफल रहें और उसके चलते छत्तीसगढ़ विकास की दृष्टि से पिछड़ रहा है। छत्तीसगढ़ में अपराध बढ़ रहे हैं। इसके चलते इस सरकार को खर्च के लिए किसी प्रकार

की राशि नहीं दी जानी चाहिए। मैं विनियोग मांगों का विरोध करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं। आपने समय दिया इसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

उपाध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद। पाण्डे जी, आप 10 मिनट में अपनी बात समाप्त करेंगे।

श्री शैलेश पांडे (बिलासपुर) :- उपाध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मुख्यमंत्री जी के द्वारा प्रस्तुत विनियोग विधेयक के समर्थन में अपनी बात रखूंगा । हमारा छत्तीसगढ़ राज्य एक तरफ तेलंगाना से जुड़ा हुआ है, एक तरफ उड़ीसा से जुड़ा हुआ है, एक तरफ मध्यप्रदेश से जुड़ा हुआ है, हमारा छत्तीसगढ़ राज्य और भी कई राज्यों से जुड़ा हुआ है । इतने बड़े विशाल फैले हुए छत्तीसगढ़ राज्य में लगभग 3 करोड़ जनता की जवाबदारी हमारी सरकार के ऊपर है । इन 3 करोड़ लोगों की जवाबदारी के साथ-साथ उनकी अपेक्षाएं, उनकी जरूरतें, उनकी समस्या उन सबकी जवाबदारी सरकार के ऊपर रहती है । पिछले चार वर्षों से हम छत्तीसगढ़ की सेवा कर रहे हैं और इस छत्तीसगढ़ की सेवा में हमने एक ही काम किया, जिसमें सबसे बड़ा महत्वपूर्ण काम था, वह यह था कि हमने छत्तीसगढ़ राज्य को जो मॉडल राज्य बनाया, आपने हमारे छत्तीसगढ़ राज्य को 15 सालों तक 40 प्रतिशत झुग्गी-झोपड़ी का राज्य बनाकर रखा। आप उसको उबार नहीं पाये । आपने हमारे छत्तीसगढ़ राज्य को पिछड़ा राज्य बनाकर रखा, उसके नाम पर पैसा लाते रहे और घी पीते रहे, लेकिन आपने उसको बढ़ने नहीं दिया । आपने हमारे छत्तीसगढ़ राज्य को 15 वर्षों में बच्चों को क्या सुविधाएं दी, यह आप अच्छी तरह जानते हैं ।

उपाध्यक्ष महोदय, सरकार की सोच सबसे प्रति होती है । आज हमारे छत्तीसगढ़ आदिवासी भाई-बहन रहते हैं, अनुसूचित जाति, जनजाति के भाई-बहन रहते हैं, हमारे पिछड़ा वर्ग और सामान्य वर्ग के भाई बहन रहते हैं । बजट ऐसा होना चाहिए, सरकार का काम ऐसा होना चाहिए, जिसमें सरकार सभी वर्गों के साथ, सभी जाति, सभी धर्मों के लोगों का विकास कर सके, उनको आगे ला सके, यही सरकार की जरूरत होती है और यही सरकार का कर्तव्य भी है ।

उपाध्यक्ष महोदय, भागवत कथा में राजा पृथु हैं, राजा पृथु को पृथ्वी का सबसे पहला राजा कहा गया है । उस वक्त पृथ्वी कल्पना में नहीं थी । वे राजा वेन के पुत्र थे, राजा वेन अच्छे आदमी नहीं थे । राजा पृथु ने धरती मां की सेवा की, तपस्या की, उनको आह्वान किया और उनको कहा कि मां, मैं इस राज्य में आपके आशीर्वाद से सेवा करना चाहता हूं । धरती मां ने उनको कहा कि तुम पहले ये सब काम करो, पहाड़ों को एक तरफ रखो, जमीन को समतल बनाओ, लोग कहां पर बसेंगे, लोग कहां पर जीवित रहेंगे, कहां पर क्या होगा, हम तुमको धन देंगे, हम तुमको अन्न उपजाकर देंगे, हम तुम्हारे लिए सब्जियां देंगे, यह सब भागवत कथा में है । उन्होंने विकास किया, उन्होंने पृथ्वी की रचना की इसीलिए उनका नाम पर पृथ्वी का नाम रखा गया है, वह इसीलिए रखा गया है क्योंकि पृथ्वी के पहले राजा, राजा पृथु थे । उन्हीं के नाम पर पृथ्वी का नाम रखा गया है । एक उनका शासन था, आपका 15 साल शासन

था, आपने क्या किया ? आपको व्यवस्थित छत्तीसगढ़ मिला, आपको छत्तीसगढ़ राज्य बनाकर दिया गया ।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- पांडे जी, आप लोग हमेशा 15 साल, 15 साल बोलते हो, उससे तो बाहर आओ ।

श्री शैलेश पांडे :- आपको जनता ने 15 वर्ष यहां बिठाया, आप जनता की सेवा के लिए बने थे, आपने किस क्षेत्र में क्या उपलब्धि हासिल की । हमारे विपक्ष के साथी बहुत बार कर्ज की बात करते हैं कि आपने बहुत कर्ज ले लिया, आपने बहुत कर्ज ले लिया। अभी विनियोग की बात हो रही है, इसलिए मैं कर्जे की बात कर रहा हूं । कर्ज तो आपने भी लिया था । आपने 3 गुना कर्ज लिया था । आपने किसलिए कर्ज लिया था ? स्काई वॉक बनाएंगे, चुनाव के लिए टिफिन बाटेंगे, मोबाईल बाटेंगे । मैं गारंटी से कहता हूं कि इनका दिया हुआ मोबाईल छत्तीसगढ़ की जनता में किसी एक आदमी के पास हो तो बताईएगा । किसी के पास नहीं है ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- सब लोग उपयोग कर रहे हैं, आप उस मोबाईल का उपयोग नहीं कर रहे होंगे ।

श्री शैलेश पांडे :- उपाध्यक्ष महोदय, आप उधार लेकर घी पीने का काम करते थे, हम उधार लेकर जनता की सेवा करने का काम करते हैं । हां, हमने कर्ज लिया। आपने भी लिया, मोदी जी भी कर्ज ले रहे हैं। हमारा कितना कर्ज है ? हमारा कर्ज हमारे जी.एस.डी.पी. के 17 प्रतिशत के अंदर है। आपका कितना कर्ज है ? जी.डी.पी. का 47 प्रतिशत है। आपके लिए एफ.आर.बी.एम. एक्ट नहीं है, एफ.आर.बी.एम. एक्ट सिर्फ हम राज्य सरकारों के लिए है ? मोदी जी के लिए नहीं है ? केन्द्र के लिए नहीं है ? लोकसभा में वित्तमंत्री जी ने जवाब दिया कि हम एफ.आर.बी.एम. एक्ट से आगे निकल चुके हैं, हमारे पास पैसा नहीं है और हम आगे कर्मचारियों का वेतन नहीं बढ़ा सकते हैं। उस दिन माननीय मुख्यमंत्री जी ने सदन में इस बात का उल्लेख किया। इस देश में क्या हो रहा है ? आप जहां-जहां राज कर रहे हैं, आपकी जहां-जहां हुकुमत है, आप वहां-वहां जनता को त्रस्त करके रखे हुए हैं। अभी शिवरतन भईया चले गये हैं। मैं उस दिन जी.एस.टी. पर बात कर रहा था। हमारे राज्य ने कल्पना से भी आगे जी.एस.टी. का भुगतान किया है। पिछले वित्तीय वर्ष में केन्द्र सरकार को 16,500 करोड़ रूपया जी.एस.टी. गया है। हम देखेंगे कि आप कितनी क्षतिपूर्ति लौटाते हो ? आपने अभी तक हमारे साथ क्या व्यवहार किया ? आकड़े बताते हैं। हम आगे देखेंगे कि आप हमको कितना देते हो। हमारे राज्य से 16,500 करोड़ रूपया जी.एस.टी. जमा हुआ है। यह हमारे राज्य की जनता की खून-पसीने की कमाई का पैसा है। आपको जी.एस.टी. में [xx] नहीं आती है। माफ कीजियेगा, मुझे इस शब्द का प्रयोग नहीं करना चाहिए, लेकिन आपने जी.एस.टी. किन-किन चीजों पर लगाया ? आप आपने किचन में आग लगा दी है। आज रसोई गैस की कीमत क्या है ? साढे चार सौ रूपये में मिलने वाली रसोई गैस आज ग्यारह सौ

रूपये में मिल रही है। आज दूध, दही, पनीर में कितना जी.एस.टी. ले रहे हैं ? आपने सभी चीजों में जी.एस.टी. बढ़ा दिया है जिससे इस देश की जनता त्रस्त है। मैंने उस दिन उपमा दी थी कि इस देश में कोई सबसे ज्यादा कर्ज लेने वाला राजा हुआ था तो वह मुगल के शासन मे था, उसका नाम औरंगजेब था और औरंगजेब के बाद अगर कोई इस देश में सबसे ज्यादा टैक्स ले रहा है नरेन्द्र दामोदर राव मोदी जी माननीय

श्री धर्मजीत सिंह :- प्रधानमंत्री बोलो।

श्री शैलेश पाण्डे :- माननीय प्रधानमंत्री जी, मैं क्षमा चाहता हूं। आप मेरे गुरू हैं, डांट सकते हैं।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- आप किस आधार पर तुलना कर रहे हैं, बता दो।

श्री शैलेश पाण्डे :- बबा, मैं टैक्स की बात कर रहा हूं कि जनता से सबसे ज्यादा टैक्स कौन लेता है। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, कल एक ध्यानाकर्षण में बृजमोहन भईया बोल रहे थे कि अमृत मिशन की रोड बनवा दीजिये, आपने नाली खोद दी, पाईप डाल दिया, उसका रेसटोरेशन करो। वह ठीक से नहीं हुआ है, वह रोड अच्छे से नहीं बनी है। आप 15 साल क्या कर रहे थे ? आपने एक बड़े शहर को खोदापुर बना दिया है। बिलासपुर शहर का नाम खोदापुर रख दिया था। आपने कितना खोदा ? आपने पाताल तक खोदकर सीवरेज पाईप डाला है क्या ? धर्मजीत भईया खुद ही बोलते हैं कि सीवरेज न पानी आयेगा न जायेगा। आप बोलते हैं या नहीं बोलते ?

श्री धर्मजीत सिंह :- अमृत मिशन में पानी आयेगा।

श्री शैलेश पाण्डे :- सीवरेज में ना जायेगा अमृत मिशन में आयेगा, यह आप बोलते हैं। क्योंकि आप सच बोलते हैं। हम आपका इज्जत करते हैं, आपका बहुत सम्मान करते हैं। आप समदर्शी व्यक्ति हैं। अगर आप 15 साल काम किए होते तो ध्यानाकर्षण लगाने की जरूरत ही नहीं पड़ती, परन्त आपने नहीं किया।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपने शिक्षा के क्षेत्र में क्या किया ? मुख्यमंत्री जी ने बजट पेश किया है। इस बजट में किसको केन्द्र में रखा है ? माननीय मख्यमंत्री जी ने जो बजट पेश किया है, अगर उस बजट में छत्तीसगढ़ में केन्द्र में रखा है तो वह व्यक्ति है हमारा किसान।

समय :
3.24 बजे **(सभापति महोदय (श्री लखेश्वर बघेल) पीठासीन हुए)**

सभापति महोदय, आज हम किसानों के लिए काम कर रहे हैं। जय जवान, जय किसान का नारा पूर्व प्रधानमंत्री जी लाल बहादुर शास्त्री जी ने दिया था। हम उन किसानों की इज्जत करते हैं। माननीय सभापति महोदय, इधर देखिये, मैं आपको बताना चाहता हूं कि, मुझे गांधी जी दिखते हैं आपको घड़ी दिखती है। मैं गांधी जी को देखकर बोलता हूं। सभापति महोदय, किसान वह व्यक्ति है, जिसके कारण

आज वह रेवेन्यू है, अभी-अभी मैंने कहा कि 16500 करोड़ रूपये का जी.एस.टी. अगर छत्तीसगढ़ राज जमा कर रहा है, जो एक ऐतिहासिक बात है तो वह किसकी दम पर हम कर रहे हैं, कहीं तो विकास हो रहा होगा ? कहीं तो पैसा जा रहा होगा ? कहीं से तो काम हो रहा होगा ? आपको तो काम दिखता नहीं है ? आप यहां बैठकर सिर्फ भ्रष्ट्राचार की बात करते हो, ये भ्रष्ट्राचार हो रहा है, वो भ्रष्ट्राचार हो रहा है, आपको बस वही देखना है, आप वही देखने के लिये वहां बिठाये गये हो ? आदरणीय सभापति महोदय, आज हम लोग छत्तीसगढ़ के किसानों के लिये पहले दिन से काम कर रहे हैं, जिस दिन से हम सत्ता में आये हैं, उस दिन से हम किसानों का हित कर रहे हैं । उसके कारण लगभग 24 लाख किसान आज पंजीकृत हैं । है कि नहीं है ? आज कितना रकबा बढ़ गया है, आज 107 लाख मिट्रिक टन हमने धान खरीदा है, कहीं से तो पैसा आया होगा, यह धान कहां से खरीदा जायेगा ? हम किसानों को कहां से पैसा देंगे ? कहां से किसानों की जेब में 2500 रूपये डालेंगे ? उत्तरप्रदेश में आपकी भी सरकारें हैं, 1000 रूपये नहीं दे पाते हैं, एम.एस.पी. का पैसा नहीं दे पाते हैं, उससे कम देते हैं । आप अन्य राज्यों का भी पता कर लीजिए । छत्तीसगढ़ राज्य एक ईमानदार राज्य है, माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल एक ईमानदार मुख्यमंत्री हैं, जो कहते हैं, वह करते हैं । उपाध्यक्ष महोदय, यह भरोसा है, वह बढ़ रहा है । आप विकासमूलक की बात करते हैं, अभी आप लिस्ट लेकर बैठ गये थे...।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- पाण्डेय जी, मुख्यमंत्री जी को आपके ऊपर भी भरोसा है ना ?

श्री शैलेश पाण्डेय :- पूरा भरोसा है ।

डॉ.शिवकुमार डहरिया :- आप क्यों चिंता कर रहे हो ? वह हमारे सक्षम मित्र है, उसकी चिंता मत करो ।

श्री शैलेश पाण्डेय :- उपाध्यक्ष महोदय, आज विनियोग विधेयक आया है, इसका मतलब पक्का है कि विकास की बात होगी कि आपने क्या विकास किया ? आपने कौन सा विकास किया है ? आपने वर्ष 2017-2018 में विकासमूलक कार्यों में 79 परशेंट खर्च किया है और गैरविकासमूलक में 21 परशेंट खर्च किया है । जब हम लोग आये तो विकासमूलक कार्यों में 80 परशेंट खर्च किया है और 20 परशेंट गैरविकासमूलक कार्यों पर खर्च किया है । वर्ष 2021-2022 में 78 परशेंट और वर्ष 2022-2023 में 77 परशेंट खर्च किया है, चाहे विकासमूलक कार्य हो, चाहे गैरविकासमूलक कार्य हो, हम कम खर्च कहां कर रहे हैं ? उपाध्यक्ष महोदय, पैसा बराबर खर्च किया जा रहा है । हम किसानों की बात कर रहे थे, आपने किसानों का दर्द नहीं समझा है । आपके समय में किसान आत्महत्या कर रहे थे, आपके समय में किसान निराश और परेशान थे, आप कोई भी इल्जाम लगाकर सार्वजनिक स्टेटमेंट विधान सभा में देते थे, लेकिन आपने उसकी कभी चिंता नहीं की है । हमारी सरकार आई, सबसे पहले हमने किसानों का कर्जा माफ किया, उनके धान का समर्थन मूल्य लिया, आज प्रगति होते-होते चार साल में माननीय कृषि मंत्री जी ने अपने बजट भाषण में बताया कि यह राज्य की प्रगति है । यह राज्य में कृषि के क्षेत्र में

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

प्रगति है। उस दिन शिवरतन भईया सिंचाई की बात को लेकर अटक गये । निर्मित सिंचाई क्षमता और वास्तविक सिंचाई क्षमता में अंतर होता है, आप इसमें अभी तक अंतर ही समझ नहीं पाये हैं । आज 13 लाख हेक्टेअर हमारे पास वास्तविक सिंचाई क्षमता है, पहले 10 लाख हेक्टेअर हुआ करती थी, हमने 3 लाख हेक्टेअर बढ़ायी ना ? 3 लाख हेक्टेअर कितनी होती है ? बोधघाट परियोजना हमारी कंपलीट हो जायेगी, हम उसमें दो लाख हेक्टेअर ही सिंचाई कर पायेंगे यानी उससे भी ज्यादा हमने इन 4 वर्षों में सिंचाई क्षमता को बढ़ाया है । उपाध्यक्ष महोदय, यह किसके लिये बढ़ाया है ? हमने उन किसानों के लिये बढ़ाया है, जिनको पहले पानी नहीं मिलता था ? हम आज भी काम कर रहे हैं, अरपा भैंसाझार आपकी ही बनाई हुई योजना थी, वाह क्या मॉडल बनाया था और साढ़े तीन सौ करोड़ का सिविल वर्क आज भी भसका हुआ है, उसमें दरारें हैं। आज भी वह केनाल पूरी नहीं हुई है। हम वहां पर 13 हजार हेक्टेयर सिंचाई कर रहे हैं और अभी-भी 25 हजार हेक्टेयर में नहीं कर पाये हैं।

सभापति महोदय :- चलिये समाप्त करिये।

श्री धर्मजीत सिंह :- पाण्डे जी, इन लोगों ने जितने हजार का बनाया, जैसा भी बनाया। आपने 04 साल में क्या किया ? क्या आपने किसी को भी जेल भेजा, एक को भी निलंबित किया, एक को भी रिवर्ट किया ? जो ठेकेदार इनसे मिलते थे, वही ठेकेदार आप लोगों से मिल रहे हैं, इसलिये ज्यादा ऊंगली मत दिखाइये।

श्री शैलेश पाण्डे :- सभापति महोदय, निलंबित भी करेंगे और यह जो घोटाला है, मैं आपको बता दूं कि जो यह घोटाला आगे जग जाहिर होगा कि किस प्रकार से काम किया गया है।

सभापति महोदय :- पाण्डे जी, समाप्त करें।

श्री शैलेश पाण्डे :- माननीय सभापति महोदय, अभी 10 मिनट में खत्म कर रहा हूं। सिर्फ 10 मिनट और।

सभापति महोदय :- 15 मिनट हो गये। नहीं।

श्री शैलेश पाण्डे :- सभापति महोदय, आप बहुत अच्छे हैं। यदि हम स्वास्थ्य विभाग की बात करते हैं। आपने स्वास्थ्य के क्षेत्र में क्या स्थिति पैदा करके रखी थी। आपने छत्तीसगढ़ में स्वास्थ्य के क्षेत्र में भारत सरकार का पैसा बंदरबाट कर दिया था। मुझे इस बात को सदन में कहते हुए [xx] आती है कि छत्तीसगढ़ में जो गर्भाशय कांड जो हुआ था, वह सिर्फ और सिर्फ केंद्र सरकार जो पैसा देती है, उस पैसे को निजी लोगों को बांटने के लिये आपने माताओं-बहनों का गर्भाशय निकाल दिया था क्योंकि आपको [xx] की हवस थी। हमने ऐसा काम नहीं किया। मैं आपको खूबचंद बघेल योजना का आंकड़ा दिखाना चाहता हूं। वर्ष 2019-20 में हमारे 05 लाख 59 हजार 197 बेनिफिशियरिज है और वर्ष 2022-23 में 08 लाख 91 हजार 212 बेनिफिशियरिज, लाभार्थी है। हमने लगभग 09 लाख लोगों को डायरेक्ट फायदा दिया है, हमने पैसा दिया है। हमने उस पैसे का सदुपयोग किया है। जिससे उसका इलाज हुआ,

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

जिससे उसका जीवन बना है। हमने आपके जैसे माताओं और बहनों के गर्भाशय नहीं निकाले हैं। उसी पैसे के लालच में। आज ..।

सभापति महोदय :- चलिये समाप्त करिये।

श्री शैलेश पाण्डे :- सभापति महोदय, एक स्वास्थ्य की बात कर लूं फिर खत्म कर दूंगा। बाकी और भी सदस्य बोलेंगे। आज स्वास्थ्य के क्षेत्र की बात करते हैं। सबसे बड़ी समस्या होती है, इलाज की। हम नीचे के लेवल पर इलाज कैसे दे पायेंगे। आज हमारी चिंता है कि हमको 03 करोड़ जनता की जवाबदारी है। आज हमारी सरकार ने योजनाएं बनाई है। हमने मुख्यमंत्री दाई-दीदी क्लिनिक, मुख्यमंत्री हाट बाजार योजना, मुख्यमंत्री धनवंतरी योजना, इन सारी योजनाओं को लेकर हम जनता के बीच जा रहे है। जेनेरिक दवाइयां, स्लम स्वास्थ्य योजना, आज हम लोगों के बीच जा रहे हैं। आज हमर क्लिनिक, हमर अस्पताल, हमर लैब, हमने ये सारी योजनाएं लायी हैं। हमने हेल्थ सेक्टर को डिसेंट्रलाईज्ड किया है । आपने पहले हेल्थ सेक्टर में ऐसा क्यों नहीं किया ? आप सी.एस.सी., पी.एस.सी, जिला अस्पताल से बाहर कभी नहीं आये। आप क्यों नहीं आये ? आप वही सी.एस.सी., पी.एस.सी. करते रहे, वह सी.एस.सी., पी.एस.सी. जिसमें कोई जाता ही नहीं है। आपने उसका इंफ्रास्ट्रक्चर देखा ? आपने वहां मशीनें भेजी ? क्या कभी टेक्निशियन भेजा ? आपने नहीं भेजा। लेकिन आज आप इस बात का विरोध करते हैं कि टेक्निशियन नहीं है। आज शिक्षा का क्षेत्र हो, स्वास्थ्य का क्षेत्र हो, कृषि का क्षेत्र हो, सिंचाई का क्षेत्र हो, चाहे आज हमारी माताएं-बहनें हो, मितानिनों को, हमारी आंगनबाड़ी कार्यकर्त्ताओं को, जिनको आज पुरूस्कार दिया गया है। हमने सब क्षेत्र में काम किया है। माननीय मुख्यमंत्री जी ने जो बजट पेश किया है, वह वैसा ही काम कर रहे हैं जैसे धरती के पहले राजा, राजा पृथु ने किया था। मै उनके समर्थन में अपनी बात को रखकर, अपनी बात को विराम करता हूं। आपने मुझे बोलने के लिये समय दिया इसके लिये मैं आपका बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूं।

सभापति महोदय :- धन्यवाद्। धर्मजीत सिंह जी।

श्री धर्मजीत सिंह (लोरमी) :- माननीय सभापति महोदय, मैं विनियोग विधेयक का विरोध करने के लिये खड़ा हुआ हूं।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय धर्मजीत सिंह जी का भाषण सुनने के लिये मैं कान में हेडफोन को लगा लिया हूं। लेकिन मेरा आग्रह है कि बृहस्पत सिंह जी कहीं पर भी हो, उनको खोजकर सदन के अंदर बुलाया जाए और आदरणीय अमरजीत भगत जी को भी कहीं से खोजकर सदन में बुलाया जाए। दादी, आप तो बिना सुने खड़े हो जाओ। खड़े हो जाओ, कुछ बोलो।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय सभापति जी, बिना खड़े हुए अजय जी के पेट का पानी नहीं पचेगा।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- आप दोनों है, उसके लिये तो अभिनंदन किया हूं। यह तीसरी भी है (श्रीमती संगीता सिन्हा की ओर इशारा करते हुए)।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, विनियोग विधेयक के पहले, माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण से लेकर, बजट के अभिभाषण, विभागों की मांगों की चर्चा में हम सबने इस सदन में लगभग पिछले 15 दिनों से अनेक आंकड़े पढ़े, अनेक खामियां निकालीं। अब यह तो विनियोग विधेयक है। इस विधेयक का मतलब यही है कि जो बजट पास हुआ है उसको सरकार खर्च करने की अनुमति मांग रही है। बजट कोई फेल तो होना नहीं है, यह पास ही होना है और विनियोग विधेयक भी पास होना है। माननीय पाण्डे जी, मुझे बहुत उम्मीद थी कि आप उसी शहर के विधायक हैं जहां मैं रहता हूँ मैं सोच रहा था कि आज बजाए राजनीतिक भाषण देने के, आंकड़े पढ़ने के आप बिलासपुर की समस्याओं को उद्धृत करते, कुछ मांग करते तो एक संदेश भी जाता। वहां के लोग आपकी तरफ आशा भरी निगाह से देखकर बैठे हुए हैं कि शायद आप कुछ मांग करेंगे और उनकी समस्याओं को दूर करेंगे, लेकिन आपने बिलासपुर की किसी भी समस्या को न उठाकर, बहुत ही गलत काम किया। आपने एक शब्द नहीं बोला है, आप रिकॉर्ड देख लीजिए।

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- उन्होंने कहा कि इन लोगों ने खोदापुर बना दिया था यह उन्होंने कहा या नही ?

श्री धर्मजीत सिंह :- मैं उसको भी बोल रहा हूँ। आपने सिम्स के बारे में एक शब्द नहीं बोला। माननीय बृहस्पत जी उधर हैं, आपका स्वागत है। आपके बगैर इन्हें अच्छा नहीं लगता। आप मत जाया करिये।

श्री बृहस्पत सिंह :- मुझे भी उनके बिना अच्छा नहीं लगता।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, एक शोर फिल्म का गाना है, तु धार है नदियां की, मैं तेरा किनारा हूँ, तु मेरा सहारा है, मैं तेरा सहारा हूँ। आप दोनों का इसी तरीके का साथ है।

माननीय पाण्डे जी, जब बिलासपुर का सिम्स अस्पताल खुला, उस समय श्री अजीत जोगी जी मुख्यमंत्री थे मैं उसके उद्घाटन के समारोह में था। वह अस्पताल जिस बिल्डिंग, स्थिति में खुला, 22 सालों के बाद आज की स्थिति में वह उससे एक इंच भी आगे नहीं बढ़ा । मैं उम्मीद् कर रहा था कि जब कांग्रेस की सरकार बनी है तो वहां पर एक नई ईमारत बनेगी जैसा कि बस्तर में मेडिकल कॉलेज की ईमारत है, लेकिन बिलासपुर के सिम्स अस्पताल बनारस की उस कचौड़ी गली के समान है, जो कि गरीबों का अस्पताल है आपने उनको वहां बेमौत मरने के लिए छोड़ दिया है। आपकी एक भी मशीन चाहे वह लेथोट्रेप्सी मशीन हो, चाहे वह एम.आर.आई मशीन हो, चाहे वह सोनोग्राफी मशीन हो, चाहे वह पेथोलैब हो, चाहे वह और कोई जांच की मशीन हो, वहां सारी मशीने पड़ी हैं और धूल खा रही हैं। वहां

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

कहीं पर गरीबों की जांच नहीं होती और उन्हें बाहर का चिट दे दिया जाता है और वह बाहर जाकर ईलाज कराते हैं। उसमें ज्यादा जाऊंगा तो तकलीफ होगी।

श्री शैलेश पाण्डे :- माननीय सभापति महोदय, वहां पहले सभी मशीनें कहां लगा पाये थे, सी.टी. स्कैन, एम.आर.आई. मशीन हमने लगायी हैं..।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, वहां होना तो चाहिए। वहां मशीनें लगाने से क्या फायदा?

श्री शैलेश पाण्डे :- माननीय सभापति महोदय, उसका उपयोग भी है। मेरे पास आंकड़े हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, वहां मशीनों का उपयोग नहीं हो रहा है। मैं तो आपको अखबार की कतरने पेश कर दूंगा कि वहां कोई भी जांच ठीक से नहीं होती। यह होता है तो वह मशीन बंद होती है और वह बंद होता है तो यह शुरू हो जाता है। कैंसर अस्पताल के बारे में भी बोलना चाहिए था, आपने ही बनवाया है और आपकी सरकार में शुरू हुआ है। मुझे कहने में कोई संकोच नहीं है। मुझे इससे क्या तकलीफ है ? अगर आपने कोई अच्छा काम किया है तो मुझे उसकी तारीफ करने में कोई संकोच नहीं है। मैं अमृत मिशन सिवरेज के बारे में बोल रहा हूँ। वह खोदापुर था इससे कौन इंकार कर रहा है कि वह खोदापुर नहीं था, लेकिन उस खोदापुर को पाटापुर कौन बनाएगा? आपको उसे पाटकर, तो रखना चाहिए था। आज भी वह उसी स्थिति में है। अभी कुछ दिन पहले नवजवान लड़का जो अपने मामा के घर आया था, वहां अमृत मिशन के सिवरेज के 40 फीट के गड्ढे में मर गया। उसका क्या दोष था ? उसकी लाश भी बरामद हुई और मुख्यमंत्री जी की तरफ से एक ईंट के भट्ठे में शराब पीकर मरने वाले लोगों को दो-दो लाख रूपए दिया गया। हमने उस बच्चे के लिए मांग की आपकी संवेदनशीलता कहां है ? माननीय पाण्डे जी, आप बिलासपुर के विधायक हैं । आपको लड़ाई लड़नी थी और आज मांग करनी थी कि उस लड़के को भी 10 लाख रुपये नही दे सकते हैं तो 5 लाख रुपये दो लेकिन उस बच्चे को मिलना चाहिए। वह गरीब घर का बच्चा मर गया, बेमौत मरा और सरकार की लापरवाही से मरा।

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- वह मांग कर चुके हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- मांग करने से मतलब नहीं हैं। शराब पीने वालों को जब 5 लोगों को 2 लाख रुपये मिल सकता है तो उसकी तो सरकार के द्वारा हत्या की गई है, मैं यह कह सकता हूं। क्योंकि वहां पर कोई सेफ्टी वॉल नहीं था, कहीं पर भी कोई प्रोटेक्शन, डॉयरेक्शन नहीं था, कुछ भी नहीं था। वह बच्चा मर गया। उसके लिए हम मांग कर रहे हैं। आप संवेदनशील हैं तो उस परिवार को पैसा दीजिए। माननीय सभापति महोदय, एक पीड़ा मुझे और है। इतने विद्वान सदस्य हमारे राजनीतिक गुरू, उस तरफ के भी राजनीतिक गुरू भीष्म पितामह पंडित रविन्द्र चौबे सामने बैठे हैं। वह 7-7 बार के विधायक हैं। आप लोग उनसे भी नहीं सीखे। आप लोगों को उनसे कार्यशैली सीखनी चाहिए। यह विपक्ष जब बोलता है तो आप अपनी पूरी मर्यादाएं लांघ देते हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- धर्मजीत भैया क्या है, हमारे राजनीतिक गुरू दो प्रकार से शिक्षा देते हैं, कब मिश्री भैया बनना है और कब जलेबी बनना है।

श्री धर्मजीत सिंह :- जो भी हों, जलेबी तो हैं। मिश्रित तो हैं। वह नीम और कड़वा तो नहीं हैं इसलिए हम उनकी दाद देते हैं। मैं यह तो बोलता हूं कि आप इनसे सीखिये। 15-15 साल के विधायक को, 10-10 साल मंत्री रहे लोगों को खड़े होकर इंट्रप्ट करने के बजाय उनसे सीखिये। यह प्रजातंत्र है। यह सदन इसी के लिए बना है कि जनादेश में आपको सरकार चलाने का मौका मिला है और इधर विपक्ष में हमको बैठने का मौका मिला है। अगर ये विपक्ष न रहे तो आप उस महिला के समान होंगे जिसके सिर में सिंदूर नहीं है। आपकी खूबसूरती, आपकी नूरी सब खत्म हो जायेगी। आप उस चक्के के समान हैं जो एक चक्का तो बहुत मजबूत है लेकिन दूसरे चक्के को आप कमजोर करना चाहते हैं। आपकी गाडी आगे नहीं बढेगी। "निंदक नियरे रखिये, आंगन कुटी छबाय, बिन साबुन, साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय।" इतने बडे-बड़े महापुरूष बोले हैं और आप लोग थोड़ी सी भी बात नहीं समझते हैं। आप बोलिये, हम आपकी भी बात सुनेंगे। आपका सम्मान करते हैं, अपने मुख्यमंत्री का सम्मान करते हैं। जिंदगी में फुल प्रूफ कोई नहीं होता है।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं व्यक्तिगत रूप से इनका, डहरिया जी, यह, अमरजीत भगत जी और संगीता सिन्हा मेडम का घोर सम्मान करता हूं। (हंसी)

श्री आशीष कुमार छाबड़ा :- भैया, लेकिन इसकी परिभाषा बदल दिये हैं। उनकी परिभाषा में निंदक को नहीं राखिये, तुरंत ही निपटाय।

श्री शिवरतन शर्मा :- हॉ, अब ये आप बदल दो, हम तो उसी में चलते हैं। माननीय सभापति जी, मैं यह कह रहा था कि..।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय सभापति महोदय, हम आपका बहुत सम्मान करते हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- हम लोग भी आपका बहुत आदर करते हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि आप और ओजस्वी, तेजस्वी बनें और आगे बढ़े।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय सभापति जी, हम सम्मान करते हैं इसलिए आप लोगों को हमारे अध्यक्ष महोदय जी, इतना मौका भी देते हैं। हमारे यहां म्यूट नहीं किया जाता है और हम लोगों से भी ज्यादा इनको बोलने का मौका मिलता है।

श्री धर्मजीत सिंह :- ठीक है, धन्यवाद। माननीय अध्यक्ष महोदय तो मौका देते ही हैं, वह अनुभवी हैं।

उद्योग मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- यहां इतना बोलने का मौका देते हैं, लोकसभा में सत्तारूढ़ पार्टी वाले बोलने का मौका ही नहीं दे रहे हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- सिन्हा मेडम, अभी आप एक हफ्ते से उभरती हुई नेत्री हैं। यह म्यूट के चक्कर में एक नेता विशेषाधिकार में फंस गये हैं। अभी जो विशेषाधिकार के अंडर में है, उसमें मत उल्लेख करो।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- यही सम्मान है।

श्री कवासी लखमा :- महिला का भी सम्मान नहीं करते न।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- रंजना जी, देख कैसे बोल हे।

श्री धर्मजीत सिंह :- डहरिया साहब, हमारी जितनी बहनें विधायक बैठी हैं न, उसको हमारी छोटी बहन रंजना डीपेन्द्र साहू जी ने पूरा एक्टिव कर दी हैं। वह खड़ी होती हैं तो कांव-कांव, चांव-चांव शुरू हो जाता है। यह उनकी सफलता है। इसी बहाने आप एक्टिव हैं, आपकी भी सफलता है। मैं यह कह रहा था कि मुख्यमंत्री जी से जातीय दुश्मनी किसी की नहीं है। वह हमारे भी मुख्यमंत्री हैं। एक समय में हम सब साथ में यहां बैठा करते थे। हर इंसान अपनी जिंदगी में सब काम अच्छा ही करे, ऐसा हो भी नहीं सकता। इतिहास भी इस बात का गवाह है कि हर काम अच्छा नहीं होगा। कहीं कुछ खामियां आयेंगी। उसको बताना हमारा काम है। इसको अगर आप व्यक्तिगत उसमें लेंगे तो मैं समझता हूं कि प्रतातंत्र की सही मायने में यह परिभाषा नहीं होगी। इसलिए चौबे जी से सीखिये। मैं फिर बोल रहा हूं कि सिर्फ 10 महीने बाकी हैं। आप चौबे जी गुरू जी से दीक्षा लीजिए वह हमारे गुरूजी हैं। आप लोग भी उनसे दीक्षा लेकर आगे बढ़ियेगा। अब मैं थोड़ी सी बात कह कर अपनी बात खतम करूंगा।

श्री शिवरतन शर्मा :- शिक्षा मिश्री बनने की लेना, जलेबी बनने की मत लेना।

श्री धर्मजीत सिंह :- दोनो मीठा है। माननीय सभापति जी, खिलाड़ियों का राज्य अलंकरण समारोह दो साल से नहीं हुआ है। क्यों नहीं हुआ? उनकी उम्र खत्म हो रही है। इसको तो कर दीजिये। इसमें क्या पैसा लगना है। न बजट लगना है। अलंकरण देना है। एक-एक नकली चांदी का, नकली सोने का पदक देना है। गांधी उद्यान रायपुर में है और वहां पर चौपाटी बनाई जा रही है। क्या कांसेप्ट है? आप छत्तीसगढ़ में किस तरीके से शहर बसाना चाहते हैं । कांक्रीट का जंगल बनाना चाहते हैं। सी.एम. हाऊस के पास जो गांधी उद्यान है, वहां पर लोग मार्निंग वॉक करते हैं, सिविल लाईन्स के सब लोग रहते हैं, उस एरिया में मैं भी पहले 10-15 साल था। वहां के लोग मुझसे मिले और बोले कि भैया चौपाटी मत बनवाईये। लोग पॉलिथीन फेंकेगे, पाउच फेंकेंगे, दुनियाभर की गंदगी करेंगे। सी.एम. साहब के बंगले के किनारे तो इस प्रकार का nuisance होना भी नहीं चाहिए। यह मत कहिए कि सी.एम. साहब का नया बंगला बनने वाला है। वहां शिफ्ट हो रहे हैं।

श्री अजय चंद्राकर :- जो बनवा रहे हैं, वह सी.एम. साहब के आंखों के तारे और सितारे हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- वह सितारे नहीं, चंद्रमा और सूरज रहे। मैं तो जनता की भावना से आपको अवगत करा रहा हूं कि वहां पर गांधी उद्यान में रायपुर के नागरिकों के संग बहुत बड़ा अन्याय होगा।

बड़े-बड़े शहरों में हम लोग जाते हैं। हम मसूरी गये, मैसूर गये, इलाहार बाद गये, बनारस गये, जबदलपुर गये, रायपुर गये हैं। बड़े-बड़े उद्यान थोड़ी-थोड़ी दूर में मिलते हैं। यहां थोड़ी-थोड़ी दूर में खाली कांक्रीट का जंगल है। यह मंजिल, वह मंजिल। सीमेंट के सिवाय दूसरा कोई काम ही नहीं हो रहा है। हरियाली का महत्व समझिये। कोरोना में लोग मर रहे थे, तब लोगों को ऑक्सीजन का महत्व समझ में आया। आप ऑक्सीजन जोन बना दिये, उससे पूरे शहर का भला नहीं होने वाला है, लेकिन जहां-जहां हरियाली है, उसकी हिफाजत करना भी इस सरकार का धर्म है, राजधानी है, उसकी सुरक्षा करियेगा। कानून और व्यवस्था। वह खाली स्थान का जुलूस निकाल दिया। 17 हजार पुलिस का पद खाली है। थानेदार को थाने में मर्डर कर दिया गया। अपराधी नहीं पकड़े गये। सट्टा, जुआ, गांजा, अफीम, चरस, भांग, क्या-क्या जितने किस्म का है, वह सब सहज, सुलभ है। सभापति महोदय, इस प्रदेश में लॉकडाउन के समय में भी ट्रकों-ट्रक शराबें आकर बिक रही थीं। अजय जी, आप गोली चली करके कौन सी क्लब की बात कर रहे थे?

श्री अजय चंद्राकर :- क्वींस क्लब।

श्री धर्मजीत सिंह :- क्वींस क्लब कहां है?

श्री अजय चंद्राकर :- मुख्यमंत्री जी के घर के सामने ।

श्री धर्मजीत सिंह :- अगर वहां पर क्वींस क्लब होगा तो मैं त्याग-पत्र दे दूंगा। अगर वहां पर क्वींस क्लब होगा तो मैं अभी, इसी वक्त विधानसभा से इस्तीफा दे दूंगा। चाहते नहीं, देखते नहीं, हवा में बात करते हैं। नाम कैसे चेंज हो जायेगा? नाम चेंज करने का अधिकार किसको मिला है? नाम चेंज किसने किया? कैसे किया? मैं बात बोलूंगा तो कई लोगों को चुभती है। इसलिए मैं बोल रहा हूं कि क्वींस क्लब नाम की कोई संस्था नहीं हैं।

श्री अजय चंद्राकर :- विधानसभा के साथ क्या एग्रीमेंट हुआ था?

श्री धर्मजीत सिंह :- पूछेंगे। वह बात की बात है। लेकिन आज की तारीख में क्वींस क्लब के नाम से कोई भी हॉटल, क्लब नहीं है। यह मैं बोल रहा हूं। यदि है तो आप देख कर बता दीजिये। कल बता देना।

श्री शैलेश पांडे :- आपके घर के पास में है। उसका क्या नाम था?

श्री धर्मजीत सिंह :- क्वींस का स्पेलिंग न।

श्री शैलेश पांडे :- उसका क्या नाम था?

श्री धर्मजीत सिंह :- अब उसका तो बड़ा कठिन नाम है।

सभापति महोदय :- चलिये, पांडे जी।

श्री धर्मजीत सिंह :- सर। यह बोले थे, इसलिए मैं जिक्र किया। मुझे कोई लेना-देना नहीं है कि वह क्वींस क्लब है, नहीं है, कहां है, मिट्टी में मिल गया या नदी में बह गया, उससे मेरे को मतलब नहीं है। यह शिक्षा मंत्री जी हैं। हमने आपके पहले भी शिक्षा मंत्री देखा है। इसके पहले भी कई शिक्षा मंत्री

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

देखा है। कोई हाई स्कूल, मिडिल स्कूल देता था। यह शिक्षा मंत्री पांच साल में एक भी मिडिल स्कूल तक नहीं दिये हैं। हम तारीफ करें।

श्री बृहस्पत सिंह :- भैया, लेकिन अंग्रेजी स्कूल तो दिये होंगे।

श्री धर्मजीत सिंह :- वह मुख्यमंत्री दिये हैं। उपाध्यक्ष महोदय, हम तारीफ कर दें। हम गांव में जाते हैं तो लोग हमसे मिडिल स्कूल मांगते हैं। हमको लज्जा आती है। हम कहां से मिडिल स्कूल खोलवायें, जब मिडिल स्कूल खुल ही नहीं रहा है तो हम कहां से मिडिल स्कूल खोलवायें ? आपने पंचायतकर्मियों का मानदेय बढ़ाने की घोषणा की । मैं यह एक अखबार दिखा रहा हूं, पंडरिया ब्लॉक का ग्राम पंचायत बदना । रोजगार सहायकों का मानदेय डेढ़ गुना से ज्यादा बढ़ा, 5 हजार से बढ़कर 9540 रूपये । ये लोग कल ज्ञापन देकर गये हैं । इनका बढ़ा ही नहीं है, पोस्टर टंग गया है । सरकार को इसको बारे में भी बताना चाहिए ।

माननीय सभापति महोदय, पाठ्यपुस्तक निगम के भी कुछ लोग आये थे । वहां की किताबों के कागज वगैरह, ऑर्डर वगैरह में भी भयंकर लफड़ा-घपला सब हो चुका है । पर्यटन । पर्यटन मंत्री जी से बात की । आप चतुर्गढ़ जानते हैं ? आप लोगों में से बहुत से लोग चतुर्गढ़ नहीं गये होंगे । एक पहाड़ी के ऊपर सुरम्य वादी में महिसासुर मर्दनी का बहुत आदिम युगीन मंदिर है, जो कि जीर्णशीर्ण हो गया था उसको पुरातत्व वालों ने बनाया है । सबसे उंची जगह ।

श्री बृहस्पत सिंह :- यह कहां पर है ? यह कौन से जिले में है ? यह बिलासपुर में है ?

श्री धर्मजीत सिंह :- आप आ जाईयेगा । मैं आपको राजकीय अतिथि बनाकर घुमाउंगा । आप आ जाना ।(हंसी)

श्री बृहस्पत सिंह :- मुझे राजकीय अतिथि मत बनाईये ।

श्री धर्मजीत सिंह :- बनायेंगे ।

सभापति महोदय :- चलिये, 20 मिनट हो गये हैं ।

श्री धर्मजीत सिंह :- मुझे यही तो दुख हो रहा है कि जिस रास्ते से आप जाते हैं उसी रास्ते में पाली के पास यह चतुर्गढ मंदिर है । अंबिकापुर जाते समय पाली पड़ता है न । पाली के पास चतुर्गढ़ मंदिर है । उस मंदिर में एक भी...।

श्री अरूण वोरा :- चतुर्गढ़ मंदिर न । आपके बाजू में चंद्राकर जी बैठे हैं वे इतने ध्यान से क्यों सुन रहे हैं ? वे तो वैसे ही चतुर हैं ।

श्री धर्मजीत सिंह :- वोरा जी, आप गये हैं ?

श्री अरूण वोरा :- अब जाउंगा ।

सभापति महोदय :- टोकाटाकी न करें । 20 मिनट हो गये हैं, अब समाप्त करें ।

श्री बृहस्पत सिंह :- हम लोग उसी रास्ते से जाते हैं, अब जायेंगे ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अरूण वोरा :- अब आपके साथ चलेंगे ।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप जाईयेगा । मैं वहां शैलेश को फोन करूंगा । आपके लिये जो इंतजाम बोलेंगे, खाने-पीने सबका इंतजाम रहेगा ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अजय चंद्राकर ने वहां तक की सड़क बनायी थी, पहाड़ी के नीचे तक की और पहाड़ी के ऊपर की सड़क पर्यटन ने बनायी । समझे। (व्यवधान)

श्री धर्मजीत सिंह :- हां पर्यटन ने बनाया लेकिन वह बरसात में...।

श्री अरूण वोरा :- धन्यवाद ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अजय चंद्राकर ने उसके नीचे तक की सड़क बनवायी ।

श्री धर्मजीत सिंह :- साहब, सुन तो लीजिये । मैं तो काम की बात बोल रहा हूं ।

सभापति महोदय :- माननीय भैया के भाषण के दौरान आप दस बार उठे हैं । आपको 20 मिनट हो गये हैं ।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, मुझे 10 मिनट और दे दीजिये । इसके बाद अभी इस सदन में भाषण होना नहीं है । वह चतुर्गढ़ का मंदिर का रास्ता जो कि बरसात में टूट गया तो जब वन विभाग वाले उसको बनाना चाह रहे थे तो सबसे ज्यादा पुरातत्व विभाग वालों ने उसमें रोकटोक लगायी । उनका पुरातत्व खतरे में पड़ गया, 5 रूपये है नहीं । 5 अधेला खर्च कर नहीं सकते उस विभाग का कौन साहब है, मैं नहीं जानता ? कहां उसका आफिस है, कोई नहीं जानता लेकिन वाह रे वह अधिकारी । फौरन काम बिगाड़ने के लिये वहां नोटिस देकर उसको रोकवा दिये । वह ले-देकर बना । पर्यटन विभाग ने वहां 5 लाख रूपये का एक शेड भी नहीं बनवाया है कि गरीब लोग जब उस मंदिर में जाते हैं । अभी नवरात्रि चल रही है । चतुर्गढ़ में बहुत जबरदस्त भीड़ होगी । आपका क्या है ? आपका मेरिट कुछ है ? कुछ प्राथमिकताएं हैं ? बस वही गंगरैल । वही यह, वही वह। दो चार ठोक । आप जरा दुर्ग और रायपुर से बाहर निकलिये । दुनिया और भी है । दुर्ग और रायपुर से भी ज्यादा दुनिया है उसको देखिये । यदि वहां आपने, अभी रामकुमार यादव जी कहां हैं ? वे छत्तीसगढ़ी में भाषण देते हैं । उनके यहां इनके जिले का चंद्रहासिनी मंदिर है । वहां एक भी शेड नहीं बना है । चंद्रहासिनी देवी और विंध्याचल की देवी की मूर्ति एक सरीखे है । पहाड़ी में है । नीचे महानदी बह रही है। क्या आपने वहां सोचा कि उड़ीसा से, रायगढ़ से, सारंगढ़ से, बिलासपुर और जबलपुर सब जगहों से वहां लोग दर्शन करते के लिये आते हैं । उनके खड़े होने के लिये आपने एक जगह भी नहीं बनवायी है । उसके बाद भी न पूछें, न बोलें । खुड़िया जो अंग्रेजों के जमाने का मेरे विधानसभा में सन् 1930 का राहत कार्य में बना बांध है । वहां आपने 4 सालों में 5 रूपये की एक झोपड़ी भी नहीं बनवायी है । हम न बोलें, बोलते हैं तो आपको बुरा लगता है । बोल दो तो अल्बर्ट पिंटो को गुस्सा आ जाता है। माननीय सभापति महोदय, ऐसा कैसे चलेगा ?

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

माननीय सभापति महोदय, एक वन विभाग है । इसके पहले भी हमने वन विभाग बहुत देखा है । यह इतना खतरनाक विभाग है कि इसने आजतक के लोरमी विधानसभा में अचानकमार टाईगर रिजर्व, खुड़िया रेंज, लोरमी रेंज, बफर जोन, कोर जोन, 2 डी.एफ.ओ., 3-3 आई.एफ.एस., 7-8 एस.डी.ओ., पच्चीसों रेंजर, सैकड़ों का वन अमला है । आज तक के किसी भी जनप्रतिनिधि की इच्छा के अनुरूप ग्रामवासियों की इच्छा के अनुरूप इस विभाग ने, न इस सदन के अंदर और न इस सदन के बाहर कोई काम नहीं किया । मैं कैम्पा वगैरह की बात नहीं करता । लेकिन हम लोगों के कहने से भी तो कुछ करना चाहिए। आपने क्या समझ लिया कि आपके काम न करने से, हमारा नुकसान करके आप फायदे में रहेंगे, आप धोखे में हैं । हमको तो जाकर बताना है कि हमने सरकार से मांग की और आपने काम नहीं किया । चौबे जी जब आप कोई चीज देते हैं तो जाकर यह भी बताते हैं कि आपने दिया । हमारे राजस्व मंत्री ने तहसील दिया, आपने एस.डी.ओ. ऑफिस दिया । उच्च शिक्षा मंत्री ने बिल्डिंग के लिए पैसा दिया, मुख्यमंत्री जी और आपने कॉलेज खोला । शान से बताते हैं, बार-बार बताते हैं, खुले आम बताते हैं कि आपने हमें दिया, दिया तो आपने, तो बताएंगे । लेकिन जिसने कुछ नहीं दिया उसके बारे में जबरदस्ती क्यों बात करें ?

सभापति महोदय :- माननीय समाप्त करें ।

श्री धर्मजीत सिंह :- एक मिनट सर । हम तो कई मंत्रियों के बंगले भी नहीं गए हैं । चौबे जी, "हर किसी के सामने फैला नहीं, हर किसी के सामने फैला नहीं, इसलिए दामन मेरा मैला नहीं ।" मैं कोशिश करता हूं कि जनता की बात कहूं । सभापति महोदय, कर्मचारी हड़ताल पर हैं । मैं कर्मचारियों की लिस्ट पढ़ूंगा तो देर हो जाएगी इसलिए यही कहना चाहता हूं कि वे हड़ताल पर हैं, उनको आप ज़रा ध्यान दीजिए । सभापति महोदय, 70 साल की एक आदिवासी महिला को रेंज आफिसर ने मारा । मैंने विधान सभा में उसका प्रश्न लगाया । इसी विधान सभा में उसको निलंबित किया गया और वह इतना शक्तिशाली था कि आदिवासी महिला को मारने के कारण निलंबित होने के एक हफ्ते के अंदर वह रिस्टेट हो गया । वह कांकेर में है और वहां के एक नेता की ताबेदारी कर रहा है । उनके घर का राशन पानी लाने का काम कर रहा है । ऐसा मत करिए, आदिवासी महिला का अपमान करने वाले को सज़ा देने के बजाय आप प्रोटेक्शन दे रहे हैं ।

माननीय सभापति महोदय, मुख्यमंत्री सड़क योजना, बहुत अच्छी योजना है । मैंने स्वामी आत्मानंद मुख्यमंत्री सड़क योजना की तारीफ की है । उसमें एक साल डेढ़ सौ करोड़ रूपया था, आपने 500 करोड़ रूपए एक ही साल में मंजूरी कर दिया । तीन साल का पैसा तो उसमें चला गया , मैं तो मुख्यमंत्री जी से आग्रह करता हूं कि इसमें पांच-सात सौ करोड़ बढ़ा कर रखिए । आज विनियोग में बोलिए, हर गांव में यह पैसा पहुंचेगा । बड़े बड़े प्रोजेक्ट के चक्कर में रहोगे तो यह वित्त विभाग वाले

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

और विभाग के लोग जो डी.पी.आर. बनाते हैं और क्या-क्या बनाते हैं, उसके चक्कर में चुनाव आचार संहिता लग जाएगी और आप लोग केवल देख देखकर खुश रहना ।

सभापति महोदय, रेत माफिया हावी हैं । खुलेआम बिलासपुर जिले में और जहां जहां रेत की उपलब्धता है, धमतरी हो, रायपुर हो । रेत माफिया खुलेआम राजनीतिक संरक्षण में चोरी कर रहे हैं ।

श्री शिवरतन शर्मा :- धर्मजीत भइया, रेत माफिया की बात कर रहे हो तो माननीय मुख्यमंत्री जी के पास ही खनिज विभाग है । अब वह यू.पी.बॉर्डर का बलरामपुर का रेत खदान कौन चला रहा है ?

श्री धर्मजीत सिंह :- अरे क्या मालूम कौन चला रहा है, हम तो रेत के बारे में जानते नहीं ।

श्री शिवरतन शर्मा :- या अभी भी सेवा में चल रही है वह । राजा साहब बता देंगे । अभी भी सेवा में चल रही है या बंद हो गई ।

श्री धर्मजीत सिंह :- अधिकारी, जनप्रतिनिधियों का बहुत अपमान करते हैं । अपमान या तो वे अपने ईगो में करते हैं या सत्ता में बैठे हुए लोगों के इशारे पर करते हैं । सभापति महोदय, कई कलेक्टर तो अपने ऑफिस में नहीं जाते, अपने घर से कलेक्टरी करते हैं । कोई कार्यक्रम होता है तो जनप्रतिनिधि, जो जनता द्वारा निर्वाचित हैं, जिनके पास निर्वाचन आयोग का सर्टीफिकेट है उनको बुलाने में कोताही बरतते हैं । ऐसा क्यों ? यह संसार परिवर्तनशील है, कभी गाड़ी नाव पर तो कभी नाव गाड़ी पर आ जाती है । यहां पर लोगों ने यह देखा हुआ है । पांडे जी को, कलेक्टर तो बाद में पहले उन्हीं की पार्टी के लोग रोज सवेरे शाम बेइज्जती करते रहते हैं । निर्वाचित एम.एल.ए. है, एम.एल.ए., एम.एल.ए. है । अधिकारी नहीं करते लेकिन उसके बाद भी वह हीरो बनके निकल रहा है

समय :

4:00 बजे

माननीय सभापति जी, हाईलाईट मास्क, बेहद पापुलर स्कीम है। उसको लगवा दीजिए, उसमें डी.पी.आर वगैरह थोड़ी लगता है, आपका विभाग बढ़िया काम कर रहा है, लगवा दीजिए, सबको 50-50, 40-40 दे दीजिए। आप जितना हो सके दे दीजिए। पी.एम.जी.एस.वाई. की रोड की मरम्मत के लिए पैसा दे दीजिए। वह हो जाएगा, लोगों की बहुत सी इज्जत बच जाएगी। मुख्यमंत्री सहायता राशि को बढ़ाईए, गरीब लोग, बीमार लोग, कई बच्चे पढ़े नहीं रहते हैं, उनको पढ़ाई के लिए फीस नहीं दे पाते हैं, वे आपसे लेते हैं, आप देते भी हैं, कई लोगों की जिंदगी बचाए हैं। मैं उसका चश्मदीद गवाह हूं। मैं तो चाहता हूं कि यह मद बढ़े।

माननीय सभापति महोदय, मै अब अपनी बात समाप्त कर रहा हूं। आपने उद्योगों की जमीन को भी फ्री होल्ड किया है पर एग्रोबेस्ड इंटस्ट्री को आप फ्री होल्ड नहीं कर रहे हैं। इसको जरा विचार कर लीजिएगा। हमारे क्षेत्र में एक लालपुर थाना क्षेत्र है, वहां पर आस-पास 50 गांव के अनुसूचित बाहुल्य गांव है, वहां के बच्चों को कॉलेज पढ़ने के लिए कोई व्यवस्था नहीं है। लालपुर में बाबा गुरू घासीदास जी

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

के मेले में आप हर साल जाते हैं, सब मुख्यमंत्री जाते हैं। आप वहां एक तोहफा दे दीजिए, हमारे सतनामी समाज के भाईयों-बहनों को एक तोहफा दीजिए। आप वहां पर एक महाविद्यालय की स्थापना कर सकेंगे तो उस वर्ग के उत्थान का काम आएगा। बाबा अंबेडकर ने कहा था, शिक्षा से बड़ा हथियार इस दुनिया में कोई नहीं है। अगर हम अपने लोगों को शिक्षित करेंगे तो वह अपने हक और हुकूक की आवाज उठायेंगे। जब वे पढ़ेंगे लिखेंगे तभी सुदृढ़ होंगे। जब वे पढ़ लिख लेंगे तभी इस देश को आगे बढ़ाने में अपनी भागीदारी निभायेंगे। इसलिए मैं उनके हित की बात कर रहा हूं, समाज के हित के लिए, आस-पास के अन्य समाजों के बच्चों के पढ़ने के लिए वहां एक कॉलेज खोजना जरूरी है। मुख्यमंत्री जी, आपने मेरे कहने से एग्रीकल्चर कॉलेज दिया था, मैं आपसे विनम्र प्रार्थना करता हूं कि आप एक बार अपने इस बजट कार्यकाल में लोरमी में कॉलेज की घोषणा जरूर करियेगा और मैं दो छोटी-छोटी सड़कों की भी मांग कर रहा हूं। डूमरहा एक सतनामी बाहुल्य गांव है, वहां 7 किलोमीटर की मेघापारा तक की सड़क बना दीजिए और लोरमी शहर के मुख्य मार्ग से गुरूद्वारा में एक किलोमीटर की सड़क का निर्माण करेंगे तो अच्छा लगेगा। माननीय चौबे जी, चौबे जी कहां गये, उनके बगैर मजा नहीं आता।

सभापति महोदय :- चलिए समाप्त करिए।

श्री धर्मजीत सिंह :- सर मैं समापन ही कर रहा हूं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- धर्म भैया, महराजा साहब हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- डहरिया जी, मैं आपको भी सुना रहा हूं। आप भी हमको पैसा देते हैं, आपके लिए बहुत सम्मान है। आप तो माई डियर ब्रदर हो। आपके लिए कोई दिक्कत नहीं है। अभी जा भी रहे हैं, आपसे लेते रहते हैं। आपसे थोड़ा पुराना रिश्ता है, हक ज्यादा है। कई लोग हक से भी वंचित कर देते हैं। हमारे राजा साहब बहुत आदरणीय है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- सभापति जी, हमारे पुराने साथी हैं, हमारे भाई हैं, हम उनका हक कभी कम नहीं होने देते। हक से ज्यादा भी कर देते हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- सभापति महोदय, मैं दो लकीर से अपनी बात समाप्त करूंगा।

श्रीमती अनिता योगेन्द्र शर्मा :- बहुत उदार मंत्री हैं। अभी मेरे यहां बहुत सारा दिए हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- कई मंत्री को तो कुछ पावर ही नहीं है। कुछ कर ही नहीं पा रहे हैं, उनसे क्या बात करेंगे।

श्री शैलेश पाण्डे :- एक मिनट रूकिए ना। मैं आपकी काम की बात कर रहा हूं। मैं आपके क्षेत्र में गया था, आप मुझे क्रिकेट मैच में मुख्य अतिथि बनाकर ले गये थे, वह जो ग्राऊंड है, जहां क्रिकेट मैच हुआ था, वह कौन सा ग्राऊंड है।

श्री धर्मजीत सिंह :- हाईस्कूल का मैदान है।

श्री शैलेश पाण्डे :- माननीय सभापति महोदय, वह इतना अच्छा ग्राऊंड है, वहां पर रात में कम

से कम 10 हजार लोग मैच देखने वाले लोग थे, मैं रात में गया था। मैं माननीय धर्मजीत भैया के लिए लोरमी में वहां पर एक ग्राऊंड की मांग अपनी सरकार से चाहता हूं, ताकि उस क्षेत्र में खेल का मैदान दे, उसका स्टेडियम बना सकें।

श्री धर्मजीत सिंह :- डहरिया जी जा रहे हैं दे देंगे। आपके सपोर्ट के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं आखिरी बात कहकर अपनी बात समाप्त करूंगा।

"दर्द ए दिल अपना सुनाकर मुझे क्या लेना है।
उनको एहसास दिलाकर मुझे क्या लेना है।
एहतेमात के खातिर किए हैं मैंने
वरना वज्म अपनी सजाकर मुझे क्या लेना है।।"

मैं तो आपकी तारीफ में इसलिए बोला, आपको आईना इसलिए दिखाया, आपसे हाथ इसलिए जोड़ा, आपसे निवेदन इसलिए किया, क्योंकि चुनाव जीतने के बाद मैंने पत्रकारों से कहा था, मुझे अगर लोरमी की जनता के लिए कोटवार से ले करके, मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री तक पैर भी छूना पड़ेगा तो मैं छूऊंगा, क्योंकि मेरी इच्छा, इच्छा और इच्छा सिर्फ यह है कि आप लोरमी की गरीब भाईयों और बहनों के लिए कुछ कर दें तो बड़ी कृपा होगी। धन्यवाद।

श्री आशीष कुमार छाबड़ा (बेमेतरा) :- माननीय सभापति महोदय, मैं माननीय मुख्यमंत्री के द्वारा प्रस्तुत विनियोग विधेयक के समर्थन में अपनी बात रखने के लिए खड़ा हुआ हूं। माननीय मुख्यमंत्री जी अभी इस सदन में नहीं हैं, लेकिन माननीय मुख्यमंत्री जी का छत्तीसगढ़ की इस धरती के लिए जो प्रेम, ललक, और छत्तीसगढ़िया संस्कृति का भाव है और चूंकि आदरणीय धर्मजीत भैया ने भी एक कविता के माध्यम से अपने भाषण का समापन किया तो मैं भी हमारे बेमेतरा के सुभाष गोविंद पोल जी के द्वारा छत्तीसगढ़ के लिए लिखी गई एक कविता 'पंचामृत' को माननीय मुख्यमंत्री जी को समर्पित करते हुए अपनी बात की शुरूआत करना चाहता हूं।

मेरी अभिलाषा छत्तीसगढ़, मेरी परिभाषा छत्तीसगढ़।
जीवन की आशा छत्तीसगढ़, सांसों की भाषा छत्तीसगढ़।
मन-मंदिर में भी श्रद्धा के दीपक जलाता छत्तीसगढ़।
रग-रग में बहता छत्तीसगढ़, प्राणों में पलता छत्तीसगढ़।
खुशियों के नम में पूनम का चंदा कहलाता छत्तीसगढ़।
निम्नता के गहन अंधरों में सूरज बन जाता छत्तीसगढ़।
सुख-दु:ख हो चाहे हो अभाव, सबको अपनाता छत्तीसगढ़।
मेरी जननी की अंचल सा मुझको दुलारता छत्तीसगढ़।
माता की ममता छत्तीसगढ़, वीरों की क्षमता छत्तीसगढ़।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

माया की भूल-भुलइया में जोगी सा रमता छत्तीसगढ़।

इसके आगे की लाइन मुख्यमंत्री जी के लिए समर्पित करता हूं।

क्या लेकर जन्म दुबारा फिर आना चाहोगे छत्तीसगढ़।

मुझसे जो कोई पूछे तो हर बार कहूंगा छत्तीसगढ़।

हर बार कहूंगा छत्तीसगढ़, छत्तीसगढ़। (मेजों की थपथपाहट)

यह कविता मैं माननीय मंख्यमंत्री जी का छत्तीसगढ़ के प्रति जो प्रेम है, जो छत्तीसगढ़ की माटी के प्रति उनका लगाव है, उसके लिए कहा है। उन्होंने वर्ष 2018 में जब छत्तीसगढ़ की सरकार बनी, उससे पहले हमारे माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी हमारे प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष हुआ करते थे और महाराज जी उस समय नेता प्रतिपक्ष हुआ करते थे। प्रदेश कांग्रेस कमेटी का अध्यक्ष होने के नाते लगातार उन्होंने प्रदेश का दौरा किया और प्रदेश के हर वर्ग की लड़ाई लड़ी। मैंने अपने बजट की शुरूआत में कठिया के रहने वाले एक किसान के नाम का भी उल्लेख किया था। उस समय किसान के सिर में यदि मात्र 70 हजार रूपये का कर्जा हो जाता था और यदि उस 70 हजार रूपये के कर्जे में दबकर किसान आत्महत्या कर ले तो मैं समझता हूं कि छत्तीसगढ़ की आत्मा झकझोर जाती है। उस समय छत्तीसगढ़ के प्रत्येक किसानों का दर्द महसूस हुआ। वर्ष 2018 में माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी के नेतृत्व में कांग्रेस की सरकार बनी और पहले 15 साल तक जब भारतीय जनता पार्टी जनता के सामने अपना घोषणा पत्र प्रस्तुत करती थी तो उस समय लोगों का विश्वास इनके घोषणा पत्र से उठ चुका था क्योंकि 15 साल में 3 चुनाव हुए और उन 3 चुनावों में जनता ने भारतीय जनता पार्टी के 15 साल के घोषणा पत्र को देखा। पूरे प्रदेश की जनता ने अपने आपको ठगा हुआ महसूस किया। उन्होंने इनके घोषणा पत्र के लुभावने वायदों में आकर लगातार 15 साल तक प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी को काम करने का अवसर दिया। उसके बाद कांग्रेस ने जब अपने घोषणा पत्र में एक बात कही कि छत्तीसगढ़ में जब कांग्रेस की सरकार बनेगी तो सरकार बनने के बाद हम किसानों का कर्जा माफ करेंगे। हमारी छत्तीसगढ़ की माटी में बहुत दम है। यहां के किसान खून-पसीन सींच कर अपनी फसल को उगाते हैं और उनको यह विश्वास रहता है कि हमको हमारी फसल का उचित दाम सरकार के माध्यम मिलेगा। किसानों का विश्वास तब जागा और किसानों का हमारे घोषणा पत्र के प्रति भरोसा तब जागा, जब हमारी सरकार बनने के बाद प्रदेश के इतिहास में पहली बार हमने 17 लाख 96 हजार किसानों का 8 लाख 7 हजार 744 करोड़ रूपये का कर्जा माफ करने का काम किया। हम लोगों ने इसकी शुरूआत की। हम लोगों ने किसानों का कर्जा माफ किया, जब किसानों का कर्ज माफ हुआ तो किसानों ने अच्छे मन से खेती-किसानी के प्रति एक नई शुरूआत की । उनका यह विश्वास जागा कि प्रदेश में पहली बार किसानों की सरकार बनी है और प्रदेश में पहली बार किसान का बेटा मुख्यमंत्री बना है । पहले उन्होंने देखा कि 15 साल प्रदेश को एक डॉक्टर ने चलाया, उससे पहले तीन साल प्रदेश को एक आई.ए.एस. अधिकारी ने

चलाया । पहली बार किसानों का विश्वास जागा कि अब कांग्रेस की सरकार आई है, किसान का बेटा मुख्यमंत्री बना है । अब कम से कम किसानों को कर्ज से दबकर आत्महत्या करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी । यह विश्वास जगाने का काम माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी ने किया है ।

माननीय सभापति महोदय, मैं आपके सामने कुछ आंकड़े रखना चाहता हूं । जब 15 साल भारतीय जनता पार्टी की सरकार थी तो 2017 में आखिरी खरीफ फसल के समय में 12 लाख किसानों से 57 लाख मीट्रिक टन धान खरीदा गया था । जब 2018 में कांग्रेस की सरकार आई और आज जब हम लोगों ने 2022 में धान की खरीदी की तो यह बताते हुए हम सबको संतोष हो रहा है कि 2022 में 23 लाख, 42 हजार किसानों से हमने 107 लाख मीट्रिक टन धान की खरीदी की । हम लोगों ने 4 साल में धान के उत्पादन को दोगुना किया । ये आंकड़े इस बात के उदाहरण हैं, यह इस बात को दर्शाता है कि खेती-किसानी के प्रति लोगों का विश्वास बढ़ा है, लोगों का उत्साह बढ़ा है । बीच में लोग खेती-किसानी से विमुख हो रहे थे, बीच में लोगों का पलायन गांव से शहर की ओर बढ़ा था क्योंकि खेती-किसानी में आमदनी नहीं बची थी तो लोगों को ऐसा लगता था कि अब हम शहर जायें, कहीं नौकरी करें, किसी की दुकान में काम करें, कम से कम हमारा घर तो चले, लेकिन सरकार बनने के बाद मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी ने किसानों के लिए नीति और योजनाएं बनाईं, उससे किसानों का विश्वास जागा है, ये आंकड़े इस बात को प्रदर्शित करते हैं । हम लोगों ने धान खरीदी केन्द्रों को बढ़ाया है। मैं दावे के साथ बोल सकता हूं । अगर आप बोलेंगे तो मैं आंकड़ों को पटल पर रखने तो तैयार हूं । अगर 15 साल और 4 साल की तुलना में करेंगे तो माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी के नेतृत्व में हमारे 4 साल की कांग्रेस की सरकार ने दोगुने से ज्यादा धान खरीदी केन्द्र खोला है । हम लोग किसानों को सुविधाएं देना चाहते हैं, उनकी सुविधाएं बढ़ाना चाहते हैं । हम लोगों ने नई सोसायटियों का गठन किया, हम लोगों ने प्राथमिक धान खरीदी केन्द्रों की शुरूआत की । साथ ही साथ हम लोग किसान कुटीर का निर्माण लगभग सभी सोसायटियों में करने जा रहे हैं । पहले यह देखने को मिलता था कि जब किसान भाई अपना धान बेचने जाता था तो रात भर उसको धान की रखवाली करनी पड़ती थी, टोकन समय में नहीं कट पाता था । इस साल हमारी सरकार ने ऑनलाईन टोकन की भी शुरूआत की है । निश्चित रूप से ऑनलाईन टोकन के माध्यम से किसानों को सुविधा मिली है । हम सोसायटियों में किसानों की सुविधाएं लगातार बढ़ा रहे हैं, उससे किसानों का विश्वास इस सरकार के प्रति जागा है । हम लोग सभी सोसायटी में किसान कुटीर का निर्माण करने जा रहे हैं, जिसमें किसानों को बैठने के लिए छत की व्यवस्था होगी, चाय-पानी की व्यवस्था होगी । खेती किसानी के प्रति लोगों को स्वावलंबन बनाने का काम हमारी सरकार ने किया है ।

माननीय सभापति महोदय, उससे हटकर मैं भूमिहीन खेतिहर किसान न्याय योजना के बारे में बताना चाहता हूं । यह कितनी अच्छी योजना है कि कोई मजदूर जिसके पास एक डिसमिल भी भूमि न

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

हो, जो दूसरे के खेत में काम करने जाये, ऐसे व्यक्तियों को भी, ऐसे मजदूरों को भी हमारी सरकार ने चिन्ता की । पूरे देश में अगर किसी ने चिन्ता की है तो छत्तीसगढ़ सरकार उसका उदाहरण बना है । माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी की सरकार ने उनके लिए भी योजना बनाई है। हमने बोला नहीं है, हमने 7 हजार रूपए प्रतिवर्ष देने की शुरूआत की है । 7 हजार रूपए प्रतिवर्ष हम उनके खाते में सीधा डालने जा रहे हैं । मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद देना चाहता हूं कि इस साल नगर पंचायतों में भी आपने भूमिहीन खेतिहर किसान न्याय योजना की शुरूआत की है । नगर पंचायत के जो भी हमारे मजदूर हैं, उनको भी आने वाले समय में इस योजना का लाभ मिलेगा । चूंकि मुख्यमंत्री जी यहां नहीं हैं, मैं एक लाईन में अपनी बात रखना चाहूंगा । कुछ ऐसे नगरीय क्षेत्र हैं, नगर पालिका भी हैं, जिसके बहुत सारे वार्ड ग्रामीण अंचल में आते हैं। बहुत सारे ऐसे वार्ड हैं, जहां भूमिहीन खेतिहर मजदूर रहते हैं । अगर ऐसे नगर पालिकाओं को भी हम उसमें जोड़ें तो निश्चित रूप से आने वाले समय में उस योजना का लाभ उनको भी मिलेगा, लेकिन नगर पंचायतों को एक अच्छी शुरूआत इस वर्ष मिली है । निश्चित रूप से आने वाले समय में अगर इस साल नहीं हो पाएगा ता अगली बार उसे शामिल करने की कृपा करेंगे ।

सभापति महोदय :- चलिए, समाप्त करिए । आपको बोलते हुए 10 मिनट हो गए हैं ।

श्री आशीष कुमार छाबड़ा :- माननीय सभापति महोदय, मैं तो अभी बोलना शुरू किया हूं। नया सदस्य हूं, आपका सरंक्षण चाहिए।

माननीय सभापति महोदय, राजीव गांधी युवा मितान क्लब, हम लोगों ने एक अच्छी योजना की शुरूआत की है। ग्रामीण अंचल के जो युवा साथी हैं, उन पर भरोसा जताने का काम मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी ने किया है। गांव में बहुत सारी संस्कृति के क्षेत्र में हो या खेल के क्षेत्र में हो, बहुत सारी योजनाओं का आयोजन उन युवा साथियों के माध्यम से हो सके, इस उदेद्श्य के साथ युवा मितान क्लब का गठन किया है। निश्चित रूप से उसका लाभ युवा साथी ले रहे हैं। युवा मितान क्लब के माध्यम से युवाओं की उर्जा का सदुपयोग, उर्जा का अच्छा उपयोग हो रहा है। जन जागरण के लिए युवा क्लब एक ऐसा उदाहरण बना है, जो अपने ग्रामीण क्षेत्रों में जनजागरण का काम कर रहे हैं। सरकार की योजनाओं को अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने के काम के लिए हम लोगों ने उनके ऊपर जिम्मेदारी डाली है। हम लोगों ने उन पर भरोसा किया है, उस भरोसे पर खरा उतरने का काम हमारे प्रदेश के युवाओं ने किया है। लेकिन पहले 15 साल तो हमारे युवाओं पर भरोसा नहीं था। इन्होंने युवाओं के लिए कोई योजना नहीं बनाई।

माननीय सभापति महोदय, इस वर्ष शिक्षित बेरोजगार युवाओं को भत्ता देने का भी काम हमारी सरकार ने माननीय मुख्यमंत्री जी ने इस बजट में प्रावधान रखकर किया है। जिसमें 12वीं पास 18 से 25 वर्ष के हमारे जो युवा हैं, जिनके परिवार की वार्षिक आय 2 लाख 50 हजार रूपये से कम होगी, उनको अधिकतम 2 वर्षों तक 2500 रूपये प्रतिमाह हमारी सरकार बेरोजगारी भत्ता देने जा रही है।

उसके लिए भी 250 करोड़ रूपये का नवीन मद में प्रावधान रखा है।

समय :
4.17 बजे **(उपाध्यक्ष महोदय (श्री संतराम नेताम) पीठासीन हुए)**

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, योजना की बात होती है, छत्तीसगढ़ माडल की बात होती है। आज छत्तीसगढ़ माडल को पूरा देश देख रहा है, छत्तीसगढ़ माडल की बहुत सारी ऐसी योजनाएं हैं, उदाहरण के रूप में हम लोगों ने प्रस्तुत किया है। देश के विभिन्न प्रदेशों ने उन योजनाओं को अपने प्रदेश में उतारने का काम किया है। हम लोगों ने किसानों को अवसर दिया, हम लोगों ने युवाओं को अवसर दिया है, हम लोगों ने महिलाओं को अवसर दिया। हमारी सरकार ने महिलाओं के लिए बहुत सारी योजना बनाई है।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, समाप्त करें। चलिये, एक मिनट में अपनी बात समाप्त करें।

श्री आशीष कुमार छाबड़ा :- एक मिनट में कुछ नहीं होता, 2-4 मिनट दे दीजिये। महिलाओं को स्वावलम्बी बनाने के लिए हम लोगों ने नरवा, गुरूवा, घुरवा, बाडी, जो हमारी सरकार का ड्रीम प्रोजेक्ट है, गांधी जी का मानना था कि भारत देश में स्वराज लाने के लिए जब तक हम ग्रामीण क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को मजबूत नहीं करेंगे, जब तक ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं के हाथ में रोजगार नहीं होगा, हम जब तक महिलाओं को स्वावलम्बी नहीं बनायेंगे, तब तक स्वराज की परिकल्पना नहीं कर सकते हैं। महात्मा गांधी जी की उसी स्वराज की परिकल्पना को साकार करने का काम माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी की सरकार ने किया है। हम लोग गौठान के माध्यम से एस.एस.बी. महिलाओं को जोड़ा। उन्होंने बहुत सारे उत्पादन को उत्पादित किया। हम लोगों ने उसको बेचने के लिए प्रत्येक जिला मुख्यालय में सी-मार्ट बनवाया है। उस सी-मार्ट के माध्यम से उनको एक अच्छा बाजार मिला है। पहले महिलाओं को विश्वास नहीं था कि अगर हम किसी चीज का उत्पादन कर भी लेते हैं, लेकिन बेचने के लिए एक उचित स्थान नहीं मिलता था, जगह नहीं मिलता था, तो उनके लिए प्रत्येक जिला मुख्यालय में सी-मार्ट खोलने का काम किया है। मैं समझता हूं कि पूरे देश में हमारा पहला प्रदेश छत्तीसगढ़ बना होगा, जहां प्रत्येक जिला मुख्यालय में गढ़कलेवा खोला गया है। गढ़कलेवा से भी महिलाओं को रोजगार मिला है। वहां छत्तीसगढ़िया व्यंजन बनाने का काम महिला समूह के माध्यम से किया जा रहा है।

उपाध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ की संस्कृति के साथ-साथ छत्तीसगढ़ का जो कलेवा है, उसका भी सम्मान बढ़ाने का काम हमारी सरकार माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने किया है। छत्तीसगढ़िया संस्कृति की पूरे देश में एक अलग पहचान है। बीच में सबको चिंता हो गई थी।

उपाध्यक्ष महोदय :- आशीष भाई, आपको ज्यादा समय मिला है। कृपया समाप्त करें। बहुत वक्ता हैं। एकाध मिनट में अपनी बात समाप्त करें।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री आशीष कुमार छाबड़ा :- माननीय सभापति महोदय, मैं एकाध-दो मांग रख लेता हूं। वैसे बोलना बहुत कुछ था। वैसे माननीय मुख्यमंत्री जी सदन में नहीं हैं, मैंने उनसे व्यक्तिगत रूप से भी निवेदन किया था। पूरे प्रदेश में 4 मेडिकल कालेज खोलने जा रहे हैं। यह एक बड़ा कदम है। मेरी एक मांग है। क्योंकि बेमेतरा मेरा विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र है। बेमेतरा नवगठित जिला है। बेमेतरा जिला को इस कांग्रेस सरकार से बहुत अपेक्षाएं हैं। अपेक्षा इसलिए है क्योंकि विश्वास बढ़ा है। हम लोगों ने 4 साल में करके दिखाया है। बेमेतरा जिला में ऐसी मूलभूत सुविधाओं की जरूरत थीं, जो पहले जिला के अनुरूप जिलेवासियों को नहीं मिल पा रही थी, सरकार बनने के बाद लगातार हम लोगों ने सुविधा देने का काम किया है । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हमारे बेमेतरा जिले के निवासियों की मांग है कि बेमेतरा में एक मेडिकल कॉलेज खुले । मैं माननीय मुख्यमंत्री जी से बहुत विनम्रतापूर्वक निवेदन करना चाहता हूँ और माननीय मुख्यमंत्री जी बहुत उदार भाव के हैं, मैं सदन की जानकारी में लाना चाहूंगा कि हमारे बहुत से साथी नहीं जानते होंगे कि छत्तीसगढ़ हमारे प्रभु श्री रामचन्द्र जी का ननिहाल है,वैसे ही मेरा बेमेतरा विधान सभा क्षेत्र माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी का ननिहाल है। हमारे बेमेतरा विधान सभा के टकसीवा गांव है, उनसे हम लोगों की उम्मीद भी है, हम लोगों को भरोसा भी है, विश्वास भी है कि ...।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, श्री पुन्नूलाल मोहले साहब ।

श्री आशीष कुमार छाबड़ा :- माननीय उपाध्यक्ष जी, उन्होंने एक कविता से समापन किया है, मैं भी एक कविता बोल देता हूँ -

उपाध्यक्ष महोदय :- बोल दीजिए ।

श्री आशीष कुमार छाबड़ा :-

लहजे में बद्ज़ुबानी, चेहरे में नकाब लिये फिरते हैं,
वह जिनके खुद के बिगड़े हैं बही खाते,
वह हमारा हिसाब लिये फिरते हैं ।

उपाध्यक्ष महोदय, 15 साल तक आपकी बही खाते क्या थे, उसको प्रदेश की जनता ने देखा है । उसका यह परिणाम मिला है कि आप यहां तक सिमट चुके हो । आने वाले समय में भारतीय जनता पार्टी की सरकार 5 सीटें भी नहीं जीत पायेगी। मैं यह दावे के साथ बोल सकता हूँ । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हमारे को हिसाब देने की जरूरत नहीं है, हम प्रदेश की जनता को हिसाब देंगे । प्रदेश की जनता हमारे कामकाज पर मुहर लगायेगी । आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे नौजवान साथी ने जो कहा है, इनके लिये एक लाईन बोलना चाहूंगा । इनके ऊपर यह बात आती है ।

वह जो रास्ते थे वफा के थे और ये जो मंजिलें हैं सजा की
इनका हमसफर कोई और था इनका हमनशीं कोई और है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

उपाध्यक्ष महोदय :- पुन्नूलाल मोहले जी के लिये बोल रहे हैं कि उनके लिये बोल रहे हैं । आपके लिये है दादा ।

श्री आशीष कुमार छाबड़ा :- हम लोग इनका बड़ा सम्मा‍न करते हैं । ये हम सब को ट्रेनिंग भी देते हैं ।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- पुन्नूलाल जी जब कविता शुरू कर देंगे तो आपका, भाई साहब का, धर्मजीत सिंह जी का, सबका कविता बंद हो जायेगा ।

उपाध्यक्ष महोदय :- अभी शकुंतला है कि नहीं है ? लेकिन शकुंतला नहीं आई है । आपका भाषण बढ़िया सुनते हैं ।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्रा साहू :- कविता शुरू करेंगे तो बबीता वगैरह सब आ जायेंगे ।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, आप कविता से शुरूआात करें ।

श्री पुन्नूलाल मोहले (मुंगेली) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं बजट का विरोधस करते हुये ...।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- तैं बंद-बूझ, बंद-बूझ झन करबे । (हंसी) माईक ला बार-बार टच मत करबे, बाकी सब करबे ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- मेरे तरफ दिमाग नहीं रहता है, माईके के तरफ रहता है। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं विनियोग बजट का विरोध करते हुये अपनी मांग रखना चाहूंगा ।

माननीय मुख्य मंत्री जी लाये हैं बजट विनियोग
यह ऐसा है संयोग, लग चुका है कांग्रेस को रोग और विनियोग
और सोच अपने दिमाग को नोच,

उपाध्यक्ष महोदय :- अब आयेंगे बबीता और नोंक ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- कई है बबीता हमको लगती है जैसे बहन है सीता
सुने भागवत गीता, किसी घर को मत करे रिता
यह है बबीता और मैं कह रहा हूँ कविता (मेजों की थपथपाहट)

उपाध्यक्ष महोदय :- चलें अब शुरूआत करें ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, सरकार को पांच वर्ष होने जा रहे हैं या साढ़े चार वर्ष होने जा रहे हैं, शराबबंदी करने की बात किये थे । शराबबंदी यह करे या न करे, विषय नहीं है । शराबबंदी नहीं होने से समाज में इसका क्या प्रभाव पड़ रहा है, कितने लोग एक्सीडेंट हो गये हैं, अपने भाषण में सभी लोगों ने कहा है और सभी लोग जानते हैं कि यह रोजमर्रे की बात है । कितने लोगों की मृत्यु हो गयी, कितने परिवार बरबाद हो गये हैं, ऐसे परिवार को बचाने के लिये विनियोग में माननीय मुख्यमंत्री जी क्या योजना बनायेंगे, यह अपने भाषण में कहेंगे तो अच्छा रहेगा । उपाध्यक्ष महोदय, बेरोजगारों के संबंध में आपने 2.5 लाख आय का बंधन रखा है । बहुत से ऐसे परिवार हैं, जहां

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

चार-पांच भाई हैं, परिवार बड़ा है, परिवार टूट चुके हैं, बंधन को उसी सीमा तक न रखें । एक परिवार है जो नौकरी पेशा कर रहे हैं, वह अलग हो गये हैं, बाकी लोग छोटे हैं, गरीब हैं, ऐसे लोगों पर विचार करें, ऐसी में आशा करता हूँ । अगर मैं कहूं दिव्यांग हैं, यहां 28 हजार के लगभग दिव्यांग मितान है, मितान का मानदेय कितना है, 4 हजार रूपये और भत्ता मिलता है 1000 रूपया, कुल मिलाकर 5000 रूपया । वह क्या काम करते हैं, पैर से दिव्यांग है, हाथ से दिव्यांग है , कई लोग अपने शरीर से दिव्यांग है, ऐसे लोग क्या काम करते हैं। यह लोग जॉब कार्ड बनाते हैं, सहयोग करते हैं, ऋण दिलाते हैं और बीमारियों के लिये अस्पताल तक ले जाते हैं। उनके लिये यह मानदेय नगण्य है। ऐसी चीजों के लिये सरकार कार्यवाही करें। आप विनियोग बजट लाये हैं, आपका विनियोग बजट तो पास होगा। लेकिन इनके बारे में सोचिए। माननीय मुख्यमंत्री जी इनके ऊपर ध्यान दें, यह आपको आशीर्वाद देंगे। ये ऐसे जो लोग हैं, जो उस समय अपंगता कहते थे। आज वह दिव्यांग कहते हैं, एक अच्छे शब्द का उपयोग किया गया है। सरकार इनके लिये विचार करें। इनको कम से कम कलेक्टर दर में मानदेय दें।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, शिक्षा विभाग में जो साफ-सफाई का काम करते हैं, वह 02 हजार रूपये वेतन में काम करते हैं। वह क्या काम करते हैं, वह संडास धोने का काम करते हैं। वह किस तरह की शर्मनाक जिंदगी जी रहे हैं। इधर सरकार कहती है कि हम सफाई अभियान, स्वच्छता अभियान को ध्यान दे रहे हैं। सरकार के लिये ऐसे लोगों के बारे में सोचने का विषय है, उनके लिये सरकार ध्यान दें, उनको भी कलेक्टर दर पर मानदेय दें। आपके बहुत से कर्मचारी है, पंचायत विभाग में है, शिक्षा सचिव है, मितानिन है, अन्य है, सरकार उनको भी कम से कम कलेक्टर दर पर मानदेय दें या वेतन दें। शिक्षकों की विसंगती दूर करे, मैं सरकार से ऐसी आशा करता हूं। हमारी मांग करने का मतलब नहीं है। ये लोग आपको मानते हैं, आपके पास भी जाते होंगे, यह लोग सड़क में भी उतर चुके हैं, अधिवेशन भी कर रहे हैं, धरना भी दे रहे हैं, सरकार को इस पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। मैं इन सब बातों को लेकर आपको बताऊंगा। अनुसूचित जाति के आरक्षण के संबंध में है, तो मैं आरक्षण की बात तो बाद में कहूंगा। अनुसूचित जाति एवं जनजाति के 34 हजार पद रिक्त है। सरकार हाई कोर्ट का बहाना बनाकर इसकी भर्ती नहीं कर रही है, इसके लिये विशेष भर्ती अभियान चलाये। हाई कोर्ट की बात तो अभी आयी है, लेकिन दो-तीन साल हो गये हैं, भर्ती नहीं हुई है। हाई कोर्ट के फैसले के लिये सरकार सुप्रीम कोर्ट में जाये, आपके जो विशेषज्ञ है, उनको भेजे और इसको जल्दी करें । क्योंकि सब लोग आरक्षण की बात को लेकर..।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय लखमा जी, विनियोग में ऐसा है कि आप माननीय मुख्यमंत्री जी से मांग करोगे, वह पूरा कर देंगे। मैं आपके प्रति बहुत सहृदयता रखता हूं। आप भाषण शुरू करने के पहले बोलियेगा कि साहब मुझे पेंशन की जगह में तनख्वाह दिलवाइये।

श्री कवासी लखमा :- तनख्वाह मिल रही है।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप बोलिये पेंशन से काम नहीं चलता, तनख्वाह दिलवाईये। किसी भी आदमी से पूछ लो आपको पेंशन ही मिलती है।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- मैं सिंचाई विभाग की बात करूं और मुंगेली जिले में मुंगेली विधान सभा में ..।

श्री अजय चन्द्राकर :- आपकी तनख्वाह कौन ले जाता है, यहां सब कोई जानते हैं।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, लगभग 04 वर्ष हो चुके हैं।.. डायवर्सन का, नहर बनाने का, प्लानिंग का काम, अभी तक वह टेण्डर प्रकिया में है, एक रूपये का भी काम नहीं हुआ है। यदि मैं जल प्रदाय के क्षेत्र में बात करूं। मुंगेली जिले के खुड़ियां बांध के पानी को मुंगेली शहर में पाइपलाइन द्वारा लाने की बात थी। जिसमें 04 वर्ष पहले माननीय मुख्यमंत्री जी, हमारे नगरीय प्रशासन मंत्री, डहरिया जी और हमारे स्वास्थ्य मंत्री भी गये थे। उनके सामने घोषणा हुई थी। उस हमारे जमाने के स्वीकृत कार्य को शिलान्यास किये थे, लेकिन वह कार्य अभी तक अपूर्ण है। मैं माननीय मंत्री जी से अनुरोध करूंगा कि पाइपलाइन बिछाने के लिये विनियोग में राशि दे। अभी तक मुंगेली शहर में पानी की समस्या दूर नहीं हुई है। यदि मैं बाबा गुरू घासीदास के जन्म स्थल, गिरौधपुरी की बात करूं । महामहिम राष्ट्रपति जी 04 वर्ष पहले आये थे, हमारे शासन काल में उसका शिलान्यास हुआ था, वह अभी तक नहीं बना है। इधर सरकार दुहाई देती है कि बाबा गुरू घासीदास जी के जन्म स्थल में..। माननीय मुख्यमंत्री जी भी उस समय वहां गये थे, जब हम सत्ता में थे। वे हमारे गुरूओं को लेकर गये और वह बढ़िया पूजा-अर्चना किये और शायद आज उसी के आशीर्वाद से ये शासन में आये। शासन में आने के बाद यह भूल गये हैं, माननीय मुख्यमंत्री जी इस ओर ध्यान दें। उससे और ज्यादा अलग बात क्या कहूं, वह एक मड़वा में गये थे। प्रगतिशील सतनामी समाज के सदर भवन के उद्घाटन में, वहां माननीय मुख्यमंत्री ने बाबा गुरू घासीदास के जन्म स्थल में गुरूकुल संस्थान बनाने की घोषणा की थी। वह पता ही नहीं कि अनुसूचित जाति कैसे हितवर्धक है। मैं ऐसे मुख्यमंत्री को क्या कहूं। इस विषय में विनियोग बजट में कुछ देखने में नहीं मिलता। हमको इन सब बातों को जानने की आवश्यकता है। मैं ज्यादा न बोलते हुए कहूं कि सरकार से आशा भी करते हैं।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये समाप्त करिये।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- मैं एक मिनट में ही समाप्त कर रहा हूं, आप दो मिनट की बात कर रहे हैं। मैं माननीय मुख्यमंत्री जी से अनुरोध करूंगा कि मुंगेली जिले में कॉलेज की आवश्यकता है और मेरे विधान सभा क्षेत्र के जरहागांव में कई बार गये थे । वहां भी सभा में लोगों ने मांग की थी माननीय मुख्यमंत्री जी ने आश्वासन दिया या नहीं, यह मैं नहीं जानता, पर मैं माननीय मुख्यमंत्री जी से मांग करूंगा कि मुंगेली विधान सभा के जरहागांव में एक नया कॉलेज खोलने की घोषणा करेंगे, मैं ऐसी आशा करता हूँ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- बबा, मुंगेली में कॉलेज हे ना।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- हमने माननीय मंत्री और माननीय मुख्यमंत्री जी से मुंगेली के भालापुर में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र खोलने की मांग की है। वहां प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र खोलने की खोलने की घोषणा करेंगे, मैं ऐसी आशा करते हुए, अपनी बात समाप्त करता हूँ। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया, इसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद्।

उपाध्यक्ष महोदय : - डॉ. लक्ष्मी ध्रुव जी, आप 10 मिनट में अपनी बात समाप्त करेंगे।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव (सिंहावा) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जब हम सरकार में आये तब हमारे विपक्ष की पार्टी ने 41 हजार करोड़ रूपए का कर्ज छोड़ा था और सम्माननीय विपक्ष के विधायक हमारे बजट को कहते हैं कि यह पानी में बहाने वाला बजट है। मैं कहना चाहती हूँ कि यह लोग बार-बार व्यंग करते हुए छत्तीसगढ़, छत्तीसगढ़ी और छत्तीसगढ़िया की बात कहते हैं । मैं कहना चाहती हूँ कि छत्तीसगढ़, छत्तीसगढ़ी और छत्तीसगढ़िया की आत्मा को यदि..।

उच्च शिक्षा मंत्री (श्री उमेश पटेल) :- डॉ. लक्ष्मी ध्रुव जी, एक मिनट। बबा, ओ माईक ला बंद कर दे न गा।

श्री रामकुमार यादव :- बबा के अब तक ले माइक चालूच हे।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव:- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यदि छत्तीसगढ़ की आत्मा को कोई समझा है तो छत्तीसगढ़ के माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी ने समझा है।

श्री धरमलाल कौशिक :- का हे, ओकर ऊपर ला मत देख, ओकर माईक हा चालूच रहिथे।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, में कहात हौं कि...।

श्री शिवरतन शर्मा :- का हे, 13 के बाद भी चालू हे। धोखा में झन रहिबे।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- आप लोग मेरा टाईम वेस्ट मत करिए।

उच्च शिक्षा मंत्री :- तें 13 ला अउ बढ़ाए के चक्कर में हस का तें? तें हा 13 के काउंट ला अउ बढ़ाए के चक्कर में हस का तें।

श्री शिवरतन शर्मा :- ए बोलत हे कि मुख्यमंत्री कोटा ले कुछ मिल जही तो 13 के आगे कुछ अउ बढ़हूं।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ के चाहे गरीब, मजदूर, किसान हों, चाहे अनुसूचित जनजाति, जाति के लोग हो, चाहे जल, जंगल और जमीन की बात हो, चाहे नरवा, गरूआ, घुरवा की बात हो, हमारी सरकार ने सब के विकास के लिए योजना बनाई। हमारी सरकार ने सबकी समृद्धि के लिए बहुत ही व्यवस्थित तरीके से योजना दी है जो आज तक किसी मुख्यमंत्री ने नहीं दिया है। मैं इनके द्वारा प्रस्तुत विनियोग बजट का समर्थन करती हूँ। मैं अपने समर्थन में सबसे पहले वित्तीय प्रबंधन की बात कहना चाहती हूँ। कोई भी सरकार तभी सफल होती है जब उसका वित्तीय

प्रबंधन बहुत कुशलता से हो। आप केन्द्र के बजट को देख रहे हैं और हमारे छत्तीसगढ़ के बजट को देख रहे हैं। माननीय मुख्यमंत्री जी ने कितना सुन्दर कुशलतापूर्वक धन का उपयोग किया है, मैं उसको आंकड़ों के द्वारा बताना चाहती हूँ। इससे छत्तीसगढ़ के वासियों की आय में वृद्धि हुई है। जनवरी 2023 तक राजस्व आधिक्य 4 हजार 471 करोड़ रूपये था, जनवरी 2023 से आज तक कर्ज नहीं लिया है। उड़ीसा, त्रिपुरा ने कर्ज नहीं लिया है तीसरे नंबर पर छत्तीसगढ़ का नाम आता है यदि हम छत्तीसगढ़ से तुलना करते हैं तो उसी तरह से 30 राज्य और केन्द्र शासित प्रदेश 14 मार्च तक 6 लाख 81 हजार 520 करोड़ रूपए का बजट ऋण लिया है। केन्द्र शासन ने भी बहुत ज्यादा 10 लाख 5711 करोड़ रूपए का ऋण लिया है, जिसके कारण महंगाई बहुत ज्यादा है और हमारा जो बजट है वह भी बहुत गड़बड़ है तो केन्द्र सरकार के जो बहुत सारे राज्य हैं उसमें सर्वाधिक ऋण लेने वालों में तमिलनाडु, यू.पी., गुजरात, हरियाणा, महाराष्ट्र, कर्नाटक, मध्यप्रदेश और असम को देखें इन सब राज्यों ने बहुत ज्यादा कर्ज लिया है, लेकिन इस साल छत्तीसगढ़ ने कर्ज नहीं लिया। बल्कि जो पुराना कर्ज है 2 हजार करोड़ रूपये का पुनर्भुगतान किया है। इससे पता चलता है कि हमारे वित्तीय प्रबंधन को कितनी कुशलता के साथ माननीय मुख्यमंत्री जी ने किया है। राज्य निर्माण से जनवरी 2023 तक कुल 82,125 करोड़ रुपये का ऋण भार जो जी.एस.डी.पी. का मात्र 17.9 प्रतिशत सबसे कम है। बाकी चाहे महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक, झारखंड, उत्तराखंड, मध्यप्रदेश, तमिलनाडु, उत्तरप्रदेश, हरियाणा सब राज्यों का प्रतिशत बहुत ज्यादा है, इवन भारत सरकार का जो ऋण भार है वह 1 करोड़ 28 लाख 94 हजार 673 रुपये है और जी.एस.डी.पी. का 47.2 प्रतिशत है। जितने भी राज्य हैं उनकी तुलना में देखें कि छत्तीसगढ़ का वित्तीय प्रबंधन इतना चुस्त, दुरूस्त, लोंगो की सहायता करने वाला है और उनकी तुलना में बहुत कम है। इसलिए हमारे माननीय मुखिया का जो वित्तीय प्रबंधन है वह बहुत ही सुंदर है जिसके कारण लोगों का हर प्रकार का लाभ दिया है। ब्याज का भुगतान किया है। वर्ष 2022 में राजस्व प्राप्ति जो है, चालू वर्ष में 6 प्रतिशत है और 15वें वित्त आयोग द्वारा निर्धारित 10 प्रतिशत से कम है। जो कमिटेड व्यय है, उसमें 40 प्रतिशत रहने की संभावना है। यह वित्तीय आंकड़ा दर्शाता है कि कितनी कुशलता के साथ वित्तीय प्रबंधन किया है और वित्तीय प्रबंधन के साथ बेहतर राजस्व संग्रहण किया है, इसलिए ऐसा है। जितनी भी योजनायें हैं, उसका क्रियान्वयन भी बहुत सुव्यवस्थित तरीके से किया है, चाहे वह योजनायें ग्रामीणों, श्रमिकों के लिए हो। लेकिन यह प्रचार किया गया है कि ई.डी. और आई.टी. के छापों के कारण बढोत्तरी हुई है। मैं कहती हूं कि ऐसा नहीं है। यह हमारी सरकार की जो योजनायें हैं जिसको कुशलता के साथ जन-जन तक पहुंचाया है जिसके कारण हमारी वित्तीय व्यवस्था बढ़ी है और लोगों को साधन, सुविधा उपलब्ध कराई गई है। माननीय सभापति महोदय, जनकल्याणकारी योजनाओं के कारण भी राजस्व आय में लगातार वृद्धि हुई है। जलकल्याणकारी योजनाओ में आप देखिये चाहे वह राजीव गांधी किसान न्याय योजना हो, गोधन न्याय योजना हो या राजीव गांधी न्याय योजना में 107 लाख

मीट्रिक टन धान की जो बिक्री हुई है जिससे लोगों को डॉयरेक्ट पैसा मिला है। भूमिहीन किसानों को पैसा दिया गया है, मिलेट्स का समर्थन मूल्य दिया गया है। जो 7 प्रकार के वनोपज थे उसको 65 किया गया है और तेंदूपत्ता का समर्थन मूल्य 2500 से 4000 रुपये किया गया है। यह जनकल्याणकारी योजनायें हैं जिसके कारण निरंतर बजट बढ़ा है और लोगों को इसका लाभ मिला है। इसलिए यह विनियोग विधेयक समर्थन के लायक है।

माननीय सभापति महोदय, इसके अलावा हमारी सरकार पूरे छत्तीसगढ़ राज्य में बेहतर सुविधा देने के लिए संकल्पित थी। चाहे राजिम पुन्नी मेला की बात हो, जिसमें वहां के विकास के लिए, उसकी सुंदरता के लिए मेला कराने के लिए जो धन दिया है, उससे लोगों को लाभ मिला है। कोरोना काल में बहुत ज्यादा सुविधायें दी गई हैं, दवाई लोगों के घर-घर तक पहुचाई गई है, बाहर के लोगों को भी दिया है। इसके कारण भी हमारा बजट बढ़ा है। नगरीय निकाय को भी 3 करोड़ रुपये दिया गया है। वॉटर हार्वेस्टिंग, एयरपोर्ट, एयरोसिटी के लिए जो बजट दिया है वह भी बहुत ही काबिलेतारीफ है। अनेक जिला और तहसील का निर्माण करने के लिए बजट दिया गया है। पुल-पुलिया सड़क निर्माण के लिए बजट दिया गया है।

उपाध्यक्ष महोदय :- अपने क्षेत्र के बारे में एक मिनट मे अपनी बात रखें।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, एक बात और कहना चाहती हूं। उच्च शिक्षा बहुत पिछड़ा हुआ था। नेक के माध्यम से अपग्रेड करने का काम किया है। खेल और युवा कल्याण के लिए जो अकादमी का गठन किया गया है, चाहे बैडमिंटन, मलखंभ, तीरंदाजी के लिए हो, यह बेहतर सुविधा देने के लिए इस बजट में कार्य किया जा रहा है। साथ ही साथ हमारे छोटे-छोटे कर्मचारी जो हडताल में बैठे हुए थे, उनको भी संतुष्ट किया गया है। उनके लिए बजट दिया गया है। चाहे मितानित बहनें, रसोईयां बहने हों, स्वच्छता कर्मी हों, निराश्रित पेंशन की बात हो, वृद्धा पेंशन की बात हो, चाहे वृद्धा पेंशन की बात हो, सबको सुख देने वाला यह बजट है। माननीय मुख्यमंत्री अभी-अभी इमारती लकड़ियों से जंगल में कैसे आय प्राप्त हो सकती है, इसके लिए मुख्यमंत्री वन संपदा के लिए बजट दिया है। जल संरक्षण के लिए लीडार तकनीक के माध्यम से जल संरक्षण आज के डेट में बहुत ही महत्वपूर्ण है, क्योंकि 800-900 पंप खोदने के बाद पानी मिल रहा है। आने वाले समय में बहुत दिक्कत होगी।

उपाध्यक्ष महोदय :- समाप्त करिये। प्रमोद शर्मा जी।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- तो यह काम होना बहुत जरूरी है। उसी तरह से नवीन जंगल सफारी और सौर सुजला के अंतर्गत सौर ऊर्जा के लिए भी काम किया जा रहा है। तो मैं चाहती हूं कि यह जो विनियोग बजट लाया गया है, यह बहुत ही उपयोगी है, जन-जन को सुविधा देने वाली है और इससे निश्चित तौर से प्रदेश का विकास होगा, प्रदेश आगे बढ़ेगा। इसलिए मैं इस विनियोग विधेयक का समर्थन करती हूं। उपाध्यक्ष महोदय, धन्यवाद।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

उपाध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद। बहुत बढ़िया। प्रमोद कुमार शर्मा जी।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा (बलौदाबाजार) :- उपाध्यक्ष महोदय, आपको सबसे पहले धन्यवाद काबर कि मोर नंबर बहुत देर से आही कहत रहे। मोर पहली नंबर आगे गे, एकर लिए आप ला बहुत-बहुत धन्यवाद देवत हव।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, विनियोग विधेयक बजट में अभी माननीय सभी सदस्य मन बोलिसे, सत्ता पक्ष के बोलिसे, ये वाला पक्ष के मन बालिसे। स्वाभाविक बात हे कि सत्तापक्ष वाला मन अपन सरकार के पक्ष रखबे करही और विपक्ष वाला मन विपक्ष मा बोलबे करही। हमन के स्थिति तो बड़ा खराब हे, बड़ा दयनीय हावय।

श्री प्रकाश शक्राजीत नायक :- तैं हर कोन डहर के हस?

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- सत्तापक्ष के डहर ले रस्ता बंद हे, ए डहर के रसता खुले नई हे अउ आज सदन में दू अइसे सदस्य हन, जेकर ..।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- बड़ा दिन के बोलथव, ये करा आ जावा कइके।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- आप तो पथरा मा ओती बर धान उगाय गये रहा। आप के भाषण ही जोरदार रहीसे। अतको कन लंबा-लंबा मत फेंके करा, ताकि सरकार के थोड़ा लगना चाहिए। पथरा में कभू धान उगबे नई करय अउ स्वाभाविक बात हे कि सत्तापक्ष मन ..।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- महोदय जी, आप न दिल से समर्थन करथव, भले ही बोलथव दूसरा।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- जो सच्चाई रइथे, ओला हमन बोलथन। ये सदन में दू सदस्य अइसे हन। एक इंदू बंजारे अउ एक मैं। दू छोटे दल के हन। हमन इहां दू झन निरीह प्राणी टाईप के हन। आप मन के कृपा कब मिलथे। यह संदन के अंतिम बजट आवय, कम से कम एमा हमन ला भारी-भारी समय मिल जावय। एकर बाद हमन तो अइसे चौराहा मा खड़े हावय कि आगे कोन रास्ता मा जाना हे, आगे तेनो ठिकाना नइ हे।

उच्च शिक्षा मंत्री (श्री उमेश पटेल) :- पम्मू, अभी तोर पार्टी में के झन विधायक हे?

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- दू झन। सर, एक शायरी हे। मैं एक शायरी सुनात हव। सब शायदी सुनाइसे ता महू एक शायरी सुनात हव। कोई काफी अकेला हे अउ कोई अकेला ही काफी हे।

श्री उमेश पटेल :- येती 71 झन हे। ता येमन के औसत निकालबे कि एक झन विधायक ला कतका बोले के मौका मिलही। तैं हर भारी पड़बे। झन चिंता कर।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- हमन सुने रहेन कि अध्यक्ष महोदय के प्रेम कमजोर वर्ग डहर ज्यादा रइथे। ता हमर ज्यादा कमजोर पीछू वाला मन हन। ता येला आप मन प्रेम ला बनाय रहव। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज प्रश्न काल में सी.एस.आर. राशि के बात होत रहीसे। सी.एस.आर. राशि के बात ला निश्चित रूप छत्तीसगढ़ में ये सी.एस.आर. राशि बलौबाजार में सबसे ज्यादा हे। आज ओ ये

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

सी.एस.आर. राशि के उपयोग सिर्फ सरकार अपन पॉकट मनी, जेब खर्चा के काम करत हे। अगर मान ले कि रायपुर में कोई नेता आगे ता ओकर स्वागत करे बर कंपनी वाले ला फोन करत हे। आप इतना पैसा लेकर आओ। कुछू खेल हो गय। तो यहां पैसा चाहिए ता कंपनी वाला ला फोन करत हे कि यहां पैसा लेकर आओ। मतलब यह हावय का? सी.एस.आर. राशि के असली पैसा ओ जो गांव प्रभावित होवय, ओ क्षेत्र में खर्चा करना हावय। जहां पर खदान लगे हे, जो क्षेत्र प्रभावित हे, जो गांव प्रदूषण ला झेलत हे, उहां ओ सी.एस.आर. राशि के पैसा ला उपयोग करना हे, लेकिन कहां होथे महोदय। हमन हमर विधानसभा क्षेत्र में देखत हन कि 7 ठन इंटरनेशल सीमेंट प्लांट हे। सबसे ज्यादा सीमेंट प्लांट सी.एस.आर. मोर विधानसभा क्षेत्र में हे। लेकिन हमन ला आज तक पता नई चलीस कि ओ ये सी.एस.आर. राशि के उपयोग कहां होथे? सिर्फ बंदरबांट करत हे। ओला सिर्फ शासन के गिने चुने प्रभावशील मन हर ये सी.एस.आर. राशि के उपयोग करथे। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपसे निवेदन करत हव, सरकार से निवेदन करत हव कि कम से कम जेन गांव में प्लांट खुले हे, ते गांव वाले मन प्रभावित हे ओ पइसा ला कम से कम ओकर विकास काम में लगावाय, ओकर हक के काम बर लगावय अउ सरकार हर छत्तीसगढ़िया के बड़े-बड़े बात करथे । कांग्रेस सरकार, छत्तीसगढ़िया हन, छत्तसगढ़िया हन कइथे। थोड़ा सा झांका अउ झांकर हमर क्षेत्र में जाकर देखव कि जे बाहरी आदमी मन आकर काम करत हे, तेखर मन के तनख्वाह कतका हे अउ छत्तीसगढ़िया मन के तनख्वाह कतका हे। मैं आप ला बता देना चाहत हव कि हमर क्षेत्र में अन्य प्रदेश से आकर जेन हर काम करत हे, तेखर मन के तनख्वाह 35-40 हजार हे अउ ओइ हमर छत्तीसगढ़ के लोकल वाले आदमी मन जो काम करथे, तेखर तनख्वाह 15 से 20 हजार रूपये हे। ये अंतर हे। अउ योग्यता एक हावय। सिर्फ एकर सेती कि ओ बाहरी आदमी काम करत हे, ऐकर सेती हे । ये छत्तीसगढ़ के सरकार हावय । जेन हा छत्तीसगढ़ के हित के बारे में बात करत हे । ये छत्तीसगढ़ के बड़े-बड़े बात करथे कि ये अइसे होवत हे । हमर श्रम मंत्री डहरिया जी ये जगह बइठे हे, मैं आपसे भी निवेदन करत हंओं कि एकाध बार हमर क्षेत्र में श्रम वाले अधिकारी मन ला आप मन भेजओ अउ उहां लोकल वाले मन संग का ज्यादती होत हे, ओकर जांच करावओ ।

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- मैं खुद आ जहूं पम्मू, तें बताना । अधिकारी के का जरूरत हे, मैं खुद पहुंच जहूं ।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- हओ, थोड़ा जांच कर देतेओ ।

श्री अजय चंद्राकर :- संसदीय कार्यमंत्री जी, आप आ गये हैं । (श्री पुन्नूलाल मोहले, सदस्य के सत्तापक्ष के पास खड़े होने पर) माननीय पुन्नूलाल जी आप वहीं पर बैठिये । आपके मामा जी बहुत देर से उधर हैं । पुन्नूलाल मोहले जी के लिये आप एक न्याय योजना शुरू कीजिये । वह तेरह प्लस के लिये अभी भी तैयार हैं । (हंसी) मुख्यमंत्री न्याय योजना । आप विनियोग में कुछ घोषणा करवाईये । आप अपने मामा जी से पूछ लीजिये । वे अभी भी तैयार हैं । (हंसी)

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- देखिये अजय भाई, बगैर सरकार के सहयोग के और बगैर घोषणा के जब तेरह प्लस हो चुके हैं तो आगे और क्या जरूरत होगी ?

श्री अजय चंद्राकर :- नहीं-नहीं, अगर आप कोई मुआवजा या न्याय योजना तैयार करेंगे तो वे मानसिक रूप से तैयार हैं । (हंसी)

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय पुन्नूलाल मोहले जी बोल रहे थे कि संसदीय कार्यमंत्री बर मामी चाही भई । तुमन कोई न्याय योजना तो चालू कराओ कहिके । (हंसी)

श्री पुन्नूलाल मोहले :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मुझे इसका जवाब तो देना पड़ेगा ।

श्री रविन्द्र चौबे :- ममा जी, आप देखो । आप हमारे बगैर सहयोग के 3,4, 5 मामी ले आये हो न । (हंसी)

श्री पुन्नूलाल मोहले :- मैं नहीं लाया हूं भई । (हंसी)

श्री रविन्द्र चौबे :- एक और चलेगा उसमें क्या बात है ?

श्री पुन्नूलाल मोहले :- भांचा मुझे नहीं चाहिए न, ये गलत बोल रहे हैं । ये खुद लाना चाहते हैं और मेरा नाम ले रहे हैं । (हंसी)

श्री रविन्द्र चौबे :- वह आपके ही सदस्यों का प्रस्ताव है ।

श्री अरूण वोरा :- मामा, अब तोर उम्र नइ हे । अब तोर भांचा मन के उम्र हे।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज विनियोग का दिन है । माननीय मुख्यमंत्री जी ने कहा है कि कोई न कोई घोषणा होगी तो चुनाव जीतने वाले में और सभी में ये सबसे वरिष्ठ सदस्य हैं । ये सभी सदन में रहे हैं इसलिये सर्वसम्मति से उनके लिये पुन्नूलाल मोहले जी न्याय योजना और आपको शानदार मामी मिलेगी । वे मानसिक और शारीरिक रूप से तेरह प्लस के लिये तैयार हैं ।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हम कोई भी घोषणा करेंगे तो हम उसके लिये पहले समिति बनाते हैं और मैं अपने आदरणीय मामा जी श्री पुन्नूलाल मोहले जी के लिये मामी लाने के लिये समिति बनाउंगा । उसमें नेता प्रतिपक्ष को रखूंगा और आपको रखूंगा । (हंसी)

नेता प्रतिपक्ष (श्री नारायण चंदेल) :- चौबे जी, सत्यनारयण शर्मा जी ज्यादा अनुभवी हैं । (हंसी)

श्री सत्यनारायण शर्मा :- इनको मत रखना, ये अपने लिये ले आयेंगे । चंद्राकर जी को रखोगे तो ये अपने लिये ले आयेंगे । (हंसी)

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय संसदीय कार्यमंत्री जी, वह अनुभव अमितेश शुक्ल जी के पास भी है । उनको भी समिति में रख लीजिये, हम लोग तैयार हैं ।

श्री रविन्द्र चौबे :- कुछ शुभ काम में माननीय अमितेश जी का नाम मत जोड़ा करो । (हंसी)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, ये सब वार्तालाप के समय ला मोर में मत जोड़िहा भई । (हंसी) ओला काट दुहू नहीं तो पता चलत हे ।

उपाध्यक्ष महोदय :- मेरा तो यह है कि मैं काउंट करता हूं । चलिये, आपको समय दे रहा हूं, आप बोलिए ।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- ले-देकर कम समय मिलथे ।

उपाध्यक्ष महोदय :- बाकी टोकाटाकी न करें । आपस में संवाद न करें ।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, बलौदाबाजार क्षेत्र में प्लांट के बात होत रिहिस हे ।

श्री अरूण वोरा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, ये समिति बनने के बाद और मामा की यह बात सुन के मामी तो आनी ही, आनी है तो सब भांचा मन एकदम अचेत होगे हे तो भांचा मन का करही गा ? (हंसी)

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- अब ओ समिति ले बाहर प्लांट कुती आवा न । (हंसी)

श्री पुन्नूलाल मोहले :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं एक उदाहरण बताना चाहता हूं । दो दोस्त जा रहे थे । मैं सामान्य भाषा में कहूं तो उसको बहुत भूख लग रही थी, चंद्राकर जैसे आदमी को और दूसरा जो उसका दोस्त था । जो भूख नइ मर रहा था, उस आदमी को बोले कि ये तो भूख मर रहा है इसको दे दो भाई । अब जब वहां खाना खाने गये तो चंद्राकर पहले खा लिया, भूख मरने वाला खाया ही नहीं तो यह बात वैसी ही है । (हंसी)

उपाध्यक्ष महोदय :- इसीलिये वे वह योजना आपके लिये नहीं बल्कि आपके लिये बना रहे हैं । (हंसी)

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय उपाध्यक्ष जी, मैं इस बात को समझ रहा हूं । संसदीय कार्यमंत्री होने के नाते मेरी इतनी समझ है कि किसको कितनी जरूरत है । मैं अजय जी का भी ख्याल रखूंगा । (हंसी) और इधर से सत्तू भैया के द्वारा शिक्षित माननीय अरूण वोरा जी भी क्यों बोल रहे हैं, मैं उसको समझ रहा हूं ।

श्री अरूण वोरा :- भैया, मैं शुरू से आपका चेला हूं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- संसदीय कार्य मंत्री जी, सदन सार्वजनिक रूप से केवल अरूण वोरा जी ने ही स्वीकार किया है कि हां मेरे में उत्तेजना है (हंसी)।

श्री अरूण वोरा :- आपको कोई शक है क्या ? चेक करा लीजिए ।

उपाध्यक्ष महोदय :- तो उसके लिए अलग से न्याय योजना बनाना है क्या ?

डॉ. शिवकुमार डहरिया : ए पम्मू, अतेक शुभ चर्चा होइस, तैं डिस्टर्ब थोड़े होए हस ?

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, मैं हमर क्षेत्र के प्लांट के बात करह रहेंव । हमर बालोदा बाजार क्षेत्र में 7 इंटरनेशनल प्लांट हैं । वहां मजदूर मन के अतका शोषण होवत हे, अतका शोषण होवत हे । माननीय श्रम मंत्री जी मैं आपके ध्यान आकर्षित करना चाहत हौं । आज तक 2 सीमेंट प्लांट में वेज बोर्ड लागू नहीं है । वेज बोर्ड लागू होए ले इखर मन के तनखा 15/16 हजार हे, ये तनखा 25-30 हजार हो जाही । प्लांट वाले मन वेज बोर्ड एखर सेती लागू नइ करत हे ताकि एमन ला ज्यादा पइसा दे ल पड़ही कहिके । ये नियम भी हे कि प्लांट चालू होए के बाद स्थायी आदेश दे जाथे, सीमेंट के पैकिंग प्लांट में अउ माइनिंग में, सीमेंट वेज बोर्ड लागू होथे । आपसे निवेदन हे एखर जांच करावव, अउ छत्तीसगढ़िया के ही तो बात होवत हे । हमर क्षेत्र में मैं दावे के साथ कहत हौं, आप मन चलव जांच करे बर, सीमेंट प्लांट वाले हमर छत्तीसगढ़िया मन के शोषण करत हे, बाहरी आदमी ला ज्यादा तनखा देवत हे । मैं सरकार से निवेदन करत हौं कि आप मन जागव अउ छत्तीसगढ़िया के हित के रक्षा करव । बलोदाबाजार के हमर मजदूर भाई मन के शोषण होवत हे, कम से कम ओखर साथ न्याय करव । उंखर मन के जमीन खरीदे के बात होए रहिस हे । उहां इतना सारा प्लांट लगे हे अउ सबके जमीन ला धोखा देकर खरीदे गे हे कि हर घर से एक नौकरी देंगे । सभापति महोदय, आज उंखर स्थिति यह है कि जमीन वाले मन ला सिर्फ लेबर क्लास में लगा दे जात हे अउ हो गे इखर नौकरी । अउ बाहर वाला आदमी जोन अन्य प्रदेश ले आवत हे ओमन बड़े बड़े पद मा हे । आज आप जांच कराकर देख लो कि कतना बाहरी आदमी हे अउ कतना इहां के हे ? जब आप विधान सभा में हो या कलेक्टर के माध्यम से हो, जब हम डाटा मांगथन तो ये सब ला जोड़ देथे । आप निश्चित रूप ले जांच करिहौ तो पता चलही कि कम से कम 70 से 80 परसेंट बाहरी आदमी हे । जब ये मन कंपनी लगाए के पहिली एम.ओ.यू. मा दस्तखत करे रिहिस हे तो जमीन ले के पहिली ये बात बोले रिहिस हे लोकल आदमी मन ला उहां नौकरी देबो । लेकिन वह रे सरकार, बहरा सरकार, छत्तीसगढ़िया के बात करने वाला, छत्तसीगढ़िया के शोषण करने वाला सरकार हावय । बड़े बड़े बात करत हे छत्तीसगढ़िया के ।

श्रीमती अनिता योगेन्द्र शर्मा :- पम्मू भाई, ये 15 साल वाले हैं भाई, अभी के नो हे ।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- मैं नइ रहेंव ना 15 साल मा ।

श्रीमती अनिता योगेन्द्र शर्मा :- ये पहिली ले संचालित हे । इहां तो वइसने भ्रष्टाचारी हे भाई, हमर सरकार हा धीरे-धीरे सुधारत हे ।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- अब देखव, इहां ये चलत हे, वोमन कहिथे 15 साल ले एमन अत्याचार करे हे कहिके, अउ वोमन कहिथे एमन करे हे । पक्ष विपक्ष चलते हे ।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- ता पम्मू भाई, दोनों अत्याचारी हे कहे मा का हे ।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- ए भ्रष्टाचार के बारे में मैं हा बोले बर बंद कर दे हौं। मैं कहि कहि के देख डारेंव । अधिकारी मन ला मैं गिरगिट, बाजा वाला सब कह डारेंव । ओखर बाद तो फोन उठाए ला

बंद कर दिन । मतलब यह है कि भ्रष्टाचार आदिकाल ले चलते हे अउ अनंतकाल तक चलही । अब बेकार हे भ्रष्टाचार के बारे में बोलना । ए कोति ले वो कोति आरोप लगत रही । ए कोती ला कोनो ला सांप काटे हे कही न तो बोलही के डहरिया जी ढीले हे अउ एकाध झन गवाही भी मिल जाही । ए स्थिति हे आरोप प्रात्यारोप चलत रहिथे । वो कोति के मन लगात रही । उपाध्यक्ष महोदय, मैं अपन मूल बात कंपनी वाला के शोषण मा आत हौं । आज 58 वर्ष मा रिटायर करत हे जबकि नियम तो यह हे कि 60 साल, 62 साल मा रिटायर करना हे लेकिन छत्तीसगढ़ शासन के जो आदेश हे वोला नइ मानते हुए सीधे इस सरकार ला चैलेंज करते हुए आज 58 साल मा रिटायर करत हे, आप मन काय कर डारेव उंखर मन के । उंखर मन के कहना हे कि हम नइ मानते छत्तीसगढ़ सरकार की बात । हम केन्द्र सरकार की बात मानेंगे । आप मन का एक्शन ले हाव, सिर्फ दिखावा वाली बात ।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिए समाप्त करें ।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- 7 ठन प्वाइंट समिति बनाकर भाषण तैयार कर हौं मै हा । बहुत सारा विधायक अउ माननीय मंत्री जी घलो मार्गदर्शन करे हे । पर्यावरण के बारे में बोलना चाहूं । ये प्लांट वाले मन इहां पर्यावरण विभाग मा बनाकर भेजथे कि हमने 1 लाख पौधा लागाए । हम लोग 50 हजार पौधा लगाए । आप एक बार जांच करवा दौ, रिकॉर्ड मा तो आमा, इमली, अमरूद एक से एक फलदार पौधा मिलही । मोला बचपन ले बलौदाबाजार में राहत हो गए । एक ठो फलदार पौधा नइ देखेंव । सिर्फ रिकॉर्ड बस में है, मात्र रिकॉर्ड में दिखे में, इतना हजार पौधा लगाय हे, मैं विधानसभा में एक ठन प्रशन लगाय रेहेव, जेमा जवाब भी आय रहिस हे, आप एक बार जांच करा लेवव, मैं यहां चुनौती देवत हंव, कोन से प्लांट कतका पौधा लगाय हे, अउ कतका जीवित हे। सिर्फ दिखावा के काम करत हे, अउ पर्यावरण विभाग जेन बइठे हे तेन सिर्फ प्रमाण पत्र बेचे के काम करते हे। उही में अपन ताकत दिखाथे। जेन तीन सवारी मोटर साइकल में जाथे तेला पकड़थे। हरा कलर के एक ठन स्टीकर 50 रूपया या 50 रूपया में बेचथे। वहां पे पर्यावरण विभाग के बारे में दिखथे। पर्यावरण विभाग ला लज्जा करना चाहिए, ए विभाग ला बंद कर देना चाहिए। जो प्रमाण पत्र ला बेचे के काम करत हे। जेन क्षेत्र में प्लांट हे, हमर क्षेत्र प्रदूषण से ग्रहित हे, हमर क्षेत्रवासी के कोई परवाह नई करते हे, अइसे शोषण करईया मन के खिलाफ में कार्रवाई करव। आप मन से निवेदन हे, ओखरे उपर कार्रवाई करव।

उपाध्यक्ष महोदय :- शर्मा जी, दो मिनट।

<u>सदन को सूचना</u>

उपाध्यक्ष महोदय :- विधान सभा की प्रक्रिया तथा कार्य संचालन संबंधी नियमावली के नियम 158 के उप नियम (2) की अपेक्षानुसार विनियोग विधेयक के पारण का समय 5.00 बजे निर्धारित है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

चूंकि विनियोग विधेयक पर चर्चा शेष है एवं माननीय मुख्यमंत्री जी का जवाब भी आना है। अत: नियम 158 के उप नियम (2) को शिथिल कर विनियोग विधेयक के पारण के समय में वृद्धि की जाये। मैं समझता हूं, सभा सहमत है।

(सदन द्वारा सहमति प्रदान दी गई)

श्री अजय चंद्राकर :- उपाध्यक्ष महोदय, एक मिनट, माननीय संसदीय कार्य मंत्री जी, आज सारे सदस्यों का भाषण हो जाए, कल माननीय नेता प्रतिपक्ष और माननीय मुख्यमंत्री जी का भाषण हो जाए। रोज बैठ रहे हैं, यदि आपकी कृपा होगी तो आज कम से कम जल्दी पहुंच जाएंगे।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- भैया, आज ही खत्म करेंगे। आप चिंता मत करिए। माननीय उपाध्यक्ष जी ने समय वृद्धि कर दी है।

श्री अजय चंद्राकर :- आप बोल दीजिए ना।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, प्रमोद भाई को थोड़ा सा समय दीजिए, क्योंकि मोहले जी के लिए योजना बनाने में घोषणा करवाने में समय लग गया।

उपाध्यक्ष महोदय :- 16 बजकर 41 मिनट में हुआ, अभी देख लीजिए। पूरा समय है।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- 27 मिनट में तो 25 मिनट इन लोगों ने ले लिया। वे केवल दो मिनट तो बोले हैं।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- 16 मिनट में तो ओ 11 मिनट लईका के बारे में चर्चा होए हे।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिए 5-5 मिनट में समाप्त करिए।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं प्लांट के बारे में बतावत रहेव। जन सुनवाई और बात। हमर आदरणीय शिवरतन शर्मा जी ओ दिन बात बोलत रहिस हे। मैं कथव ऐ जगह बोले से कुछ फर्क पड़थे या नई पड़य, अभी तक समझ में नई आय। अभी तक कुछ एक्शन नहीं होए हे। सीधा खुलेआम सीधा सीधा बात हे, हमन जन सुनवाई के विरोध में हन। अगर कोई जाथय तो पूरा गांव के गांव एक-एक व्यक्ति, आप वहां जा के देख लेव, अइसे कोई व्यक्ति नई हे, कोई नई मिलय, ओ भूत परेत मत तक ओखर विरोध करे हे। वहां एक आदमी भी नई हे जो ओखर सपोर्ट करे होही। पता नहीं कहां से अनुमति मिल जथे। एक कहां से मिलत हे ? ऐ कोन करत हे। सीधा-सीधा बात हे, यहां पईसा ले के प्रमाण पत्र बेचे के काम होवत हे, ऐमा गांव वाले के कोई रोल नई हे।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिए समाप्त करें। राजमन बेंजाम जी।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- उपाध्यक्ष महोदय, हमरो पीड़ा ला थोकन सुन लेवव ना। अगर हमन मान लो कि जा के एखर विरोध करथन, अगर जनप्रतिनिधि जा के विरोध करथय, मोर साथ में 11 गांव के सरपंच, कम से कम 15 झन जनपद सदस्य, 2 जिला पंचायत और 3 विधायक वहां पे विरोध करने

वाल रहेन, ओखर बाद भी ओ प्लांट खुलीस, हमर उपर एफ.आई.आर. के धारा होईस हे। ए सरकार कहां हे? छत्तीसगढ़िया के बात करने वाला सरकार कहां हे। छत्तीसगढ़िया मन के सुनने वाला सरकार कहां हे ? ऐ सिर्फ दिखावा के सरकार हे। मैं तो पूरा-पूरा आरोप लगाता हूं, ए सरकार हा सिर्फ छत्तीसगढ़िया होए के [xx] करते हे, छत्तीसगढ़ के हित में कोई बात नई करत हे, छत्तीसगढ़िया मन ला नौकरी में कोई प्राथमिकता नई देवत हे। मैं आपके माध्यम से ए सरकार से निवेदन करत हंव कि गरीब मन के, मजदूर मन के हक ला हमर क्षेत्र में जा के देवावए। ऐ सरकार के सिर्फ दोहरा मापदंड हे। एक आखिरी बात करत हंव, कर्मचारी मन निवेदन करे बर आए रिहिस की हमर डी.ए. के बारे में बोल देतेस। अइसे बोल देथव होए जाए तो कुछु नहीं। लेकिन तभो आप मन से निवेदन हे, एक सरकार से निवेदन हे, कर्मचारी मन के डी.ए. बढ़ाय के बात हे, मैं सरकार से मांग करत हव चली चुली के अंतिम बेरा आ गे ता ऐला जात जात कम से कम कर्मचारी मन के डी.ए. ला आप मन बढ़ा देवव। सरकार में सिर्फ इही चलत हे, मोर मित्र आशीष भाई हा अभी बहुत अच्छा शायरी बोलिस हे। मैं ओखरो बर एक ठन शायरी कहात हंव। लूट सके लो लूट, सत्ता जाई छूट। धन्यवाद।

श्री राजमन बेंजाम (चित्रकोट) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं छत्तीसगढ़ शासन द्वारा प्रस्तुत विनियोग बजट के समर्थन में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। बस्तर में धर्मांतरण की बात हो रही है। हमारी सरकार को आज पांच वर्ष पूरे होने को जा रहा है।

समय :
5.00 बजे

नेता प्रतिपक्ष (श्री नारायण चंदेल) :- माननीय संसदीय कार्य मंत्री जी, माननीय अजय चंद्राकर जी ने जो प्रस्ताव रखा है क्योंकि अभी बहुत से सदस्य बाकी हैं और यदि आप सहमत होंगे तो माननीय मुख्यमंत्री का जवाब कल आ जाएगा। मैं और मुख्यमंत्री जी कल बोल लेंगे। आज सारे सदस्य अपनी बात को रख लें। यह आखिरी सत्र है। ठीक है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- आज सभी सदस्यों का भाषण हो जाएगा। प्रमुख-प्रमुख सदस्यों का भाषण हो चुका है।

श्री राजमन वेंजाम (चित्रकोट) :- उपाध्यक्ष महोदय, मैं छत्तीसगढ़ शासन द्वारा प्रस्तुत विनियोग विधेयक के समर्थन में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। हमारी सरकार को बने आज 5 वर्ष पूरे होने जा रहे हैं। इन 5 सालों में बस्तर जिले के किसी भी जगह धर्मान्तरण नहीं हुआ है। मैं आपको और पूरे सदन को बताना चाहता हूं कि यदि बस्तर में सबसे ज्यादा धर्मान्तरण हुआ है तो वह पिछले 15 वर्षों हुआ है। अभी मेरे क्षेत्र का जिक्र हुआ था। माननीय सदस्य ने सदन में इस बात को रखा था कि वहां पर धर्मान्तरण हो रहा है और प्रशासन के संरक्षण में धर्मान्तरण हो रहा है। बस्तर जिले के तोकापाल विकासखण्ड के बेजरीपदर गांव में 3 सर्च बने हैं-लखमापारा, पटेलपारा और राऊतपारा। मैं आपको उन सर्चों

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

के निर्माण का वर्ष बता देता हूं। लखमापारा में वर्ष 2007 में, पटेलपारा में वर्ष 2008 में और राऊतपारा में वर्ष 2012 में सर्च बना था। वहां धर्मान्तरण कब हुआ ? धर्मान्तरण तो इनके शासनकाल में हुआ। मैं विपक्षी साथियों को जगाना चाहता हूं कि बस्तर के भोले-भाले आदिवासियों पर धर्मान्तरण के नाम पर राजनीति करना बंद करें। वहां पर आर.एस.एस. और बी.जे.पी. वाले जो मरे हुए लोगों पर राजनीति कर रहे हैं, उसको बंद करें। बस्तर की जनता जागरूक है और वह जानती है। हमारे प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री जी ने बस्तर के बिहड़ों में रहने वाले आदिवासी बहनों के विवाह समारोह के लिए मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना लागू की है। इसस योजना के तहत् आज हमारे बस्तर की निर्धन कन्याएं लाभान्वित हो रही हैं। इस योजना के माध्यम से हर ब्लॉक में लगभग 50-60 जोड़े का विवाह हो रहा है। हमारी सरकार ने इस विवाह की राशि को 15 हजार रूपये से बढ़ाकर 25 हजार रूपये किया था और अब 25 हजार रूपये से बढ़ाकर 50 हजार रूपये किया है। पिछले 15 सालों से हमारे आंगनबाड़ी कार्यकर्ता और सहायिका सरकार से मांग कर रहे थे कि उनकी तन्ख्वाह बढ़ाएं क्योंकि उनको जीवन-यापन के लिए पैसे की कमी हो रही है इसलिए उनके मानदेय में बढ़ोतरी हो। मैं हमारे प्रदेश के मुखिया माननीय भूपेश बघेल जी को को धन्यवाद देना चाहता हूं कि उन्होंने आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के मानदेय को 6 हजार 500 रूपये से बढ़ाकर 10 हजार रूपये किया और आंगनबाड़ी सहायिकाओं के मानदेय को 3 हजार 250 रूपये से बढ़ाकर 5 हजार रूपये किया है। प्रदेश में जो पंचायती राज व्यवस्था लागू है वह पिछले 15 सालों में अपाहिज हो चुकी थी। वहां पर विकास के नाम पर कोई चीज नहीं थी। आज यदि किसी ने हमारे जिला पंचायत अध्यक्ष के लिए 15 लाख रूपये, जिला पंचायत उपाध्यक्ष के लिए 10 लाख रूपये, जिला पंचायत सदस्य के लिए 6 लाख रूपये, जनपद पंचायत अध्यक्ष के लिए 5 लाख रूपये, जनपद पंचायत उपाध्यक्ष के लिए 3 लाख रूपये, जनपद पंचायत सदस्य के लिए 2 लाख रूपये की विकास निधि देने का काम किया है तो हमारे प्रदेश के मुखिया माननीय भूपेश बघेल जी ने किया है। हमारे प्रदेश की की सरकार ने गांव के कोटवार, जिनको गांव का पुलिस कहा जाता है वह लोग वर्षों से अपनी मांग के लिए लड़ाई लड़ते रहे, लेकिन पिछले 15 साल में कही भी उनका मान-सम्मान नहीं हुआ, लेकिन मुख्यमंत्री जी ने उनके मानदेय में भी बढ़ोतरी की। इसके लिए मैं हमारी सरकार के मुखिया माननीय भूपेश बघेल जी को धन्यवाद देना चाहता हूं। जहां तक हमारी शैक्षणिक व्यवस्था की बात है और खासकर मैं बस्तर की बात कर रहा हूं कि बस्तर में आश्रम और छात्रावास पद्धति ही सबसे ज्यादा सफल है। वहां दूर जंगल और बिहड़ों में रहने वाले आदिवासी बच्चे हैं, वह लोग इन आश्रमों और छात्रावासों में आकर पढ़ाई करते हैं। हमारी सरकार ने उनकी शिष्यवृत्ति में भी बढ़ोतरी की है। पहले शिशुवृत्ति 700 रूपए मिलता था, उसको बढ़ाकर 1200 रूपए किया गया है । जो पोस्ट मैट्रिक, प्री मैट्रिक छात्रावास में विद्यार्थी रहते हैं, उनके लिए राशि की बढ़ोत्तरी की है और आश्रम, छात्रावास में रहने वालों के लिए जो राशि 1000 रूपए थी, उसे हमारी सरकार ने बढ़ाकर 1500 रूपये किया है । बस्तर की जो भौगोलिक संरचनाएं हैं, उसमें धान

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

की खेती कम होती है। वहां पर पहाड़ी एरिया होने के नाते मरान एरिया सबसे ज्यादा है । वहां के लिए हमारी सरकार ने बहुत बड़ी योजना निकाली और कोदो, कुटकी और रागी को समर्थन मूल्य में खरीदने की योजना बनाई है, यह हमारे आदिवासियों के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है । यही नहीं, कोदो, कुटकी और रागी बोने वालों के लिए हमारी सरकार ने इनपुट सब्सिडी भी 9 हजार रूपए प्रति एकड़ देने का काम कर रही है ।

उपाध्यक्ष महोदय, बस्तर में जो सामाजिक भवन है, जहां विवाह या अन्य सामाजिक गतिविधियां होती हैं, उसके लिए हमारी सरकार ने प्रत्येक समाज के लिए सामाजिक भवन देने का काम किया है । इसका सबसे बड़ा उदाहरण है कि हमारी सरकार ने हमारे बस्तर संभाग में सबसे ज्यादा रहने वाले कोया समाज के लिए 5 एकड़ जमीन और 5 करोड़, 6 लाख रूपए सामाजिक भवन बनाने के लिए दिया है । हमारी सरकार के द्वारा हमारे बतरा समाज के लिए भी दो करोड़ रूपए, महरा समाज के लिए भी दो करोड़ रूपए और सर्व आदिवासी समाज के लिए शहर के हृदय स्थल में 4 करोड़ रूपए के भवन बनाने का काम हमारी सरकार ने किया है ।

उपाध्यक्ष महोदय, हमारे विपक्ष के साथी तेंदूपत्ता के बारे में कह रहे थे । जंगल में रहने वाले हमारे आदिवासियों की आय का प्रमुख संसाधन तेंदूपत्ता है । हमारी सरकार ने मार्च के तीसरे सप्ताह और जून के पहले सप्ताह में तेंदूपत्ता खरीदने का समय निर्धारित किया है । विपक्ष के साथी तेंदूपत्ता तोड़ने वालों के लिए क्या योजना बनाएंगे ? ये लोग जूता-चप्पल की ही योजना बनाएंगे । उपाध्यक्ष महोदय, आप भी बस्तर क्षेत्र से आते हैं । तेंदूपत्ता तोड़ने के लिए जाते समय कोई चप्पल-जूता नहीं पहनता, इस बात को इन लोगों को नोट कर लेना चाहिए । तेंदूपत्ता तोड़ने के लिए आप झाड़ में जूता पहनकर कैसे चढ़ोगे । नीचे जो छोटी-छोटी शाखा रहेगी, उससे जरूर तेंदूपत्ता तोड़ लेंगे, लेकिन झाड़ में आपको जूता उतारकर चढ़ना पड़ेगा । हमारी सरकार ने तेंदूपत्ता का रेट 2500 रूपये से बढ़ाकर 4000 रूपये किया है । यह हमारे आदिवासियों के लिए बहुत बड़े गौरव की बात है । बस्तर जिले में मैं पड़ोस में आता हूं, मेरा विधान सभा क्षेत्र गीदम से लगा हुआ है । हमारी सरकार ने गीदम में मेडिकल कॉलेज की स्थापना करने की घोषणा बजट में की है, उसके लिए मैं मुख्यमंत्री जी को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं । क्योंकि इस क्षेत्र के आसपास बीजापुर, दंतेवाड़ा, कोंटा और मेरा चित्रकोट विधान सभा क्षेत्र भी आता है, बारसूर इससे लगा हुआ है । वह पूरा जंगली एरिया है । ऐसे पिछड़े क्षेत्रों में हमारी सरकार ने मेडिकल कॉलेज की स्थापना करने जा रही है, यह हमारे आदिवासी एरिया के लिए हमारे सरकार की बहुत बड़ी उपलब्धि है ।

उपाध्यक्ष महोदय, बस्तर में हमारे आदिवासियों के लिए हमारी सरकार ने बस्तर फाईटर योजना लागू की है । यह योजना हमारे बस्तर के 7 जिले में लागू है । अभी हमारी सरकार ने 7 जिले में लगभग हर जिले में 300-300 फाईटर की भर्ती की है । बस्तर में 300, सुकमा में 300, दंतेवाड़ा में

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

300, बीजापुर में 300, नारायणपुर में 300, कोण्डागांव में 300 और कांकेर में 300 फाईटर की भर्ती की है । बस्तर के जो बेरोजगार हैं, जो जंगल के बीहड़ एरिया में रहते हैं, ऐसे हमारे आदिवासी बच्चें लोग बस्तर फाइटर पुलिस में भर्ती होकर अपनी प्रतिभाएं दिखा रहे हैं।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अभी बेरोजगारी भत्ता देने की बात आ रही थी। हमारी सरकार ने बेरोजगारी भत्ता देने की योजना बनाई है। पिछले 15 सालों से ये लोग एक भी पद पर भर्ती नहीं किये थे ना ही बेरोजगारी भत्ता दिए थे। हमारी सरकार ने छत्तीसगढ़ के बेरोजगार युवक और युवतियों को 2500 रूपया बेरोजगारी भत्ता देने का काम कर रही है, यह हमारी सरकार की बहुत बड़ी उपलब्धि है।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, राजमन भाई समाप्त करें। श्री धरम लाल कौशिक साहब।

श्री राजमन बेंजाम :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपने बोलने के लिए मौका दिया, आपको इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। जय हिन्द, जय भारत, जय छत्तीसगढ़।

श्री धरम लाल कौशिक (बिल्हा) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इस सरकार के कार्यकाल का 5वां बजट पारित हो गया है और यह इस सरकार के कार्यकाल का अंतिम विनियोग विधेयक है, जिस पर मैं चर्चा करने के लिए खड़ा हुआ हूं और मैं इसका विरोध करता हूं।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, सरकार में आने से पहले कांग्रेस के द्वारा बहुत सी घोषणाएं की गई थीं, बहुत सारी उम्मीदें जगाई गईं थीं, लोगों की अपेक्षाएं बढ़ाई गईं थी। अपेक्षा बढ़ाने के बाद जब हम उन बातों को रखते थे तो सरकार की ओर से केवल एक ही जवाब रहता था कि हम 5 साल के लिए चुनकर आये हैं। लेकिन अब आपका 5 साल का कार्यकाल खत्म हो रहा है। इस विनियोग विधेयक के बाद, फिर से दोबारा बजट प्रस्तुत करने, फिर विनियोग विधेयक पर भाषण देने के लिए आपके पास समय भी नहीं है। अब हम उसके बाद देखेंगे कि लोगों को जो सपने दिखाये गये, जो उम्मीदें जगाई गई। आज छत्तीसगढ़ में चारों तरफ घोर निराशा का वातावरण है। आप जो घोषणा-पत्र जारी किये थे, वह पूरा नहीं कर पाये। बाद में जिन योजनाओं की घोषणा की, उनको पूरा नहीं कर पाये और पूरे छत्तीसगढ़ को इस सरकार ने छलने का काम, ठगने का काम किया है।

श्री अमरजीत भगत :- धरम भईया, प्रणाम। बात सुन लीजिये। छत्तीसगढ़ की एक पहचान है, हम सब मानते भी हैं और पूरा देश मानता है कि छत्तीसगढ़ धान का कटोरा है। यहां 80 से 85 प्रतिशत लोग खेती आधारित काम करके अपना जीवन-यापन करते हैं। अगर उनके लिए काम हो रहा है, अगर उनके धान का सबसे ज्यादा कीमत मिल रहा है, तो इसमें लोग अवसाद में कहां गये ?

श्री धरमलाल कौशिक :- आप उसके लिए [xx] को धन्यवाद दो। अभी विषय में आता हूं।

श्री अमरजीत भगत :- [xx] को ? जिन्होंने धान खरीदी के लिए एक पैसा नहीं दिया।

श्री धरमलाल कौशिक :- [xx] को धन्यवाद दो।

श्री अमरजीत भगत :- धान खरीदी के लिए एक पैसा नहीं दे रहे हैं। फिर यू.पी. बनारस में क्यों खरीदी नहीं हो रहा है ?

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मुख्यमंत्री जी छत्तीसगढ़ माडल की बात करते हैं। यहां से लेकर अमेरिका तक ता नहीं कहां-कहां जाकर भाषण देकर आये हैं। भाषण देकर आने के बाद स्वाभाविक रूप से चर्चा करते हैं कि गुजरात माडल फेल हो गया, हमारा छत्तीसगढ़ माडल पास हो गया। मैं अपनी बात वहीं से शुरू करूंगा। अब छत्तीसगढ़ माडल कहने के बजाय भूपेश माडल बोलू, तो ठीक रहेगा। क्योंकि हम लोग भी छत्तीसगढ़ के वासी हैं। छत्तीसगढ़ राज्य का किसी ने निर्माण किया है, कांग्रेस नहीं, बल्कि भारतीय जनता पार्टी के तात्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी जी ने निर्माण किया है। इसलिए मैं छत्तीसगढ़ माडल की बात नहीं करूंगा। छत्तीसगढ़ हम लोगों ने बनाया है।

श्री अमरजीत भगत :- भईया, भूपेश माडल सफल है और धरम कौशिक माडल फेल है। कभी भी किसी को नेता प्रतिपक्ष से नही हटाते, माडल फेल हो गया है।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इस राज्य को बनाने वाले अटल बिहारी बाजपेयी जी हैं। छत्तीसगढ़ बनने के बाद पहली बार कांग्रेस की सरकार बनी। उसके बाद जब निर्वाचन हुआ तो भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी और 15 साल तक भारतीय जनता पार्टी की सरकार चली है। वास्तव में छत्तीसगढ़ को गढ़ने का काम किया, छत्तीसगढ़ का बुनियाद रखने का काम किया, छत्तीसगढ़ को विकास माडल तक पहुंचाने का काम किया तो भारतीय जनता पार्टी की सरकार डॉ. रमन सिंह ने, उनके नेतृत्व में जो सरकार चली, उस सरकार ने यह काम किया है। लेकिन कांग्रेस की सरकार आने के बाद में छत्तीसगढ़ को क्या हो गया है ? हम जो कभी तुलना करते थे, हरियाणा से तुलना करते थे, हम पंजाब से तुलना करते थे, गुजरात से तुलना करते थे, झारखंड, वनांचल जैसे राज्यों का निर्माण एक साथ हुआ था, हम उन तीन प्रदेशों से तुलना नहीं करते थे, हम तुलना करते थे जो विकसित प्रदेश है, विकसित प्रदेशों के साथ में छत्तीसगढ़ की तुलना की जाती थी । मैं गौरव के साथ में इस बात को कह सकता हूँ कि सतत रूप से विकास की दिशा में छत्तीसगढ़ को पहुंचाने का काम भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने किया है, डॉ.रमन सिंह की सरकार ने किया है । आज कांग्रेस की सरकार आने के बाद जब मुख्यमंत्री जी छत्तीसगढ़ मॉडल की बात करते हैं, छत्तीसगढ़ मॉडल को लेकर बिहार गये, इसे बिहार के लोगों ने रिजेक्ट कर दिया । उसके बाद में मुख्यमंत्री जी आसाम गये थे, आसाम के लोगों ने खारिज कर दिया, उसके बाद में गये थे उत्तरप्रदेश, उत्तरप्रदेश में लोक सभा में गये तो दो को एक करके आ गये और विधान सभा में मॉडल को लेकर गये तो 7 को 2 करके आ गये ।

श्री अमरजीत भगत :- हिमांचल का भी बता दीजिए ।

श्री धरमलाल कौशिक :- उपाध्यक्ष महोदय, हिमांचल में आपका कोई योगदान नहीं है । हिमांचल की प्रकृति है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अमरजीत भगत :- यह तो गलत बात है । हिमांचल में सरकार बन गया, उसके बारे में बोलिये ।

श्री धरमलाल कौशिक :- हिमांचल और राजस्थान में नेचर है बदलने का और राजस्थान में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बन रही है । मैं आपको अभी से नोट करा देता हूँ ।

श्री देवेन्द्र यादव :- और छत्तीसगढ़ का नेचर ? आप मान लीजिए कि 15 साल के लिये फ्री हो ।

श्री धरमलाल कौशिक :- पंजाब में मॉडल को लेकर गये थे, इनकी सरकार पंजाब में चल रही थी, इस मॉडल को लेकर भूपेश बघेल जी गये थे, इस सरकार को भी लोगों ने बर्खास्त कर दिया है ।

श्री अमरजीत भगत :- धरम भईया आपके साथ इतना नाइंसाफी हुआ, आप इसके बाद भी बोलेंगे ?

श्री धरमलाल कौशिक :- आप उत्तराखंड गये, हम लोग यहां चर्चा में ही थे, संसदीय कार्यमंत्री जी बैठे हुये हैं, शपथ दिलाने के लिये गये थे, एअरपोर्ट से मुख्यमंत्री को वापस आना पड़ा और उत्तराखंड में भी लोगों ने इस मॉडल को रिजेक्ट कर दिया । आज मैं कह सकता हूँ कि जिस मॉडल की बात आप कर रहे हैं, ढिंढ़ोरा पिट रहे हैं, उन्होंने आपको खारित किया है । मॉडल यदि कोई चला है, गुजरात मॉडल चला है, मोदी जी ने जो काम किया है, आज पूरे भारत में भारतीय जनता पार्टी की सरकार चल रही है ।

श्री अमरजीत भगत :- यहां मोदी जी के बारे में चर्चा चल रही है क्या ? यहां मोदी जी के सेंट्रल गवर्नमेंट के बारे में चर्चा चल रही है क्या ?

श्री देवेन्द्र यादव :- फिर कोई फेरबदल होने वाला है क्या उपाध्यक्ष महोदय ? पार्टी की तारीफ चल रही है, यहां कुछ फेरबदल होने वाला है लगता है ।

श्री धरमलाल कौशिक :- आपके पास क्या है और छत्तीसगढ़ को आपने क्या से क्या बना दिया ? मैं इसी बात की चर्चा कर रहा था । एक समय का जो छत्तीसगढ़ फलता-फुलता छत्तीसगढ़ था । मैं कुछ बिन्दुओं को रखना चाहता हूँ कि कांग्रेस के सरकार बनने के बाद में हमारे प्रदेश की इन्होंने क्या स्थिति की है ? जिस बात को लेकर मुख्यमंत्री प्रदेशों में जाते हैं, गुजरात मॉडल की बात करते हैं, छत्तीसगढ़ मॉडल की बात करते हैं, मैं तो छत्तीसगढ़ मॉडल की बात ही नहीं करता हूँ, भूपेश मॉडल की बात करता हूँ । छत्तीसगढ़ राज्य बनाया तो भारतीय जनता पार्टी ने बनाया है, इसलिये मैं कुछ बिन्दुओं के आधार पर आपको बताना चाहता हूँ । वर्ष 2022-2023 राजकोषीय घाटा, राजकोषीय घाटा छत्तीसगढ़ का जीएसडीपी 3.3 प्रतिशत है और गुजरात का 1.6 प्रतिशत है । वर्ष 2022 तक छत्तीसगढ़ की बकाया देनदारी जीएसडीपी का 30 प्रतिशत, जबकि गुजरात का 21 प्रतिशत है । बजट अनुमानों की विश्वसनीयता, जो अनुमान लगाये जाते हैं, उसमें 5 साल के लिये कहां पर खड़े हुये हैं, विगत 5 वर्षों में

15 प्रतिशत अनुमान से कम राजस्व की प्राप्ति, गुजरात में 7 प्रतिशत अनुमान से कम प्राप्ति, खर्चे व्यय की जानकारी, छत्तीसगढ़ में विगत 5 वर्षों में कुल बजट प्रावधान का 17 प्रतिशत राशि कम खर्च हुआ है, जबकि गुजरात में मात्र 9 प्रतिशत कम खर्च हुआ है, छत्तीसगढ़ में 5 वर्षों में बजट के प्रावधानों में पूंजीगत व्यय 31 प्रतिशत कम खर्च हुआ है, गुजरात में 15 प्रतिशत कम खर्च हुआ है । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आप पूंजीगत व्यय करेंगे तो आपका इन्फ्रास्ट्रक्चर का निर्माण होगा, आपके अस्पताल बनेंगे, आपके स्कूल बनेंगे, आपके बांध बनेंगे, आपकी सड़कें बनेंगी, लेकिन पूंजीगत व्यय नहीं होगा तो आपका नरवा, घुरवा, बारी आयेगा । आप इसके अलावा कुछ नहीं ला सकते, जो आपके पास में है । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आप वर्ष 2022-2023 के बजट में देखें । समाज कल्याण और पोषण के क्षेत्र में, छत्तीसगढ़ ने 3.7 प्रतिशत रखा और गुजरात ने 3.9 प्रतिशत रखा। ऊर्जा के क्षेत्र में, छत्तीसगढ़ ने मात्र 4.5 प्रतिशत रखा तथा गुजरात में 6.2 प्रतिशत बजट आवंटित की गयी। इसी प्रकार से हमारे जो शहरी क्षेत्रों का बजट है, यहां मंत्री जी बैठे हुए है, आज शहरों में विकास नहीं हो रहा है, विकास की गति रूक गयी है, पहिया रूक गया है, थम सा गया है और हम लगातार देख रहे हैं कि शहरों में बदहाली की स्थिति है क्योंकि बजट नहीं देना और उसके बाद काम नहीं होना। शहरी विकास में, छत्तीसगढ़ राज्य ने जी.एस.टी.डी. का 2.5 प्रतिशत रखा और गुजरात ने 5.8 प्रतिशत रखा। प्रधानमंत्री आवास योजना की बात करना चाहूंगा, मैं फिर उस बात में आ रहा हूं कि पूरे हिन्दुस्तान में प्रधानमंत्री आवास योजना बना कर तैयार कर दिये, लेकिन छत्तीसगढ़ को जो 16 लाख का लक्ष्य रखा गया था, उस 16 लाख को मुख्यमंत्री जी भ्रमित करने का काम किये और उस 16 लाख को हमारे पंचायत मंत्री ने दिग्भ्रमित करने का काम किया। लेकिन मेरे प्रश्न में विधान सभा में जो जवाब आया है..।

श्री अमितेश शुक्ल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह चंद्राकर जी ध्यान में है या सो रहे हैं।कौशिक जी, वह आपके भाषण को सुन रहे हैं या नहीं सुन रहे हैं, यह आप देखिये।

श्री धरमलाल कौशिक :- किसको बृजमोहन जी को ?

श्री अमितेश शुक्ल :- नहीं अजय चन्द्राकर जी को।

श्री धरमलाल कौशिक :- आप अजय चन्द्राकर जी को मत देखिये। वह चिंतन करते रहते हैं और उसके बाद समय आने पर ठीक से देते हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- वह देख रहे हैं कि कौन-सा नंबर आयेगा तो कैसे देना है।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैंने कहा कि 16 लाख प्रधानमंत्री आवास। मैं एक बार फिर से पढ़ना चाहूंगा कि आप अपनी अक्षमता को छिपाने के लिये प्रदेश की जनता को दिग्भ्रमित न करें। इस बात को स्वयं मुख्यमंत्री जी ने दिग्भ्रमित करने का काम किया है और हमारे पंचायत मंत्री श्री रविन्द्र चौबे जी ने किया है। ग्रामीण आवास योजना वित्तीय वर्ष 2019-20 से 31.01.2023 तक केंद्र सरकार के द्वारा प्रधानमंत्री आवास योजना हेतु 16 लाख 60 हजार 999 आवास

का लक्ष्य रखा गया। आपने 13 लाख 52 हजार 51 आवास वापस कर दिया। राज्य सरकार द्वारा 03 लाख 08 हजार 915 आवास स्वीकृत किये गये। उसमें से आपने 82 हजार 972 आवास पूर्ण किये, 68 हजार 128 आवास अपूर्ण है और आपने 01 लाख 57 हजार 15 आवास बनाना प्रारंभ ही नहीं किया। यह मैं नहीं बोल रहा हूं, यह पंचायत मंत्री जी के द्वारा जवाब दिया गया है। इस सदन के अंदर मंत्रियों के द्वारा जवाब देने के बाद इसको झुठलाने का काम किया जा रहा है, मुख्यमंत्री जी के द्वारा किया जा रहा है। आपने जो जवाब दिया है, कम से कम उस जवाब को तो ठीक से रखिये। आप जवाब देने के बाद पलटी मारने का काम करते हैं। कांग्रेस की सरकार द्वारा इस प्रदेश की जनता को गुमराह करने का काम किया जा रहा है।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपको विद्युत के बारे में बताना चाहूंगा। विद्युत के क्षेत्र में हमारी क्या स्थिति है। आपने हॉफ छूट की बात की और हॉफ छूट देने के बाद आपने विद्युत कर और शुल्क के रूप में जो टेक्स लगाया है, वह जी.एस.डी.पी. का 0.67 प्रतिशत है और गुजरात में 0.44 प्रतिशत है।

<u>सदन को सूचना</u>

उपाध्यक्ष महोदय :- माननीय सदस्यों के लिये स्वल्पाहार की व्यवस्था लॉबी स्थित कक्ष में एवं पत्रकारों के लिये प्रथम तल पर की गयी है। कृपया सुविधानुसार स्वल्पाहार ग्रहण करें।

<u>शासकीय विधि विषयक कार्य (क्रमश:)</u>

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं कुछ दो-तीन उदाहरण और देना चाहता हूं फिर मैं आगे बढ़ूंगा। छत्तीसगढ़ का खुद का राजस्व, यदि हम वर्ष 2022-23 के आंकड़े को देखेंगे तो छत्तीसगढ़ में जो राजस्व की प्राप्ति होनी है, अपना स्वयं का कर राजस्व 33 प्रतिशत है और आप गुजरात का देखेंगे तो वहां का राजस्व 63 प्रतिशत है। केंद्र सरकार के द्वारा छत्तीसढ़ को 50 प्रतिशत दिया जा रहा है और गुजरात में मात्र 28 प्रतिशत दिया जा रहा है। ये आबकारी के बारे में बड़ी-बड़ी बातें करते हैं, शराबबंदी के बारे में बातें आती है। उन्होंने शराबबंदी का लक्ष्य रखा है लेकिन इस साल की जो आमदनी है, वह पिछले साल से ज्यादा है। मतलब हम एक-दो साल पहले की तुलना करेंगे तो 32 प्रतिशत ज्यादा आमदनी हुई है। आप शराब में आमदनी की बात कर रहे हैं। इसके बाद हमारी जो ब्याज मुक्त ऋण की कैपेसिटी है, उस कैपेसिटी के आधार पर हम लोग जितना ले चुके हैं। उसके बाद हम यदि बाजार को और बजट को देखेंगे तो उसके अनुपात में यह सरकार विकास की दिशा में नहीं जा रही है बल्कि प्रदेश को पीछे धकेलने का काम किया गया है। हम लोग अपराध के बारे में बहुत चर्चा करते

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

हैं। आज भी हमने छत्तीसगढ़ के अपराध के बारे में चर्चा की, आखिर इस प्रदेश में अपराध में वृद्धि क्यों हो रही है? सरकार अपराध को रोकने में क्यों असफल है? क्या सरकार ने माफियाओं के सामने घुटने टेक दी है? सरकार के संरक्षण में जो खनिज माफिया, शराब माफिया, रेत माफिया से लेकर कार्य हो रहा है यहां अनैतिक, अवैध कार्य जो रहे हैं और उसके कारण से जो अपराध बढ़ रहे हैं। मैं गुजरात और यहां के आंकड़े बता दूं। गुजरात इतना बड़ा प्रदेश है, मैं उत्तर प्रदेश से तुलना कर सकता हूँ और बहुत सारे प्रदेशों से तुलना कर सकता हूँ। मैं केवल एक प्रदेश से तुलना करता हूँ। जनसंख्या लगभग 7 करोड़ के अनुपात में ...।

खाद्य मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- आप यह कहां की रिपोर्ट पढ़ रहे हैं?

श्री धरमलाल कौशिक :- यह आपकी समझ में नहीं आएगा।

श्री अमरजीत भगत :- क्यों ? मेरी समझ में नहीं आएगा। आप कौन सी रिपोर्ट पढ़ रहे हैं, आप बताईए?

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह नेशनल क्राईम ब्यूरो की रिपोर्ट है। अमरजीत जी आपको कक्ष मिला हुआ है आप उसमें जाएंगे और अपने पी.ए. को नेशनल क्राईम ब्यूरो की रिपोर्ट निकालने के लिए कहेंगे। वह आपको रिपोर्ट निकालकर, आपके हाथ में दे देंगे। गुजरात की जनसंख्या 7 करोड़ है और छत्तीसगढ़ लगभग 2 करोड़ 97 लाख यही मानते हैं। गुजरात में हत्या 1.4 प्रतिशत है छत्तीसगढ़ में हत्या 3.4 प्रतिशत है। गुजरात में आत्महत्या प्रति लाख जनसंख्या वार 1.2 प्रतिशत है छत्तीसगढ़ में 2.3 प्रतिशत है। गुजरात में अनाचार की घटना 1.8 प्रतिशत है छत्तीसगढ़ में 6.9 प्रतिशत है। गुजरात में अपहरण 2.3 प्रतिशत है छत्तीसगढ़ में 9.1 प्रतिशत है। गुजरात में चोरी 6.5 प्रतिशत है छत्तीसगढ़ में 13.4 प्रतिशत है। गुजरात में सड़क दुर्घटना में मृत्यु 9.6 प्रतिशत है छत्तीसगढ़ में 15.8 प्रतिशत है। इसलिए मैंने कहा, यह जो माननीय भूपेश बघेल जी के जो मॉडल की बात की स्वीकार्यता की बात बोल रहे हैं। मैंने चुनाव के माध्यम से बताया कि पूरे देश में भूपेश बघेल के मॉडल को अस्वीकार कर दिया है। यदि हम बजट के दृष्टिकोण से देखेंगे और अपराध के दृष्टिकोण से देखेंगे तो आखिर हमारा छत्तीसगढ़ क्यों आगे बढ़ रहा है इस पर सरकार को विचार करना चाहिए। मैं इस प्रदेश में बढ़ते प्रति व्यक्ति ऋण भार के संबंध में कहना चाहूंगा कि वर्ष 2018 में प्रति व्यक्ति ऋण भार 14 हजार 457 रूपए था और वर्ष 2023 में 27 हजार, 341 रूपए हो गया। आप बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। तो आपके द्वारा बहुत अच्छा काम करने के बाद लोगों के ऊपर ऋण का भार क्यों बढ़ते जा रहा है? यह ऋण का भार कम होने के बजाए लोगों पर ऋण भार बढ़ रहा है। मतलब आप जो लोन ले रहे हैं उसका जो सदुपयोग होना चाहिए, जो विकासकार्यों में खर्च होना चाहिए, उसके बजाए वह राशि कहां जा रही है? यह बढ़ता हुआ ऋण भार इस बात को दर्शा रहा है। इस विधान सभा के माध्यम

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

से अनके अवसरों पर चाहे वह ध्यानाकर्षण हो, प्रश्न हो, सरकार की जो बातें हैं यहां पर हमने उनकी पोल खोलने, उजागर करने का काम किया है।

समय :

5.29 बजे **(सभापति महोदय (श्री बघेल लखेश्वर) पीठासीन हुए)**

मानननीय सभापति महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी ने 4 लाख 65 हजार का होर्डिंग्स लगाया था। माननीय मंत्री जी आप लोगों ने उस 4 लाख 65 हजार रूपए के होर्डिंग्स में जवाब भी सुना है। उस समय आप लोग थे आप लोगों ने सिर को ऐसे झुकाकर रखा था। यह आप लोगों की स्थिति थी।

मानननीय सभापति महोदय, इस सदन में केवल जो गोबर की बात करते हैं। आपने कितनी बहादुरी कर ली, केवल 211 करोड़ रूपए। यदि आप प्रधानमंत्री आवास बनाते तो आपको कितनी राशि मिलती? छत्तीसगढ़ लगभग 11 हजार करोड़ रूपए की राशि आती है।

श्री रामकुमार यादव :- यही बात तो हमन कथन। [xx] हा गरीब ला 15-15 लाख रूपए खाता में देतिस तो हमन ला काय जरूरत पड़तिस।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, मैंने कहा कि छत्तीसगढ़ के विकास कार्य से लोगों को मकान, आवास मिलता, बल्कि सारे लोगों तक यह राशि पहुंचती। यह 2 करोड़ के गोबर में पूरे हिन्दुस्तान में बढ़ा चढ़ाकर बता रहे हैं। प्रधानमंत्री आवास योजना में यह जो 11 हजार करोड़ रुपये आने वाले थे उसको रोकने का काम इस प्रदेश के मुख्यमंत्री, पंचायत मंत्री ने किया है। इनका जन-घोषणा पत्र अब मैं पढ़ना नहीं चाहता। क्योंकि अपने जन-घोषणा पत्र के बारे में न मुख्यमंत्री को मालूम है और न ही उसकी क्रियान्वयन समिति को मालूम है। और जो घोषणा पत्र बनाये, उस घोषणा पत्र का कहीं पर आज उसका अंग भी नहीं हैं। जिनको घोषणा-पत्र के बारे में मालूम हैं, जो क्रियान्वयन कर सकें, यह सरकार के अंतरकलह का परिणाम हमारे सामने दिखाई दे रहा है।

माननीय सभापति जी, माननीय मुख्यमंत्री जी ने कहा था कि हम लोकपाल विधेयक लेकर आयेंगे और लोकपाल विधेयक के अंतर्गत मुख्यमंत्री भी रहेंगे, नेता प्रतिपक्ष भी रहेंगे। आखिर आप यह विधेयक क्यों नहीं लाये? आप विधेयक लाने से क्यों घबरा रहे हैं? इनको विधेयक को लाना चाहिए। महिला सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कानूनों का सख्ती से पालन किया जायेगा। मैं केवल एक प्रदेश की तुलना किया कि हम लोग घटनाओं में कहां पर हैं। इस प्रदेश में जिस प्रकार से घटनायें हो रही हैं, वास्तविक रूप से सरकार को जो चिंता करनी चाहिए और जिस कार्य की प्राथमिकता होनी चाहिए, जिन बातों को आपने लिखा है, उनका जो क्रियान्वयन होना चाहिए, उससे सरकार कोसो दूर है। आज विनियोग है इसलिए मैं फिर एक बार मुख्यमंत्री जी को कहना चाह रहा हूं कि आपने जो पहली बार प्रदेश अध्यक्ष होने के नाते घोषणा की, विनियोग अंतिम समय है, इसमें आप घोषणा कर सकते हैं। उन

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

संविदा कर्मचारियों के लिए, उन अधिकारियों, कर्मचारियों के डी.ए. के लिए, उन दैनिक वेतन भोगियों के लिए, चाहे विद्या मितान हो, सहायक शिक्षक हों, आपके अधिकारी कर्मचारियों के फेडरेशन के जो लगातार प्रदर्शन हो रहे हैं, कोटवारों के प्रदर्शन हो रहे हैं, आपने जिनके लिए घोषणा की, वह रसोइयों के लगातार प्रदर्शन हो रहे हैं। आखिर आप क्या बताना चाहते हैं, आपका इतना अच्छा बजट रहा तो आखिर यह लोग प्रदर्शन करने के लिए सडक में क्यों उतरे हैं?

सभापति महोदय :- चलिये समाप्त करें। आपको बोलते हुए 20 मिनट से अधिक हो गये हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, 5 मिनट में खत्म कर रहा हूं। आपका इतना अच्छा बजट रहा है तो लोग सड़कों पर प्रदर्शन करने के लिए क्यों उतरे हुए हैं ? इसलिए मैं मुख्यमंत्री जी से कहना चाहता हूं कि आपने जो घोषणायें की हैं, यह अंतिम अवसर है और विनियोग के माध्यम से आप उसको घोषित करें और लोग जो सड़कों में प्रदर्शन कर रहे हैं, अपने घर हंसी-खुशी चले जायें। यह तोहफा आज मुख्यमंत्री को देना चाहिए। मैंने शराबबंदी की बात कही है।

माननीय सभापति महोदय, खिलाड़ियों की बात बहुत हुई है। हमारे उमेश पटेल जी नहीं हैं। मैं पूछना चाहता हूं कि आपने छत्तीसगढ़ ओलंपिक की बात की, आपने खिलाड़ियों के प्रोत्साहन की बात की। आपने 03 साल में किसी खिलाड़ी को इस काबिल भी नहीं समझा कि वह उत्कृष्ट खिलाड़ी हैं, आपने घोषित भी नहीं किया। हम लोगों की सरकार के समय में उत्कृष्ट खिलाडी 1 नहीं, 11, 12, 13 लोगों को उत्कृष्ट खिलाड़ी घोषित करते थे। केवल उत्कृष्ट खिलाड़ी घोषित ही नहीं करते थे बल्कि उनके उत्साहवर्धन के लिए जो उनका सम्मान किया जाता था, उसके बाद में उनको नौकरी दी जाती थी। लेकिन छत्तीसगढ़ में खिलाड़ियों का अकाल पड़ गया है। 400 लोगों को नौकरी दिये हैं, लेकिन 400 लोगों को नौकरी देने के बाद में जो उनका अधिकार है, उत्कृष्टता के आधार पर खिलाडियों का जो सम्मान होना चाहिए, पुरस्कार मिलना चाहिए। आखिर यह सरकार जब खेल की, छत्तीसगढ़िया ओलंपिक की बात करती है तो यह क्यों नहीं कर पा रही है ? आप केवल छलने का काम करेंगे। माननीय सभापति महोदय, आपको मालूम है कि बेरोजगारों के ऊपर बहुत चर्चा हुई है। मैं विस्तार से उस पर जाना नहीं चाहता। लेकिन मैं यह कहना चाहता हूं।

खाद्य मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- अभी खेल में एक जन को डी.एस.पी. बनाये हैं।

सभापति महोदय :- माननीय मंत्री जी, बैठिये। उनको बोलने दीजिए।

श्री धरमलाल कौशिक :- सभापति महोदय, मैं यह कहना चाहता हूं कि मुख्यमंत्री कौशल विकास योजना की दुर्गति आप छत्तीसगढ़ में देखे हैं। 16 मार्च को विधान सभा में इनके द्वारा बताया गया, उसके लिए 2 करोड़ 54 लाख रुपये बजट रखा है। जिलों को 26 करोड़ रुपये बांटा और 22 करोड़ रुपये खर्च हुआ। यह इनकी जागरूकता है। आज 26 जलिो में लाइवलीहुड कॉलेज संचालति हैं और इन लाइवलीहुड कॉलेज को संचालित करने के बाद में इनकी जो स्थिति बन रही है। जिस प्रकार से उनका

आगे बढ़ाने काम है, प्रशिक्षण देना और प्रशिक्षण देने के बाद में उनकी रोजगार की व्यवस्था और रोजगार के बाद में नौकरी देने की व्यवस्था जो व्यवस्थित होनी चाहिए, इसके लिए आप जो बजट दे रहे हैं, उस बजट को खर्च नहीं कर पा रहे हैं। आप जो बजट प्रावधान किये हैं, उस बजट को जिलों में नहीं भेज रहे हैं। आखिर यह बजट किसके लिए प्रावधान किये गये हैं और बजट को नहीं भेजने का क्या कारण है? मैं इनके भ्रष्टाचार के मामले को थोड़ा-सा बताना चाहूंगा । मैं केवल एक विभाग के दो-तीन मामले को बताना चाहता हूं। जो मल्टी विटामिन कैप्शुल की खरीदी हुई, वह बलरामपुर में 28 पैसे में खरीदी हुई है और सी.जी.एम.सी. के द्वारा उसकी 5 रूपये 54 पैसे में खरीदी हुई है। 30 करोड़ रूपये की खरीदी हुई है और 25 करोड़ का दवाई माफियाओं के द्वारा डकारने का काम किया गया है। पैरा सीटामाल दवाई सी.जी.एम.एस;सी. ने 38 पैसे में खरीदी की और बीजापुर के द्वारा उसको 1 रूपये 92 पैसे में खरीद की गई। आपके जिले में खरीदी हो रही है। आपके प्रदेश में खरीदी हो रही है। इतना अंतर कि जहां 38 पैसा रेट है, वहां पर 5 रूपये 54 पैसा है।

सभापति महोदय :- समाप्त करें।

श्री धरमलाल कौशिक :- यह सरासर लूट है। आयुर्वेदिक दवाईयों की खरीदी हुई। आयुर्वेदिक दवाईयों के जो निर्माता हैं, उसमें उनके निविदा को खोलने का काम किया, जो अपात्र हैं और कुछ अधिकारियों को खुश करने के लिए, मनचाहे को देने के लिए यह निविदा किया गया, लेकिन बाद में जब हाउस से जब शिकायत हुई है तो उसके बाद में उस निविदा को रद्द करना पड़ा है। धर्मांतरण और नक्सली।

सभापति महोदय :- इस विषय में बहुत से माननीय सदस्य लोग बात उठाये हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- मैं 5 मिनट ही बात किया हूं। सभापति महोदय, मैं आपका 5 मिनट से ज्यादा समय नहीं लूंगा। नक्सली के बारे में कल-परसों की
बात है कि ..।

खाद्य मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- सभापति महोदय, रीपीटेशन हो रहा है। वही-वही बात बार-बार आ रही है। इनकी रिकार्डिंग फंस गई है।

श्री धरमलाल कौशिक :- नक्सलियों के द्वारा सड़कें बनाने वाले उपकरण हैं, गाड़ियां हैं, जलाई जा रही है। उनको उठाकर ले जाते हैं, अगुवा कर लिये जाते हैं। यह बात करते हैं कि नक्सली कहां हैं, नक्सली चर्चा समाप्त हो गई है। अभी जो लगातार हत्याएं हुई हैं। बीजापुर से लेकर, सुकमा से लेकर नक्सली ने जो लगातार ताण्डव किया है, इससे यह लगता है कि सरकार ने नक्सलियों के सामने आत्मसमर्पण कर दिया है। इसलिए हम इस बात को कहते हैं लगातार धर्मांतरण की बात आ ही है। यह धर्मांतरण की बात इसलिए आ रही है। अभी दो दिन पहले की घटना है। दो दिन के पहले के घटना में जिस प्रकार से वहां पर उनके बीच में जो मरपीट हुई है, वह अभी किसी से छुपा हआ नहीं है। मैं धान

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

खरीदी में प्रश्न लगाया था। मैं इसलिए रीपीट कर रहा हूं कि अमरजीत भगत जो बाद में जो जवाब देते हैं, वह पलटी मारते हैं। 89,600 करोड़ रूपये क भुगतान हुआ। केन्द्र सरकार का 73,578 करोड़ रूपये योगदान है और इनका टोटल योगदान 16,348 करोड़ रूपये है। मैंने इसलिए कहा कि यदि धान की खरीदी, चावल के बिक्री और यदि किसानों को जो टोटल भुगतान हुआ तो उसके लिए किसी को बधाई देना चाहिए, जो किसानों के लिए चिंता किए हैं, वह देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी को बधाई देना चाहिए।

श्री अमरजीत भगत :- कौशिक जी, सुनिये तो। सुनिये तो लीजिये। गाड़ी थोड़ी छूट रहा है। आपको भी यही रहना है, मेरे को भी यही रहना है। दोनों को एक-दूसरे का सुनना है। जब से आप नेता प्रतिपक्ष से हटे हैं तब से ज्यादा मुखर हो गये हैं।

सभापति महोदय :- प्लीज, बोलने दीजिये।

श्री अमरजीत भगत :- सभापति महोदय, बस एक मिनट। आप बोल रहे हैं न कि केन्द्र सरकार इतना पैसा दिया, उतना पैसा दिया। केन्द्र सरकार धान खरीदी के लिए एक पैसा नहीं देता है। जब हम अपने संसाधन से बैंक से लोन लेकर खरीदते हैं, जब हम चावल जमा करते हैं, उसका पैसा चावल के बदले मिलता है।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- आखिर कुल मिलाकर केन्द्र सरकार पैसा देता है। आप केन्द्रीय पुल में धान खरीदी करते हैं। केन्द्रीय पुल से धान मिलता है और वहां से चावल लेते हैं।

सभापति महोदय :- कृपया समाप्त करें। 30 मिनट से अधिक को गये हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- सभापति महोदय, बस एक-दो मिनट।

सभापति महोदय :- प्लीज। 30 मिनट से अधिक को गये हैं। अभी बहुत से लोगों को बोलना है।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, जल मीशन की क्या स्थिति बनी हुई है। 45 लाख घर में कनेक्शन देना है। आप बड़ी मुश्किल से 17-18 लाख परिवार में ही कनेक्शन दे पाये हैं। यह वर्ष 2020 की योजना है और 2020 की योजना में अभी आपको ..।

लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री (श्री गुरू रूद्र कुमार) :- आप जल जीवन मिशन की बात कर रहे हैं। उस दिन आपने ही कहा था, जब मैंने आपको बीच में टोका था। मेरे को जवाब देना, बाद में सुनेंगे। तो आप लोग बोलते हैं। जब आप लोग बोलते हैं तो जवाब भी तो सुनना चाहिए। आप सबके सब जवाब सुनने के बदले पलायन कर गये। अब बोलने का क्या फायदा? आपके समय में पूरे 15 साल में मात्र 7 प्रतिशत काम हुआ था और उसको हमने मात्र चार साल में 41 प्रतिशत तक ले आया।

श्री धरमलाल कौशिक :- आपसे दुश्मनी थोड़ी है।

सभापति महोदय :- कृपया समाप्त करें ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

खाद्य मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- धरम भैया, आप यह बता दीजिये कि अगर इनका नहीं सुने तो मेरा क्यों नहीं सुने ? (हंसी)

सभापति महोदय :- श्रीमती संगीता सिन्हा जी । समाप्त करें ।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, तेंदूपत्ता तोड़ाई की बात आयी । आज भी तेंदूपत्ता की चर्चा हो रही है । वर्ष 2017 में जब हम लोग ढ़ाई हजार दे रहे थे, साढ़े 300 ये लोग दे रहे थे, ढ़ाई हजार हम लोगों ने बढ़ाया और बढ़ाने के बाद में 110 करोड़ रूपये दिये और ये 4000 किये उसके बाद में 2600 करोड़ दिये । 600 करोड़ इनके द्वारा दिया गया और 110 करोड़ हमारे द्वारा दिया गया तो मतलब आधा आपका है ।

श्री अमरजीत भगत :- धरम भैया 2500 ज्यादा है कि 4000 ज्यादा है ?

सभापति महोदय :- कृपया समाप्त करें ।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, मुझे व्यक्तिगत नाम नहीं लेना चाहिए । चूंकि मैंने इस बात को शुरू में भी कहा था कि इस सरकार में जो अंर्तकलह जैसे-जैसे चुनाव नजदीक आ रहा है, यह अंर्तकलह दिखाई देने लगी है । यहां पर हमारे दो बहुत अच्छे वक्ता थे और पूरे बजट सत्र में मैंने देखा है कि वे मौन हो गये हैं । वास्तविक में मौन क्यों हुए हैं ? यह भी हमें जानने का अधिकार है ।

सभापति महोदय :- कृपया समाप्त करें । श्रीमती संगीता सिन्हा जी ।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, वे ओपनिंग करते थे । वे अपना बहुत अच्छा विषय रखते थे । लेकिन जिस प्रकार से केवल विधायक में नहीं, विधायक और मंत्री में और मंत्री के बीच में अंर्तकलह और उसके बाद में मुख्यमंत्री में तो विकास कहां से होगा ? इनमें जो प्रतिद्वंदिता है और जो होड़ मची हुई है इस होड़ के कारण हमारे प्रदेश को लगातार पीछे धकलने का काम इस सरकार के द्वारा किया गया है । माननीय सभापति महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी आ गये हैं । एक प्रदेश अध्यक्ष से और प्रदेश अध्यक्ष होने के नाते जो घोषणा पत्र बनवाये । जो उम्मीदें जगायी ।

श्री कवासी लखमा :- माननीय सभापति महोदय, ये नेता प्रतिपक्ष बने थे । क्या इनको हम लोगों ने ही हटाया है ? कौशिक जी, क्या आपको हम लोगों ने ही हटाया है ? आप पांच साल के लिये चुने गये थे फिर उधर कैसे गये ? उसको भी बताओ न ।

सभापति महोदय :- मंत्री जी, कृपया बैठिए ।

धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, आज विनियोग के माध्यम से मुख्यमंत्री जी के पास में यह अंतिम समय है । मैं फिर से कहना चाहूंगा कि आपने जो वायदा किया है वह निभाना पड़ेगा और जो लोग शासन में बैठे हुए हैं, वे अपने घर जायें । हंसी-खुशी से जायें, उन वायदों को आप पूरा करें और ये पूरा नहीं कर रहे हैं इसलिये मैं इस विनियोग विधेयक का विरोध करते हुए अपनी बात को

समाप्त करता हूं । माननीय सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने हेतु समय प्रदान किया इसके लिये आपको बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्रीमती संगीता सिन्हा (संजारी बालोद) :- माननीय सभापति महोदय, मैं छत्तीसगढ़ विनियोग के समर्थन में बोलने के लिये खड़ी हुई हूं । हमारी जो सरकार है यह माननीय भूपेश बघेल जी की सरकार है, यह किसान भाईयों की सरकार है । आदिवासी भाईयों की सरकार है, हम बहनों की सरकार है, युवाओं की सरकार है और न्याय की सरकार है ।

माननीय सभापति महोदय, लोग यूं ही नहीं कहते हैं कि भूपेश है तो भरोसा है। इस बात में कहीं न कहीं सच्चाई है तभी लोग कहते हैं और इस बात में सौ प्रतिशत की सच्चाई है । मैं सबसे पहले हमारे मुखिया माननीय भूपेश बघेल जी को बधाई देना चाहती हूं जिन्होंने ईलेक्ट्रानिक मीडिया की स्वतंत्रता और मीडियाकर्मियों की सुरक्षा के लिये कानून लाये और बनाया । मैंने कल जब विधेयक प्रस्ताव हुआ तो मैंने सोचा था कि कहीं कोई समस्या नहीं रहेगी । हम सभी चर्चा में भाग लेंगे और तुरंत हमारा यह विधेयक पास होगा लेकिन मैंने यहां का जो विरोधाभाष देखा, वह बहुत ही दुखदायी है । हमारे लोकतंत्र के चार स्तम्भ में से जो चौथा सतम्भ है, उसमें हमारा पत्रकारिता और मीडिया आता है । विधायिका, न्यायपालिका, कार्यपालिका ये चारों स्तम्भ बहुत अच्छे से कार्य कर रहे हैं और जब अच्छे से कार्य कर रहे हैं । हम यहां पर बात करते हैं, उन बातों को लोगों के बीच पहुंचाने का काम या हम जहां भी चूंकि हम जनप्रतिनिधि हैं । हम जहां भी रहते हैं, उन सभी लोगों को पहुंचाने का काम यह पूरे मीडिया के हमारे भाई और बहन लोग करते हैं तो इनको इतनी परेशानी नहीं होनी थी । बहुत स्वेच्छा से, प्रेमपूर्वक से उस कानून को पास करना था लेकिन हमने कल जो स्थिति देखी वह बहुत ही दर्दनाक और दुखदायी थी । मैं पत्रकारों के बारे में इतना ही कहना चाहती हूं, यदि मैं देश के पत्रकारों की बात करूं । मैं देश के बारे में बात करूं तो यहां की स्थिति कहीं से छिपी नहीं है । वह गाना है न, तुम दिन को अगर रात कहो तो रात कहेंगे और रात को दिन कहो तो दिन कहोगे, देश की स्थिति है । वहां पत्रकार भाई लोग इतने दबाव में हैं कि अगर कोई दिन को रात कहे तो रात कहना पड़ेगा लेकिन हमारे माननीय भूपेश बघेल जी की सरकार में, हमारे राज्य में ऐसा कुछ नहीं है । आज हमारे राज्य में ऐसा कुछ नहीं है । आज हमारे राज्य में पत्रकारों में सुरक्षा का भाव है । मैं तो उनके लिए यह भी कहना चाहूंगी कि जहां हम नहीं पहुंच सकते, जहां हम जाने से डरते हैं, हमारे पत्रकार भाई पहुंचते हैं । अभी 21 तारीख को रात के समय अफगानिस्तान में भूकंप आया । उसके झटके दिल्ली और पूरे उत्तर भारत में भी महसूस किये गये । जब झटका आया तो सब अपने घर से बाहर निकले, उस समय पत्रकार भाइयों ने अपने घर से बाहर निकलकर उसको कैच करने का प्रयास किया । सभापति जी, जहां हम नहीं पहुंच पाते, वहां पत्रकार भाई पहुंचते हैं, चाहे जंगल का क्षेत्र या कोई घटनास्थल । यहां तक कि कोरोनाकाल में प्रथम स्टेज आया और द्वितीय स्टेज आया । पहला तो थोड़ा नॉर्मल था, दूसरे में लोग दहशत में थे । उस दहशत को पार

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

करते हुए हमारे मीडिया के लोगों ने कवरेज किया और पूरे देश को उससे अवगत कराया। मैं पत्रकार भाईयों की बात कर रही हूं, जो छोटी से छोटी जगह पहुंच जाते हैं । खतरनाक अवसरों पर लोग घरों को भागते हैं लेकिन वे अपनी जान को जोखिम में डालकर कवरेज करके पूरे देश को बताते हैं । ऐसे लोगों को सुरक्षा प्रदान करने का काम हमारे मुख्यमंत्री जी ने किया है । सभापति जी, हमारे राज्य के मुखिया हर तबके का ध्यान रखते हों, चाहे वह किसान हो । सभी के लिए प्रयास करते हैं और वे उसमें सफल भी हुए हैं । सभापति जी, छत्तीसगढ़ राज्य धान का क्षेत्र है इसमें बीजेपी शासन काल के बारे में कहना चाहती हूं । यदि मैं कर्जा माफी की बात करूं तो इन्होंने तो किसानों को कर्ज में डुबो दिया था । कर्ज के कारण किसान आत्महत्या कर रहे थे, स्थिति बहुत ज्यादा खराब थी और जब कोई किसान आत्महत्या करता था तो ये कह देते थे कि पारिवारिक कारणों से आत्महत्या किया है । सभापति जी, यह बात बहुत जगह आई है, जब किसी किसान ने आत्महत्या की तो सीधे यही कहा गया कि यह अपने भाई से परेशान है, नौकरी नहीं मिली इसलिए परेशान था लेकिन मुख्य वजह कर्ज था । वे कर्ज से दबे रहते थे, पटा नहीं सकते थे इसके लिए हमारे मुख्यमंत्री जी ने जैसे ही शपथ ग्रहण किया ।

नेता प्रतिपक्ष (श्री नारायण चंदेल) :- माननीय सभापति महोदय, मैं एक सूचना देना चाह रहा था । माननीय मुख्यमंत्री जी सदन में हैं, गृहमंत्री जी भी हैं । हमारे विधान सभा के बहुत वरिष्ठ सदस्य एवं पूर्व गृह मंत्री माननीय ननकीराम कंवर जब अभी विधान सभा में आ रहे थे तो शंकर नगर चौक के पास में कुछ लोगों ने उनको रोकने का प्रयास किया और उनसे बद्तमीजी की, दुर्व्यवहार किया । ननकीराम जी ने संबंधित थाने में जाकर इसकी शिकायत भी दर्ज कराई । मेरा आपसे आग्रह है कि विधान सभा का सत्र चल रहा है और अगर विधायकों को विधान सभा आने से रोका जाए और उनके साथ बद्सलूकी की जाए तो यह उचित नहीं है । माननीय मुख्यमंत्री और गृह मंत्री जी बैठे हैं, कृपया इसको दिखवा लेंगे ।

श्री भूपेश बघेल :- सभापति महोदय, मुझे जानकारी मिली है कि शंकर चौक में किसी गाड़ी से डेश हो गया और डेश होने के बाद दोनों पक्ष उतरे और एक दूसरे से बातचीत कर रहे थे । उसकी सूचना थाने में गई है उसको दिखवा लेंगे ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- सभापति जी, देश और प्रदेश के इतिहास में एक नया अध्याय जुड़ गया है । 17 लाख 96 हजार किसानों को 8744 करोड़ की ऋण माफी हुई थी । मैं पिछले 15 सालों की बात कहना चाहती हूं । इनके समय 54 लाख मेट्रिक टन धान खरीदी हुई थी, हमारी सरकार आने के बाद 107 लाख मेट्रिक टन धान की खरीदी की गई है। इसके लिए हम माननीय मुख्यमंत्री जी और खाद्य मंत्री जी को बधाई देते हैं। इतनी अच्छी धान खरीदी हुई है, पूरे राज्य में प्रथम स्थान पर हमारा छत्तीसगढ़ राज्य है। सभापति महोदय, मैं राशनकार्ड की बात करूं तो 15 साल में सिर्फ 54 लाख राशनकार्ड बना था जबकि आज की तारीख में 74 लाख राशनकार्ड बना हुआ है और वह हर वर्ग के लिए

है, ऐसा नहीं है कि नीचे तपके के लोगों को लिए, बड़े लोगों के लिए है, आज जितने भी बड़े लोग हैं, हर एक व्यक्ति का राशनकार्ड बना है। मैं तेंदूपत्ता मानक दर के बारे में कहना चाहूंगी। इनके शासनकाल में बहुत लोगों ने प्रयास किया कि हमारा मानक दर बढ़े लेकिन 2500 रूपये से एक रूपया नहीं बढ़ा। हमारी सरकार आई तो तेंदूपत्ता का 4 हजार रूपये मानक दर दिया। इसके साथ ही जो बीमा है, इसमें इतना भेदभाव किया गया है, पहले 50 प्रतिशत हमारे राज्य का रहता था और 50 प्रतिशत केन्द्र का रहता था लेकिन केन्द्र ने 50 प्रतिशत देना बंद कर दिया और आज पूरा 100 प्रतिशत हमारा राज्य शासन बीमा के लिए दे रहा है। इसके लिए मैं हमारे मुखिया को फिर से बधाई देना चाहती हूं। सभापति महोदय, मैं सुपोषण योजना की बात कर रही थी, हमारी सरकार बनी और वर्ष 2019 में इसकी शुरूआत हुई। सुपोषण योजना से महिलाएं और बच्चे बहुत ज्यादा कुपोषित थे, आज सुपोषित हो चुके हैं। अगर 2016 की बात करूं तो एन.एफ.एच.एस की चार आंकड़ों के अनुसार 37.7 प्रतिशत था, जबकि 2018 में 40 प्रतिशत हो गया। अगर प्रतिशत निकाला जाए तो 2.3 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई है। जबकि हमारी सरकार आने के बाद जो सुपोषण योजना अभियान चलाएं हैं, उसके बाद जो कुपोषण की औसत आई, वह 31.3 प्रतिशत है। इसमें 7 प्रतिशत की कमी आई है। ऐसी हमारी सुपोषण योजना है। वनोपज तो 15 साल में देख लिए, समर्थन मूल्य में सिर्फ सात वनोपज को खरीदा जाता था, जबकि आज हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में 65 लघु वनोपज को खरीदा जा रहा है। मैं हमारे मुखिया के बारे में कहना चाहूंगी।

"हमारे मुख्यमंत्री के मन में एक जुनून रहता है,
आंखों में छत्तीसगढ़ के प्रति एक चमक रहता है।
विपक्ष की जान निकल जाए,
आवाज में इतना दमक रहता है।।" (मेजों की थपथपाहट)

आदरणीय सभापति महोदय, गोबर ही सार है, बाकी सब बेकार है। आप लोग समझ गये होंगे, किसने शुरू की थी। भले ही विपक्ष के लोग अपनी बात व्यंगात्मक किए हों, लेकिन मैं तो यह कहती हूं कि वाकई में गोबर एक सार है, बाकी सब बेकार है। गोबर ने वह कर दिखाया है, हर व्यक्ति को रोजगार मिल रहा है। गरीब तपके के जो ग्रामीण लोग हैं, उनको पूरा रोजगार मिल रहा है। यह कभी किसी ने सोचा नहीं था। एक कहावत है। मैं हमेशा उस बात को कहती हूं। मैं पहले की बात कर रही हूं, गांव में जब बच्चे पढ़ते नहीं थे, आप लोग अच्छे से जानते होंगे, उनके मम्मी पापा एक शब्द बोलते थे, गोबर बिने ला जाबे, ये बात बोलते थे। जो बच्चा पढ़ता नहीं था, गोबर बिने ला जाबे, ये शब्द बोलते थे। आज गोबर बिनने वाला ही करोड़पति बन गया है। आप गोबर बेचकर आजीविका चला सकते हो, हमारी सरकार दो रूपये किलो में गोबर खरीद रही है। आप लोगों ने कभी उस चीज को नहीं समझा। गोबर को सिर्फ फेंकने का समझ रखे थे। हमारी सरकार ने गोबर को एक धन के रूप में उपयोग किया है। मैं

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

माननीय मुख्यमंत्री जी के विनियोग विधेयक का समर्थन करती हूं। जितनी भी अनुदान है, आप उसको बेझिझक पास करिए और इनकी बात बिल्कुल मत सुनिए। हम समर्थन कर रहे हैं। धन्यवाद।

सभापति महोदय :- केशव प्रसाद चंद्रा जी।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा (जैजैपुर) :- आदरणीय सभापति महोदय, वित्तमंत्री की हैसियत से माननीय मुख्यमंत्री जी के द्वारा लाये गये विनियोग विधेयक का विरोध करने के लिए मैं खड़ा हुआ हूं। मैं इस विनियोग का विरोध इसलिए करता हूं कि आप जो बजट लाते हैं, उसका प्रस्ताव करते हैं, उसका अनुमोदन होता है, विनियोग विधेयक पारित होता है लेकिन वह काम नहीं होता है। जब काम नहीं होता है तो ऐसे विनियोग को पारित करने का कोई औचित्य भी नहीं है। अनेक क्षेत्रों के विकास के लिए आपने बजट में सड़क, पुल-पुलिया और स्टाप डेम को सम्मिलित किया है। लेकिन 2-2 साल बीतने के बाद और बजट से बाहर होने के बाद उसकी प्रशासकीय स्वीकृति नहीं मिली। इसलिए हम विनियोग का विरोध कर रहे हैं। संकल्प पत्र की बहुत सारे बातें हुईं और लगभग 4 साल से उसकी चर्चा होती आ रही है। इस बजट में सरकार ने कुछ प्रयास किये हैं, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद भी देता हूं। यह अलग विषय है कि आप अपने प्रयास में कितने सफल रहे। आपने आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, सहायिका, मितानिन, कोटवार, सफाई कर्मचारी, रसोइया, पेंशन प्राप्त करने वाले लोगों के पेंशन में बढ़ोतरी और बेरोजगार लोगों के लिए बेरोजगारी भत्ता के प्रावधान को इस बजट में सम्मिलित किया है। इसके लिए आपको धन्यवाद देता हूं। साथ ही साथ आपने इस सत्र बजट में मेरे विधान सभा क्षेत्र में भोथिया उप तहसील को तहसील और छपरा में एक नई पुलिस चौकी का भी प्रावधान रखा है। इसके लिए भी मैं आपको धन्यवाद ज्ञापित करता हूं। लेकिन बहुत सारी समस्याएं हैं।

आदरणीय सभापति महोदय, यहां 15 साल की बात होती है और इधर वाले साढ़े 4 साल की बात करते हैं। किसी काम की तुलना होनी चाहिए। मैं यह नहीं बोल रहा हूं कि तुलना नहीं होना चाहिए। लेकिन यदि आप केवल नकारात्मक बातें करें तो यह इस प्रदेश या यहां के लोगों के हित में नहीं है। मैं ई.डी., नॉन घोटाले और कोयला घोटाले की बात नहीं करूंगा। लेकिन व्यावहारिक रूप से जिसके कारण आम आदमी परेशान हैं या जिस व्यवस्था में कमी के कारण सरकार की योजना का लाभ लोगों को नहीं मिल पा रहा है, आज इस अवसर पर मैं निश्चित रूप से उनकी बात करूंगा। आपने इन लोगों के हित में थोड़ी-बहुत घोषणाएं कीं, लेकिन बहुत लंबे समय से ग्राम पंचायत के सचिव, जो खुद को किसके कर्मचारी हैं करके खोज रहे हैं और नियमितीकरण की मांग कर रहे हैं। मनरेगा योजना के अंतर्गत जो कर्मचारी काम कर रहे हैं और जो पढ़े-लिखे हैं, कोई इंजीनियर है और कोई एम.बी.ए. करके वहां पी.ओ., तकनीकी सहायक और रोजगार सहायक के रूप में काम कर रहे हैं। यदि कल वह योजना बंद हो जाएगी तो उनका भविष्य अंधकारमय हो जाएगा और उनके परिवार भूखे मरने के लायक हो जाएंगे। तो ऐसे मनरेगा कर्मचारियों के संबंध में भी इस सदन और इस सरकार को विचार करना चाहिए। संविदा, अनियमित,

दैनिक वेतन भोगी कर्मचारी की भी घोषणा हुई थी। जवाब में आया है कि हम जानकारी मंगा रहे हैं। लेकिन संभवत: यह इस सरकार के इस कार्यकाल का अंतिम बजट है। यदि अभी तक इनके हित में काम नहीं हुआ है तो निश्चित रूप से इन लोगों की जो आशाएं थीं, उनकी ये आशाएं पूरी नहीं हो रही हैं। सहायक शिक्षक के वेतन में विसंगति की बात है। भारत साक्षर मिशन में काम करने वाले रेरा को भी आपने आश्वस्त किया था कि हमारी सरकार बनने के बाद हम आपको कहीं न कहीं व्यवस्थित करेंगे। जिन गौसेवकों लिए आप गौठान बना रहे हैं, वह गौसेवक यहां दुहाई दे रहे हैं। ऐसे गौसेवक जो बहुत कम मानदेय में काम करते थे।

समय :

6:00 बजे

उन गौ सेवकों को आपने आश्वस्त किया था। जब आप ही की पार्टी की सरकार थी तो बहुत सारे मीडिल स्कूल, हाईस्कूल और हायर सेकेण्डरी स्कूल जन भागीदारी के माध्यम से खोले गये थे, उसमें पढ़ाने वाले शिक्षक जो अपने जीवन का महत्वपूर्ण समय दिया, कोई 8 साल, कोई 10 साल समय दिया, ऐसे जनभागीदारी शिक्षकों के हित के बारे में या उनकी नियमितिकरण के बारे में आपने आश्वस्त किया था, पर उनका भी नियमितिकरण नहीं हुआ । चाहे अतिथि प्राध्यापक की बात हो या विद्यामितान की बात हो, आप आऊट सोर्सिंग का बहुत विरोध करते थे, कहते थे कि हमारी सरकार आने के बाद आपके हित में काम करेंगे, पर ऐसे विद्या मितान के बारे में भी आप लोगों की सोच नहीं बनी । प्लेसमेंट के माध्यम से चाहे वह शराब भट्ठी में काम कर रहे हों, नगरीय निकाय में काम कर रहे हों, ऐसे प्लेसमेंट के माध्यम से काम करने वाले कर्मचारियों के हित के लिए आपने विचार नहीं किया । निश्चित रूप से यह दुर्भाग्यजनक है ।

माननीय सभापति महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी सदन में उपस्थित हैं, वे विनियोग विधेयक में यहां जवाब भी देंगे । मैं उनसे एक चीज का निवेदन करता हूं। मेरे विधान सभा क्षेत्र में जैजैपुर तहसील है, वह बहुत पुराना तहसील है । वह राजस्व अनुविभाग के लिए प्रारंभिक प्रकाशन हो चुका है, दावा-आपत्ति आ गई है । अगर आपकी सहानुभूति होगी तो जैजैपुर को अनुविभाग कार्यालय के लिए कृपा करके जब आप विनियोग का जवाब देंगे तो घोषणा कर देंगे । क्षेत्र के लोग आभारी रहेंगे, ऐसा निवेदन करता हूं ।

माननीय सभापति महोदय, सरकार की किसी भी योजना का लाभ लोगों तक नहीं पहुंचना कहीं न कहीं प्रशासनिक कमजोरी है, अधिकारियों की लापरवाही है, जिसके कारण लोग भ्रष्टाचार के शिकार हो रहे हैं। माननीय मुख्यमंत्री जी को पूरे प्रदेश के राजस्व विभाग की समीक्षा करनी पड़ी । बहुत छोटी-छोटी बात, जो लोगों को आवश्यकता पड़ती है, फौती होने के बाद फौती कटवाना, जमीन खरीदी-बिक्री के बाद नामांतरण, भाई-भाई में बंटवारा है तो बंटवारा, सीमांकन, ऑन लाईन की प्रविष्टि यह किसानों का रोज

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

का काम है । ऐसे चीजों के लिए मुख्यमंत्री जी ने समीक्षा की है तो निश्चित रूप से यह गंभीर शिकायत है । मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद भी देता हूं कि आपने किसानों की चिन्ता की । कम से कम आपके समीक्षा करने से बहुत कुछ व्यवस्था सुधरी है और बहुत कुछ व्यवस्था सुधारने की भी जरूरत है । यह व्यवस्था तब तक नहीं सुधरेगी, जब तक पटवारी अपने कार्यालय में नहीं बैठेंगे, जब तक ऐसे भ्रष्टाचार करने वाले किसी कर्मचारी के ऊपर कार्यवाही नहीं होगी, तब तक इनके मन में किसानों का शोषण बना रहेगा ।

माननीय सभापति महोदय, मैं हमेशा कहता हूं कि दोष उस सरकार में या इस सरकार में नहीं है, दोष इस कुर्सी में हैं । जब इधर बैठते हैं तो लोगों की चिन्ता, लोगों के हित की बात करते हैं, लेकिन पाला बदलता है, उधर की कुर्सी में जाकर बैठते हैं तो चिंतक से शोषक बन जाते हैं । यह दोष कुर्सी का है । पिछले पांच साल भी हम इस सदन में रहे, तब भी वही चर्चा हुई । आरोप इधर से लगता था और इन पांच साल में भी वही चर्चा होती रही, इस बात भी आरोप लगाने वाले जवाब दे रहे हैं और जवाब देने वाले आरोप लगा रहे हैं, लेकिन व्यवस्था में कोई खास सुधार नहीं हुआ।

माननीय सभापति महोदय, धान खरीदी में निश्चित रूप से व्यवस्था सुधरी है और किसान समृद्ध भी हुए हैं । चाहे इसको कोई, कुछ भी बोले, लेकिन जो राजीव गांधी किसान न्याय योजना है, उससे लोगों को लाभ मिल रहा है, किसानों की आर्थिक स्थिति सुधर रही है । अभी जैसा कि समाचार-पत्रों के माध्यम से या बाहर सुनने को मिलता है कि आने वाले दिनों से प्रति एकड़ 20 क्विंटल धान खरीदेंगे । अगर 20 क्विंटल धान की खरीदी समर्थन मूल्य में हो जाएगी तो छत्तीसगढ़ के किसान के लिए सौभाग्य की बात होगी । चूंकि मैं जांजगीर-चांपा जिला में रहता हूं, वह जिला खेती के क्षेत्र में बहुत ज्यादा उत्पादन लेने वाला जिला है और आज वहां एक-एक किसान प्रति एकड़ 25 से 30 और 35 क्विंटल धान की पैदावारी कर रहे हैं, ऐसे किसान केवल 15 क्विंटल को समर्थन मूल्य पर बेच पाते हैं, बाकी को बहुत कम दाम में व्यापारी को बेचने के लिए लाचार और बेबस होते हैं । अगर इस सीमा को 20 क्विंटल तक कर दिया जाये, तो निश्चित रूप से किसान और समृद्ध होंगे और उनको उपज का लाभ मिलेगा।

माननीय सभापति महोदय, अभी उस दिन चर्चा भी हुई कि बेमौसम बारिश के कारण फसल को क्षति हुई। यह तो प्रकृति की देन है। केवल इसी साल नहीं, हर साल यह प्रक्रिया कभी न कभी, किसी न किसी दिन यह संकट किसान के साथ आते रहता है। मैं माननीय मुख्यमंत्री जी से निवेदन करता हूं कि उसकी समीक्षा कराकर, उसमें जो भी किसान पात्र पाये जाते हैं, जिनको नुकसान होता है, हालांकि परिपत्र 6-4 में उतना मुआवजा का प्रावधान नहीं है कि किसान अपना पूरा क्षतिपूर्ति प्राप्त कर ले। लेकिन यदि क्षति हुई है तो सरकार का थोड़ा-बहुत राहत भी उस किसान के लिए बहुत है। तो उसमें राशि मिल जाये। मेरे क्षेत्र में वर्ष 2021-22 में 6-4 में 2105 किसानों का 61 लाख रूपया स्वीकृत हुआ था।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

लेकिन जैजेपुर तहसीलदार की हठधर्मिता के कारण अभी भी 614 किसान 20 लाख 68 हजार रूपये की मुआवजा से वंचित हैं। मैं इसके लिए भी माननीय मुख्यमंत्री जी से निवेदन करता हूं।

माननीय सभापति महोदय, अभी मंत्री जी नहीं है, माननीय मंत्री जी पर्यावरण के लिए बहुत चिंतित है। मेरे क्षेत्र में एक बालाजी मेटल्स एण्ड मिनरल्स प्रायवेट लिमिटेड है। वहां एक मात्र जंगल छीतापड़रिया है, उससे लगे हुए डूमरपारा में इनकी डोलोमाइट की खदान है। सरकार ने 54 हैक्टेयर शासकीय जमीन को लीज पर दिया है, लेकिन उसके बावजूद भी ये 10 हैक्टेयर जंगल की जमीन पर कब्जा कर अपने उद्योग को चला रहे हैं। जिसके कारण जंगल के जानवर, खासकर जंगली सुअर उस जंगल से भागकर किसानों को नुकसान पहुंचा रहे हैं। खुद कलेक्टर के निर्देश पर उनकी एक टीम ने उसका सीमांकन किया। लेकिन आज तक उनकी बेदखली नहीं हुई है, जिसके कारण क्षेत्र को नुकसान हो रहा है। माननीय मुख्यमंत्री आये हैं।

सभापति महोदय :- चलिये समाप्त करें। श्रीमती अनिता योगेन्द्र शर्मा।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- माननीय सभापति महोदय, बस अंतिम बात। माननीय मुख्यमंत्री जी हैं। पंचायत के सम्मेलन में पंचायत के जनप्रतिनिधियों को अधिकार देते हुए केवल मानदेय ही नहीं बल्कि उनके अधिकार के लिए भी माननीय मुख्यमंत्री जी ने आश्वस्त किया था कि हम बढ़ायेंगे और 20 लाख के अधिकार को 50 लाख कर दिया है। आज शिक्षा मंत्री जी भी बैठे हैं, 621 करोड़ रूपये का जो शिक्षा विभाग का काम है, वह सब विभाग के माध्यम से ठेकेदारी प्रथा में टेण्डर करा रहे हैं। मेरा निवेदन है कि यह ज्यादा की मांग नहीं है। एक अतिरिक्त कक्ष मुश्किल से 8 लाख का है, कहीं मरम्मत का काम 5 लाख, 3 लाख और कहीं 2 लाख का है। अगर ऐसे कामों को भी विभाग के माध्यम से ठेकेदार को दे रहे हैं तो उन जनप्रतिनिधियों का त्रिस्तरीय पंचायत, ग्राम पंचायत के अधिकार का हनन है। मैं इसके लिए भी निवेदन करना चाहता हूं कि ग्राम पंचायत को एजेंसी बनाया जाये। साथ ही साथ मुख्यमंत्री जी का जो स्वेच्छानुदान है, बहुत सारे लोग जो किसी योजना से स्वास्थ्य का लाभ नहीं पाते, बहुत सारे ऐसे गरीब बच्चे पढ़ने के लिए अपना फीस नहीं पटा पाते। किसी न किसी माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री जी तक बात पहुचंती है, उनको सहयोग करते हैं। जब भेंट मुलाकात के समय मेरे क्षेत्र में गये थे तो एक गरीब परिवार का बच्चा एक्सीडेंट में खत्म हो गया था, मैं उसके लिए निवेदन किया था, तो माननीय मुख्यमंत्री जी ने तत्काल एक लाख रूपया सहयोग दिया। मेरे क्षेत्र की एक लड़की कत्थक नृत्य में मलेशिया जाना चाहती थी, भाई रामकुमार यादव जी के विधानसभा क्षेत्र के ग्राम टेरगांव की थी, उनके पास पैसा नहीं होने के कारण वह नहीं जा पा रही थी। माननीय मुख्यमंत्री जी उनको दो लाख रूपये का सहयोग प्रदान किया। मलेशिया के कत्थक नृत्य में जितने भी प्रतिभागी थी, उनमें वह प्रथम स्थान लेकर आई है। स्वेच्छा अनुदान भी निरंतर जारी रहे।

माननीय सभापति महोदय, अंत में आपने बजट में जिन कामों को सम्मिलित किया है, जिसके लिए आप विनियोग लाये हैं, यदि हम विरोध भी कर रहे हैं तो ऐसा नही है कि आपका विनियोग पारित नहीं होगा। आपका तो इतना बड़ा बहुमत है कि हम तमाम लोग भी विरोध करे तो भी विनियोग विधेयक पास होगा। लेकिन इसमें राजनीति में क्षेत्र के विकास हित होना चाहिए। दुर्भावना की बात नहीं होनी चाहिए। बजट में जो-जो काम सम्मिलित है, वह सब काम प्रशासकीय स्वीकृति तक जाये और वह कार्य में परिणित हो, ऐसी उम्मीद के साथ, सभापति महोदय, आपने बोलने का अवसर दिया, उसके लिए धन्यवाद।

श्रीमती अनीता योगेन्द्र शर्मा (धरसींवा) :-माननीय सभापति महोदय, छत्तीसगढ़ विनियोग विधेयक के समर्थन में बोलने के लिये खड़ी हूँ । माननीय सभापति महोदय, गढ़बो छत्तीसगढ़ की परिकल्पना के साथ जो कहा, वह किया, ऐसा वादा पूरा करने वाली हमारी सरकार, माननीय मुख्यमंत्री जी की सरकार ने 4 वर्ष में जनता के वादे लगभग पूरे हो ही रहे हैं । आज विपक्ष के साथी बड़े जोर-जोर से बोल रहे हैं कि कुछ काम नहीं किये गये हैं, यहां तक कह रहे हैं कि किसानों का कर्ज माफ नहीं हुआ है, किसानों के ऋण माफी जैसे कार्य किये हैं तो हमारे छत्तीसगढ़ के मुखिया श्री भूपेश बघेल जी ने किया है । माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा मुख्यमंत्री मितान योजना जो लेकर आये हैं, जिसमें रोजगार के साथ ही युवाओं के द्वारा जो सेवायें प्रदान की जा रही है, जैसे लायसेंस, आधार कार्ड, प्रमाण पत्र, पेन कार्ड जैसी चीजों को सरलता से प्रदान की जा रही है । माननीय सभापति महोदय, हमारी सरकार निचले स्तर पर 51 हजार से अधिक लोगों को मितान के माध्यम से घर पहुंच इस प्रकार की सेवायें उपलब्ध कराई जा रही है । सभापति महोदय, मैं माननीय मुख्यमंत्री जी का बहुत-बहुत आभार व्यक्त करती हूँ और मेरे क्षेत्रवासियों की तरफ से धन्यवाद देती हूँ, जिसमें निराश्रित, दिव्यांगजन, विधवा, परित्यक्ता महिलाओं को सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना के अंतर्गत दी जाने वाली मासिक पेंशन राशि 350 रूपये से बढ़ाकर, 500 रूपये प्रतिमाह करने का सराहनीय कार्य किया गया है । निचले तबके के लोग जो बहुत परेशान थे, उन लोगों को सहयोग करने का काम हमारी सरकार कर रही है । इसी तरह से मैं कहना चाहूंगी कि हमारी सरकार है, पत्रकारों की सुरक्षा को लेकर पत्रकार सुरक्षा कानून विधान सभा में पारित किये हैं, उसके लिये मैं सरकार को धन्यवाद देती हूँ । सभापति महोदय, जिस दिन झीरम घाटी की घटना हुई, उस दिन पुलिस के एक भी लोग वहां नहीं थे । पुलिस कर्मी वहां जाने से डर रहे थे, लेकिन उस समय हमारे पत्रकार भाई लोगों के माध्यम से, मीडिया के माध्यम से, हम लोगों को पता चला कि इतना बड़ा हादसा हुआ है । उन लोगों एक-एक लोगों का विडियो दिखा रहे थे । सभापति महोदय, हम पत्रकारों के माध्यम से अपना परिवार ढूंढ रहे थे कि हमारा परिवार कहां पर है ? सभापति महोदय, इन लोगों को उस समय देखने तक की फुर्सत नहीं थी, पत्रकार भाईयों के लिये जो सुरक्षा कानून लाया गया है, उसके लिये मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को बहुत-बहुत धन्यवाद देती हूँ । हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सब के लिये सोचने वाले हैं, सब के लिये विचार करने वाले हैं । सभापति महोदय, आज सिंचाई कर माफ किये हैं, जिसमें वर्ष 2018 तक की सिंचाई कर की राशि जो 207 करोड़ रूपये की थी, उसको हमारी सरकार ने माफ किया है । सभापति महोदय, वैसे ही शिक्षित बेरोजगारों को बेरोजगारी भत्ता देने वाली एक नवीन योजना की हमारी सरकारने शुरूआत की है। सरकार के द्वारा 12 वीं पास 18 से 35 से 35 वर्ष के युवाओं को यदि उनके परिवार की आर्थिक आय 2 लाख 50 हजार से कम होगी, उनको अधिकतम 2 वर्ष तक 2500 रूपये प्रतिमाह देने की घोषणा माननीय मुख्यमंत्री जी किये हैं, यह बहुत ही सराहनीय कार्य है । माननीय सभापति महोदय, विपक्ष के द्वारा प्रधानमंत्री आवास नहीं मिलने की बात कही जा रही थी, हमारी सरकार प्रधानमंत्री आवास देने के लिये बाध्य है । हमारे मुख्यमंत्री जी ने जो घोषणा की है, हमको पूरा विश्वास है कि हमारे मुख्यमंत्री जी जो बोलते हैं, वह करते हैं। इन लोगों ने प्रधानमंत्री आवास के लिये आज तक सर्वे तक नहीं कराया है। आज हमारे मुख्यमंत्री जी ने घोषणा की और सर्वे कराकर उन गरीब परिवारों को भी आवास दिया जायेगा। इन लोगों ने उस समय छांट-छांट कर रखा था। इनके कार्यकर्ता होते थे, इनके द्वारा उन्हीं को ही आवास दिया जाता था और बाकी लोगों को आवास नहीं मिलता था।

सभापति महोदय :- कृपया समाप्त करिये

श्रीमती अनिता योगेन्द्र शर्मा :- आज भी लिस्ट में उन्हीं का नाम सामने हैं और उनको यह लोग जा-जाकर बोल रहे हैं कि हम लोग आपको आवास दिला रहा है।

सभापति महोदय :- कृपया समाप्त करिये।

श्रीमती अनिता योगेन्द्र शर्मा :- हमारे विपक्ष के भाइयों के द्वारा इस तरह से भ्रम फैलाने का काम किया जा रहा है। आज हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी ने प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के अंतर्गत 03 हजार 238 करोड़ रूपये का प्रावधान किया है। वैसे ही अंतर्राष्ट्रीय रामायण महोत्सव के आयोजन के लिये भी 12 करोड़ रूपये का प्रावधान किया गया है। मैं बताना चाहूंगी कि जो स्कूल की व्यवस्था थी, इनकी सरकार के समय ये लोग सरकारी स्कूलों की तरफ देखने का नहीं सोचते थे। आज हमारी सरकार ने सरकारी स्कूलों को देखने के लिये, सरकारी स्कूलों का जतन करने के लिये 05 सौ करोड़ का प्रावधान रखा है।

सभापति महोदय :- कृपया समाप्त करिये

श्रीमती अनिता योगेन्द्र शर्मा :- इस तरह से हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी के द्वारा जो कहा सो किया। मैं माननीय मुख्यमंत्री जी से निवेदन करना चाहूंगी कि पथरी में कॉलेज जरूर दिला दें क्योंकि उस क्षेत्र से बच्चे कॉलेज की पढ़ाई करने के लिये एक तो रायपुर आयेंगे या तो खरोरा जायेंगे या तो धरसींवा आयेंगे। जो बीच के क्षेत्र है, वहां पर बच्चे 12वीं के बाद पढ़ाई नहीं कर पा रहे हैं। आपसे निवेदन है कि वहां कॉलेज खोल दिया जाये। मैं सांकरा में स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम स्कूल खोलने की भी

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

मांग करती हूं। माननीय मुख्यमंत्री जी जब हमारे क्षेत्र में गये थे तो वे वहां बहुत सारी घोषणाएं करके आये हैं और बहुत सारी घोषणाएं पूरी किये हैं। मैं उसके लिये अपने क्षेत्रवासियों की तरफ से आपको बहुत-बहुत आभार व्यक्त करती हूं और बहुत-बहुत धन्यवाद देती हूं।

सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया उसके लिये धन्यवाद्।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, एक मिनट।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय सभापति महोदय, इनका भाषण तो खत्म हो चुका है।

श्री शिवरतन शर्मा :- सभापति महोदय, विनियोग पर चर्चा हो रही है और प्रदेश में लोकतंत्र खतरे में है। दो सिपाही दुर्ग से पुलिस मुख्यालय अपने पद से इस्तीफा देने आ रहे थे, वे दु:खी थे। उनका कहना था कि न आवास की व्यवस्था हुई है और न ही भत्ता बढ़ाया गया है। हिमांशु गुप्ता की अध्यक्षता में जो कमेटी बनाई गई, उस कमेटी ने रिपोर्ट नहीं दी और हम पीड़ित है। वे दोनों दुर्ग से इस्तीफा देने के लिये आ रहे थे। उनको भिलाई में गिरफ्तार कर लिया गया। वे संजीव मिश्रा और उज्ज्वल दीवान है। मतलब अब लोकतंत्र की स्थिति यह हो गयी है कि यदि व्यक्ति इस्तीफा देने जा रहा है तो उसको भी गिरफ्तार किया जायेगा। सभापति महोदय, क्या ऐसे सरकार चलेगी ?

सभापति महोदय :- श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू।

श्री अरूण वोरा :- माननीय सभापति महोदय, इनकी एल.आई.बी. कौन सी है ? आपको इतनी जल्दी पता चल जाता है।

संसदीय सचिव, सहकारिता मंत्री से संबद्ध (श्री द्वारिकाधीश यादव) :- शिवरतन भैया को यह इसलिये पता है क्योंकि शिवरतन भैया, आप उनको सिस्टमेटिक भेजे हैं। इसलिये पूरा समय टाईम टू टाईम आपके पास रहता है।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- इसमें भी षडयंत्र की बू आ रही है।

सभापति महोदय :- चलिये शुरू करिये।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- षडयंत्र की बू नहीं, यह षडयंत्र ही है।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू (धमतरी) :- माननीय सभापति महोदय, मैं सरकार के विनियोग विधेयक में बोलने के लिये खड़ी हुई हूं।

श्री शिवरतन शर्मा :- तुमन ला मालूम नइ पड़े। तुमन जानव भई तुमन काबर सुरते रिहीथव कि तुमन ला मालूम नइ पड़ै।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- आप उनके साथ सब बात-चीत करके आये हैं तो आपको तो पता रहेगा ही ना।

श्री उमेश पटेल :- शिवरतन भैया, का बात है कि आज ये पूरा लाइन खाली हो गिस।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- रंजना जी देख, तोर सुने बर कोई भी नहीं हे।

श्री शिवरतन शर्मा :- ये लाइन तो पूरा भरा है।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- आप तो सुन रहे हैं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- में तो सुनथो, तोर पार्टी वाला मन सुने बर तैयार ही नइ हे।

श्री शिवरतन शर्मा :- तोर पूरा खाली हे।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- ऐती देख, ये तरफ बाजू ला देख।

सभापति महोदय :- चलिये।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अउ ऐती बर में हा अकेला पूरा पर्याप्त हूं, चिंता मत कर।

सभापति महोदय :- चलिये शुरू करिये। अपनी बातें 5 मिनट में रखिये।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय सभापति महोदय, मैं छत्तीसगढ़ सरकार के इस विनियोग विधेयक में बोलने के लिये खड़ी हुई हूं और सरकार का विरोध भी इसलिये है क्योंकि सरकार ने अपना 5वां बजट पेश किया और उस बजट में लोगों को काफी उम्मीदें रहती है। छत्तीसगढ़ प्रदेश की जनता को इसलिये भी उम्मीदें रहती है क्योंकि यदि वह जनप्रतिनिधियों को चुनकर इस पवित्र सदन तक भेजते हैं तो उनकी अपने जनप्रतिनिधियों से बहुत सी आस जुड़ी होती है। लेकिन इस सरकार ने जो बजट पेश किया, उसमें आम जनता के लिये कुछ भी नहीं रहा । अधिकतर यह होता है कि बजट लगभग दो वर्षों के लिए होता है और दो वर्ष के बाद बजट से यदि बाहर काम हो जाते हैं तो उस काम की वैल्यु नहीं रहती। और फिर से उतनी ही मेहनत लगती है कि फिर हमको बजट में उन कार्यों को जोड़ना पड़ता है। यह हमारे लिए भी प्रश्नचिन्ह है कि हमने इस सदन में क्या किया? हमने कितनी आवाज उठायी और हमने कितना प्रयास किया? हम जनप्रतिनिधियों के लिए यह प्रश्नचिन्ह खड़ा हो जाता है कि आखिर बजट में स्वीकृत कार्य को ए.एफ., टी.एस. क्यों नहीं मिला? हमारे कार्य को स्वीकृति क्यों नहीं मिली? यह बजट के लिए प्रश्नचिन्ह है। सरकार बहुत भ्रम में है कि हमने अपने 36 वायदे पूरे किए। सरकार इसलिए भी भ्रम में है वह सोचती है कि हमने जनता तक योजनाओं को पहुंचा दिया। सरकार इसलिए भी भ्रम में है उसे लगता है कि जनता में उनका विरोध नहीं है। इस किस्से के साथ बताना चाहूंगी कि दिखावा बहुत महंगा पड़ता है। चाहे वह होर्डिंग्स के माध्यम से हो, चाहे अन्य माध्यम से हो। मैं एक छोटा सा किस्सा सुनाना चाहती हूँ। एक व्यक्ति की नई-नई नौकरी लगी थी जैसे यह सरकार अभी नई-नई बैठी है। एक व्यक्ति की नई-नई नौकरी लगी थी, अब वह लोगों को यह जताना चाहते थे कि वह बहुत व्यस्त हैं। वह अपने ऑफिस में बैठे, उन्होंने अपने चपरासी को कह दिया कि यदि कोई मुझसे मिलने आएगा तो आप यह बता दीजिएगा कि मैं बहुत व्यस्त हूँ। तो वह लिखा-पढ़ी करने लग जाते हैं। अब एक व्यक्ति उनसे मिलने आया, उनको लगा कि यह उनका पड़ोसी होगा तो वह भ्रम में थे। वह जबरदस्ती टेलीफोन में बात करने लग गए, यह दिखाने के लिए की जैसे मैं बहुत व्ययक्त हूँ। जैसे सरकार दिखाती है कि हम बहुत व्यस्त हैं हम जनता का काम कर रहे हैं। उस व्यक्ति ने यह दिखाने

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

का प्रयास किया कि मैं बहुत व्यस्त हूँ। 10 मिनट, वह व्यक्ति बाहर खड़ा रहा और 10 मिनट बाद उस व्यक्ति ने सामने वाले को अंदर बुलाया तो उसने कहा कि सॉरी, मैं बहुत व्यस्त था। तो उसने कहा कि भाईसाहब, मैं आपका पड़ोसी नहीं हूँ, मैं तो फोन वाला हूँ, आज जिस बंद फोन में बात कर रहे हैं, मैं आपका टेलीफोन बनाने आया था। यह सरकार इस भ्रम में है वह यह दिखावा करती है कि हम पूरी जनता का काम कर रहे हैं, लेकिन जनता आपको मुंहतोड़ जवाब देने के लिए दरवाजे पर खड़ी है।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- यह अपनी सरकार की बात बता रही है।

श्रीमती रंजना डिपेन्द्र साहू :- माननीय सभापति महोदय, यह सरकार केवल और केवल दिखावे की सरकार रह गई। धोखे में हमारे क्षेत्र के एकाध-दो काम स्वीकृत हो जाते हैं..।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- रंजना जी, डॉक्टर साहब बांटे रिहिस तें मोबाईल के बात करत रिहिस हो ही।

श्रीमती रंजना डिपेन्द्र साहू :- वह मोबाईल नहीं, दूरभाष था।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- यह अपनी सरकार की आत्मकथा बता रही है।

सभापति महोदय :- अपनी बात रखें। आप टोकाटाकी न करें।

श्रीमती रंजना डिपेन्द्र साहू :- माननीय सभापति महोदय, धोखे से हमारे क्षेत्र के एकाध-दो काम स्वीकृत हो जाते हैं। मैं हमारे क्षेत्र का बता रही हूँ। सिंचाई विभाग में 3 साल पहले एक कार्य स्वीकृत हुआ। आज तक सरकार, विभाग उसका टेण्डर नहीं लगा पायी। जो यहां टेक्निकल लोग बैठे हैं, वह ध्यान से कान खोलकर सुन लें। वह कभी एस्क्यूज देते हैं कि बिलो में टेण्डर गया। कभी एस्क्यूज़ देते हैं कि एबव में टेण्डर गया। आप जो सरकार का वेतन पा रहे हैं वह क्या कर रहे हैं। जब हम टेक्निकल नहीं है। यदि माननीय मंत्री जी टेक्निकल नहीं हैं तो जो लोग टेक्निकल हैं वह लोग क्या करते हैं? तीन-तीन सालों तक विभाग के जो लोग हैं वह अभी तक इन 3 सालों में कोई टेण्डर नहीं लगा पाये हैं। इसका परिणाम यह होता है कि हमें जनता को जवाब देना पड़ता है कि हम क्या कर रहे हैं? यह स्थिति है। टेण्डर इनके अंदर का मामला है। यदि ऐसे इस प्रकार काम चलेगा तो ऐसा ही काम चला है। 3-3, 4-4 साल तक एक काम का टेण्डर नहीं हुआ, हमारे क्षेत्र में धोखे से एकाध काम स्वीकृत हो जाता है तो यह सरकार की नाकामी है कि वह एक टेण्डर नहीं लगा पाती। वही हाल शिक्षा विभाग का है। मैंने उस दिन भी मंत्री जी से पूछा और आज भी मंत्री जी से पूछना चाहती हूँ कि यह ट्रांसफर का मामला क्या है? व्याख्याता अंग्रेजी के हैं तो एक जगह तीन-तीन व्याख्याता हैं। एक जगह एक भी व्याख्याता नहीं है। कहीं पर संस्कृत पढ़ाने वाले दो-दो लोग हैं, एक जगह एक भी संस्कृत पढ़ाने वाले नहीं है। मंत्री जी, यह शिक्षा विभाग कैसे चलेगा? हमारे बच्चे कैसे पढेंगे? हम इतना बढ़ा चढ़ाकर बताते हैं हम आत्मानंद से उठकर बात करें । हम जिन सरकारी स्कूलों को संरक्षण दे रहे हैं हम अपना बड़प्पन दिखाएं। सरकार अपना बड़प्पन दिखाए और काम करें।

श्री उमेश पटेल :- रंजना जी, डॉ. साहब के जमाना में का होए रिहिस हे बताऔ एक प्रिंसपल रिहिस, बरमकेला से ओकर ट्रांसफर खरसिया में होईस। अउ उहां के झन आने हा ज्वाईन कर लिस। ओ जब ज्वाईन करे बर आईस तो बोलिस कि तोर बर जगह नइ हे। अब बोलिए कि में अपन मूल स्थान में चले जथौं। मूल स्थान में गिस तो उहां एक झन आने हा ज्वाईन कर ले रिहिस। 6 महीना तक बिना तनख्वाह के घूमत रिहिस।

श्रीमती रंजना डिपेन्द्र साहू :- जो आप बता रहे हैं वही स्थिति हमारे यहां हैं। माननीय मंत्री जी, आप जो स्थिति बता रहे हैं वही स्थिति है।

श्री शिवरतन शर्मा :- तुमन ओला सुधार नइ पाए हो। ए बतावत हे।तुंहर कथनी अउ करनी में अंतर हे।

श्री उमेश पटेल :- जो आदत बन गे हे।

डा. लक्ष्मी ध्रुव :- के झन प्रोफेसर भर्ती करए रहे, बतावव अपन कार्यकाल में। न तो किसी का प्रमोशन और न भर्ती हो रही थी।

श्री अमितेष शुक्ल :- यह आपके समय में हो रहा था।

सभापति महोदय :- आप अपनी बात रखें।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय सभापति जी, इस सरकार की हालत खराब है, एक रोड के बारे में मैंने पी.डब्ल्यू.डी. विभाग की रोड है, मंत्री जी को बार-बार अवगत कराया, विभाग के अधिकारियों को एक बार नहीं, तीन-तीन बार अवगत कराया। दुर्भाग्य की बात है कि मेरे क्षेत्र में माननीय मुख्यमंत्री जी गये हैं और वहां पर वह घोषणा भी करके आये हैं कि यह रोड साल भर के अंदर बन जायेगी। हम तो इस प्रतीक्षा में थे कि हमारी चले या न चले पर मुख्यमंत्री जी की जरूर चलेगी। लेकिन अब यह विश्वास हो गया है कि उनकी भी शायद नहीं चलती होगी।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- अर्जुनी की रोड बन रही है।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय सभापति जी, इस सरकार ने जो बजट लाया और जो विनियोग है, हम विनियोग में किस अधिकार से सरकार को खर्च करने के लिए हामी भरें। जितनी पंचायत हैं, वहां पर अभी काम बंद है क्योंकि पंचायत के सचिव हड़ताल पर गये हैं। रसोईया संघ का केवल आपने 300 रुपये बढाया है, रसोईयां संघ हड़ताल पर चले गये हैं। बिहान की बहनें जिनके लिए आप बहुत दम भर रहे थे, आज हमारी बिहान की बहनें अपनी नियमितिकरण की मांग को लेकर हड़ताल पर चली गई हैं। भारतमाता वाहिनी की टीम बनी हमारी बहनों को शराबबंदी का काम करने के लिए लगाया गया था। जब से यह कांग्रेस की सरकार आई है तब से हमारी बहनें घर बैठ गई हैं। वह कुछ काम नहीं कर रही हैं, समाज सुधार का काम करती थीं। असामाजिक तत्व जो अनावश्यक रूप से गांव का माहौल खराब करते थे यह भारतमाता वाहिनी की बहनों का डंका बजता था और वह असामाजिक

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

तत्वों को खत्म करने के लिए काम करती थीं, लेकिन आज उनको भी घर बिठाकर रख दिया गया है।

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- माननीय सभापति जी, अब दोनों ज्ञानी बृजमोहन भैया और अजय भैया पहुंच गये हैं।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय सभापति जी, शराबबंदी की कमेटी बनी है और कमेटी के अध्यक्ष जी के लिए मैं दो लाईन कहूंगी। शराबबंदी की कमेटी है और शराबबंदी कमेटी के अध्यक्ष जी अपनी पूरी टीम के साथ भ्रमण में गये थे। मैं दो लाईनें कहना चाहती हूं -

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं इनकी
सदियों जरा दुश्मन, दौरे जमा इनका था।

इनकी जीवनी में यह दो लाईन लिखी, मुझे बहुत अच्छी लगी कि वास्तव में यह इन्हीं के लिए लिखा गया है। क्योंकि शराबबंदी तो अभी तक नहीं हुई। यह कमेटी अध्ययन करती है, भ्रमण करती है। पूरा अध्ययन करके आती है लेकिन हासिल आये जीरो के जीरो। शराबबंदी का असर पारिवारिक, सामाजिक और आर्थिक रूप से कितना प्रभाव पड़ेगा, इस सदन में उनको यहां पर उस विषय को रखना था कि आपने अध्ययन, भ्रमण में क्या पाया? शराबबदी से किस प्रकार से सामाजिक रूप से क्या कोई नुकसान हो सकता है या उसके सामाजिक फायदे हो सकते हैं, इसका पूरा डेटा उनको यहां पर सदन में सभी माननीय सदस्यों को अवगत कराने के लिए उस विषय को रखना था। यह ढिढोंरा पीटते हैं कि हम शराबबंदी के लिए भ्रमण पर गये थे।

सभापति महोदय :- चलिये, समाप्त करें।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय सभापति महोदय जी, यह बड़ा दुर्भाग्य है, लोग अपने परिवार को लेकर पर्यटन स्थलों में भी जाते हैं, लेकिन इन्होंने शराबबंदी करना तो दूर अब पर्यटन स्थलों में भी हामी भर दी है कि आराम से वहां शराब बिकवाईये और परिवार जहां पर है, वहां पर सारी मर्यादायें खत्म हो जाये। यह इस तरह की व्यवस्था इस सरकार ने करके रखी है। माननीय सभापति महोदय, छत्तीसगढ़िया सरकार है। मुख्यमंत्री जी बोलते हैं तो सभी गौरवान्वित महसूस करते हैं कि छत्तीसगढ़िया सरकार है। मेरा इस सरकार से एक आग्रह है कि 15 अगस्त और 26 जनवरी में जिस प्रकार वह अपना संदेश जनता मे देते हैं तो कृपया हिन्दी में दे दें। कई लोग बेचारे हमारे जो संदेश पढ़ने आते हैं वह छत्तीसगढ़ी पढ़ नहीं पाते। जो भाषण 15 मिनट में खत्म हो जाता है वह आधे घंटे, पौने घंटे में उनका भाषण खत्म होता है।

माननीय सभापति महोदय, कांग्रेस का 03 तीन का अधिवेशन हुआ। लेकिन इतनी तानाशाही सरकार है। पी.एस.सी. की परीक्षा दिलाने हमारे कुछ साथी बाहर से आये थे और उनको इस तरह की तकलीफों का सामना करना पड़ा कि कुछ लोग तो रेलवे स्टेशन में भी सोये थे। उन्होंने रेलवे स्टेशन में रात गुजारी। यहां पर फरमान जारी कर दिया गया था कि कोई भी होटल बाहर के लोगों के लिए 03

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

दिन तक बुक नहीं रहेंगे। हम अतिथि देवो भव की परंपरा निभाते हैं। लेकिन बाहर से जो लोग आये हैं उनको यह दिन देखना पड़ा कि उन्होंने रेलवे स्टेशन में रात गुजारी है। आयुष्मान कार्ड चल रहा है। हम खुश होते हैं कि केन्द्र की सरकार ने आयुष्मान कार्ड बनाया है। लेकिन यहां पर आयुष्मान कार्ड का जो उपयोग होना चाहिए, आपने 150 प्रकार की बीमारी बंद कर दी। अब समस्या यह आ रही है।

सभापति महोदय :- चलिये, समाप्त करिये। श्रीमती इंदु बजारे जी।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय सभापति जी, हर बीमारियों में पैकेज फिक्स रहता है। लेकिन कहीं पर भी जिम्मेदार अधिकारी या जो प्राइवेट हॉस्पिटल हैं, यह हितग्राहियों को ठीक से जानकारी नहीं दे पाते कि पैकेज कितने का है। यदि 40 हजार, 50 हजार का पैकेज है उतने में ही प्राइवेट हॉस्पिटल इलाज करते हैं और बाकी का पैसा जो हितग्राही है, जो वहां पर मरीज जाते हैं, उनके परिवार वालों से पैसा वसूला जाता है। तो आयुष्मान योजना का ठीक से फायदा उन लोगों को नहीं मिल पा रहा है।

सभापति महोदय :- चलिये समाप्त करें।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय सभापति महोदय जी, हमारे यहां नगर पंचायत आमदी है। उसकी 10 बिस्तर अस्पताल की मांग रही। मैंने बार-बार सरकार से आग्रह किया था कि वहां पर उनको पूरी व्यवस्था के साथ 10 बिस्तर अस्पताल की व्यवस्था दी जाए, लेकिन बड़ा दुर्भाग्य है कि मैं 4 साल तक मांगती रही, लेकिन अभी तक कुछ नहीं मिला। अभी नगर-निगमों में यदि सबसे अच्छा काम कोई काम चल रहा है। माननीय मंत्री जी बैठे हैं। अभी बोल रहे थे कि मैं अकेला काफी हूं। मैं भी इधर अकेले काफी हूं। सबसे अच्छा काम यदि चल रहा है तो एक नंबर अवैध प्लाटिंग का काम चल रहा है। आपके विभाग में बहुत मस्त चल रहा है।

सभापति महोदय :- चलिये समाप्त करें।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- यदि एकाध शिकायत चली जाती है तो नगर -निगम के अधिकारियों के लिए वह दिन वसूली के लिए दिन रहता है। वह उस दिन इतने खुश हो जाते हैं कि वह उस स्थान पर जायेंगे, बाकायदा बोर्ड लगाकर आयेंगे और जो जिम्मेदार व्यक्ति हैं, उसको बता भी देते हैं कि हमने खानापूर्ति कर दी है, बोर्ड लग गया है। शाम को अवैध प्लाटिंग करने वाले लोग जाते हैं, बोर्ड को हटाकर आते हैं। उनके लिए जो डिसीजन लेना है, वह क्यो नहीं लेते हैं। जिस स्थापन को बताया गया कि अवैध है, उसकी खरीदी-बिक्री पर रोक लगाने के लिए काम क्यों नहीं करते। यह प्रश्न के उत्तर में देते हैं कि जो स्थान वहां पर जो उल्लेखित किया गया है, उसके लिए हमने कार्रवाई की है, लेकिन कार्रवाई केवल खनापूर्ति तक सीमित रहती है। उस स्थान का क्रय-विक्रय न हो इसके लिए आपने कोई बड़ी योजना नहीं बनाई है। इस नगर-निगम में यदि कोई बहुत अच्छा काम चल रहा है तो ..।

सभापति महोदय :- चलिये समाप्त करें। श्रीमती इंदू बंजारे।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- यदि सबसे अच्छा काम चल रहा है तो इनके यहां भवन अनुज्ञा काम बहुत अच्छे से चल रहा है। कोई भी, किसी भी प्रकार से बिना दस्तावेज के भवन अनुज्ञा की अनुमति इन लोगों के माध्यम से दी जा रही है। पूरी जानकारी विभाग को रहती है, लेकिन विभाग की मिलीभगत से इनके अधिकारी-कर्मचारियों की मिलीभगत से भवन नुज्ञा का खेल धड़ल्ले से नगर-निगमों में चल रही है।

सभापति महोदय :- चलिये समाप्त करें। बैठ जाइये।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- दुर्भाग्य देखिये कि ग्रीन लैंड में वह भवन बनाने की अनुमति दे देते हैं। उसको बोलने वाला कोई नहीं है। यदि अधिकारी बैठे हैं। कुछ कान में पड़ता होगा तो उसको सुन लीजियेगा। इस प्रदेश का बड़ा दुर्भाग्य है। हम बार-बार कहते गये। सरकार ने हमारी सुनी नहीं, लेकिन हम इस सरकार को किस अधिकार से पैसे को खर्च करने की अनुमति दें और मैं इस विनियोग का पूरे समर्थन के साथ विरोध करती हूं।

सभापति महोदय :- धन्यवाद। श्रीमती इंदू बंजारे।

श्री बृहस्पत सिह :- आपको समर्थन करने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- समर्थन के लिए धन्यवाद।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- सभापति जी, मैंने समर्थन के साथ विरोध कहा।

श्रीमती इंदू बंजारे (पामगढ़) :- माननीय सभापति महोदय जी, मैं माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा लाये गये छत्तीसगढ़ विनियोग विधेयक पर चर्चा करने के लिए खड़ी हुई हूं। सबसे पहले हमारे बहुत से साथियों ने अपनी बातों की शुरूआत पंक्ति के साथ किया। मैं भी दूसरों के लिए नहीं, केवल महिलाओं के लिए एक पंक्ति के साथ शुरूआत करना चाहूंगी कि -

हौसला है बुलंद, आंखें पर सफर करते हैं।
पंख भेले ही न हो, पर उड़ने का हुनर रखते हैं। (मेजों की थपथपाहट)

सम्माननीय सभापति महोदय जी, मुझे याद है कि जब हमारे माननीय मुख्यमंत्री महोदय जी ने हम जितने भी महिला विधायक हैं। जब केरल में एक सेमिनार हो रहा था तो पूरे देश के सभी सांसद, स्पीकर्स वहां पर आये थे। हमें भी सौभाग्य प्राप्त हुआ था। हम लोग भी गये थे। जब वहां पर हमारे पूर्व राष्ट्रपति महोदय सम्माननीय रामनाथ कोविंद साहब जी गये थे, उनके ओपनिंग थी तो जब हम उनसे मिले तो उन्होंने एक बात कहा। पूरे देश के जितने भी विधायक, सांसद, स्पीकर्स थे, सबके सामने में उन्होंने यह कहा था कि छत्तीसगढ़िया सबसे बढ़िहा। हमें बहुत ही गौरव महसूस हुआ था। चूंकि हम लोग छत्तीसगढ़िया थे और हमारे राष्ट्रपति जी हम लाग को ऐसा बोल रहे थे, इसलिए हम लोगों को बहुत ही गौरव महसूस हो रहा था। गौरव इसलिए महसूस हुआ था, क्योंकि हमारे छत्तीसगढ़ की जो भाषा है, जो बोली है, जो हमारी संस्कृति है, जो हमारे छत्तीसगढ़ के लोग इतने भोले-भाले हैं कि हर प्रदेश में उनको

एक सम्मान मिलता है। उस सम्मान को ऐसे ही बरकरार रखना छत्तीसगढ की सरकार की भी जिम्मेदारी है और पूरे समस्त प्रदेशवासियों की जिम्मेदारी है, लेकिन आज हम लोग देख रहे हैं कि दिन-ब-दिन जो हमार संस्कृति है, वह खत्म हो रही है। दिन-ब-दिन अत्याचार, अन्याय बढ़ता जा रहा है। हर दिन, प्रति पल मर्डर व अन्य बहुत सारी ऐसी घटनायें घट रही हैं जो हमारे प्रदेश के सम्मान को शर्मसार करते जा रही है। सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री जी और गृह मंत्री जी से मेरा विशेषकर निवेदन है कि छत्तीसगढ़ की अस्मिता को बचाना और छत्तीसगढ़ की संस्कृति को बचाना चूंकि हम सबकी जिम्मेदारी है तो वे इस पर विशेष ध्यान दें । माननीय सभापति महोदय, मैं किसानों के संबंध में कुछ शब्द रखना चाहूंगी । बहुत अच्छी बात है कि छत्तीसगढ़ के हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी ने समर्थन मूल्य में धान खरीदी की और अनेक योजनाओं से उन्हें लाभ भी पहुंचाया लेकिन छत्तीसगढ़ में ऐसे गरीब तबके के किसान होते हैं जो रोज कमाते हैं और रोज खर्च करते हैं । यानी कमाई के जरिये से ही वे खाना खा सकते हैं तो ऐसे लोगों के लिये काफी दिक्कत तब हो जाती है जब चूंकि हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी उनको किश्त में दे रहे हैं उससे गरीब तबके के किसानों को, मैं यह नहीं बोल रही हूं कि सबको परेशानी होती है लेकिन गरीब तबके के जो किसान होते हैं उनको काफी दिक्कत होती है तो मेरा निवेदन है कि किश्त में न देकर एक-साथ देंगे । चूंकि साल भर के समय में जो 4 महीने की कमाई होती है, उसमें पूरा परिवार आश्रित होता है । पूरे परिवार का खर्चा उसमें आश्रित होता है तो अगर उन्हें एक-साथ मिल जायेगा तो उन्हें संबल मिलेगा । माननीय सभापति महोदय, मैं यह बताना चाहूंगी कि छत्तीसगढ़ हो या पूरा प्रदेश हो या पूरा देश हो । हर जगह पर किसान खून-पसीने की कमाई करके धान उगाते हैं भले ही 4 महीने का समय हो लेकिन वह खाना-पीना त्यागकर पूरा समय खेती-किसानी पर लगाते हैं । चूंकि हम भी किसान की बेटी हैं, हम भी किसान वर्ग से आते हैं तो हमें मालूम है कि खेती-किसानी के लिये कितनी मेहनत और कितना संघर्ष करना पडता है । सारे अधिकारी और सारे कर्मचारी लोग स्ट्राईक करते हैं, यदि किसान लोग हड़ताल कर देंगे । यदि किसान यह ठान लेंगे कि हम धान नहीं उगायेंगे तो आप कल्पना भी नहीं कर सकते कि हमारी स्थिति कितनी खराब हो जायेगी ? चूंकि हम कपड़े तो खा नहीं सकते, कपड़े का उद्योग लगा लें लेकिन कपड़े को नहीं खा सकते हैं । लोहे का उद्योग लगायेंगे लेकिन लोहे को नहीं खा सकते, सोना-चांदी जितने का भी उद्योग लगा लें लेकिन उसको हम खा नहीं सकते हैं । यदि खाना ही है तो हम धन को, हमारे चावल को खा सकते हैं इसलिये हमें हमेशा किसानों का सम्मान करना चाहिए।

माननीय सभापति महोदय, मैं बेरोजगारी से संबंधित जो भत्ता है उसके संबंध में बोलना चाहूंगी । मैंने पिछले भाषण में सम्माननीय मंत्री महोदय जी से प्रश्न भी पूछा था कि क्राईटेरिया में कौन-कौन आता है, यदि उस परिवार में 4 बच्चे हैं तो क्या चारों उस क्राईटेरिया में आयेंगे तो उन्होंने बोला कि नहीं आता है तो माननीय सभापति महोदय जी आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से मेरा विशेष

निवेदन है कि छत्तीसगढ़ में हमारे ऐसे बहुत से लाखों युवा बेरोजगार हैं जो पढ़े-लिखे होने के बावजूद भी आज नौकरी की तलाश में भटक रहे हैं । अगर सही मायने में हम उनकी बेरोजगारी खत्म करना चाहते हैं तो हमें उनको रोजगार देना पड़ेगा और रोजगार ऐसा हो जो सबको मिले । क्राईटेरिया में ही बंधित न हो, सबको रोजगार मिले क्योंकि आज एक परिवार में यदि कोई बड़ा बेटा नौकरी करता है तो वह अपने में ही सीमित रह जाता है । बाकी तीनों बच्चे भीख मांगने लगते हैं तो इसीलिये मैंने पूछा था कि क्या चारों भाईयों को बेरोजगारी भत्ता मिलेगा ? अगर हम सबको समान रूप से देंगे, क्राईटेरिया में भी है और अगर उनको मिलना चाहिए तो सबको समान रूप से मिलना चाहिए । माननीय सभापति महोदय, मैंने शराबबंदी के बारे में सबसे पहले विधानसभा में प्रश्न लगाया था । हमारे बहुत ही सम्माननीय मंत्री जी ने जवाब दिया था कि प्रक्रियाधीन है करके तब से अब तक 3 साल बीत चुके लेकिन तब से प्रक्रिया, प्रक्रिया, प्रक्रिया ही चल रही है । छत्तीसगढ़ सरकार का शराबबंदी करने के लिये कोई भी ठोस कदम नजर नहीं आ रहा है ।

माननीय सभापति महोदय, मैं आपका ध्यान आकर्षित कराना चाहूंगी कि शराब के कारण परिवार में क्लेश हो रहा है । पति तो शराब पीता है लेकिन उसका हर्जाना बेटे, बच्चों और पत्नी को भुगतना पड़ता है । पति रात में शराब पीकर जाता है और अपनी पत्नी को मारता है, अपने बच्चों को मारता है ।

उच्च शिक्षा मंत्री (श्री उमेश पटेल) :- इंदू जी, आज अपने भाषण में अजय चंद्राकर जी ने कहा कि छत्तीसगढ़ की महिलायें दारू पीने में पुरूषों से आगे हो गयी हैं । क्या आप इस बात से सहमत हैं ?

श्रीमती इंदू बंजारे :- नहीं । माननीय मंत्री जी, मैं इस बात से सहमत नहीं हूं । (हंसी)

सभापति महोदय :- चलिये, समाप्त करें ।

श्रीमती इंदू बंजारे :- माननीय सभापति महोदय, मुझे मालूम नहीं है क्योंकि मैं दिल और दिमाग से बात करती हूं । मैं अपनी नजरों के सामने जो देखती हूं उन सभी को यहां रखने का काम करती हूं ।

श्री बृहस्पत सिंह :- इसका मतलब चंद्राकर जी ने जो बात कही थी । यह महिलाओं का अपमान करने वाली बात है ।

श्रीमती इंदू बंजारे :- माननीय सभापति महोदय, अगर कोई शराब पी भी रहा है तो अपने पति के कारण डिप्रेशन में आकर पी रहे होंगे, यह मेरा दावा है । अगर कोई महिला शराब पी रही है तो उनका पति शराब पीकर उनको परेशान करेगा तो वह डिप्रेशन में बेचारी नशे में जा सकती है, यह मैं कह सकती हूं लेकिन महिलाएं ऐसा नहीं कर सकतीं इसको मैं दावे के साथ कह सकती हूं ।

संसदीय सचिव, आदिमजाति मंत्री से संबद्ध (श्री द्वारिकीधीश यादव) :- इंदु जी, हमारे अजय चंद्राकर जी किसको बोलते हैं ?

सभापति महोदय :- चलिये समाप्त करें ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्रीमती इंदू बंजारे :- नहीं बबा, हमर घर में कोई ये सब नइ चलय तो हमन निष्फिक्र हन । माननीय सभापति महोदय, साथ ही जनजीवन मिशन के तहत्..।

श्री अजय चन्द्राकर :- मामाजी, आप लोग पढ़ेंगे लिखेंगे तो फैमिली हेल्थ सर्वे की वेबसाइट पर जाइए । सरकारी वेबसाइट है, मैंने गलत बोला है या सही बोला है। छत्तीसगढ़ की क्या स्थिति है, उसमें पढ़ लीजिए । वह भारत सरकार के अधिकृत सर्वे की है । नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे, स्वास्थ्य विभाग की । उसको पढिये ।

श्री बृहस्पत सिंह :- [xx][7]

श्री अजय चन्द्राकर :- और अगर पढ़ने लिखने में रूचि नहीं है तो उसको मनोरंजन का साधन बनाकर रखिए ।

श्री बृहस्पत सिंह :- [xx]

श्री अजय चन्द्राकर :- बृहस्पत जी, पढ़ाई लिखाई से कोई संबंध हो तो बात किया करो । हर बात के ज्ञाता मत बनो, समझ गए ना । एकाध बार अच्छा लगता है । पूरे सदन में आपको छोड़कर, हर बात का ज्ञाता कोई नहीं है ।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- आप कई समय में पिछली सरकार की तुलना, वर्तमान सरकार की तुलना, कई मुद्दे पर आपने कहा है लेकिन एक योजना पर आपने कभी नहीं बोला, कर्ज माफी और राजीव न्याय योजना में बहस करा ली जाए, सोसायटी खरीदी के मामले में कभी इस बात की चुनौती नहीं दी । इसके लिए समय निर्धारण करवा लीजिए ।

श्रीमती इंदू बंजार :- अच्छे कार्य का समर्थन भी करते हैं और बधाई भी देते हैं।

श्री दवरिकाधीश यादव :- आपको नहीं, विद्वान भांचा अजय चन्द्राकर और शिवरतन भइया को बोल रहा हूं ।

श्रीमती इंदू बंजारे :- सभापति जी, जल जीवन मिशन के तहत सम्मानित मंत्री जी का ध्यान आकर्षित कराना चाहूंगी । चूंकि विनियोग विधेयक है इसलिए अधूरे कार्यो के बारे में यहां बोलना रहता है । जब जीवन मिशन के नाम पर पूरी सड़कों को, पूरी गलियों को खोदा जा रहा है । माननीय बृजमोहन जी खोदापुर बोलते हैं तो निश्चित रूप से पूरा खोदापुर बना दिया गया है । ठेकेदार इतने निर्लज्ज, इतने बेशर्म हैं कि जस का तस उखड़ा हुआ छोड़कर भाग गए हैं । सभापति जी, अगर हम लोगों को सही मायने में सुविधा देना चाहते हैं । उन सुविधाओं में सड़कें प्रमुख हैं । अब, जबकि बरसात आएगी तो वे उसमें चल भी नहीं पाएंगे । मैं आपके माध्यम से मंत्री महोदय से निवेदन है कि जितनी भी सड़कें पाईप लाईन विस्तार के दौरान खराब हुई हैं उनका सर्वे कराकर, उनको बनाना छत्तीसगढ़

[7] [xx] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

सरकार की जिम्मेदारी है । सभापति जी, मैं महिलाओं के संबंध में बोलना चाहूंगी । महिला सशक्तिकरण की बात करते हैं और बड़े बड़े बैनर लगवाते हैं । सम्माननीय प्रियंका गांधी जी भी बोलती हैं कि नारी हूं लड़ सकती हूं । बहुत अच्छी बात है लेकिन कहने भर के लिए ही अच्छी बात है । इन्होंने जो योजना लाई है वह अच्छी है लेकिन इनका लाभ गरीब तबके की महिलाओं को मिलना चाहिए वह नही मिल पा रहा है । आज हम देख सकते हैं मैं आंकड़े तो नहीं बताउंगी लेकिन आपका ध्यान आकर्षित कराना चाहूंगी कि बाल विवाह के नाम पर हमारी बेटियों के साथ अन्याय अत्याचार हो रहा है ।

समय :
6.43 बजे **(उपाध्यक्ष महोदय (श्री संतराम नेताम) पीठासीन हुए)**

उपाध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से मैं निवेदन करना चाहूंगी कि ऐसा ठोस नियम बनाएं कि हमारी बेटियों की शादी कम उम्र में न हो, उनके साथ सोसल अन्याय न हो । लिंग भेद के कारण हमारी बेटियां कोख में मारी जा रही हैं । आज भी हमारी बच्चियों को कचरे के डिब्बे में पाया जा रहा है । मैं आपको बताना चाहूंगी कि मेरे पामगढ़ क्षेत्र में भुईगांव है वहां पर दो दिन की बच्ची को खेत में फेंक दिया गया था, सिर्फ इसलिए कि वह लड़की है । बेशक स्वरूप बदला है लेकिन आज भी बेटियों के साथ शोषण हो रहा है, लिंग के आधार पर उनको मारा जा रहा है, दफनाया जा रहा है, कचरे के डिब्बे में डाला जा रहा है । यह आज भी हमारे प्रदेश में चालू है । हमारी बेटियों के साथ जो अत्याचार हो रहा है, पारिवारिक हिंसा हो, सामाजिक हिंसा हो, राजनीतिक हो हर स्तर पर बेटियों के साथ जो अन्याय हो रहा है उसमें अंकुश लगाने की आावश्यकता है। यह कदम छत्तीसगढ़ सरकार को उठाने की आवश्यकता है । हमारी बहन बेटियों के साथ जो घटित हो रहा है उसे मैं पंक्ति के माध्यम से बताना चाहूंगी - जाने किन किन निगाहों से दो-चार होना पड़ता है, औरत को ताउम्र अखबार होना पड़ता है । औरतें हर दिन, हर वक्त शोषण का शिकार हो रही हैं । आपके माध्यम से मुख्यमंत्री जी से, गृहमंत्री जी से निवेदन है कि उन्हें सुरक्षित रखना हमारी जिम्मेदारी है, प्रदेश की सरकार की जिम्मेदारी है, गृह विभाग की जिम्मेदारी है। क्योंकि एक सशक्त और शिक्षित महिला सभ्य समाज का निर्माण करती है। सभ्य समाज के निर्माण के लिए महिलाओं की भागीदारी होना बहुत आवश्यक है। चाहे वह शिक्षा के क्षेत्र में हो, चाहे वह स्वास्थ्य के क्षेत्र में हो, चाहे वह राजनीति के क्षेत्र में हो। मैं अपने छत्तीसगढ़ की समस्त महिलाओं से भी कहना चाहूंगी। मैं इस पवित्र सदन के माध्यम से सभी बहनों से निवेदन भी करना चाहूंगी, कभी भी हम महिलाओं को अपने आप में यह नहीं लगना चाहिए कि हम कमजोर हैं, हम बेबस हैं, हम लाचार हैं। अगर आपको जब भी लगे तो तीन बातों को याद रखना। पहला, हमारी इंदिरा गांधी जी जो प्रधानमंत्री थी, वह भी एक बेटी थी, नारी समाज से आती थी। श्रीमती प्रतिभा पाटिल जी, वह राष्ट्रपति थी, वह भी एक बेटी थी, नारी समाज से आती थी। यहां तक की चांद तक को छूने वाली कोई थी तो वह भी नारी

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

समाज की एक बेटी कल्पना चावला थी। हमको कभी भी अपने आपको कमजोर नहीं समझना चाहिए। मैं छत्तीसगढ़ की समस्त बहनों को, हमारी बेटियों से कहना चाहूंगी। सम्माननीय मुख्यमंत्री जी तो नहीं हैं लेकिन अपने कक्ष से सुन रहे हैं तो मेरा एक विशेष निवेदन है। एक परिवार में एक बेटा भले ही अपने पिता से शिकवा करता है, शिकायत करता है लेकिन कभी उनका अनादर नहीं करता। शिकवा करता है, शिकायत करता है, इसका यह मतलब नहीं है कि उनका मान, सम्मान नहीं करता। उसी तरह पूरे सदन में जितने भी हमारे सदस्य हैं, हमारी मुख्यमंत्री जी सबके पिता के समान हैं, सबके मार्गदर्शक के समान हैं। भले ही हम शिकवा करते हैं, शिकायत करते हैं, चूंकि यह हमारी जिम्मेदारी है, जो भी गलती होती है उसको यहां पर बताना पड़ता है। अपने क्षेत्र की समस्याओं को यहां पर रखना, हमारी जिम्मेदारी है, हमारा धर्म होता है। इसका मतलब यह नहीं कि हम माननीय मुख्यमंत्री महोदय जी का सम्मान नहीं करते हैं, हम उनका बहुत सम्मान करते हैं, बहुत आदर करते हैं। उन्होंने भी हमें हमेशा बहन कहकर ही संबोधित किया है। मैं इस सदन के माध्यम से विनियोग के माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री जी से मेरा निवेदन है कि मेरे पामगढ़ क्षेत्र में बेटियों के सम्मान के लिए अगर कन्या महाविद्यालय खुल जाए तो बहुत कृपा होगी, क्योंकि हमारी बेटियां शिक्षा के स्तर पर काफी पीछे है। अगर कन्या महाविद्यालय खुल जाएगा तो हमारी बेटियों को शिक्षा के स्तर में आगे बढ़ने में भी मदद मिलेगी। मेरा यही निवेदन है। मैं पामगढ़ में कन्या महाविद्याल खोलने की मांग करते हुए, अपनी बातों को समाप्त करती हूं। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्रीमती सावित्री मनोज मंडावी (भानुप्रतापपुर) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं छत्तीसगढ़ विनियोग विधेयक के पक्ष में बोलने के लिए खड़ी हुई हूं। साथ ही मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को भी धन्यवाद ज्ञापित करने के लिए भी खड़ी हुई हूं। जो कि उन्होंने इतना अच्छा और सभी वर्गों को ध्यान में रखते हुए यह बजट पेश किया है। बजट का जो लक्ष्य है, हम महिलाओं के लिए, युवाओं के लिए, किसानों के लिए, गरीब वर्ग और आम जनता को नई शक्ति देने एवं नई दिशा की ओर ले जाने का प्रयास किया गया है। राजीव गांधी ग्रामीण भूमिहीन कृषि मजदूरों को 7000 रूपये हर वर्ष की सहायता, माननीय मुख्यमंत्री जी के द्वारा दी जा रही है, उसके लिए मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद ज्ञापित करती हूं। मैं बस्तर क्षेत्र से आती हूं तो हमारे बस्तर क्षेत्र में जो देवगुड़ी और घोंटुल है, माननीय मुख्यमंत्री जी की मांग की मंशा के अनुरूप हमारे बस्तर और सरगुजा में जितने भी निवासरत आदिवासी भाईयों के संस्कृति के संरक्षण को बढ़ावा देते हुए, मातागुड़ी, देवगुड़ी का जीर्णोद्धार और नया भवन निर्माण की स्वीकृति दी जा रही है जो हम सबके लिए बड़े गर्व की बात है। सरकार घोंटुल निर्माण के माध्यम से हमारे आदिवासी के रीति-नीति और संस्कृति को जीवंत रख रही है, उन्हें हमारी पीढ़ियों को संदेश देने का काम कर रही है। यहां ग्राम के जो गायता हैं, पुजारी हैं, उनको भी छत्तीसगढ़ सरकार की महत्वपूर्ण योजना राजीव गांधी ग्राम योजना में शामिल कर प्रत्येक वर्ष 7 हजार रूपये की राशि दी जा

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

रही है जो वाकई में काबिले तारीफ है। उसी प्रकार से हमारे बस्तर में जो निवासरत आदिवासी हैं, पिछड़े वर्ग और सामान्य वर्ग के जो भाई बहन हैं, हमारी सरकार ने तेंदूपत्ता के माध्यम से संग्राहकों को 2500 रूपये से बढ़ाकर 4000 रूपये प्रति मानक बोरा किया है। संग्राहक भाई बहन आर्थिक रूप से संपन्न हो रहे हैं । तेंदूपत्ता संग्राहकों के लिए सामाजिक सुरक्षा योजना शहीद महेन्द्र कर्मा जी के नाम पर 4 लाख रूपये की सहायता राशि दी जा रही है, इससे हमारे आदिवासी संग्राहक भाई बहन कॉफी प्रसन्न और खुश हैं। छत्तीसगढ़ में आदिवासी नृत्य महोत्सव के आयोजन से हमारी आदिवासी कला और कलाकारों को आगे बढ़ाने के लिए प्रयास किया जा रहा है। माननीय मुख्यमंत्री जी की पहली पहल पर तीसरी बार इस आदिवासी नृत्य महोत्सव का सफल आयोजन नवंबर, 2022 में संपन्न हुआ है। इस आयोजन से श्री भूपेश बघेल जी के नेतृत्व में सरकार ने आदिवासियों के हितों के लिए अनेक जनकल्याणकारी योजनाएं बनाई हैं। छत्तीसगढ़ की सरकार आदिवासियों और वनवासियों को अधिकारी संपन्न बनाने, वंचितों को वन अधिकार पत्र, वन समाधान पत्र प्रदान करने से लेकर 'पेसा कानून' बनाकर हमारी ग्रामसभा को शक्ति संपन्न बनाने का काम कर रही है। उसी प्रकार, कृषि बजट में भी हर वर्ष हमारी सरकार द्वारा बढ़ोतरी की जा रही है। जैसे वर्ष 2020-2021 में 7 हजार 785 करोड़ रूपये का प्रावधान था। उसी प्रकार, वर्ष 2021-2022 में 8 हजार 974 करोड़ रूपये का प्रावधान किया गया था। उसी प्रकार, वर्ष 202-2023 में 9 हजार 272 करोड़ रूपये का प्रावधान किया गया है। वाकई में यह बहुत सराहनीय बजट है। यदि कोई ऐसा सोच सकता है तो केवल हमारे किसान पुत्र माननीय मुख्यमंत्री जी ही ऐसा सोच सकते हैं। हमारे ग्राम पटेल को भी हर माह मिलने वाले मानदेय को भी 2 हजार रूपये से बढ़ाकर 3 हजार रूपये किया गया है। जिसके लिए मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद देती हूं।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, शिक्षित बेरोजगारों को बेरोजगारी भत्ता देने की जो योजना माननीय मुख्यमंत्री जी के द्वारा शुरू की गई है वह बहुत ही सराहनीय है क्योंकि जिस परिवार की वार्षिक आय 2 लाख 50,000 रूपये से कम है उस घर के युवा को यदि हमारी सरकार के द्वारा 2,500 रूपये प्रति महीना बेरोजगारी भत्ता दिया जाता है तो उस परिवार को आर्थिक तंगी से बहुत हद तक छुटकारा मिलेगा। आज की महंगाई में सबसे ज्यादा पैसा बच्चों की शादी में ही खर्च होता है। इसके लिए माननीय मुख्यमंत्री जी ने कन्या विवाह योजना के अंतर्गत होने वाले विवाह के परिवार को 25 हजार रूपये की जगह 50 हजार रूपये देने का बजट में प्रावधान रखा है। यह महिलाओं के सम्मान के लिए सबसे बड़ा बजट है।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं यहां पर अपने क्षेत्र की कुछ मांगें रख रही हूं क्योंकि मेरा भानुप्रतापपुर विधान सभा क्षेत्र माननिंग एरिया होने की वजह से वहां पर ट्रकों का अत्यधिक भार है तो मैं चाहती हूं कि भानुप्रतापपुर में ट्रांसपोर्ट नगर बनना अतिआवश्यक है। साथ ही भानुप्रतापपुर नगर-पंचायत में खेल के मैदान के उन्नयन कार्य के लिए यदि राशि मिल जाती तो बहुत अच्छा रहता। साथ

ही दुर्ग कोंदल के कॉलेज में कन्या आश्रम बनाना अतिआवश्यक है। दुर्ग कोंदल तहसील में उप कोषालय की अतिआवश्यकता है। यदि आप मेरी इन मांगों को पूरी कर देंगे तो बहुत अच्छा होगा। आपने बोलने का मौका दिया इसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

उपाध्यक्ष महोदय :- ठीक है। डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी जी, आप 5 मिनट में अपनी बात समाप्त करें। आप सभी 5-5 मिनट में अपनी बात समाप्त करें।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी (मस्तूरी) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज विनियोग विधेयक पर चर्चा हो रही है तो 5 मिनट से थोड़ा ज्यादा समय दे दीजिए। एक तो आप छत्तीसगढ़ के लिए जिस तरीके से बजट बना रहे हैं, उस बजट का उपयोग नहीं हो रहा है। एक तो इसका 60 प्रतिशत, 7 प्रतिशत ही उपयोग होता है। यदि इसका उपयोग नहीं हो रहा है और प्रशासन की क्षमता भी दिख रही है तो इनको बजट कैसे दिया जाए। दूसरा, जिस क्षेत्र में आप बजट दे रहे हैं तो यह पूरे प्रदेश का बजट है या आपके घर का बजट है। क्या आप इस बजट का उपयोग अपने लिए ही करेंगे ? यह जो बजट आ रहा है उसमें छत्तीसगढ़ के सभी क्षेत्रों को देखना चाहिए। यदि आप इसका फैसला करके और चिन्ह-चिन्ह कर बजट देंगे कि यह भाजपा का विधायक है या यह कांग्रेस का विधायक है तो उसको बजट देना है या नहीं देना है तो इस बजट की उपयोगिता कितनी रह जाएगी ? हमारा यह कहना है कि आपने और आपके पी.डब्ल्यू.डी. ने हमारे क्षेत्र के लिए कितने किलोमीटर की रोड को सेंक्शन किया है ? हम इस विनियोग का समर्थन किस तरीके से करे ? इसलिए हम इस विनियोग का विरोध करते हैं। हमारा यह कहना है कि आपका विभाग कैसे और किस तरीके से आकलन करता है, किस तरीके से मूल्यांकन करता है, डाटा कैसे इकट्ठा करता है और उसका निर्णय कैसे करता है, हमें तो इस प्रकार के कोई स्वरूप देखने को नहीं मिला, न अनुपूरक बजट की चर्चा में आया, न मुख्य बजट में आया । उपाध्यक्ष महोदय, आप ही बताईए कि हम कैसे करें, आपसे ही पूछते हैं, हमारा आग्रह है कि हम इसको किस तरीके से करें ।

उपाध्यक्ष जी, अब स्कूल हैं, इनके विभाग भी बने हुए हैं, अगर मीडिल स्कूल खोलने के लिए आवेदन प्रस्तुत करते हैं कि इन-इन क्षेत्रों में मीडिल स्कूल खोलना है, ये कमियां हैं और वहां की जनसंख्या बढ़ी हुई है तो इस पर विचार क्यों नहीं करना चाहिए ? हम जनप्रतिनिधि जब आवेदन देते हैं तो आप क्या समझते हैं, हम मांग रहे हैं ? हम मांग नहीं रहे हैं, आपको जानकारी दे रहे हैं, ताकि आप छत्तीसगढ़ के हितों में अच्छे से निर्णय ले लें । आपमें उतनी भी करने की ताकत नहीं है क्या, उतनी करने की सोच भी नहीं है क्या ? फिर जब सोच नहीं है, ताकत नहीं है, कल्पना नहीं है तो फिर आपका बजट का क्या फायदा ?

श्री अमरजीत भगत :- बांधी जी, मोहले जी से कुछ शिक्षा लीजिए, उनका सब काम हो जाता है ।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- जब आप खाने और पीने, दोनों मंत्री रहते हैं तो मजा आता है ।

श्री अमरजीत भगत :- मोहले जी का कोई काम नहीं रूकता ।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- जब खाने और पीने वाले दोनों मंत्री रहते हैं तो सलाह बहुत अच्छे से ले लिया जाये । उपाध्यक्ष महोदय, यह विशेष घटक का पैसा है । आप अनुसूचित जाति के लिए विशेष घटक बोलते हैं और यह शेड्यूल एरिया है तो आपने कितनी मदद की होगी ।

सदन को सूचना

उपाध्यक्ष महोदय :- बांधी जी, एक मिनट । आज की कार्यसूची के पद क्रमांक 5 का कार्य पूर्ण होने तक सभा के समय में वृद्धि की जाये, मैं समझता हूं कि सभा सहमत है ।

सदन द्वारा सहमति प्रदान की गई।

शासकीय विधि विषयक कार्य (क्रमशः)

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अभी 7 बजे रहे हैं । हमने और माननीय नेता प्रतिपक्ष, दोनों ने यह मांग की थी कि 13 दिनों से हम रात-रात बैठकर सदन चला रहे हैं, शासकीय काम भी लगभग पूरे हो गए हैं तो माननीय नेता प्रतिपक्ष जी और माननीय मुख्यमंत्री जी का भाषण कल हो जाये, आज सदस्यों के भाषण को समाप्त करके सदन स्थगित किया जाये । 7 बज गए हैं, अभी सदन काफी देर तक और चलेगी ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- उपाध्यक्ष महोदय, पहले भी रात-रात भर, 9-10 बजे तक बैठे हैं, अभी तो ज्यादा टाईम नहीं हुआ है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, न मेरी बात हुई, न आपने मंत्री जी को पुकारा ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- उपाध्यक्ष महोदय, मैं तो उपाध्यक्ष जी की अनुमति से बोल रहा हूं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, न मेरी बात हुई, न आपने मंत्री जी पुकारा ।

उपाध्यक्ष महोदय :- मैं दोनों की बात सुन रहा हूं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यही तो बुराई है, किसी बात में बोलने नहीं देते । मुझे इसी बात से दिक्कत होती है ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- उपाध्यक्ष महोदय, मैं तो अनुमति लेकर बोल रहा हूं।

श्री अमरजीत भगत :- आपसे विशेष अनुमति लेकर बोल रहे हैं ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

उपाध्यक्ष महोदय :- अजय चन्द्राकर जी अभी सोकर आये हैं । मंत्री जी, उनकी बात सुन लीजिए ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अजय चन्द्राकर जी बोलते हैं तो उनको केंवाच लग जाता है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैंने कहा मेरी बात छोड़ दीजिए, माननीय नेता प्रतिपक्ष जी ने भी ये आग्रह किया था कि ऐसा किया जाये । जब हम सदन सहमति से चला रहे हैं तो उत्तर कल आ जाये, उसमें कोई बुराई नहीं है, कल कोई विशेष काम भी नहीं है और सदस्य लोग चाहते भी हैं, यह आपसे आग्रह है।

उपाध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी, आप कुछ बोल रहे हैं ?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- उपाध्यक्ष महोदय, हम लोग इसी सदन में कल भी और उसके पहले परसों भी रात को 10 बजे तक बैठे हैं तो अभी तो समय है, आज ही खतम हो जाएगा, उसमें क्या दिक्कत है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इसमें आपकी व्यवस्था आ जाती । माननीय नेता प्रतिपक्ष जी ने आग्रह किया है ।

उपाध्यक्ष महोदय :- अभी एक, दो वक्ता और है ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- उपाध्यक्ष महोदय, इसमें कहां की व्यवस्था वाली बात आ गई ?

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं व्यवस्था का प्रश्न नहीं उठाया हूं, कुछ समझ लिया करो ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपकी सब बातों को समझ रहा हूं ।

उपाध्यक्ष महोदय :- वे सुझाव दे रहे हैं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आदत से बाज नहीं आते, किसी भी बात में खड़े हो जाएंगे ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- उपाध्यक्ष महोदय, आपकी मंशा क्या है, वह हम समझ रहे हैं । इसीलिए हम बता रहे हैं कि अभी बोलने दिया जाये ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इन्होंने मंशा की बात कही तो मैं एक बात बता देता हूं । जो अंदर में बात होती है, वह अंदर की बात सदन में नहीं बोली जाती, तो मंत्री जी हमारी मंशा बता रहे हैं न ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- उपाध्यक्ष महोदय, कोई नहीं बोल रहा है, हम तो बोल ही नहीं रहे हैं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप मुझे बोलने दो, ज्यादा टोकना कई बार अच्छा नहीं लगता ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- बोलिए न । मैं उपाध्यक्ष जी की अनुमति से बोल रहा हूं ।

उपाध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी, उनको बोलने दीजिए ।

श्री अजय चन्द्राकर :- इसी शैली के कारण गड़बड़ होता है । मैं यह बोल रहा था ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

(मुख्यमंत्री जी का सदन में आने पर)

उपाध्यक्ष महोदय :- मुख्यमंत्री जी आ गए हैं ।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अभी अपने पास समय है, सदन चलने दीजिए, फिर आगे देखते हैं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं ये बोल रहा था कि अंदर की बात का बाहर उल्लेख नहीं करते, लेकिन ये सब होते हुए भी इस बात में सहमति बनी थी कि हम 24 मार्च तक सत्र चलाएंगे और माननीय नेता प्रतिपक्ष जी ने भी आग्रह किया । उपाध्यक्ष जी, चूंकि आपने समय बढ़ाया, इसलिए मैंने उसका पुन: स्मरण कराया और इसलिए आपसे कहा कि हमने इस बारे में आसंदी से दो बार आग्रह किया है तो कोई व्यवस्था आ जाये, उस समय भी व्यवस्था नहीं आई थी । अभी भी आप कार्यवाही को आगे बढ़ा रहे थे तो मैंने कहा कि इस बारे में कुछ अवगत करवा दीजिए और मुझे भी भूल जाएं तो माननीय नेता प्रतिपक्ष जी ने भी आग्रह किया था ।

उपाध्यक्ष महोदय :- ठीक है न। चलिये बांधी जी, 2 मिनट में अपनी बात समाप्त करें, अब आगे बढ़ते हैं।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- उपाध्यक्ष महोदय, आपने मौका कहां दिया है। पहले 5 मिनट बोले थे, अब बिना बोले 2 मिनट कर दिया।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अब वह डाक्टर हैं, उनका 2 मिनट में नहीं होता। (हंसी)

श्री अजय चन्द्राकर :- तो फिर कितनी देर चलता है ? हंसी

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी भी हैं। जो विशेष घटक का बजट है, अनुसूचित जाति एरिया में पैसा देने का प्रावधान है। आप इस शेडयूल एरिया में खर्च करते हैं तो अनुसूचित जाति के क्षेत्रों को कितना पैसा दिया ? आप किश्त रूप में देते हैं। एक तो अनुसूचित जाति का प्राधिकरण बना हुआ है, 30 लाख, 35 लाख रूपया देते हैं और वहां पर 12 हजार करोड़ पैसा है। बजट 12 हजार करोड़ का है और साल भर में 30 हजार, 35 हजार देते हैं इससे उस अनुसूचित क्षेत्रों का विकास में क्या असर आयेगा ? उसकी क्या उपयोगिता है ? माननीय महोदय जी, मैं आपसे आग्रह करता हूं कि आपकी जिन क्षेत्रों में प्राथमिकता है, जिसके लिए विशेष घटक बना हुआ है, उसका उपयोग होना चाहिए। उस पैसे का यह भी नहीं है कि हम किसी का सामाजिक, आर्थिक उत्थान करने के लिए भी उन पैसों का उपयोग करें, यह भी देखने को नहीं मिलता है। आप इसमें देख लीजिये। मैंने कई बार अपनी बात रखा कि आपने इस पर किस तरह से निर्णय लिया कि पोस्ट मेट्रिक हास्टल बनना चाहिए, आपने कितनी संख्या में बनाया ? बालक-बालिका का पी.जी. हास्टल बनना चाहिए। आपने कितना बनाया ? आपने नहीं बनाया। तो अनुसूचित जाति के पैसे का इतना उपयोग है, अगर आप उनके शैक्षणिक स्तर उठाने पर उपयोग करते तो निश्चित तौर पर उसका लाभ होता। लेकिन छत्तीसगढ़ के

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अनुसूचित जाति के हितों का सरंक्षण नहीं है। इसीलिए आप उन पैसों का अन्यत्र जैसा भी चाहे, उपयोग कर रहे हैं। लेकिन उसके जिस उदेद्श्य को लेकर विशेष घटक का बजट बनाया गया है, उसका उपयोग उन क्षेत्रों में नहीं दिखता है।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, दूसरा, जितने मैदानी कर्मचारी लोग हैं, वे अपनी मांगों को लेकर आज भी धरना दे रहे हैं और अभी भी विश्वास करते हैं कि आपने ही उनको विश्वास पैदा किया है। आज आप उनके विश्वास के साथ धोखा दे रहे हैं, उनके विश्वास को तोड़ने का काम कर रहे हैं, आप उनकी बातों को भी नहीं सुन रहे हैं। क्या यह उचित है ?

उपाध्यक्ष महोदय :- 10 मिनट हो गया है, कृपया समाप्त करें।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, माननीय सिंचाई मंत्री जी ने सिंचाई में बहुत सारा बजट दिया है। कृपया उस बजट का ए.ए. जारी करें तभी तो हमारा काम होगा। ए.ए. जारी नहीं करेंगे तो कैसे बनेगा। कई काम ऐसे है, जैसे आप एक्यूपमेंट खरीदे हैं, लेकिन उसका डाक्टर नहीं दे रहे हैं, उसका एक्सपर्ट नहीं दे रहे हैं, उसका टेक्नीशियन नहीं दे रहे हैं तो उस एक्यूपमेंट का क्या उपयोग है ? क्या ऐसे बजट का दुरूपयोग होना चाहिए या सदुपयोग होना चाहिए। माननीय उपाध्यक्ष महोदय जी, आप जिस टेक्नीशियन की बात कर रहे हैं, टेक्नीशियन के साथ मशीन का निर्णय करेंगे तो छत्तीसगढ़ के लोगों के लिए लाभकारी होगा, उसका उपयोग होगा। लेकिन आप ऐसा नहीं कर रहे हैं।

उपाध्यक्ष महोदय, हमने कालेजों के बारे में भी बात किया कि कितने कालेज खोल रहे हैं। हमने कुछ थाने, चौकी के लिए बात करके रखा है। अपराध की संख्या बढ़ रही है। तो कम से कम कुछ स्थानों पर चौकी खोलने का निर्णय हो जाये। लेकिन उस चौकी का भी निर्णय नहीं कर पा रहे हैं तो हम बजट की उपयोगिता कैसे करेंगे। तो मंत्री जी, मेरा यह कहना है कि जो कालेज है, उस कालेज का निर्णय हो जाये। उपाध्यक्ष महोदय, आपने बोलने के लिए समय दिया, बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री गुलाब कमरो (भरतपुर-सोनहत) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं विनियोग के समर्थन में खड़ा हूं।

उपाध्यक्ष महोदय :- 5 मिनट में अपनी बातें रखें।

श्री गुलाब कमरो :- उपाध्यक्ष महोदय, मैं खड़ा ही हूं, इसमें एक मिनट लगता है। कम से कम 10 मिनट दीजिये। मेरा विधानसभा क्षेत्र 1 नंबर से शुरू होता है, 1 नंबर से बोहनी होता है और 90 तक जाता है, इसलिए 1 नंबर के लिए थोड़ा समय चाहिए। उपाध्यक्ष महोदय, मैं दो लाईन कहना चाहूंगा।

"हमारे राज्य का नाम और पहचान आपसे है,
हमारे राज्य की आन और शान आपसे है,
आपके विकास कार्य ने राज्य की दशा बदल दी,
राज्य के जनता के चेहरों पर मुस्कान आपसे है,

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

राज्य को आपने नई पहचान दिला दी,

गांव की सड़क शहर से मिला दी,

नेता हो तो आप जैसा हो,

जिन्होंने बंजर जमीन में विकास की फसल उगा दी।" (मेजों की थपथपाहट)

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ में जिस तरह से कांग्रेस की सरकार बनने के बाद से, भूपेश बघेल जी की सरकार बनने के बाद से, जिस तरह से हमारे बापू जी चाहते थे, बापू जी के सपनों को जिस तरह से सरकार बनने के बाद से लगातार कई योजनायें लेकर आये हैं । सरकार बनने के बाद किसानों का हमने कर्जा माफ किया है, इसके साथ ही किसानों की चिन्ता करते हुये भूपेश सरकार ने 107 लाख मिट्रिक टन धान खरीदी की है । देश के इतिहास में छत्तीसगढ़ पहला राज्य है जो किसानों की चिंता करने वाली है और उस सच का नाम माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी हैं। उपाध्यक्ष महोदय, जिस तरह से बापू जी चाहते थे कि भारत की आत्मा गांवों में बसती है, इस तरह से छत्तीसगढ़ की सरकार ने किसानों के जीवन में कैसे बदलाव लाया जाये, इस पर कार्य किया है । उपाध्यक्ष महोदय, नरवा, गरूवा, घुरवा, बारी और छत्तीसगढ़ के चार चिन्हारी की तर्ज पर हमारी सरकार के द्वारा गांव-गांव में गौठान खोले गये हैं, वहां पर वर्मी कम्पोस्ड खाद तैयार किये जा रहे हैं । महिला समूह काम कर रहे हैं, गौठान की समितियां काम कर रही है, पूरे राज्य में हमारे गौठान की समिति में प्रदेश की बहुत अधिक संख्या में हमारी महिला समूह काम कर रही है, आज उनके जीवन में बदलाव आया है । उपाध्यक्ष महोदय, हमारे विपक्ष के साथी 15 साल की बात को सहन नहीं कर पाते हैं, जब इनके कार्यकाल का 15 वर्ष का नाम लेते हैं तो इन्हें दर्द होता है । जब यह सड़कों में जाते हैं, सभाओं में भाषण देते हैं कि इन्होंने 70 साल क्या किया और हम जब इनके 15 सालों की बात करते हैं तो इनको तकलीफ हो जाता है । माननीय सभापति, आज मैं आदिवासी समाज से आता हूँ, सरगुजा और बस्तर में दो प्राधिकरण हुआ करते थे, इन्होंने कभी आदिवासियों की चिंता नहीं की है कि वहां का अध्यक्ष आदिवासी होना चाहिये । हमारे पूर्व मुख्यमंत्री जी 15 साल तक बैठे रहे, वहां कोई अधिकार नहीं मिला और कोई लाभ आदिवासी को नहीं मिला । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपको बताना चाहूंगा कि छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार बनने के बाद में लगातार हमारी सरकार ने आदिवासियों की चिंता की है । आदिवासियों के लिये कई निर्णय लिये गये, हमारे 1300 से आदिवासी जेल में थे, उनको रिहाई का काम किये हैं । विश्व आदिवासी दिवस पर अवकाश घोषित किया गया । हमारे क्षेत्रों में आने वाले बैगा जनजाति के लोग, पहाड़ी कोरबा जो सरगुजा में आते हैं, उनका जाति प्रमाण पत्र नहीं बनता था, सिर्फ सुप्रीम कोर्ट का बहाना बना दिया जाता कि यह नहीं बनाया जा सकता, लेकिन भूपेश सरकार के आदेश पर मैं अपने जिले का बताना चाहूंगा कि 44 हजार एस.सी.एस.टी. और ओ.बी.सी. का प्रमाण पत्र एक-एक गांव में कैम्प लगाकर बनाया गया है । यह हमारे भूपेश बघेल जी का काम है । पंचायतों को

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सशक्तीकरण करने के लिये पूरे प्रदेश में 704 हमारे नये ग्राम पंचायत बने हैं, उसमें भरतपुर में नया 44 ग्राम पंचायत बना है । प्रशासनिक कसावट लाने के लिये, विकेन्द्रीयकरण करने के लिये, नये जिले और नये अनुभाग तथा हमारा तहसील बना है । उपाध्यक्ष महोदय, इन लोग 15 साल की बड़ी-बड़ी बात करते हैं, आदिवासियों के हित में पेसा कानून की बात करते हैं, 15 साल हो गये हैं, पेसा का नियम नहीं बना पाये हैं । हमारी भूपेश बघेल जी की सरकार ने पेसा नियम लागू करने के बाद पूरे प्रदेश में आज आदेश प्रसारित हो गया । पेसा का नियम क्या है, ग्राम सभा को सारे अधिकार मिल गये हैं, चाहे वह गौण खनिज हो, कोई भी उद्योग लगाना है, सारे अधिकार मिल गये हैं । उपाध्यक्ष महोदय, स्वास्थ्य के विषय में हमारे सीनियर साथी बड़ी-बड़ी बातें कह रहे थे, कोई व्यवस्था नहीं है, कोई सुविधा नहीं था, मैं कहना चाहता हूँ कि भरतपुर विधान सभा जो मध्यप्रदेश की सीमा से लगता है, आपके अस्पताल में हमको के.जी.1 से काम करना पड़ा है ।

समय
7.07 बजे **(अध्यक्ष महोदय (डॉ.चरणदास महंत) पीठासीन हुये)**

वहां पर शव वाहन नहीं था, वहां पर एम्बुलेंस नहीं था, वहां पर डिलीवरी आपरेशन नहीं होता था, वहां सोनोग्राफी नहीं था, लेकिन भूपेश सरकार के आर्शीवाद से आज सारा सुविधा हो गया है, अभी तक 100 से ज्यादा डिलिवरी आपरेशन हो चुके हैं, सोनहट में, भरतपुर में, आजादी के बाद से पहली बार सोनोग्राफी सुविधा मिली है । यह हमारी भूपेश सरकार की उपलब्धि है ।

अध्यक्ष महोदय :- आपको बहुत-बहुत बधाई हो ।

श्री गुलाब कमरो :- सभापति महोदय, आपके स्कूलों की स्थिति पूरी तरह से बदल चुकी है । अध्यक्ष महोदय, मैं आपके क्षेत्र का हूँ । आदिवासियों के हित में बड़ी-बड़ी बातें करते हैं । कभी आदिवासियों का हित नहीं किये हैं । आदिवासियों के नाम से वोट मांगते हैं । 5 लाख आवेदन पत्र को कचरे के ढ़ेर में डाल दिये ।

डॉ.लक्ष्मी ध्रुव :- अध्यक्ष महोदय, प्रमोशन को भी खत्म कर दिये ।

श्री गुलाब कमरो :- माननीय अध्यक्ष महोदय, वन अधिकार का पट्टा बनायेंगे करके कचरे के ढ़ेर में डाल दिये थे, लेकिन हमारी सरकार ने फिर से अवलोकन करने के बाद आज 05 लाख लोगों को वनाधिकार पट्टा देने का काम किये हैं। उससे आप धान बेच पा रहे हैं, उससे के.सी.सी. बना पा रहे हैं, उससे जमीन का समतलीकरण करा पर रहे हैं, हमारी सरकार यह काम कर रही है। इतना ही नहीं सड़कें के बारे में बताना चाहूंगा, आज पूरे प्रदेश में हमारी 10 हजार किलोमीटर की सड़क बन रही है, चाहे वह सुगम सड़क योजना हो, चाहे ए.डी.बी. का हो, चाहे हमारे बजट का हो, लगातार सड़क बन रही है। हमारे स्कूलों के लिये भी सड़कें बन रही है। इस तरह से हमारी कार्ययोजना है। छत्तीसगढ़ की सरकार ने

अप्रमाणित/प्रकाशन के लिए नहीं

स्कूलों के लिये भी सराहनीय पहल की है। यदि हम इंग्लिस मीडियम स्कूल की बात करें, आज हमारे बस्तर में 260 स्कूल खुल गये हैं, उसमें हमारे 10 हजार बच्चे पढ़ रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद।

श्री गुलाब कमरो :- अध्यक्ष महोदय, यह कहते हैं कि कुछ नहीं हुआ। मैं इसीलिये कहना चाहता हूं कि बहुत सारे विपक्ष के साथी रेत की बात करते हैं। वे जब जब आते हैं तो कहते हैं कि रेत का अवैध उत्खनन हो रहा है।

अध्यक्ष महोदय :- ऐसा है कि मेरे ऊपर पक्षपात का आरोप लग जायेगा। आप बैठ जाईये।

श्री गुलाब कमरो :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक मिनट।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके ऊपर पक्षपात का आरोप कौन लगा सकता है ? उधर वाले जरूर लगा सकते हैं।

श्री गुलाब कमरो :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह बहुत रेत की बात करते हैं कि यहां अवैध उत्खनन हो रहा है, वहां अवैध उत्खनन हो रहा है। मैं आपको बताना चाहूंगा कि इससे पहले भी 15 साल की सरकार थी। हमारी सरकार ने बकायदा टेंडर किया है और ग्राम में पंचायत लोगों को रॉयल्टी आ रही है। इससे पहले मेरे विधान सभा से लगा बुढ़वा गांव है, वहां के लोग आते थे और पूरे उत्तरप्रदेश में 50-50 हाइवा ट्रकें जाती थी। मैं किसी का नाम नहीं लेना चाहता हूं। इसलिये 15 साल वाले कुछ नहीं किये सिर्फ लोगों को झूठ बोलने का काम किये हैं। एक झूठ बोलने वाला दिल्ली में बैठे हैं और यहां 15 साल तक आदिवासियों को सिर्फ यह बोलकर झूठ बोलते रहे कि हम आपको गाय देंगे। वे लुटरू-पुटरू बैल दिये, वे भी मर गये। इनका काम सिर्फ झूठ बोलना है, आदिवासियों को धोखा देना, युवाओं को धोखा देना, महिलाओं को धोखा देना। हमारी छत्तीसगढ़ की, भूपेश बघेल जी की सरकार धरातल में काम कर रही है, जमीन में काम कर रही है। किसानों के जीवन में कैसे बदलाव आयेगा, उसके लिये छत्तीसगढ़ की सरकार ने 4 साल में काम किया है।

अध्यक्ष महोदय, मैंने बनाया तो बहुत सारा था लेकिन समय कम हो गया है। आपने मुझे बोलने का अवसर दिया उसके लिये धन्यवाद्।

अध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद्। नेता जी, क्या आप बोलेंगे ?

श्री नारायण चंदेल :- आप जैसा बोलेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- नहीं, मैंने बोला कि शायद कुछ समर्थन करते हो। ले खड़े हो जा। माननीय नारायण चंदेल जी।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय मुख्यमंत्री जी, एक आग्रह यह था, जिसका मैं बार-बार उल्लेख नहीं करना चाहता। मेरी बात आपने सुनी है। जो बढ़िया सहमति बनी हुई है, उसमें आखिरी सहमति यह

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

बनी थी कि हम 24 तक सत्र चलायेंगे। हमने आग्रह किया था कि माननीय नेता प्रतिपक्ष और आपका भाषण कल हो जाये तो ज्यादा अच्छा है। बाकी सब सदस्यों ने बोल लिया है, काफी समय हो गया है।

अध्यक्ष महोदय :- नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। भाषण आज ही होगा, भले कल तक चले लेकिन भाषण आज होगा।

श्री अजय चन्द्राकर :- जी, आपने कुछ कहा ?

अध्यक्ष महोदय :- मैंने कहा भले कल तक चलेगा, लेकिन भाषण आज होगा।

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, देखिये आपकी व्यवस्था में भले शब्द आ रहा है।

अध्यक्ष महोदय :- भले मतलब मैं देखता हूं कि आप किस मूड में आकर..।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप सुनिश्चित कर दीजिये कि कल कार्यवाही चलेगी।

अध्यक्ष महोदय :- हम बतायेंगे कि वह चलेगी कि नहीं। वह तो आखिरी में बताते हैं [xx][8], पहले थोड़ी न बताते हैं।

नेता प्रतिपक्ष (श्री नारायण चंदेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 01 लाख 32 हजार 370 करोड़ रूपये, 17 लाख 68 हजार। सभी विभागों की चर्चा हुई, आम बजट पर चर्चा हुई। अब हम विनियोग के माध्यम से, इस महत्वपूर्ण विधेयक के माध्यम से सरकार को खर्च करने की अनुमति देते हैं। यह सदन जो है वह बजट पर और विभागवार चर्चा के बाद विनियोग के माध्यम से सरकार को खर्च करने की अनुमति प्रदान करता है। मैं भी माननीय मुख्यमंत्री जी को समर्पित करता हूं -

''छेड़ने पर मूक भी वाचाल हो जाता है दोस्त,
टूटने पर आइना भी काल हो जाता है,
मत करो तुम गरीबों के खून से ज्यादा हवन
जल के काला कोयला भी लाल हो जाता है''

अध्यक्ष महोदय :- वाह ! हाय।

श्री अजय चन्द्राकर :- वाह-वाह। क्या बात है। इरशाद।

अध्यक्ष महोदय :- यह तो आप अंतिम में कहते थे, आज पहले हो गया। मतलब आप समाप्त कर रहे हैं।

श्री नारायण चंदेल :- अंतिम में और बात है।

श्री ताम्रध्वज साहू :- अध्यक्ष महोदय, जेला देखबे ते बस कविता करथे। कहां नकल मारके लाथे तेला समझ में नइ आथे।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- आजकल शायरी एप आ गया है।

---

[8] [xx] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- अध्यक्ष जी, माननीय मोहले जी के कोई नकल नइ रहय। वो खुद बनाथे कविता अउ तुरंत बोलथे।

श्री मोहम्मद अकबर :- वह हास्य कवि है।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अब हम इसके माध्यम से सरकार को अनुमति प्रदान करते हैं, लेकिन हम सरकार को क्यों अनुमति प्रदान करें? इन साढ़े 4 सालों में सरकार ने क्या किया है? अगर हम पूरे छत्तीसगढ़ प्रदेश में विकास की बात करें तो सिर्फ पाटन, साजा और धमधा में विकास कार्य हुए हैं। रहे- सहे दुर्ग ग्रामीण में विकास हुआ है। इन 4 जगहों में ही विकास के कार्य हुए हैं। यहां पूरा बजट खप्प गया। क्या हम इन 4 जगहों को पूरा छत्तीसगढ़ मानते हैं? इस विनियोग के माध्यम से हम किसलिए राशि दें? आज छत्तीसगढ़ जिस तरह से दिख रहा है जिन कल्पनाओं के साथ में इस छत्तीसगढ़ का निर्माण किया गया था। इस देश के पूर्व प्रधानमंत्री माननीय अटल बिहारी वाजपेयी ने छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण किया था। हमारे पुरखों का सपना था कि छत्तीसगढ़ समृद्ध हो, खुशहाल हो, छत्तीसगढ़ भय और भूख से मुक्त हो, लेकिन आज छत्तीसगढ़ में चारों तरफ भय का वातावरण है। यहां चारों तरफ कुपोषण का वातावरण है। अभी जब शून्काल में हम लोगों ने कानून और व्यवस्था की चर्चा उठायी तो सारे आंकड़े आये।

माननीय अध्यक्ष महोदय, सरकार की पहली प्राथमिकता होती है कि इस प्रदेश के आम लोगों की सुरक्षा कैसे करें? लेकिन यह दुर्भाग्य है जिस प्रकार से छत्तीसगढ़ में चोरी, डकैती, हत्या, फिरौती, चैन स्केनिंग, चाकूबाजी, सरे आम गैंगवार इस प्रकार की घटनाएं छत्तीसगढ़ की नियति बन गई है। क्या हम, यह सदन इसके लिए पैसा दें? कोरबा के बांगो थाना में क्या स्थिति बनी, वहां का हवलदार, एस.आई. रात को 12.00 बजे तक था, 12.00 बजे के बाद सुबह जब सूरज निकलता है तो वह भगवान के घर चला जाता है और किन संदिग्ध परिस्थितियों में उसकी मौत हुई? इस प्रदेश में इनके राज में थाना सुरक्षित नहीं है। जब यहां थानें सुरक्षित नहीं हैं तो आम आदमी की क्या स्थिति है? वह थाना बंद हो गया। आसपास के गांव के लोग घरों से पलायन करने लगे। वहां से लोग घर छोड़कर जाने लगे कि जब इस प्रदेश में थाने सुरक्षित नहीं है तो हमारी सुरक्षा कौन करेगा? क्या हम इस विनियोग के माध्यम से इसलिए पैसा दें? यहां चारों तरफ हाहाकार है। पूरे छत्तीसगढ़ प्रदेश के साढ़े 4 लाख से ज्यादा अधिकारी कर्मचारी कोटवार, पटवारी, समाज के छोटे-छोटे कर्मचारी, तृतीय, चतुर्थ वर्ग के कर्मचारी सड़कों पर हैं। यह लोग किसलिए सड़कों पर हैं क्योंकि इन्होंने वायदा किया था कि हम यह करेंगे, आपको यह करेंगे, हम डी.ए. बढ़ा देंगे, आपकी नियमितीकरण करेंगे और यह नहीं, बूढ़ा तालाब के सामने हमारी विधवा बहनें भी अनुकम्पा नियुक्ति को लेकर प्रलाप कर रही हैं। उनकी कोई सुनने वाला नहीं है। उनकी कोई खोज खबर लेने वाला नहीं है। उनकी अनुकम्पा नियुक्ति क्यों नहीं की जाती, क्या दिक्कत है? वह लोग कितने लोग हैं? अगर इस प्रदेश में यह हालात हैं तो हम इन्हें किसलिए राशि आवंटित करें? आप

हर विभाग के देखिए, भ्रष्टाचार का बोलबाला है। पिछली बार वर्ष 2022-23 के बजट में जो राशि आवंटित की गई थी, माननीय मुख्यमंत्री जी जब जवाब देंगे तो हम इस सदन में माननीय मुख्यमंत्री जी से पूछना चाहते हैं। पूरे प्रदेश की जनता सदन की तरफ टकटकी लगाकर के देख रही है कि वर्ष 2022-23 में इन्होंने बजट में जो राशि आवंटित की थी उसमें से कितने कामों की प्रशासकीय स्वीकृति मिल गई, कितने कामों की तकनीकी स्वीकृति प्राप्त हो गई? कितने के टेंडर हो गये? कितने कार्यों के भूमिपूजन हो गये और कितने कार्यों के काम प्रारंभ हुए हैं? जिलेवार आंकड़े हैं। यह स्थिति है जब 2022-2023 के बजट का कोई काम प्रारंभ नहीं हुआ है तो वर्ष 2023-24 के बजट की क्या गति होने वाली है? यह सिर्फ चुनावी बजट है। बड़े-बड़े विज्ञापन आये कि भरोसे का बजट, विश्वास का बजट। अरे भैया जो 04 साल आपने बजट प्रस्तुत किया था क्या वह भरोसे का बजट नहीं था, वह धोखे का बजट था? क्या वह अविश्वास का बजट था? छत्तीसगढ़ की भोली-भाली जनता को सब्जबाग दिखाना, धरातल पर कोई काम नहीं करना, क्या विनियोग के माध्यम से इनको इसलिए हम राशि आवंटित करें? क्या इसलिए हम खर्च करने की अनुमति इस सरकार को प्रदान करें? आज जब मैं कानून और व्यवस्था की बात कर रहा हूं, जब मैंने बताया कि सिर्फ चार जगह विकास हो रहे हैं, चौबे जी आ गये। क्या यही छत्तीसगढ़ है? क्या जशपुर से लेकर डोंगरगढ़, बस्तर से लेकर सरगुजा तक छत्तीसगढ़ नहीं है? क्या विपक्ष के लोग जो जनप्रतिनिधि चुनकर आये हैं, उनको जनादेश नहीं मिला है? इस तरीके से भेदभाव करना राजा का काम नहीं है, मुखिया का काम नहीं है। सम दृष्टिकोण से छत्तीसगढ़ का कैसे विकास हो, यह ध्येय हर राजा को रखना चाहिए। आज छत्तीसगढ़ का संतुलित विकास नहीं हो रहा है, कुछ एरिये में ही राशि खर्च की जा रही है। इस प्रकार से भेदभाव करना उचित नहीं है। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं कह रहा था कि हमारे इस प्रदेश में क्या लोकतंत्र जिंदा है? प्रजातंत्र की हत्या जिस तरीके से इस छत्तीसगढ़ में हो रही है, श्री भूपेश बघेल जी के राज में, कांग्रेस की सरकार में, पूरे हिन्दुस्तान में किसी राज्य में ऐसा नहीं हो रहा है।

खाद्य मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- पूरे देश में चुनी हुई सरकार को गिराना, उनको बदलना, विधायक की खरीद फरोख्त करना यह कोई तो भारत सरकार से सीखे। पूरे देश में आग लगी हुई है। इस देश में कोविड फैला हुआ था, लेकिन सरकार गिराने और बनाने में भारत सरकार मस्त थी।

श्री नारायण चंदेल :- उस समय इंदिरा गांधी जी ने किया था, जब से मोदी जी की सरकार बनी है, एक विपक्ष की सरकारें नहीं गिरी हैं। 356 की कार्यवाही उस समय होती थी। उस समय आपने कितनी चुनी हुई सरकारों को गिराया ? उसके बारे में चर्चा मत कीजिए।

संसदीय सचिव, महिला एवं बाल विकास मंत्री से संबंद्ध (डॉ. रश्मि आशीष सिंह) :- मतलब आप लोग आज तक इंदिरा जी के बनाये पैरामीटर को फालो कर रहे हैं।

श्री नारायण चंदेल :- उस पर डेढ़ घंटे की चर्चा मांग लीजिए। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं

कानून और व्यवस्था के बारे में कह रहा था। लोकतंत्र जिंदा नहीं है, प्रजातंत्र की हत्या की जा रही है। भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं को लगातार पूरे छत्तीसगढ़ प्रदेश में परेशान किया जा रहा है। क्या राजनीतिक आंदोलन करना अपराध है ? क्या छत्तीसगढ़ में अघोषित आपातकाल लगा हुआ है ? हमारे कार्यकर्ता पिछले 17 तारीख को जब चक्काजाम करते हैं, उनके ऊपर एफ.आई.आर. दर्ज की जाती है, उनके ऊपर असत्य मुकदमे लादे जाते हैं। पिछले 15 तारीख को प्रधानमंत्री आवास की मांग को लेकर पूरे छत्तीसगढ़ प्रदेश के हितग्राही यहां पर उपस्थित थे और उन्होंने विधान सभा घेराव करने का निर्णय लिया। वह विधान सभा की तरफ बढ़े। जिस प्रकार से उनके ऊपर गोले बरसाये गये, पानी के फव्वारे छोड़े गये, पुलिस के अधिकारी यहां पर उपस्थित हैं। वह कौन लोग थे ? आज खालिस्तानी समर्थक प्रदेश की राजधानी रायपुर में जुलूस निकालते हैं। उनको यह सरकार कुछ नहीं कहती है। लेकिन प्रधानमंत्री आवास के हितग्राहियों के ऊपर बिना चेतावनी के आसूं गैस के गोले छोड़े जाते हैं। उनके ऊपर पानी के फव्वारे छोड़े जाते हैं। उसकी कोई गाईडलाईन है या नहीं है ? उसकी गाईडलाईन है। अगर वह आसूं गैस के गोले छोड़े तो ऊंचाई में छोड़े   तो ऊंचाई में छोड़े, भीड़ को देखकर छोड़े। जहां पर खाली स्थान है, वहां पर छोड़े। यदि उनको पानी की बौछार छोड़ना है तो पहले चेतावनी दी जाती है, पहले एनाउंस किया जाता है, लेकिन छत्तीसगढ़ में ऐसा लगता है कि कोई परंपरा नहीं, कोई नियम नहीं, कोई प्रावधान नहीं, कोई कानून नहीं है। सारे अधिकारी भी मदमस्त हो गये हैं। हम आज सुबेरे सी.एस.आर. मद की बात कर रहे थे । प्रश्न क्रमांक 1 में मेरा प्रश्न था। उस समय शायद मुख्यमंत्री जी नहीं थे। उस समय सारे सदस्यों ने आधा घंटा चिंता जाहिर की। छत्तीसगढ़ प्रदेश में जितने उद्योग लग रहे हैं। बड़े-बड़े उद्योगपति हैं। वह कहां से आये हैं, कहां पर उद्योग लगाये हैं, किन शर्तों के साथ में उन्होंने उद्योग लगाया है? यहां के लोगों को नौकरी में लें। यहां का नौजवान अर्जी लेकर बेरोजागार घूम रहा है। उनको नौकरी नहीं मिल रही है तो फांसी के फंदे पर झूल रहा है। बाहर से मालिक आ गया। जमीन हमारी, पानी हमारी, हवा हमारी, कोयला हमारा, प्रदूषण हम झेल रहे हैं, लेकिन सी.एस.आर. मद से कलेक्टर को अधिकार दे दिये। कलेक्टर के पास सारा पैसा जमा है। राज्य सरकार के निर्देश पर वह खर्च हो रहा है। वहां के जनप्रतिनिधियों की कोई भूमिका नहीं है। आप किसके अनुशंसा से खर्च करते हैं। खर्च करने का आधार क्या है? जो प्रभावित गांव हैं, 10 किलोमीटर, 15 किलोमीटर का   रेल ..।

श्री अमरजीत भगत :- मोदी जी ने सी.एस.आर. का पूरा पैसा दिल्ली मंगवा लिया है, यह आपको मालूम है?

श्री नारायण चंदेल :- भैया, यह विदाई का समय है। आप सरकार में हैं। विपक्ष की भूमिका छोड़िये। सरकार की बात करिये। यह आपकी जिम्मेदारी है। हर बात में मोदी। हर बात में मोदी।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- हम लोग तो चाहते हैं कि आप लोग हमेशा उधर ही बैठे रहो ।

श्री नारायण चंदेल :- मै आपको बता दूं कि मोदी जी ने आपको कितना पैसा दिया है।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- तीन लोग प्योर जो इस छत्तीसगढ़ के राज्यसभा में गये हैं, उन लोगों से बोलिये न कि वह पहले लेकर आये।

श्री नारायण चंदेल :- आप बार-बार मोदी जी की बात करते हैं। मैं आपको बताता हूं कि भारत की सरकार ने दिनांक 01.04.2019 से 28.02.2023 की स्थिति में इस छत्तीसगढ़ की सरकार को विभिन्न मदों में 1,66,514 करोड़ 57 लाख रूपये दिया है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- कहां दिया? किसको दिया?

श्री नारायण चंदेल :- आपको पता ही नहीं है कि कहां चला गया। आपको क्या पता है। यही तो दिक्कत है।

श्री अमरजीत भगत :- अगर लखमा जी को दिया तो दिया होगा, लेकिन हमको तो नहीं दिया है। (हंसी)

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सरकार की सामूहिक जिम्मेदारी है, लेकिन दुर्भाग्य है। मैं पहले भी कहता था कि इस प्रदेश में प्रशासन का राजनीतिकरण और राजनीति का अपराधीकरण होता जा रहा है। प्रशासन का राजनीति नहीं होना चाहिए। प्रशासन को नियम से, कानून से काम करना चाहिए। सरकारें आती जाती रहती हैं। 15 साल हम भी थे तो आज आप भी हैं। हो सकता है कि कल आप इधर आने वाले हैं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- बिल्कुल नहीं आने वाले हैं। आपको उधर पूरा सलामत।

श्री नारायण चंदेल :- इसलिए गुरूर इतना नहीं होना चाहिए।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- आपको नेता प्रतिपक्ष बने हुए सिर्फ 2 महीने ही हुआ है। हम चाहते हैं कि आप एक कार्यकाल पूरा 5 साल पूरा करें।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- आप ऐसी बोलते रहिये। भाषण बहुत अच्छा लग रहा है।

श्री अरूण वोरा :- नेता प्रतिपक्ष जी, गुरूर नहीं है। यह हकीकत है कि काम के बल पर हम यही रहेंगे और आप यहां रहेंगे। यह गुरूर नहीं है।

श्री नारायण चंदेल :- भाई, आपके करम तो ऐसा नहीं बता रहे हैं। आपके जो करम है, वह इधर आने के हैं। जो करम है, वह इधर का रास्ता दिखा रही है।

श्री अरूण वोरा :- हम चिरागों को बचाने में लगे हैं और आप तेज हवा चलाने में लगे हैं।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष जी, यह सरकार 1 लाख करोड़ से ज्यादा कर्जा ले चुकी है। अब जिस सरकार के ऊपर में 1 लाख करोड़ से ज्यादा का कर्जा है और कर्जे के ब्याज चुकाने के लिए इस सरकार को कर्जा लेना पड़ता है। अब यह बताईये कि जो सरकार अगर कर्जे का ब्याज चुकाने के लिये कर्जा लेगी तो क्या विकास की कल्पना उससे कोई कर सकता है ? क्या विकास का मापदंड कोई उससे पूछ सकता है ? इस सरकार के पास कोई विजन है ? इस सरकार की न तो नीति ठीक है और न

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

ही इस सरकार की नीयत ठीक है । इस सरकार की दिशा और दशा दोनों खराब हैं । यह कर्जे से कराह रही सरकार है । इनका जो ड्रीम प्रोजेक्ट है नरवा, गरूआ, घुरवा, बारी । मुख्यमंत्री जी खुद बोलते हैं कि ऐकर ले ज्यादा मैं नइ जानओं संगवारी । नरवा, गरूआ, घुरवा, बारी के बारे में इस बजट में कोई प्रावधान नहीं है और उसके बाद शान से कहते हैं कि हमारा ड्रीम प्रोजेक्ट है । पूरे देश में इसके होर्डिंग्स लगे हैं, दिल्ली में मुख्यमंत्री जी के बड़े-बड़े फोटो के साथ इसके होर्डिंग्स लगे हैं और दिल्ली में इसका प्रजेंटेशन होता है कि यह हमारा प्रोजेक्ट है । इसके लिये बजट ही नहीं है तो आप इसको कैसे चलाओगे ? क्या स्थिति है ? रोका-छेका, गोबर । पूरे छत्तीसगढ़ को इन्होंने गुड़-गोबर कर दिया है । आज इस छत्तीसगढ़ बनने के बाद पहली बार, चूंकि माननीय अध्यक्ष महोदय आप भी जाते हैं। यहां से कोरबा जाते हैं, सारागांव जाते हैं और हम लोग भी जाते हैं । जैसे ही रायपुर से छूटते हैं तो एक हजार से ज्यादा गौ माताएं सड़कों पर चूंकि मुझे एक व्यक्ति बता रहा था, सामान्य आदमी जो कि गाड़ी में चलता है कि भैया आजकल हमन गाड़ी में जैसे हमर यादव समाज के भाई मन लौठी रखे रहिथे ओसनहे लौठी रखे रहिथन तो मैं कहेंओं कि तुमन लौठी ला काय करथओ ? ता ओ कहिस रात के जाथन ता ओ गरूआ ला बइठे रहिथे तेला कोच-कोच के उठाथन ।

खाद्य मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- तें प्रोटोकॉल जारी झन करे करबे, ओमन सब तोर से मिले बर आथें ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- प्रोटोकॉल ओमन ला कौन बताथे ?

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- ओ मन बइठे रहिथे ता पढ़ लेथे, जान जाथे ।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मुख्यमंत्री जी तो हेलीकॉप्टर से घूम रहे हैं । उनको तो मालूम ही नहीं है कि गौ माताएं कितनी काल-कवलित हो रही हैं ? सड़कों पर हो रही हैं कि गौठानों में हो रही हैं ? चौबे जी को फुर्सत नहीं है। वे केवल साजा तरफ के गौठानों में जाते हैं, पूरे प्रदेश के किसी गौठान में आज तक गये नहीं हैं । आपका जो ड्रीम प्रोजेक्ट है तो आज गौठानों की क्या दुर्गति है ? गौठानों में छाया नहीं है, पानी नहीं है, चारा नहीं है, कोई चिकित्सा की व्यवस्था नहीं है । गौ माताएं काल-कवलित हो रही हैं । गौ हत्या का भी पाप इस सरकार पर है । गौठानों के लिये आपने जो समिति बनायी, आपने उसका भी राजनीतिकरण कर दिया। आपने कहा था कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की अवधारणा में उनके विचारों और सिद्धांतों को लेकर हमारी यह सरकार चल रही है ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, ग्राम सभा ने जो प्रस्ताव पारित किया । उस प्रस्ताव में उन्होंने गौठान समिति के लिये जो नाम दिया । एक भी नाम उस गांव में गौठान समिति में दर्ज नहीं है । सारे सरपंचों में आक्रोश है । आपने कांग्रेस के कार्यकर्ताओं का नाम दे दिया, आप इसका तो राजनीतिकरण मत करते । जो सामान्य नागरिक हैं, जो स्वतंत्र लोग हैं, जो समाज के प्रतिष्ठित लोग हैं कम से कम वे गौठान समिति में तो रह जाते लेकिन उसका भी राजनीतिकरण ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

संसदीय सचिव, आदिमजाति मंत्री से संबद्ध (श्री द्वारिकीधीश यादव) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं एक मिनट बस नेता जी से निवेदन कर रहा हूं । सब जगह ग्राम समिति से ही प्रस्ताव आये हैं और जहां के नहीं आये हैं, आप स्वयं बता दीजिये । अगर आप आरोप लगा रहे हैं कि कहीं पर नहीं हुआ है, हमारा यह कहना है कि हर जगह ग्राम सभा से आया है । (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- हम पचास उदाहरण बता सकते हैं । पचास ।

श्री द्वारिकीधीश यादव :- नहीं तो बताईये न । (व्यवधान) आप केवल पचास बोल रहे हैं लेकिन बताने की स्थिति में नहीं हैं । (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय मंत्री जी स्वीकार कर चुके हैं ।(व्यवधान)

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- तें नाम नोट करत हस ता अभी बतात हंओं । (व्यवधान)

श्री द्वारिकीधीश यादव :- अगर ऐसा है तो आपने कितनी लिखित शिकायत की है ?

श्री धर्मजीत सिंह :- आप तो संसदीय सचिव हैं न । (व्यवधान)

श्री द्वारिकीधीश यादव :- मैं जान रहा हूं न इसीलिये तो दावे के साथ बोल रहा हूं ।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप तो संसदीय सचिव हैं न ।

श्री द्वारिकीधीश यादव :- जी ।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप यह बताईये कि आप आज तक मंत्री लोगों की एक किलोमीटर दूर से फाईल को भी देखे हो ? (हंसी)

श्री द्वरिकाधीश यादव :- वह अलग बात है । लेकिन प्रेक्टिकली आप बताइए ना, अभी आपने स्वीकार किया कि 50 प्रतिशत हुआ है ।

श्री अरूण वोरा :- ये गोपनीय बात आपको क्यों बताएंगे ?

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष जी, सदन में बहुत बार चर्चा हुई, अनेक बार हमारे सदस्यों ने सदन के माध्यम से ध्यान आकर्षित किया कि पूरे छत्तीसगढ़ में माफियाओं का राज हो रहा है, बाहर से लोग आ रहे हैं । शराब माफिया, रेत माफिया, जमीन माफिया ये क्या है ? क्या यह छत्तीसगढ़ की तासीर है ? अध्यक्ष महोदय, आपको भी मालूम है कि हमारे क्षेत्र में हसदेव नदी में सर्च लाईट लगाकर जेसीबी से रेत की खुदाई और रात को परिवहन हो रहा है । जब एस.डी.एम. और तहसीलदार जांजगीर में पकड़ने गए तो उनके ऊपर रेत माफिया गाड़ी चढ़ा रहे थे, डोजर चढ़ा रहे थे । यह स्थिति है आपके प्रशासन की । ऐसा क्यों हो रहा है, आपका कौन अधिकारी काम करेगा ? रेत माफियाओं का इतना दु:साहस कि एस.डी.एम., तहसीलदार और थानेदार के ऊपर ट्रक चढ़ा दें और उनको उस स्थल से भागना पड़े । अभी 2 महीने पहले मैं जनकपुर गया था, गुलाब कमरो जी बात कर रहे थे । क्या स्थिति है, वह तो आपका क्षेत्र है, क्या स्थिति है ? मध्यप्रदेश का बार्डर है, सीमा क्षेत्र है, कांग्रेस के ही दो विधायकों में रेत को लेकर प्रतिस्पर्धा चल रही है । वहां से रेत मध्यप्रदेश जा रही है,

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

उत्तर प्रदेश जा रही है । एक हाईवा 50 से 60 हजार रूपए में बिक रहा है । बलरामपुर जिले में, सूरजपुर जिले में यह स्थिति है और कोई रोकने वाला नहीं । किसके संरक्षण में हो रहा है ? क्या शासन और प्रशासन को यह मालूम नहीं है, क्या इसलिए हम आपको राशि दें कि छत्तीसगढ़ में माफियाओं का राज आ जाए ? आप डम्फर वाले को नहीं पकड़ते ।

श्री गुलाब कमरो :- माननीय नेता जी, ये अभी गए थे और कह रहे हैं कि रेता चल रहा है । आज की तारीख में मैं इस सदन में बोल रहा हूं गाड़ियां नहीं चल रही हैं, जो भी चल रही हैं लीज़ की गाड़ियां चल रही है । वह भी चल रही हैं तो मुख्यमंत्री का साला या मेरा साला नहीं चल रहा है, जैसे 15 साल तक साले लोग चलाते थे, वैसा नहीं चल रहा है ।

श्री कृष्णमूर्ति बांधी :- साला नहीं चलाही तो का भाटो चलाही गा ।

श्री नारायण चंदेल :- उसी दिन इस सदन में दोनों की बहस हो रही थी । दोनों की बहस हो रही थी कि अवैध बार कौन चला रहा है, अवैध परिवहन कौन चला रहा है ?

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मोहन मरकाम जी यहां उपस्थित नहीं है और न ही इस सत्र में एक भी बार उन्होंने किसी विषय को ओपन किया । उन्होंने पहले दिन सात करोड़ रूपए के डी.एम.एफ. फंड की बात उठाई थी और खोदा तो उसके पीछे भी कांग्रेसी निकल गया । अब प्रदेश अध्यक्ष बढ़ा है या ई.ई. बड़ा है यह तय कर लें ये लोग । इस शासन में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष की यह इज्जत है ।

अध्यक्ष महोदय :- आप थोड़ा सकेलिए ना । सकेल दीजिए ।

श्री नारायण चंदेल :- हां सकेल रहा हूं ।

श्री अमितेश शुक्ल :- मुझे तो सबसे बड़ा ई.डी. लग रहा है, ई.डी. ।

श्री नारायण चंदेल :- अब वो ई.डी. की याद दिला रहे हैं, हम तो बोल नहीं रहे हैं ।

श्री अजय चंद्राकर :- ई.डी. का पूरा नाम क्या है । यह तो बताओ ?

श्री उमेश पटेल :- इन्फोर्समेंट डायरेक्टोरेट ।

श्री अजय चन्द्राकर :- उनको बताने दो ना ।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- ई.डी. क्या होता है, बताइए ना ?

श्री अजय चन्द्राकर :- अच्छा चलिए छोड़िए, चाय लग गई है ।

श्री अमितेश शुक्ल :- इन्फोर्समेंट डायरेक्टोरेट होता है, तुमको समझ नहीं आएगा डॉक्टर ।

श्री नारायण चंदेल :- अध्यक्ष जी, मैं कह रहा था जमीन माफिया, शराब माफिया, कोल माफिया । इसीलिए तो यहां ई.डी. आ रहा है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अमितेश जी को निश्चिंत कर दीजिए कि उनके यहां ई.डी. नहीं जाएगी ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- आप निर्धारित करेंगे क्या ?

श्री अजय चन्द्राकर :- मैंने हिंदी में पूछा था ई.डी. को क्या बोलते हैं ? वे नहीं बता पाते तो इधर चाय नाश्ता लग गया है । अमितेश जी को आप आसंदी से सूचित कर दीजिए ।

श्री अमितेश शुक्ल :- आसंदी से इनको भी करिए कि वहां पर पीने का भी इंतजाम है ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए छोड़िये ।

श्री नारायण चंदेल :- अध्यक्ष महोदय, मैं कह रहा था कि छत्तीसगढ़ को भ्रष्टाचार का गढ़ नहीं बनना चाहिए । लगाम लगनी चाहिए, जिस तरह से रेत के बारे में मैंने बताया आज शराब माफियाओं के कारण छत्तीसगढ़ में अपराध बढ़ रहा है । वे सारे लोग बाहर से आ रहे हैं । छत्तीसगढ़ का आम आदमी वैसा अपराधी नहीं है। छत्तीसगढ़िया जो है, वह सीधा-साधा भोला-भाला है। यह कौन लोग हैं जो यहां आकर पनाह लिये हैं, इनको किसका संरक्षण प्राप्त है ? क्या इसके बारे में शासन, प्रशासन ने, पुलिस ने कोई जानकारी ली है ? आज जिस प्रकार से अवैध शराब का कारोबार चल रहा है, कोचिया सक्रिय है, मोटर साईकल में शराब बिक रहा है, पान ठेलों में शराब बिक रहा है, हर ढाबों में शराब बिक रहा है। यह क्या हो गया है ? कई बार ऐसा लगता है जैसे नार्थ ईस्ट में पान ठेले में शराब बिकता है। छत्तीसगढ़ उसी दिशा में जा रहा है। जिस छत्तीसगढ़ को हम कहते हैं कि सुघ्घर छत्तीसगढ़ बनाबो, नवा छत्तीसगढ़ गढ़बो, यह नवा छत्तीसगढ़ की कल्पना है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- नार्थ ईस्ट में सरकार काखर हे। सरकार तो आपे मन के हे।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पूरे छत्तीसगढ़ प्रदेश में, मैं रायपुर राजधानी की बात कर रहा हूं। बृजमोहन जी ने कई बार प्रश्न उठाया है। पूरे रायपुर में, पूरे राजधानी क्षेत्र में जमीन माफिया जिस तरीके से सक्रिय है, मुझे एक व्यापारी ने बताया की अभी छत्तीसगढ़ में सरकार की हालत यह है कि जमीन माफिया के हौसले इस तरीके से बढ़े हुए हैं, कुछ लोगों ने मुझे बताया कि जो लोग एन.आर.आई. हैं, जो विदेशों में रहते हैं, उनके घर को वे लोग सर्च करा रहे हैं। यह नये किस्म की आपराधिक प्रवृत्ति है। उनके घरों को सर्च करा रहे हैं कि कौन-कौन घर में एक व्यक्ति रहता है। कौन व्यक्ति विदेश में रहता है जो अमेरिका में, कनाडा में, लंदन में है, उस व्यक्ति को खबर कर रहे हैं, अगर आपका घर 5 करोड़ का है, 3 करोड़ का है तो उसको 50 लाख में बेचना पड़ेगा। मैं फलां आदमी हूं। मैं प्रभावशाली व्यक्ति हूं। छत्तीसगढ़ में यह नये किस्म का अपराध जन्म ले रहा है। वह बेचारा अमेरिका का रहने वाला यहां कौन कोर्ट, कचहरी, पटवारी के चक्कर में फंसेगा, वह 5 करोड़ के मकान को 50 लाख, 70 लाख, 1 करोड़ में बेचता है। यह कौन लोग हैं ? किसका संरक्षण प्राप्त है ? इस प्रकार का गिरोह एक नया गिरोह पनपा है, जिसका किसी ने उल्लेख नहीं किया लेकिन मुझे किसी ने बताया। अध्यक्ष महोदय, मैंने आपसे सी.एस.आर., डी.एम.एफ. की बात की। भारत सरकार का पैसा है और भारत सरकार की गाईडलाईन भी है। कई बार प्रश्नोत्तरी में आया है, कई बार प्रश्नों के माध्यम से चर्चा हुई है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अगर डी.एम.एफ फंड को यह सकारात्मक उपयोग करें, उसका सही दिशा में उपयोग करें तो छत्तीसगढ़ के विकास में यहां के जो बुनियादी काम हैं, उसके लिए वह सहायक हो सकता है। लेकिन डी.एम.एफ. फंड से प्रशिक्षण हो रहा है। मधुमक्खी का प्रशिक्षण हो रहा है। फर्जी प्रशिक्षण हो रहा है और वे कई करोड़ रूपये चाय नाश्ते में वेस्ट कर देते हैं। माननीय मुख्यमंत्री जी, इतना बड़ा फंड है, कलेक्टर को आपके सख्य निर्देश जाने चाहिए कि डी.एम.एफ का खर्च गांव के विकास में किया जाए। सारे सरपंच लोग बीच में हड़ताल किए, मैं उनसे पंडाल में जाकर पूछा कि क्यों हड़ताल किए, पहली बार छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के 23 साल बाद सरपंच हड़ताल पर थे। सभी दलों के सरपंच हड़ताल पर थे। वे निर्वाचित जनप्रतिनिधि हैं, वे बोले कि भैया गलत समय में सरपंच बन गेन, काबर, परता नई पड़त हे बोले, मैंने कहा परता नई पड़त हे माने, पोसात नई हे। पहली बार उनको गांव के विकास के लिए एक पैसा नहीं मिल रहा है। ना गांव में सी.सी.रोड बन रहा है, ना सामुदायिक भवन बन रहा है, ना मुक्तिधाम बन रहा है, ना कोई नया आंगनबाड़ी केन्द्र बन रहा है। गांव की जो मूलभूत समस्या है, छोटे-छोटे स्कूल के अतिरिक्त कमरे बनने हैं। गांव का आदमी आपसे कोई हवाई अड्डा थोड़ी मांग रहा है। यह छोटी-छोटी बातें भी गांव में नहीं हो पा रही है। पंचायत मंत्री जी सुन लीजिए। आपने समग्र की राशि पूरे चार साल बंद कर दी थी। यदि अभी आप इसकी शुरूवात करे तो आपका स्वागत है। इसलिए वह पहली बार हड़ताल पर गया। पंचायत सचिव तो पहले हड़ताल पर गये थे। लेकिन गांव का प्रधान या गांव का सरपंच भी पंडाल लगाने के लिए मजबूर हो गया। आज छत्तीसगढ़ में हर व्यक्ति, हर संस्था आंदोलनरत् हैं। एक व्यक्ति ने मुझे कहा कि अब राजधानी का धरना स्थल (बूढ़ा तालाब के सामने) छोटा पड़ रहा है। हमने कहा कि यदि वह स्थल छोटा पड़ रहा है तो आप लोगों को कहां भेजे, नया रायपुर। तो उन्होंने कहा कि इतने आंदोलन हो रहे हैं और आंदोलनकारियों की संख्या इतनी है कि अब बूढ़ा तालाब से काम नहीं चलने वाला है। शायद उन्होंने धरना-प्रदर्शन के लिए नई जगह चिन्हित की है। ये किस बात के संकेत हैं? आंदोलन कब होना चाहिए? आपके अधिकारी-कर्मचारी और मंत्री उन आंदोलनकारियों से संवाद क्यों नहीं करते हैं? चर्चा के माध्यम से उनकी समस्याओं का निदान क्यों नहीं हो सकता है? बातचीत से बड़ी-बड़ी समस्याओं का समाधान हो जाता है। लेकिन यदि हम उनका दुराग्रह करेंगे, उनका अपमान करेंगे और उनके साथ संवाद नहीं करेंगे तो उनका यह गुस्सा आने वाले नवंबर के चुनाव में लावा बनकर फूटने वाला है। आपने बेरोजगार नवजवानों की बहुत से बातें कीं। अभी आपने उनके लिए ऊंट के मुंह में जीरा और कई प्रकार की परिस्थितियां निर्मित कर दी हैं कि इन बेरोजगारों को ही बेरोजगारी भत्ता मिलेगा। बेरोजगारी भत्ता इस प्रदेश से बेरोजगारी दूर करने का कोई उपाय नहीं है।

श्री गुलाब कमरो :- अध्यक्ष महोदय, उन्होंने कहा था कि हम 2 करोड़ लोगों को नौकरी देंगे। 7 साल हो गये लेकिन 1 भी आदमी को नौकरी नहीं मिला है तो उसके संबंध में भी नेता जी एकाध शब्द बोल दें।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं इसलिए कह रहा हूं कि इन्होंने अपने घोषणा पत्र में बढ़-चढ़कर बातचीत की थी। इस प्रदेश में कितने लाख पंजीकृत बेरोजगार हैं? इस बेरोजगारी भत्ते का लाभ कितने लोगों को मिलेगा और कितने दिन तक लाभ मिलेगा? क्या उनको केवल 4-5 महीने ही लाभ मिलेगा? इस प्रदेश से बेरोजगारी को दूर करने के लिए क्या आपके पास कोई नीति है? क्या आपने इस बारे में कभी विचार किया या सोचा है कि गांव से लोग शहर की तरफ क्यों आ रहे हैं? यहां का मजदूर पलायन क्यों कर रहा है? क्या इस सरकार का कोई वीजन है? क्या इस सरकार के पास कोई दृष्टिकोण है? नहीं है और इसलिए इस प्रदेश में निरंतर बेरोजगारी बढ़ रही है। बेरोजगार नवजवान डिग्री लेकर ऑफिस का चक्कर काटता है। वह सुबह निकलता है शाम को आता है और हताश और निराश होकर फांसी के फंदे को चुमता है। वह इसलिए चुमता है क्योंकि आपकी सरकार की नीति□□ गलत है। क्या हम आपको इसलिए विनियोग के माध्यम से पैसा दे? क्या आपको इसलिए खर्च करने की अनुमति□□ दे? छत्तीसगढ़ वहीं के वहीं पर खड़ा है। मेरे और आपके क्षेत्र में बुनकर हैं और वह बहुत मेहनत करते हैं। जब हम उनके घरों में जाते हैं तो देखते हैं कि आज भी वह हाथ या मशीन से मेहनत करते हैं। वह कड़ा परिश्रम करते हैं। कोरबा जिले में छुरी के पास भी बहुत से बुनकर हैं। बीच में बुनकर पंडाल लगाकर यहां पर हड़ताल कर रहे थे। जिला मुख्यालय जांजगीर में हड़ताल पर थे। मोतीबाग के सामने उनका पंडाल लगा था। उनके हताशा और निराशा थी कि उनको बुनने के लिए धागा नहीं मिल रहा है। धन्य है, ये छोटी-छोटी बातें। उनका कर्जा माफ नहीं हुआ। उनको जो सहुलियत मिलनी चाहिए, वह नहीं मिलती है। पूरे छत्तीसगढ़ प्रदेश में कितने बुनकर हैं? कुछ जिलों में ही बुनकर चिन्हित हैं। लेकिन यह सरकार उनकी भी चिंता नहीं कर पा रही है।

अध्यक्ष महोदय :- नेता जी, आप और कितना समय लेंगे?

श्री नारायण चंदेल :- 5-10 मिनट, माननीय अध्यक्ष महोदय, हम लोगों ने उस दिन खाद्यान्न योजना की बात को प्रश्न के माध्यम से उठाया था। हम इस सरकार को विनियोग के माध्यम से कैसे राशि प्रदान करे? गरीबों का चावल, गुड़, शक्कर, गेहूं में 600 करोड़ रूपए का घोटाला । जो गांव में रहने वाला गरीब आदमी है, आपने उनका हिस्सा भी नहीं बक्शा । उसको तो मत खाओ । हमें मालूम है कि रेत में क्या हो रहा है, डीएमएफ में क्या हो रहा है, जमीन में क्या हो रहा है, शराब में क्या हो रहा है ?

उच्च शिक्षा मंत्री (श्री उमेश पटेल) :- नेता जी, आप 600 करोड़ का घोटाला, यहां का घोटाला, वहां का घोटाला कह रहे हैं । आप लोग कहां से ले आते हो । रात में सपना देखकर आते को क्या ? कुछ भी बोलते हैं । 600 करोड़ रूपए का घोटाला आप लोग कहां से ले आए?

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके मंत्री जी ने स्वयं अपने उत्तर में शार्टेज को स्वीकार किया है । (खाद्य मंत्री का सदन में प्रवेश करने पर) वे आ गए हैं, आप मंत्री जी से पूछ लीजिए ।

श्री बृहस्पत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, आरोप लगाने के लिए कोई आंकड़ा की जरूरत नहीं है, जब मौखिक आरोप लगाना ही है तो कुछ भी बोल दो ।

श्री उमेश पटेल :- तो 600 करोड़ का घोटाला हो गया ?

श्री शिवरतन शर्मा :- हां, हां । पूरा ।

श्री उमेश पटेल :- 600 करोड़ का घोटाला हो गया ?

श्री शिवरतन शर्मा :- है ही, जब आपने स्वीकार किया है तो ।

खाद्य मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- ऊल-जलूल बात कर रहे हैं, बिना सिर-पैर के बात कर रहे हैं ।

श्री बृहस्पत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, बिना तथ्य के, बिना सबूत के आरोप लगा रहे हैं ।

श्री अमरजीत भगत :- पेपर में छपने के लिए कुछ भी आरोप किसी के ऊपर भी लगा देंगे ।

श्री बृहस्पत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, बिना तथ्य के, बिना सबूत के आरोप लगा रहे हैं तो इतना करोड़ बोलना है, यह बोल दो, उसमें क्या है ।

श्री अमितेश शुक्ल :- अध्यक्ष महोदय, बृजमोहन अग्रवाल जी बैठे हैं, उनसे पूछिए । पुन्नीमेला में शंकराचार्य जी ने बोला था कि शराब बंद करो । हमारे मुख्यमंत्री जी ने वहां पर 15 दिन शराब बंद की ।

श्री दलेश्वर साहू :- आप बोल रहे हैं कि 4 साल से समग्र विकास का पैसा नहीं बंटा है । आप देख लीजिए कि कितना बंटा है ।

श्री नारायण चंदेल :- उस दिन खाद्य मंत्री जी से शार्टेज की बात स्वीकार की।

श्री अजय चन्द्राकर :- नेता प्रतिपक्ष जी, एक मिनट । अमितेश जी, अभी चार महीने बाकी है, इतना कुछ बोल रहे हो, पर आप मंत्री नहीं बनोगे ।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, फिर उसी बात को पेपर में छपने के लिए ऊल-जलूल बात कर रहे हो ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप बहुत प्रशंसा कर रहे हो। राजिम मेला में कितनी शराब बिकी है, बताओ ।

श्री अमितेश शुक्ल :- वहां पर पूरी अवैध शराब बंदी थी और करोड़ों रूपए का नुकसान हुआ है, वह रिकार्ड में है । आप क्या बात कर रहे हो ?

श्री शिवरतन शर्मा :- रिकार्ड में है, पर अवैध शराब कितनी बिकी है ?

श्री अमितेश शुक्ल :- अवैध शराब बिकेगी तो करोड़ों का नुकसान कैसे होगा ?

श्री शिवरतन शर्मा :- शासकीय राजस्व पर हुआ है । बाकी ऊपर से तो सब बिक गई न ।

श्री नारायण चंदेल :- अमितेश जी भी स्वीकार कर रहे हैं कि राजिम के पुन्नी में अवैध शराब बिकी ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अमितेश शुक्ल :- अध्यक्ष महोदय, मैं स्वीकार नहीं कर रहा हूं । मैं बोल रहा हूं कि वहां पर शासन को करोड़ों रूपए का नुकसान हुआ है ।

श्री नारायण चंदेल :- आपका कहना है कि अगले साल से शराब बेचना है। (हंसी)

श्री अमरजीत भगत :- आपका प्रस्ताव क्या है ?

श्री नारायण चंदेल :- अध्यक्ष महोदय, मैं खाद्यान्न की बात कर रहा था । वह हमारी प्राथमिक आवश्यकता है, लेकिन उसमें गोलमाल हुआ है तो इस सरकार को गंभीरता से उसकी जांच करानी चाहिए और उसके लिए जो भी दोषी हो, चाहे कोई व्यक्ति हो, बड़े से बड़ा अधिकारी हो, जिसने गरीबों का चांवल खाया है, जिसने गरीबों का खाद्यान्न खाया है, उसके ऊपर सख्त से सख्त कार्यवाही करनी चाहिए । प्रधानमंत्री खाद्यान्न योजना में प्रति व्यक्ति 5 किलो चांवल देने की योजना है, उसका अता-पता नहीं है । वह चांवल कहां जा रहा है, किस सोसायटी में कौन बांट रहा है ?

श्री अमरजीत भगत :- नेता जी, आप बात करिए, लेकिन आप आधारहीन बात मत करिए । सेन्ट्रल हमें कोई चांवल नहीं देता, एक निर्देश देता है कि इसमें चांवल बांटा जाये और जितना बांटते हैं, उतना ही क्लेम होता है । कहां से बिना सिर-पैर की बात करते हैं । बगल वाले कुछ भी समझा दिए तो आप नेता प्रतिपक्ष होकर भी समझ जाते हैं, बताईए।

श्री अजय चन्द्राकर :- प्यारे मित्र, बहुत गरज के बोल रहे हो । पहले अपना हिस्सा तो सुरक्षित कर लो, दूसरे के हाथ में जा रहा है । आप बड़े क्षमतावान हो तो अपने हिस्से को बचा लो ।

श्री अमरजीत भगत :- अजय चन्द्राकर जी, गरीबों की सेवा करना हमारा परम कर्तव्य है, हमारा लक्ष्य है । हमारा जो ईकाई में गरीब हैं और हम गरीबों को नि:शुल्क चांवल दे रहे हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- नेता जी, समाप्त करें ।

श्री शिवरतन शर्मा :- जिसके हाथ में जा रहा है, वह गरीब है ?

श्री अमरजीत भगत :- जब से कोविड आया है, तब से नि:शुल्क चांवल दे रहे हैं ।

श्री शिवरतन शर्मा :- आप पहले यह तय कर लो कि जिसके हाथ में जा रहा है, वह गरीब है क्या ? वैसा गरीब भगवान सबको बना दे ।

अध्यक्ष महोदय :- नारायण चंदेल जी, अपनी बात करें ।

श्री नारायण चंदेल :- मैं तो बोल रहा हूं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- वैसे अगले जनम में मैं छत्तीसगढ़ के जंगल का बघुआ बनना चाहता हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- नेता प्रतिपक्ष अपना भाषण समाप्त कर रहे हैं । आप लोग क्यों विलंब कर रहे हैं ?

श्री अमरजीत भगत :- बघुआ को कैसे सत्यनारायण शर्मा जी नकेल डालते हैं, उसको भी आपने देखा होगा ।

Uncorrected and unedited/Not for Publication

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं तो खुद सकेलने के चक्कर में हूं, वही लोग खड़े हो रहे हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- जी ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अजय चन्द्राकर जी तोला बहुत डिस्टर्ब करथे, ओ ह बोलथे कि बघुआ बनहूं । नेता प्रतिपक्ष तो बन नहीं पईस, ओकर बात ला देखना ।

श्री धर्मजीत सिंह :- अमरजीत जी, सत्यनारायण जी को बघुआ बोल रहे हो न। ये दोनों जो सामने बैठे हैं, वे सर्कस के बघुआ हो गए हैं । (हंसी)

श्री नारायण चंदेल :- मेरा आग्रह है कि उसकी निष्पक्ष जांच होनी चाहिए । जहां पर भी गड़बड़ी हो, उसमें सख्त से सख्त कार्यवाही होनी चाहिए ।

माननीय अध्यक्ष जी, मैंने अनेको बार कहा था कि इस प्रदेश के पानी और जवानी को रोकना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय :- जी, इसी सत्र में कई बार कहा है।

श्री नारायण चंदेल :- हां, मैं बोल तो रहा हूं। यहां के पलायन को रोकना चाहिए। छत्तीसगढ़ से जितना पलायन होता है, इस सरकार के पास कोई रिकार्ड नहीं है। यह हमारे श्रम मंत्री हैं, कोरोना काल में आपके जिले से 1 लाख 5 हजार लोग वापस आये थे।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- उनके खाने-पीने, रूकने की व्यवस्था, अस्पताल की व्यवस्था, यहां तक चरण पदुका तक दिये थे। माननीय मुख्यमंत्री जी ने दिया था।

श्री नारायण चंदेल :- बलौदा बाजार जिले से जहां से ये विधायक हैं, 1 लाख 15 हजार लोग आये थे, दोनों जिलों से सवा दो लाख लोग आये थे। तो यह स्थिति है तो पूरे प्रदेश की क्या स्थिति होगी ? ये 2 जिलों की स्थिति है, जहां से सवा दो लाख लोग पलायन किये थे।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- पूरे प्रदेश में 18 लाख लोग वापस आये थे, यह सरकारी आकड़ा है।

श्री नारायण चंदेल :- अब सरकारी आकड़ा आ गया।

डॉ.(श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- अध्यक्ष महोदय, किसके कार्यकाल से गये थे ?

श्री नारायण चंदेल :- तो लोग इसलिए पलायन करते हैं क्योंकि यहां रोजगार उपलब्ध नहीं है। अगर हम उन्हें गांव में ही रोजगार उपलब्ध करायें, उनको पर्याप्त राशि मिल, उनको मान-सम्मान मिले तो लोग क्यों अपना घर-बार छोड़कर दूसरे प्रदेशों में जायेंगे। पलायन इस प्रदेश की एक विभीषिका है। इसको दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

श्री धनेन्द्र साहू :- यह आपके पिछले 15 साल के कार्यकाल के कारण पलायन हुआ था वह तो कोरोना के कारण लौटकर आये, उनको शरण दिया गया, उनको काम दिया गया। (मेजों की थपथपाहट)

श्री अजय चन्द्राकर :- क्या बात है भाटो, आज आपने मुंह खोला। आनंद आ गया।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- बघवा शिकार करना जानता है।

श्री धनेन्द्र साहू :- हमेशा आनंद आता रहेगा।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पूरे आदिवासी बाहुल्य जिले में चाहे सुदूर बस्तर हो, सरगुजा हो, जशपुर हो, कोरिया हो, वहां बड़ी तेजी के साथ धर्मान्तरण हो रहा है। धर्मान्तरण, सिर्फ धर्मान्तरण नहीं है। धर्मान्तरण, राष्ट्रान्तरण है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अध्यक्ष महोदय, विनियोग में कहां धर्मान्तरण आ गया ? इस प्रदेश में एक केस का भी उदाहरण नहीं है। ये हर बार धर्मान्तरण की बात करते हैं।

श्री नारायण चंदेल :- धर्मान्तरण नहीं, राष्ट्रान्तरण है। राष्ट्र की रक्षा को लेकर खतरा है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- यह ज्यादा हो गया भाई, ज्यादा हो गया।

श्री नारायण चंदेल :- यदि ज्यादा हो गया तो कल खालिस्तानी समर्थक यहां कैसे जुलूस निकाले ? कहां से आ गये, कहां से राजधानी में आ गये ?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- उन लोग जुलूस निकाल हैं, उसके विरोध में निकाले हैं।

श्री नारायण चंदेल :- कहां से राजधानी में आ गये ? कोई सुदूर क्षेत्र में नहीं गये थे बस्तर, जशपुर, कोरिया में नहीं गये थे। प्रदेश की राजधानी में देश विरोधी नारे लगना, भारत माता के बारे में अभद्र टिप्पणी करना।

श्री उमेश पटेल :- नेत जी, आपने 6 करोड़ की घोटाले बात कर लिया, बृजमोहन जी 18 लाख शरणार्थियों की बात कर लिए, आप देश विरोधी नारे की बात कर रहे हैं। आप लोग ये क्या-क्या करते हैं ? ऐसा कुछ नहीं हो रहा है।

श्री अमरजीत भगत :- केन्द्र में जब-जब गैर कांग्रेसी सरकार बनती है, भा.ज.पा. की सरकार बनती है, तभी देश को खतरा पैदा होता है।

श्री शिवरतन शर्मा :- ऐसा है खालिस्तानी आंदोलन में माननीय गृहमंत्री जी का वक्तव्य आया, जिसको प्रस्ताव के रूप में सदन ने स्वीकृत किया। अब यह समाचार आया कि 4 लोगों की गिरफ्तारी भी कर ली। सरकार ने एक अच्छा काम किया है।

श्री नारायण चंदेल :- रा.सु.का. जो है, वह राजनीतिक कार्यकर्ताओं पर लग रहा है। जो देशद्रोही नारे लगा रहे हैं, यहां उन पर कहां रा.सु.का. लगा है।

श्री अजय चन्द्राकर :- और क्यों नहीं लग रहा है, मैं जिम्मेदारी से बोल रहा हूं। एक गिरफ्तार आदमी का फोटो कांग्रेस के हर बड़े नेता के साथ है।

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- बिलकुल गलत बात है।

श्री अजय चन्द्राकर :- बिलकुल। मैं आपको फोटा दिखा दूंगा।

श्री रविन्द्र चौबे :- बिलकुल, इस तरह का असत्य आरोप है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं फोटो दिखा दूंगा।

श्री रविन्द्र चौबे :- सवाल ही नहीं। यह आरोप ही गलत है। आप हमेशा निराधार आरोप लगाते हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- फोटो दिखा दूंगा।

श्री रविन्द्र चौबे :- ये हमेशा इस प्रकार का निराधार आरोप लगाते हैं।

श्री धरम लाल कौशिक :- अभी दिखा देंगे, टेबल करने को बोलेंगे तो टेबल कर देंगे, मिलान कर लेंगे।

श्री अजय चन्द्राकर :- अभी फोटो दिखा दूं ?

श्री धरम लाल कौशिक :- केवल प्रदेश के नहीं, दिल्ली के नेता तक।

श्री अजय चन्द्राकर :- एलाउ कर दें।

श्री अमरजीत भगत :- एक परम्परा आप लोगों ने मांग किया कि इसको प्रस्ताव के रूप में लिया जाये, इसीलिए ..(व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- एलाउ कर दें।

श्री अमरजीत भगत :- यह केवल राजनीतिक लाभ के लिए, पेपर में छापने के लिए है। (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, आप एलाऊ कर दें। जिसको गिरफ्तार किया गया है, उसी फोटो **[XX]**[9] के साथ है, **[XX]** के साथ है, **[XX]** के साथ है, मैं आपको दिखा देता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- मत दिखाईये।

श्री अमरजीत भगत :- यह केवल राजनीतिक लाभ के लिये है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- [xx] के साथ है। मैं आपको दिखा देता हूँ । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- मत दिखाईये ।

श्री अजय चन्द्राकर :- इसीलिए रासुका नहीं लगाई गई । इसीलिए साफ्ट धारा लगाई गई।(व्यवधान)

श्री ताम्रध्वज साहू :- सम्माननीय अध्यक्ष महोदय, किसी राजनीतिक व्यक्ति के साथ किसी का फोटो उससे रिश्ता नहीं होता । (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- कहीं भीड़भाड़ में नहीं, आपके अधिवेशन में, एअरपोर्ट में। (व्यवधान)

श्री ताम्रध्वज साहू :- उससे रिश्ता नहीं होता । (व्यवधान)

श्री उमेश पटेल :- [xx] (व्यवधान) तब क्या बोल रहे थे । (व्यवधान)

---

9 [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री ताम्रध्वज साहू :- इनके साथ भी [xx] राजनैतिक व्यक्ति के साथ कौन खड़े होकर फोटो खिंचवाता है, उससे उसका रिश्ता नहीं होता है ।

श्री नारायण चंदेल :- वह दिशा बदल देते हैं तो मैं क्या करूं ?

श्री शिवरतन शर्मा :- आपके राष्ट्रीय अधिवेशन जहां पूरी सिक्यूरिटी की व्यवस्था थी..। (व्यवधान)

श्री उमेश पटेल :- [xx] उसको भी पटल में रख दें । गलत मत बोलो । (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- [xx] आप क्या तुलना करते हो ? (व्यवधान)

श्री उमेश पटेल :- उनके साथ भी हो सकता है ? आप राजनीतिक आदमी हो, बहुत लोग आकर फोटो खिंचाते हैं । (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- राजनीतिक आदमी हैं, आपके अधिवेशन स्थल या एअरपोर्ट में स्वागत करते हुये है । (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष जी, हमने सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किया है । देश के खिलाफ काम करने वाले लोगों के ऊपर कार्यवाही होना चाहिये । छत्तीसगढ़ इसको बर्दाश्त नहीं करेगा । अभी-अभी हमारे पास जानकारी आई है कि 4 लोगों को गिरफ्तार किया गया है । उनके ऊपर में इतनी छोटी धारायें लगाई गई है कि वह थाने से या जमानत से छूट जायेंगे । ऐसे लोगों के खिलाफ में जो धारायें लगी है, आप धारा लगाकर देख लें, उन लोगों के खिलाफ में देशद्रोह की धारा, रासुका की धारा, ऐसी धारा लगनी चाहिये, छत्तीसगढ में सर उठाकर दोबारा इस प्रकार की कार्यवाही न करे, इस प्रकार का निर्णय होना चाहिये, यह हमारा आग्रह है ।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- अध्यक्ष महोदय, उस समय तो बहुत पवित्र भावना से आपने बात कही है और सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित हुआ और कार्यवाही हुई । उस समय भी मैंने कहा कि सारे फुटेज देखें जायेंगे, जो गलत पाया जायेगा, उसके खिलाफ कार्यवाही की जायेगी । अध्यक्ष महोदय, प्रारंभिक कार्यवाही की गई है, अब इन्वेस्टीगेशन में जो कुछ भी आयेगा, उसे छोड़ा नहीं जायेगा । इसमें राजनीति क्यों कर रहे हैं ? (मेजों की थपथपाह) इन्वेस्टीगेशन में है, यदि गलत पाया जायेगा तो कार्यवाही होगी । फोटो तो किसी के साथ भी हो सकता है । फोटो आपके साथ हो सकता है, मेरे साथ हो सकता है, किसी के साथ भी हो सकता है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- जो कार्यवाही की है, उस पर धारा नही लगी है, जो धारा लगी है, वह छोटी-मोटी धारा लगी है । इसलिए हम आग्रह कर रहे हैं कि कड़ी धारा लगायें ।

श्री भूपेश बघेल :- अभी फर्जी अधिकारी बनकर काश्मीर घूम आया, उसके परिवार के साथ [xx] आप उसका क्या कर लेंगे ? फोटो एक सामान्य चीज है, जिसे आप इतना बड़ा बनाना चाह रहे हैं । अध्यक्ष महोदय, यह बिल्कुल गलत प्रवृत्ति है ।

अध्यक्ष महोदय :- फोटो से संबंधित जितने बातें आई है, मैं उसको विलोपित करता हूँ । (मेजों की थपथपाहट)

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष जी, हमारा आग्रह है, परसों ही जल दिवस था, इस सदन में जब भी हम लोगों ने जल जीवन मिशन को उठाने का प्रयास किया है, उसमें कोई सकारात्मक उत्तर नहीं आया, इसमें कोई नीतिगत उत्तर नहीं आया है । इतना महत्वपूर्ण मसला है, क्रान्तिकारी योजना है, गरीब आदमी की पीने का शुद्ध पानी उसकी प्राथमिकता है, किस दृष्टिकोण से, किस विजन से, इस योजना को लांच किया गया है । 10 साल पहले हम देखते थे, हम सुनते थे, जब गांव में हमारे जनप्रतिनिधि दौरे में जाते थे, जैसे ही गर्मी से बरसात आता था, उमस बढ़ती थी तो डायरिया फैलता था । एक गांव के 25 लोग, 50 लोग अस्पताल में भर्ती होते थे । अस्पताल में जगह कम पड़ जाती थी । उसका प्रमुख कारण प्रदूषित पानी था। उस योजना को इसलिये लांच किया गया है कि लोगों को पीने का साफ पानी मिले, फिल्टर वाला पानी मिले । घर तक पहुंच कर पानी मिले, लेकिन उस पानी में भी जितना बड़ा भ्रष्ट्राचार हुआ है, अनियमितता हुई है, जितना बड़ा खेला हुआ है, जिसकी कोई कल्पना नही है, सरकार के तरफ से कोई जवाब नहीं है । दो-दो बार टेण्डर निरस्त हुये हैं, उड़ीसा, झारखंड, तेलंगाना, जैसे राज्य जल जीवन मिशन के काम में आगे निकल गये हैं । जिस छत्तीसगढ़ को हम कहते हैं कि आगे निकल गया है, वह पीछे से पहले नंबर पर है क्या स्थिति है ?

अध्यक्ष महोदय :- चलिये 1.00 घण्टे हो रहे हैं, अब कविता हो जाये।

श्री नारायण चंदेल :- इसलिये क्या हम इनको विनियोग के माध्यम से राशि दे ? यहां की जो प्राथमिक आवश्यकता है, उसमें किसी प्रकार की स्पष्टता नहीं है, किसी प्रकार से पारदर्शिता नहीं है।

अध्यक्ष महोदय :- मैं बोल रहा था कि अब कुछ कविता हो जाये।

श्री नारायण चंदेल :- वह तो आयेंगे। कविता में आयेंगे।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- कविता नहीं तो गाना ही सुना दीजिये।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मुख्यमंत्री जी ने कहा था, माननीय टी.एस. सिंहदेव साहब भी थे। उन्होंने बोला कि हम किसानों को दो साल का बोनस देंगे। कहां है बोनस ? कहीं अता-पता नहीं है। अच्छा उसके बाद कभी-भी चर्चा नहीं करते हैं। मुख्यमंत्री जी आप अपने रिप्लाई में यदि जवाब दे देंगे तो बहुत अच्छा है। दो साल का बोनस, हमने बहुत प्रमुखता से लिख दिया, स्पष्ट अक्षरों में लिख दिया,......कलर में लिख दिया कि हम दो साल का बोनस देंगे। कहां है बोनस ? "क्या हुआ तेरा वादा, वो कसम वो इरादा।" जब हम मुख्यमंत्री जी को याद दिलाते हैं, तो वे इधर-उधर देखते हैं।

श्री रविन्द्र चौबे :- कौन सा याद दिला रहे हो, आपके कार्यकाल का ?

श्री नारायण चंदेल :- नहीं, आपके कार्यकाल का।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री कवासी लखमा :- अध्यक्ष महोदय, मोबाईल का ओ.टी.पी. भी याद दिला देना। वह पैसा भी हम लोग ही दे रहे हैं।

श्री नारायण चंदेल :- आज भी 96 हजार 724 किसानों का निजी बैंक का कर्जा माफ नहीं हुआ है। आप बड़े-बड़े होर्डिंग्स के माध्यम से, पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से विज्ञापन देते हैं कि हमने सब किसानों का करोड़ों रूपये का कर्जा माफ किया। कृषि मंत्री जी, मैं आपको बताना चाहता हूं, आप दोनों किसान है। आज भी 96 हजार 724 किसानों का निजी बैंकों का कर्जा माफ नहीं हुआ है, जो अप्लकालीन ऋण है। इस बजट में उसका कोई उल्लेख नहीं है। आप बात करते हैं किसानों की। किसान यहां का अन्नदाता है, यहां का भूमिपुत्र है। छत्तीसगढ़ की सारी अर्थव्यवस्था खेती और किसानी पर आधारित है। जब यहां फसल अच्छी होती है तो किसान के चेहरे पर मुस्कान होती है और छत्तीसगढ़ के बाजार में रौनक होती है, लेकिन जब भी अतिवृष्टि होती है, अकाल पड़ता है, पाला पड़ता है, उस समय यहां के बाजार में रौनक नहीं होती है। मैं फिर से जब मुख्यमंत्री जी से आग्रह करता हूं तो मेरे लोग कहते हैं कि आग्रह क्यों किये ? मैं फिर से आग्रह करता हूं कि आपके रिप्लाई में यह बात आनी चाहिए। जिन किसानों का कर्जा माफ नहीं हुआ है, क्या आप उन किसानों का कर्जा माफ करने की घोषणा करेंगे ? किसानों के जो पम्प कनेक्शन है, बिजली का क्या हाल-चाल है ? ये बिजली हॉफ करने की बात किये थे, बिजली ही हॉफ हो गयी।

श्री कवासी लखमा :- अध्यक्ष महोदय, क्या नागपुर से आये हैं ? कुछ नहीं बोल रहे हैं। इसलिये ज्यादा बोल रहे हैं, उनको खुश करने के लिये। इतने समय तक तो कभी नहीं बोलते थे।

श्री नारायण चंदेल :- अध्यक्ष महोदय, मैंने 2003 में एक बार किस्सा सुनाया था तो यह फिर बोलते हैं। जब मैंने किस्सा सुनाया था, उस समय वर्ष 2000 से 2003 तक भी कांग्रेस की सरकार थी। जब हम लोग सरगुजा के एक सुदूर गांव में शाम को 6.00 बजे गये, तो उसने बेचारे ने लाइट जलायी और लाइट जला के कंडिल से देख रहा था कि लाइट जल रही है या नहीं जल रही है।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- महोदय जी, ज्यादा हो थे।

श्री उमेश पटेल :- नारायण भैया, इस सदन में नेता प्रतिपक्ष का रिकॉर्ड है।

श्री बृहस्पत सिंह :- असत्य कथन की भी एक सीमा हो। मतलब बल्ब को लालटेन से देख रहा था कि जल रहा है कि नहीं। (हंसी) क्या आप भी । पूछो कब देखा किसने देखा।

श्री रामकुमार यादव :- ऐ मा मोदी जी के चेहरा हे।

श्री नारायण चंदेल :- अध्यक्ष महोदय, यह सही बात है। सही बात बता रहा हूं।

श्री उमेश पटेल :- माननीय चंदेल जी, इस सदन में नेता प्रतिपक्ष का 2 घण्टे 45 मिनट का रिकॉर्ड है। क्या आज तोड़ेंगे ?

श्री नारायण चंदेल :- नहीं, वह रिकॉर्ड तो कायम है।

अध्यक्ष महोदय :- अभी तो एक ही घण्टा हो रहा है।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपको बता रहा था। आप भी किसान है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं नेता प्रतिपक्ष जी से निवेदन करता हूं कि झूठ बोलने में प्रधानमंत्री जी का रिकॉर्ड ब्रेक मत करें।

श्री नारायण चंदेल :- अध्यक्ष महोदय, बिजली की लचर व्यवस्था के कारण, लो-वोल्टेज की प्रोब्लम के कारण..।

श्री गुलाब कमरो :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बिजली की बात आई तो मैं आपको बताना चाहूंगा कि 15 सालों तक भारतीय जनता पार्टी की सरकार थी। जनकपुर ऐसा गांव हैं जहां 188 गांव है वहां मध्यप्रदेश से बिजली आती थी। कांग्रेस की सरकार बनने के बाद, माननीय भूपेश बघेल जी की सरकार बनने के बाद छत्तीसगढ़ राज्य से बिजली आ रही है। (मेजों की थपथपाहट) इतना ही नहीं...।

श्री अजय चन्द्राकर :-कमरो जी, आप उस समय लालटेन से देखते थे, टार्च या मोबोईल से देखते थे ?

श्री शिवरतन शर्मा :- अच्छा, वह भाषण में बोलते हो, वह कहां का है बताओ?

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, भारतीय जनता पार्टी के शासनकाल में मेरे गांव में भी ऐसा ही होता था। हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी आएं तो हमारे गांव में लाईट आयी।

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे देश के गृहमंत्री परसों मेरे क्षेत्र में जा रहे हैं। आजादी के बाद पहली बार माननीय भूपेश बघेल जी के राज में पहली बार लाईट लगी। जो गृहमंत्री जी जा रहे हैं उसके साथ आप जाईएगा। कोटोमपाल सुकमा में आजादी के बाद वहां पहली बार बिजली लगी है यह माननीय भूपेश बघेल जी की देन है।

श्री अरूण वोरा :- माननीय नेता जी के भाषण को सुनकर...।

श्री नारायण चंदेल :- हम लोग सुकमा गए थे। जब हम लोग गए थे तो आप आगे-आगे चल रहे थे।

श्री कवासी लखमा:- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप कोटोमपाल सुकमा नहीं गए थे। वह कल जा रहे हैं। परसों जाएंगे आप उसके साथ जाईएगा।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय कवासी जी, हम लोग अक्टूबर में गए थे। तो आप आगे-आगे चल रहे थे। वहां सड़क की क्या स्थिति थी, आपको मालूम है? वहां सड़कों की स्थिति यह थी कि सामने में एक मोटर साईकिल वाला जा रहा था, वह पीछे अपनी बीवी को बैठाकर रखा था, जब हम लोग बड़े गड्ढ़े के पास रूके तो वह भी रूका था और हर 5 मिनट में हाथ फेरकर देखता था कि मेरी पत्नी है या नहीं? (हंसी) यह स्थिति आपके क्षेत्र के सड़कों की थी।

श्री अरूण वोरा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह बात जो आप कह रहे हैं..।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कवासी लखमा जी इसलिए भाभी जी को गाड़ी में बैठाकर नहीं चलते कि कहीं गिर न जाए।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप कौन सी भाभी जी का कह रहे हैं यह बताईए?

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सुकमा वाली भाभी जी को..।

श्री अजय चन्द्राकर :- आज कौन सी भाभी जी को अपनी गाड़ी के पीछे नहीं बैठाते?

संसदीय सचिव, महिला एवं बाल विकास मंत्री से संबद्ध (डॉ. रश्मि आशिष सिंह) :- भईया, वह अच्छा आदमी था। कम से कम पत्नी की चिंता तो कर रहा था। दूसरा तो गड्ढे में गिर जाए, यह मनाता है।

संसदीय सचिव, खाद्य मंत्री से संबद्ध (श्री कुंवर सिंह निषाद) :- आप माननीय नेता जी को बहुत देर तक बोल रहे थे कि आप कुछ कविता सुनाओ या कुछ सुनाओ। मैं माननीय नेता जी के लिए यह लाईन समर्पित करना चाहता हूँ कि :- "सच को तमीज नहीं है बात करने की असत्य को देखो कितना मीठा बोलता है।"

श्री गुरूदयाल सिंह बंजारे :- माननीय नेता जी, एक मिनट। मैं बोलूंगा। मैं पहली बार बोल रहा हूँ। आपने कहा कि कवासी लखमा जी आगे-आगे चल रहे थे, लेकिन बाईक वाला अपनी पत्नी को बार-बार पीछे देख रहा था क्योंकि पीछे आप चल रहे थे। (हंसी)

श्री नारायण चंदेल :- आपका स्वागत है। अब बाद में बात करते हैं। मैं बिजली की बात कर रहा था।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय नेता जी, एक मिनट। माननीय संसदीय कायर्यमंत्री जी जब इतनी अच्छी बात चल रही है तो हम लोगों ने दोपहर में आपके मामा जी के लिए बात की थी। यहां मुख्यमंत्री जी हैं उसको भी हल कर दीजिए। दूसरी एक बात की थी कि वह कवासी लखमा जी को पेंशन की जगह में तनख्वाह दिलवा दीजिए।

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने पहले भी कहा था। 13 प्लस होने के लिए मेरे मामा को मेरे सहयोग की जरूरत ही नहीं थी और आज समूचे सदन ने चिंता की नई मामी आएगी, 13 प्लस कैसे होगा? तो मैंने तो मामा जी के लिए कमेटी बना दी है, उसमें सबसे जागरूक सदस्य आप हैं। मामा जी चिंता व्यक्त कर रहे थे। वह मेरे लिए कमेटी बनाए हो या उनके खुद के लिए बनाए हो?

अध्यक्ष महोदय :- चलिए। हंसी-मजाक बहुत हो गया।

श्री अजय चन्द्राकर :- कमेटी में जो संशोधन दिया है अमितेष जी और सत्यनारायण जी का, उसको आप घोषित करो।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं तो बिजली की बात कर रहा था। मैंने बिजली के बारे में बताया। माननीय कवासी लखमा जी ने सड़कों की बात की। तो मैं सुकमा गया था, मैंने उस सड़क की बात भी बतायी। इसलिए मैं आपसे आग्रह करना चाहता हूँ। बिजली का बहुत बुरा हाल है, गांव-गांव में लो-वोल्टेज की समस्या है और जिस प्रकार के बिजली के बिल आ रहे हैं। गांव के लोग सर्वाधिक परेशान हैं। जिस घर में कभी 200-400 रूपये महीने का बिल आता था। दुर्भाग्य यह है कि पता नहीं, इन साढ़े 4 सालों में क्या हो रहा है ?गांव किसान, मजदूर आदमी के यहां 15 हजार, 20 हजार, 25 हजार रूपये बिल आ रहे हैं। जहां पहले 2 ठोक बल्ब जलता था, वहां 3 ठोक बल्ब जलते हैं उसके बाद में हमारे सब जनप्रतिनिधियों के यहां वह आते हैं और कहते हैं कि भैया का करी, हमन मर जाबो, खेत बेचा जाही, घर बेचा जाही, गिरवी रखे के पड़ी। जब वह बिजली ऑफिस जाते हैं तो उनके साथ में बारगनिंग की जाती है, मोल भाव किया जाता है। इस व्यवस्था को कौन सुधारेगा? माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपको बताना चाह रहा था कि किसानों का जो पंप कनेक्शन है, 58 हजार आवेदन आज भी लंबित हैं। उसको कौन निराकरण करेगा, कैसे निराकरण करेंगे? हम किसानों की बडी-बड़ी बात करते हैं। आज उद्योगों का जो जल कर बकाया है, उसको कोई नहीं वसूल रहा है। उसका बिजली बिल कोई नहीं वसूल कर रहा है। लेकिन छोटे किसान जो सीमांत, लघु किसान हैं, जो गांव में रहने वाले किसान हैं, उनको नोटिस दी जाती है। उनके खिलाफ में कार्यवाई की जाती है। बड़े उद्योगपतियों के खिलाफ में यह सरकार कार्यवाई करने से हिचकती है।

माननीय अध्यक्ष जी, मैं बहुत नहीं बोलूंगा। एक तरफ सिंचाई का रकबा घट रहा है और दूसरी तरफ फसल ज्यादा हो रही है। एक तरफ खेत कम होते जा रहे हैं लेकिन फसल ज्यादा हो रही है। यह पता नहीं कौन सा थर्मामीटर चौबे जी रखे हैं। बड़ी विचित्र स्थिति है।

उच्च शिक्षा मंत्री (श्री उमेश पटेल) :- वर्मी कंपोस्ट है।

श्री नारायण चंदेल :- खैर उसकी तो हालत आप खुद समझ रहे हैं। उमेश पटेल जी जिस दिन आपकी डिमांड में चर्चा थी न, उस दिन सारे खिलाड़ी रायपुर आये थे, आपको मालूम है। वह आंदोलन कर रहे थे। वह किसलिये आंदोलन कर रहे थे ? यहां आप डिमांड मांग में उत्तर दे रहे थे। खिलाड़ी कोटे से कोई नौकरी नहीं लगा है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अभी लगा है। आकर्षी कश्यप को डी.एस.पी. बनाया गया है।

श्री नारायण चंदेल :- उत्कृष्ट खिलाड़ियों के लिए आपकी कोई सम्मान की व्यवस्था नहीं है। सारे लोग रायपुर में आये थे जिस दिन आप डिमांड मांग की चर्चा में उत्तर दे रहे थे। माननीय अध्यक्ष महोदय, बड़ी विचित्र स्थिति सरकार की है।

समय :
8.17 बजे

(सभापति महोदय (श्री देवेन्द्र बहादुर सिंह) पीठासीन हुए)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

माननीय सभापति महोदय, इसलिए छत्तीसगढ़ में जो भी बुनियादी चीजे हैं, चाहे वह सिंचाई का रकबा हो, स्कूल हो, अस्पताल हो, अस्पतालों की क्या हालत है ? टी.एस.सिंहदेव साहब, आप कभी-कभी निरीक्षण करने जाया करें। दिल्ली न जा करके थोड़ा अस्पतालों का निरीक्षण करिये। आप बार-बार दिल्ली उड़ जाते हैं।

श्री टी.एस.सिंहदेव :- अभी बंद है।

श्री नारायण चंदेल :- हम जब लोग पता लगाते हैं तो बोलते हैं कि दिल्ली गये हैं और दिल्ली से जब ऊपर जाते हैं तो बोलते हैं कि भोपाल गये हैं। भोपाल जाते हैं। आप थोडा अस्पतालों की तरफ मुख मोड़ लीजिए। सिम्स की क्या स्थिति है ? बनारस की कचौड़ी गली से भी बुरी स्थिति उसकी है।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- प्रधानमंत्री के क्षेत्र को कैसे बोल रहे हैं।

श्री नारायण चंदेल :- आप जांजगीर के अस्पताल का थोड़ा दिखवा लीजिए। आप जहां भी जायें तो वहां पर अस्पताल का औचक निरीक्षण करिये। आप वहां पर बैठक लीजिए। उनको सख्त हिदायत दीजिए। सारे मंत्रियों को यह काम करने की आवश्यकता है। मुझे तो कई बार लगता है कि जो आपके मंत्री हैं वह क्षेत्र के हैं, प्रदेश के नहीं हैं। यह क्षेत्र में ही जाते हैं, रायपुर से कहां जायेंगे तो क्षेत्र में जायेंगे और क्षेत्र से कहां आयेंगे तो रायपुर में आयेंगे। इनको दायां-बायां देखने की आवश्यकता नहीं है। इनको फिक्र भी नहीं है। मुख्यमंत्री जी का पता नहीं क्या निर्देश है ? मैं अपने प्रभारी मंत्री से 6 महीने, 8 महीने से कह रहा हूं कि भैया जिले में आ जाओ, कोई बैठक ले लो। तो वह बोलते हैं कि कुछ चलबे नई करै तो हमन का बैठक लेबो। इनके मंत्री जो हैं ऐसा बोलते हैं कि हमरो सुनैया भैया कौनो नई हे। यह स्थिति है। जब मंत्री की कोई नहीं सुन रहा है, यह विधायकों की क्या गति है ? यह बताते हैं, जब चाय पर चर्चा होती है तो अपना दुख बताते हैं। जब मंत्री की नहीं सुन रहे हैं, विधायक की नहीं सुन रहे हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- ऐसे हे कि मुख्यमंत्री जी बोल दे कि प्रदेश मा मैं घुमहूं, तुमन अपन क्षेत्र मा जाओ।

श्री नारायण चंदेल :- वो तो हेलीकॉप्टर ले घूमत है। येमन गाड़ी मा तो घूमैं। ये स्थिति इस सरकार की है। अब एक तरफ मंत्री नहीं जा रहे है और दूसरी तरफ आप विधान सभा की अवमानना करने पर तुले हैं। जनप्रतिनिधियों का अपमान हो रहा है । माननीय चौबे जी, आपके बगल में राजा साहब बैठे हैं। दिनांक 22 मार्च, 2022 को आपने इसी सदन में 04 अधिकारियों को निलंबित करने की घोषणा की थी। आज तक वह अधिकारी उसी सीट पर हैं। शानदार एक साल हो गये। इस प्रकार की अवमानना हो रही है। छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद में पहली बार विधायिका की इतनी अवमानना कभी नहीं हुई। (शेम-शेम की आवाज) मध्यप्रदेश में हमारे बहुत से साथी विधायक रहे हैं। दो साल हम भी विधायक रहे हैं। क्या स्थिति है। आपको कौन अधिकारी मानेगा। विधानसभा में जब प्रश्न लगता है तो अधिकारी

बोलता है कि उठा लेना। काय करबे। यह स्थिति है। विधायिका का ऐसा अपमान नहीं होना चाहिए। यह विनियोग विधेयक महत्वपूर्ण विधेयक है, जिस पर हम चर्चा कर रहे हैं। मुख्यमंत्री जी सदन में उपस्थित हैं। हमारे जितने विधायक, सांसद कलेक्टर को पत्र लिखते हैं, विभाग के अधिकारियों को पत्र लिखते हैं, उसका 6-6 महीने तक कोई जवाब नहीं आता और न फोन से बेचारे बात करते हैं। उन अधिकारियों को इतनी फुर्सत नहीं है और साहब कभी मेहरबान हो गये तो बात अलग है। फोन से बात करके जवाब नहीं देते कि साहब आपका पत्र आया है। मैं व्यस्त हूं। जब हमारे विधायक और सांसद फोन लगाते हैं तो कई बार फोन नहीं उठाते हैं। दूसरे कामों में व्यस्त रहते हैं और कहते हैं कि हम मीटिंग में हैं। सीटिंग में कहीं और रहते हैं और हमको कह देते हैं कि हम मीटिंग में हैं। इस प्रकार की अवहेलना जनप्रतिनिधियों की हो रही है जो लोकतंत्र में उचित नहीं है। कार्यालय में अधिकारी मोबाईल से गेम खेलते हैं। इस प्रकार का जो रवैया है, यह बंद होना चाहिए। यह लोकतंत्र के लिए अच्छा नहीं है। सवाल यह है कि आज हम लोग हैं, कल आने वाली पीढ़ी आयेगी और वह पीढ़ी हमको कहेगी कि हमारे बुजुर्गों ने किस तरह की व्वस्था बनाई है। वह पीढ़ी हमको कभी माफ करने वाली नहीं है। सरकार किसी की भी बने, सवाल उस बात का नहीं है, लेकिन विधायक का सम्मान जिंदा रहना चाहिए, लोकतंत्र जिंदा रहना चाहिए। प्रजातंत्र का कभी गला घोटना नहीं चाहिए। हमारे जो छोटे जनप्रतिनिधि है, उनको कोई पूछने वाला नहीं है। अगर मैं सीधी-सीधी कुछ बात करूंगा तो उनकी क्या गति हो गई है। इसलिए यह सरकार पूरी तरह से दिशाहीन हो गई है। इस सरकार की पास में न कोई न नीति है, न कोई नीयत है। इस सरकार में भ्रष्टाचार चरम सीमा पर है और नीचे तक भ्रष्टाचार है। जैसे एक बार पूरे देश के अंदर में बोफोर्स की चर्चा हुई थी।

श्री अमितेश शुक्ल :- नेता जी, जैसे आप बोफोर्स की बात कर रहे हैं, वैसे ही आजकल अडाणी जी की चर्चा हो रही है।

श्री नारायण चंदेल :- पहले जब बोफोर्स की चर्चा हुई थी और उस समय गांव में अगर कोई पांच-दस हजार खा लेता था तो गांव वाले कहते थे कि यह बोफोर्स कर दीस ग। उस समय बोफोर्स घोटाला प्रचलित बात हो गई थी। आज ठीक इसी प्रकार से छत्तीसगढ़ में आकंठ भ्रष्टाचार है। हर विभाग में भ्रष्टाचार है। इसलिए मुख्यमंत्री जी और यह सरकार विनियोग के माध्यम से इस सदन से मांग कर रही है कि हमको खर्च करने का अधिकार दें। माननीय सभापति महोदय, हम इस विनियोग का विरोध करते हैं और अंत में मैं एक ही बात कहता हूं कि "हजार बर्क गिरे, लाख आंधियां उड़े, वह फूल खिल के रहेंगे जो खिलने वाले हैं।" धन्यवाद। (मेजों की थपथपाहट)

सभापति महोदय :- धन्यवाद। माननीय मुख्यमंत्री जी। (मेजों की थपथपाहट)

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय सभापति महोदय, वित्तीय वर्ष 2023-2024 से संबंधित विनियोग विधेयक पर चर्चा में भाग लेने वाले वक्ता सर्वश्री अजय चंद्राकर जी, देवेन्द्र यादव जी,

शिवरतन शर्मा जी, शैलेश पांडे जी, धर्मजीत सिंह जी, आशीष कुमार छाबड़ा जी, पुन्नूलाल मोहले जी, डॉ. लक्ष्मी ध्रुव जी, प्रमोद कुमार शर्मा जी, राजमन बेंजाम जी, श्री धरमलाल कौशिक जी, श्रीमती संगीता सिन्हा जी, श्री केशव प्रसाद चंद्रा जी, श्रीमती अनिता योगेन्द्र शर्मा जी, श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू जी, श्रीमती इंदू बंजारे जी, श्रीमती सावित्री मनोज मण्डावी जी, डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी जी, श्री गुलाब कमरो जी और अंत में नेता प्रतिपक्ष आदरणीय नारायण चंदेल जी ।

समय :
8.25 बजे **(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)**

माननीय अध्यक्ष महोदय, आज का दिन बहुत महत्वपूर्ण है । आज आजादी के दीवाने भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरू का शहीदी दिवस है । भारत को आजाद कराने के लिये इन तीनों अमर शहीदों ने हंसते-हंसते मृत्युदंड को स्वीकार किया था और भारत माता की जय-जयकार करते हुए फांसी के फंदे पर झूल गये थे । मैं भगत सिंह जी, सुखदेव जी और राजगुरू जी का पावन स्मरण करता हूं और उन्हें सादर नमन् करता हूं । आज चैत्र नवरात्रि का दूसरा दिन है । प्रथम शैलपुत्री, द्वितीय ब्रह्मचारिणी । आज देवी पंचारिणी का दिन है । मैं उनको भी सादर नमन् करता हूं । छत्तीसगढ़ में चारों दिशाओं में माता रानी विराजी हैं, उन सबको नमन् करता हूं । आज भगवान झूलेलाल की जयंती है, चेट्रीचंड दिवस है इस अवसर पर हमारी सरकार ने नगरपालिका, नगर-निगम क्षेत्र में सामान्य अवकाश की घोषणा की है । इस अवसर पर मैं भगवान झूलेलाल को सादर प्रणाम करता हूं । इसके अलावा 24 मार्च से पवित्र रमजान महीने की भी शुरूआत हो रही है, मैं उन्हें भी अग्रिम जो रोजदार हैं उनको भी शुभकामनाएं देता हूं ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी लगातार हमारे साथियों ने विनियोग पर चर्चा की । सरकार को क्यों पैसा दिया जाना चाहिए, नहीं दिया जाना चाहिए उसके बारे में विस्तार से विपक्ष के साथियों ने, हमारे सत्तापक्ष के साथियों ने चर्चा की, मैं सभी को धन्यवाद देता हूं । माननीय अजय जी ने भाषण की शुरूआत की, उन्हें अभी तक यह समझ में नहीं आया कि ऋण किस पर है ? वे अभी तक समझ नहीं पाये हैं । जो ऋणभार है वह टोटल जी.एस.डी.पी. का उससे जितना कर्ज राज्य सरकार जो कर्ज लेती है उसका प्रतिशत निकाला जाता है । इस सरकार के पहले भी वही बात होती थी, इस प्रदेश में जब आये । पुराने वाले प्रदेश में भी वही और देश में जितनी भी राज्य सरकारें हैं उसी प्रकार की गणना करती है, ये नयी गणना करने लगे हैं ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने पहले ही बताया था कि 82,000 करोड़ रूपये कर्ज है । 1 लाख 21,000 करोड़ रूपये का बजट है । मैं आपके माध्यम से जी.एस.डी.पी. की उपलब्धियों के बारे में कुछ आंकड़े प्रस्तुत करूंगा । अर्थव्यवस्था का आकार जी.एस.डी.पी. से निर्धारित होता है । छत्तीसगढ़ का

जी.एस.डी.पी. अब फिर कहेंगे कि तुलना मत करिये तो मैं किस आधार पर बोलूंगा ? वर्ष 2018 में 3 लाख 27,106 करोड़ था । जब आपका अंतिम वर्ष था, आपने जब अंतिम बजट प्रस्तुत किया उस समय यह आकार 3 लाख 27,106 करोड़ था और आज वर्ष 2023 में यह बढ़कर 5 लाख 9,043 करोड़ रूपये अनुमानित है । मार्च, 2020 से निरंतर दो वर्ष तक कोविड- 19 के आपदा के कारण आर्थिक गतिविधियों में मंद होने के बावजूद भी राज्य सरकार की नीतियों के कारण से अर्थव्यवस्था के आकार में 56 प्रतिशत की वृद्धि हुई । (मेजों की थपथपाहट) राज्य के जी.एस.डी.पी. में वृद्धि वर्ष 2022-23 में 8 प्रतिशत अनुमानित जो अखिल भारतीय जी.डी.पी. की अनुमानित वृद्धि दर 7 प्रतिशत से अधिक है । स्थिर भाव पर वर्ष 2022-23 में कृषि क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र, सेवा क्षेत्र में राज्य में अनुमानित विकास दर राष्ट्रीय स्तर से अधिक है ।   तुलनात्मक रूप से कृषि क्षेत्र में राज्य के 5.93 है राष्ट्रीय स्तर पर 3.50 है । औद्योगिक क्षेत्र में राज्य के 7.83 प्रतिशत है तो राष्ट्रीय स्तर पर 4.10 है । सेवा के क्षेत्र में 9.2 प्रतिशत है तो राष्ट्रीय स्तर पर 9.10 । अध्यक्ष महोदय, राज्य के स्वयं के कर में राजस्व - वर्ष 2018-19 में 21427 करोड़ की तुलना में वर्ष 2023-24 में बढ़कर 38 हजार अनुमानित है जो कि 77 प्रतिशत की वृद्धि है । राज्य के स्वयं के करेत्तर राजस्व वर्ष 2018-19 में 7703 करोड़ से बढ़कर 2023-24 में 18 हजार 200 करोड़ अनुमानित है, जो दोगुना से अधिक है । इस प्रकार राज्य का स्वयं का राजस्व वर्ष 2018-19 में 19 हजार 130 करोड़ से बढ़कर 2023-24 में 56,200 करोड़ अनुमानित है । जो कि 93 प्रतिशत है । केन्द्रीय प्राप्तियां 2018-19 में 35963 करोड़ से बढ़कर 2023-24 में 49 हजार 800 करोड़ अनुमानित है जो 38 प्रतिशत की वृद्धि है । इस प्रकार विगत् 4 वर्षों में केंद्रीय प्राप्तियां 38 प्रतिशत एवं राज्य के राजस्व प्राप्तियां 93 प्रतिशत की दर से वृद्धि हुई है (मेजो की थपथपाहट) ।

मानीय अध्यक्ष महोदय, वर्ष 2018-19 में कुल व्यय 73565 करोड़ की तुलना में वर्ष 2023-24 में 1 लाख, 21 हजार 500 करोड़ अनुमानित है जो कि 65 प्रतिशत की वृद्धि है । वर्ष 2018-19 में पूंजीगत व्यय 8903 करोड़ की तुलना में वर्ष 2023-24 में 18660 करोड़ अनुमानित है, जो दोगुना से अधिक है । पिछले 4 वर्षों में से दो वर्ष कोविड-19 प्रभावित दो वर्षों को छोड़कर शेष वर्षों में राजस्व आधिक्य वर्ष 2023-24 में भी राजस्व आधिक्य 3500 करोड़ अनुमानित है, ए.जी.लेखा अनुसार माह जनवरी 2023 में 4471 करोड़ का राजस्व आधिक्य है । अध्यक्ष महोदय, बजट की उपलब्धियां - विकास के लिए राशि की उपलब्धता में ऋण पर कम निर्भरता, राज्य सरकार ने इस वर्ष बाजार से कोई ऋण नहीं लिया है (मेजो की थपथपाहट) । पूरे देश में 3 राज्य हैं, ओडिशा है, त्रिपुरा है और छत्तीसगढ़ है । छत्तीसगढ़ तीसरा राज्य है जिसने बाजार से ऋण नहीं लिया है । गत् वर्ष 2021-22 में राज्य द्वारा मात्र 865 करोड़ का शुद्ध ऋण लिया गया था । वर्ष 2022-23 में जनवरी 2023 तक छत्तीसगढ़ का ऋण भार जी.एस.डी.पी. का 17.9 प्रतिशत है जो कि 15वें वित्त आयोग द्वारा निर्धारित सीमा 25 प्रतिशत से बहुत कम है । वर्ष 2023-24 छत्तीसगढ़ द्वारा ऋणों के ब्याज भुगतान पर राजस्व प्राप्तियों

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

का 6.5 प्रतिशत जो पंद्रहवें वित्त आयोग के द्वारा निर्धारित सीमा 10 प्रतिशत से बहुत कम है । बेहतर वित्तीय प्रबंधन, कम ऋण व सीमित ब्याज भार के कारण विकास कार्यों के लिए पर्याप्त राशि उपलब्ध है । अध्यक्ष महोदय, एफ.आर.बी.एम. अधिनियम के अंतर्गत वित्तीय घाटा-एफ.आर.बी.एम. में जी.एस.डी.पी. के 3 प्रतिशत तक के वित्तीय घाटे की सीमा निर्धारित है, कोविड-19 में इसको बढ़ा दिया गया था । लेकिन अब फिर से इसे 3 प्रतिशत कर दिया गया है और हम 2.99 प्रतिशत में हैं । अध्यक्ष महोदय, वर्ष 2023-24 में 15 हजार 200 करोड़ सकल वित्तीय घाटा अनुमानित है । जो राज्य के सकल घरेलू उत्पाद 5943 करोड़ का 2.99 प्रतिशत है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय मुख्यमंत्री जी, जो भी आपकी वित्तीय स्थिति है । आप जो बात कह रहे हैं आपके अधिकारी 90 परसेंट बात वही कहलवा रहे हैं जो बजट भाषण के उत्तर में दिया है । नई चीजें कुछ नहीं है ।

श्री भूपेश बघेल :- आपने वही बात दोहराई तो मैं उत्तर वही दूंगा । आपको समझ नहीं आया तो मैं क्या करूं । इसलिए फिर से समझा रहा हूं, अब भी समझ जाइए । ये जो वित्तीय घाटा, मार्कफेड ने जो लोन लिया, उस पर हमने बैंक गारंटी दी उसको आप जोड़ेंगे । निगम मंडल की गारंटी देंगे, उसको जोड़ेंगे तो एक बात बताओ पांच साल पहले आपने ऐसा जोड़कर नहीं बताया । यदि वैसा करते तो हम वैसा ही बताते । अध्यक्ष महोदय, पूरे हिन्दुस्तान में इसी प्रकार की व्यवस्था है। जब भारत सरकार, राज्य सरकारें इस प्रकार से आंकड़े दे रहे हैं, जो राज्य सरकार लेती है, उसी ऋण के बारे में चर्चा होती है। बैंक गारण्टी की भी लिमिट है, जो आर.बी.आई. की गाईडलाईन है, उसी के आधार पर हम किसी की गांरटी दे सकते हैं, उससे अधिक गांरटी नहीं दे सकते। जो प्रचलित व्यवस्था है, उसके आधार पर हम लोग कर रहे हैं तो इसमें आपको कोई तकलीफ नहीं होनी चाहिए। माननीय अध्यक्ष महोदय, बचत के बारे में बोलूं या आप लोगों ने जो कहा है, उसी के बारे में बस बोलना है।

श्री अजय चंद्राकर :- जो बोलना है बोल दीजिए।

श्री धर्मजीत सिंह :- बोलिए ना सर, हम लोग तो सुन रहे हैं।

श्री भूपेश बघेल :- वैसे तो बहुत सारा है लेकिन इसको नहीं बोलूंगा। अभी कुछ बातें विधान सभा सत्र के दौरान बड़ी प्रमुखता से आई है। जैसे कल ही प्रश्न में जो बातें आई, आज हमारे साथियों ने बात कही, कभी राशनकार्ड के बारे में, कभी आवास के बारे में, कभी धान के बारे में, कभी वन अधिकार अधिमान्यता पत्र के बारे में बहुत सारी बातें कही है, मैं उसके बारे में संक्षिप्त रूप से आपको ब्रीफ करते चलूंगा। नेता प्रतिपक्ष जी, सबसे पहली बात जवानी और पानी के बारे में है। माननीय अध्यक्ष महोदय, जांजगीर जिला वैसे ही सबसे सिंचित जिला है और जिसमें बिसाहू दास जी महंत, श्यामाचरण जी शुक्ल, हमारे पूर्व दोनों पुरोधा हैं। उनके प्रयासों से यह स्थिति निर्मित हुई। अध्यक्ष महोदय, पानी तो हम लोग देख लेंगे, आप जवानी को कम से कम संभाल कर रखिए। (हंसी) वह नहीं संभल पा रहा है तो बचत

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

जवानी संभाल लूंगा, घर थोड़ा संभाल लीजिए। घोटालों की बात, धान की बात, मैं आपसे कहना चाहूंगा, मैं तो इसके बारे में आपके जो कार्यकाल है, उसके बारे में बाद में बात करूंगा। कुछ उपलब्धियां हैं, जिसके बारे में कल स्थगन लाया गया था। पिछले साल हम लोगों ने कितने मानक बोरा तेंदूपत्ता खरीदा, उसका रेट क्या था। माननीय रमन सिंह जी, केवल 2017 बस आपका कार्यकाल नहीं था, वर्ष 2013 भी था, 2018 भी था। लेकिन 2013 में आपने 14 लाख 71 हजार मानक बोरा तेंदूपत्ता खरीदा। 2014 में 14 लाख 28 हजार मानक बोरा तेंदूपत्ता खरीदा। 2015 में 13 लाख 01 हजार मानक बोरा तेंदूपत्ता खरीदा। 2016 में 13 लाख 61 हजार मानक बोरा तेंदूपत्ता खरीदा। 2017 भर में 17 लाख मानक बोरा तेंदूपत्ता खरीदा। आपको धन्यवाद बधाई। लेकिन 2018 में 14 लाख 85 हजार मानक बोरा तेंदूपत्ता खरीदा। लेकिन आप किसी भी वर्ष में देखेंगे, 13 लाख, 14 लाख से अधिक बढ़े नहीं हैं जिसके बारे में बड़े जोर-जोर से बोलकर कल स्थगन लाए थे और बताने की कोशिश कर रहे थे, हम आदिवासी के पक्षधर हैं, हितैषी हैं, हम ही हितैषी हैं। आप वर्ष 2020-21 में देखेंगे 13 लाख मानक बोरा तेंदूपत्ता खरीदा। 2022-23 में 15 लाख 83 हजार मानक बोरा तेंदूपत्ता खरीदा और वर्ष 2023 में अभी जो अनुमानित है, वह 16 लाख 72 हजार मानक बोरा तेंदूपत्ता अनुमानित है। किसी प्रकार से आपके कार्यकाल से आंकड़े कम नहीं है। आपके कार्यकाल में 2500 से आगे बढ़ा नहीं, आप कभी दे नहीं पाए, हम लोग 4000 रूपये दे रहे हैं और भुगतान भी लगातार किया जा रहा है। वन अधिकार पट्टा के बारे में चर्चा हुई। आपको 2006 से लेकर 2018 तक मौका मिला। लेकिन आपके पास व्यक्तिगत दावे कितने थे, 8 लाख आवेदन आए, 4 लाख को दिए, बचत को कूड़ेदान में डाल दिए। उसका परीक्षण भी नहीं किए लेकिन हमारे शासनकाल में 4 लाख 58 हजार 124 लोगों को भुगतान किया। कुल मिलाकर अब 5 लाख...। इसमें 56538 की प्रगति हुई। आप भूमि हेक्टेयर की बात करेंगे तो जो...।

डॉ. रमन सिंह :- आपके चार साल के कार्यकाल में प्रतिवर्ष कितने पट्टे दिए गए, इसकी थोड़ी जानकारी भी दे दें।

श्री भूपेश बघेल :- हां, मैं वही जानकारी तो आपको दे रहा हूं। आप सुनिए तो। मैं ही तो बोल रहा हूं।

डॉ. रमन सिंह :- प्रतिवर्ष।

श्री भूपेश बघेल :- हां मैं तो बता रहा हूं कि चार वर्षों में हम लोग 56538 अतिरिक्त दिए। आपने जो कूड़ेदान में डाल दिया था...।

डॉ. रमन सिंह :- 4 साल में 56538 और 4 लाख 09 हजार पुराने थे। 4 लाख 9 हजार को जोड़कर आपने सिर्फ 56 हजार किये। यानी आपका औसत केवल 13,000-14,000 हजार हुआ। हमारे कार्यकाल में यह करीब-करीब 38,000-40,000 था। आप इसकी तुलना कीजिए।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मान लीजिए कि यदि एक भी आवेदक बचे तो उसको मिलना चाहिए। यदि एक भी गरीब आदिवासी बच जाता है या वहां पर पिछड़े वर्ग के लोग रह जाते हैं तो उनको मिलना चाहिए। लेकिन आपने क्या किया था? आपने 15 अगस्त, 2017 को यह आदेश दे दिया था कि अब जितने भी प्रकरण हैं, वह निराकृत हो गये। आप ग्राम सभा कराने वाले थे, लेकिन हम लोगों ने उसका विरोध किया था तब आपने अपना आदेश वापस लिया था। हमारे ये प्रयास हैं कि ये आंकड़े बढ़ें। यह न केवल व्यक्तिगत दावे की बात है, आपके सामुदायिक दावे कितने थे? आपके समय में 21 हजार 982 दावे हुए थे। हमारे समय में 46 हजार 269 दावे हुए। आपने केवल व्यक्तिगत दावे का काम किया, लेकिन सामुदायिक दावे का काम हमारी सरकार में हुआ। मैं आपको बताना चाहूंगा कि आपके समय में आपने 8 लाख 24 हजार 844 हेक्टेयर भूमि में पट्टा दिया और हमारे समय में 20 लाख 596 हेक्टेयर भूमि में पट्टा दिया गया। (मेजों की थपथपाहट) इस प्रकार से 11 लाख 81 हजार 119 हेक्टेयर भूमि में पट्टा दिया गया।

डॉ. रमन सिंह :- माननीय मुख्यमंत्री जी, उस समय पट्टा देने के मामले में छत्तीसगढ़ पूरे हिंदुस्तान में पहले नंबर पर हुआ करता था और अभी हम ग्यारहवें नंबर पर आ गये हैं।

श्री भूपेश बघेल :- आप फिर उल्टा-पुल्टा बात कर रहे हैं। हम अभी भी पहले नंबर पर है। डॉ. साहब, आपके साथ यही तो गड़बड़ी है। अभी भी हम पहले नंबर पर हैं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- डॉ. साहब ला एक बार-दु बार पढ़ना चाहिए।

श्री अजय चंद्राकर :- इशारा अच्छा होइस। मैं तो देखत रथो।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे पास पूरे देश भर के जिन-जिन राज्यों में वनाधिकार पट्टे बांटे गये उसका चार्ट है। उसमें आज की तारीख में छत्तीसगढ़ पहले नंबर पर है। (मेजों की थपथपाहट) मेरे पास उसका चार्ट है यदि आप कहेंगे तो मैं आपको दे दूंगा। सामुदायिक दावे में हमने 11 लाख 81 हजार हेक्टेयर भूमि आबंटित की। डॉ. साहब, सुनिये, आपके समय पूरे प्रदेश भर में सामुदायिक वन संसाधन के केवल 10 प्रकरण थे और हमारे समय वह बढ़कर 3 हजार 944 हुआ है। (मेजों की थपथपाहट) आपने केवल 4 हजार 926 हेक्टेयर भूमि आबंटित की थी और हमारे समय में हमने 17 लाख 831 हेक्टेयर भूमि दी है। हमारे पास इसके आंकड़े हैं। तेंदूपत्ते के बारे में बात हुई, आदिवासियों की बात हुई, हमने जमीन वापसी करने का भी काम किया। भारत सरकार ने तो बीमा ही बंद कर दिया था। हमने शहीद महेन्द्र कर्मा योजना से सहायता दी और परसों ही करीब 1,400 लोगों को, जिनकी मृत्यु हो गई या किसी का हाथ-पैर टूट गया या घायल हो गये, उनको हमने राज्य सरकार की ओर से पैसे दिये हैं। अभी तक हमने करीब 6,000 लोगों को वितरीत किया है। पहले बीमा में 1-2 साल लगता था लेकिन अब 2-3 महीने में बीमा होता है।

मानननीय अध्यक्ष महोदय, अभी आप कानून-व्यवस्था के बारे में बात कर रहे थे। आप कानून-व्यवस्था की स्थिति को देख लीजिए। आपके समय झलियामारी काण्ड हुआ था। (शेम-शेम की आवाज) आपके समय जेल ब्रेक हुआ था। दंतेवाड़ा जेल से जो नक्सली भागे थे, वह आज तक वापस नहीं आये। यदि आपके समय को तुलनात्मक भी याद करे तो आप वर्ष 2016-2017-2018 की तुलना में वर्ष 2019-2020-2021 के 3 साल के आंकड़े को देखेंगे तो आपके समय तीनों साल को मिलाकर 5,625 बलात्कार हुए और हमारे कार्यकाल में 3 साल में 3,339 बलात्कार हुए। कहां आपके कार्यकाल में 5,625 और कहां 3,339। यदि आप आपके 3 साल के कार्यकाल में शीलभंग की घटना को देखेंगे तो तीन साल में 4,985 घटनाएं हुईं और हमारे 3 साल के कार्यकाल में 4,025 शीलभंग की घटनाएं हुईं। आपके कार्यकाल में दहेज के लिए हत्या 237 और हमारे कार्यकाल में दहेज के लिए हत्याएं 212 हुईं। जिस प्रकार से घटनाएं घटी हैं, मैं उसके बारे में आपको बताना चाहूंगा । नेता प्रतिपक्ष जी बार-बार कहते हैं कि अश्रु गैस छोड़ा, अश्रु गैस छोड़ा । आपके कार्यकाल में इतने अश्रु गैस छुटे और इतने वाटर केनन चलाए, हम लोगों को गिनती तक याद नहीं है । जब हम लोग नेता जी स्टेडियम में जा रहे थे, अचानक पुलिस ने हम पर अश्रु गैस छोड़ा, अश्रु गैस तो चला नहीं, पुराना वाला अश्रु गैस रखे थे, वह फट गया और उसमें से तीन लोग घायल हुए, वे हॉस्पिटल में एडमिट थे। पूरा पैर फट गया । आप किस प्रकार से बात कर रहे हैं । अध्यक्ष महोदय, जहां भी इस प्रकार की कोई घटना होती है, जो राजनीतिक आन्दोलनकारी हैं, उसके साथ हमारी कभी दुर्भावना नहीं रही । आपके समय में इतना मारपीट हुआ है, इतने लोग घायल हुए हैं । जब यही शिक्षा कर्मी आन्दोलन कर रहे थे तो 38 लोगों की मौतें हुई थी । आपने इतनी बरबरतापूर्वक कार्यवाही की थी । आज स्थिति यह है कि भारतीय जनता पार्टी के लोग उकसाते हैं । जब भारतीय जनता युवा मोर्चा का आन्दोलन हुआ तो हमारे कितने पुलिस कर्मी घायल हुए, कितने लोगों को उकसाने की कोशिश की । अभी जब आन्दोलन हुआ, तब क्या हुआ, नारायणपुर में क्या हुआ ? ये लोग लगातार भड़काने की कोशिश कर रहे हैं । यह भारतीय जनता पार्टी की प्रवृत्ति है कि इस प्रकार से हिंसा को बढ़ावा दो, ताकि इस घटना को बहुत बड़ा बनाया जाये । आज भी आप क्या कर रहे हैं ? आपकी सरकार के समय धमकी मिलती थी, आप सरकार के खिलाफ नहीं बोल सकते । पूरे देश में अभी भी क्या हो रहा है ? जो E.D. के आंकड़ों के बारे में बोल रहे हैं, वह 5000 में केवल 33 पर कार्यवाही हुई। आपके E.D. के 5000 रेड हैं । जितने केस हैं, उसमें केवल 33 हैं । भारतीय जनता पार्टी शासित राज्य छोड़ दो तो उसके बाद कौन सा राज्य छूटा है, जिसमें E.D. आई.टी., डीआरआई, सीबीआई ये लोग नहीं ला रहे हैं । आपने प्रताड़ित करने का ठान लिया है और उसका दुरूपयोग कर रहे हैं और हम लोग सहेंगे । क्योंकि आप सत्ता में हैं, आपने तो E.D. को जो इंफोर्समेंट डायरेक्टर हैं, प्रवर्तन निदेशालय को वित्त में होना चाहिए, उसको आपने गृह विभाग में रखा है । आपकी नीयत तो ऐसे ही समझ आ जाती है, वह किसके नियंत्रण में है । यदि आर्थिक अपराध हो रहा है, मनी लेंडिंग हो रही हैं तो उसकी देखरेख

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

करने का काम तो वित्त विभाग का है और इसके पहले वित्त विभाग के अंडर ही था । आपने उसको परिवर्तित कर दिया । नेशनल हेराल्ड के बारे में अजय जी बोल रहे थे । 2014 में सारे लोगों ने लिखकर दे दिया कि इसमें कोई केस बनता ही नहीं । आपने 2015 में नियम बदला, तब जाकर सुब्रमण्यम स्वामी का सब मामला ही खतम हो गया था । कोर्ट से एक पर्ची दी, चाहे सीबीआई है, E.D. है, आईटी है, सबने कहा खतम और उसके बाद फिर शुरू करवाया। आपका उद्देश्य प्रताड़ित करने का है, उसमें कौन सा मनी लेंडिंग हुई है। जब सारी चीजों का चेक से पेमेंट हुआ है तो मनी लेंडिंग कैसे हो गयी । मनी लेंडिंग हुआ नहीं है तो आप प्रताड़ित करने की कोशिश कर रहे हैं, फंसाने की कोशिश कर रहे हैं । जब हमारे राष्ट्रीय नेताओं को प्रताड़ित कर सकते हैं तो बाकी लोगों की क्या बिसात है ? आपके द्वारा ये संदेश देने की कोशिश है ।

अध्यक्ष महोदय, इनको सबसे डर कांग्रेस पार्टी से है और कांग्रेस पार्टी के नेता राहुल गांधी से है । (मेजों की थपथपाहट) इसी कारण से लगातार किसी स्तर पर जाकर कार्रवाई कर रहे हैं । न्यायालय भी, चाहे जितने हमारे सेन्ट्रल एजेंसी हैं, उनके ऊपर कितना दबाव है, मैंने उस दिन भी कहा था कि यदि कानून मंत्री खुलेआम बोले कि न्यायालय विपक्ष की भूमिका न निभाए । यह कितना बड़ी बात है । जब सुप्रीम कोर्ट के बारे में ऐसा बोल सकते हैं तो फिर निचली अदालतों के बारे में क्या उम्मीद कर सकते हैं ? यह स्थिति इनकी है ।

अध्यक्ष महोदय, उद्योगों के बारे में सभी साथियों ने कहा । उद्योग विभाग की उपलब्धियों के बारे में भारत सरकार के उद्योग संवर्धन एवं आन्तरिक व्यापार विभाग के वेबसाईट की बात मैं करूंगा । 2015 से 2018 तक कुल 8,597 करोड़ का निवेश हुआ और वर्ष 2019 से 2022 तक कुल 1,07,170 करोड़ का निवेश हुआ है। यह भारत सरकार के वेबसाइट में है। आप इसको निकालकर देख लीजिये। मैं इसके अलावा और कुछ नहीं कहूंगा।

अध्यक्ष महोदय, मैंने कल भी जवाब दिया था। रमन सिंह जी बड़े चिंतित थे, उन्होंने ट्रांसपोर्टिंग की बात कही। अजय जी बहुत अच्छा मामला उठा रहे थे, नेता जी भी कह रहे थे कि आखिर आपको विनियोग में पैसा क्यों दें ? बिलकुल सही बात है। लेकिन जब आप ऊंगली उठाते हैं तो 3 ऊंगली खुद की तरफ जाती है। माननीय अध्यक्ष महोदय, कोयला परिवहन के बारे में बात हुई। यह आज से हुआ है ? इसी साल टेण्डर हुआ ? यह तीसरी बार है और रेट में कोई अंतर नहीं है। एस.ई.सी.एल. का ले आये तो मैंने पूछा था कि आपने प्रावधान ही क्यों किया था ? उसमें घाटा लगता है तो मैं आपसे पूछना चाहूंगा कि माननीय अटल बिहारी बाजपेयी जी के नाम से आपने जो पावर प्लाण्ट बनाया है, उसकी स्थिति क्या है ? जो 5119 करोड़ का प्रोजेक्ट था, वह बढ़कर 9261 करोड़ हो गया है, लगभग दोगुनी हो गई है। हिन्दुस्तान में इससे महंगा पावर प्लाण्ट कहीं नहीं बना है। इसका घाटा कौन भरेगा ? आपने 4 हजार करोड़ से अधिक नुकसान का चूना लगाया। आपने जितनी जमीन ली, जिसके बारे में बात सब

लोग उठाते हैं, चाहे चन्द्रा जी विषय उठाये, चाहे सौरभ जी विषय उठाये, नेता प्रतिपक्ष भी उठाया। अध्यक्ष महोदय, आपके पास भी आते हैं। एक हजार मेगावाट पावर प्लाण्ट लगाने की जितनी जमीन की आवश्यकता है, उससे तीन गुना ज्यादा जमीन लेकर रखे हैं। क्या जरूरत थी ? ऐसे जगह में गांव वाले आंदोलन करते हैं जहां कोई सामान ही नहीं ले जा पाये, कोई निकल ना पाये, आपने ऐसी जगह चिन्हित किया। इसको कहते है राज्य के राजस्व में सेंध लगाना। आपने सबसे ज्यादा नुकसान किया है तो आपने इसमें किया है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, दूसरी बात, आप राजस्व का कैसे नुकसान पहुंचाते हैं ? आपने एन.एम.डी.सी. को बैलाडीला खदान दिया। एन.एम.डी.सी. और सी.एम.डी.सी. का ज्वाईंट वेंचर है, एन.सी.एल. बना। चुनाव के आखिरी में चेयरमेन माननीय शिवरतन जी थे। यदि देश का सबसे बड़ा लौह उत्पादक कोई संगठन है तो एन.एम.डी.सी. है। उससे बड़ा उत्पादक, खोदने वाला कोई नहीं है। लेकिन उसके बाद दोनों मिलकर आप एम.डी.ओ. नियुक्त कर रहे हैं। क्यों भाई ? क्यों देना था। अध्यक्ष महोदय, यदि दोनो मिलकर खुदाई कर रहे थे, यदि एन.एम.डी.सी. खुदाई करता तो आज स्थिति क्या है, एक साल 5800 करोड़ का नुकसान है। केवल रायल्टी, अतिरिक्त राशि, डी.एम.एफ. एनेमिटी, जी.एस.टी. वन उपकर, सी.एम.डी.सी. का लाभांश इन सबको करते तो 5,800 करोड़ रूपये का लाभ हमको मिलता। आपने हमसे यह वंचित कर दिया। आप कितने साल से रोककर रखे हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, ये लोग राशन कार्ड के बारे में चर्चा कर रहे थे, लगातार इस बात की चर्चा कर रहे हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारी सरकार बनी तो सबसे पहले हमने आधार कार्ड को सबसे लिंक किया ताकि कोई आदमी नहीं चूंके। सबके पास राशन कार्ड हो, गरीब आदमी को राशन मिले। आपके शासन में क्या होता था ? चुनाव के पहले राशन कार्ड बनाते थे, सास के नाम से, बहु के नाम से, छोटकी बहु के नाम से बनाते थे, सबके नाम से राशन कार्ड बनाते थे। पार्षदों और सरपंचों के पास सौ-सौ राशन कार्ड पड़े रहते थे, पूर्व मंत्री का भी राशन कार्ड ।

श्री लखेश्वर बघेल :- राजनांदगांव में लीलाराम भोजवानी के नाम से राशन कार्ड बना था।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसके बाद क्या हुआ, जो गरीब कल्याण योजना बनी, सर्वप्रथम हमने तीन महीने का राशन कार्ड मुफ्त दिया था । सबका राशन कार्ड बनाया, एपीएल का बनाया, बीपीएल का भी बनाया, 98 प्रतिशत लोंगो का राशन कार्ड बना, उसमें 98 प्रतिशत लोग स्वयं उपस्थित होकर लेते थे । इनके समय में तो पता ही नहीं चलता था । इनके समय में कुनकुरी घोटाला इनके समय में हुआ । हमारे यहां जो भारत सरकार ने निर्देशित किया कि सत्यापन कराना है, हमने सत्यापन किया । इसमें जो गलत पाया गया, कम पाया गया, उसकी अनुमानित राशि चाहे वह चावल हो, चना हो, गुड़ हो, शक्कर हो, वह करीब 173 करोड़ के आसपास की राशि है, उसका पाया जाता है । अध्यक्ष महोदय, हमने 13 प्रकरण में एफ.आई.आर. भी दर्ज किया है, उचित मूल्य दुकानों में 61 का

निलंबन किया है, 140 आवंटन निरस्त किया गया है । अध्यक्ष महोदय, लगातार हमारी कार्यवाही चल रही है । गरीब का चावल कोई नहीं खा सकता । मैं सदन के माध्यम से इस बात का दावा करना चाहता हूँ, जो गड़बड़ किया है, आपके समय का राशन दुकान आवंटन हो या हमारे समय का हो, जो भी गलत होगा, उसके खिलाफ कार्यवाही होगी । अध्यक्ष महोदय, कोई गड़बड़ नही कर सकेगा । अध्यक्ष महोदय, आपके समय में क्या हुआ था, आपके समय में वर्ष 2015 में हजारों करोड़ का नॉन घोटाला हुआ था, फाईल में नोट बरसते थे, फिर फर्जी राशन कार्ड आपके बने । अध्यक्ष महोदय, 15 लाख फर्जी राशनकार्ड बने थे, उसे आपने निरस्त किया । 18 महीने तक उसको राशन देते रहे । यह घोटाला नहीं है ? यह कौन से श्रेणी में आयेगा ? जो 18 लाख राशन कार्ड आपने बनाया है, उसके बाद उसी अधिकारी के द्वारा निरस्त कराया, सामग्री वितरित किये, वह घोटाला की श्रेणी में नहीं आयेगा ? आपने उसमें कौन सी वसूली की है ? आपने किससे वसूल किया है ? आपने क्या कार्यवाही की है ? वर्ष 2013 में बनाये, फिर वर्ष 2015 में बनाये, निरस्त किये तो किससे वसूल आप किये हैं ? आप धान के मामले में कहेंगे तो बलौदाबाजार जिला में 1000 करोड़ का घोटाला हुआ था । धान की चोरी हो गई थी । राजनांदगांव में 2000 टन धान चोरी हो गया । घटिया बारदाना का क्रय, कुनकुरी में चावल घोटाला, परिवहन को आप मोटर सायकल में कराते रहे हैं । जो घोटालों के भीष्म पितामह है, वह हम पर आरोप लगा रहे हैं । (शेम-शेम) आवास के बारे में कोई 7 लाख बोल रहे हैं, कोई 16 लाख बोल रहे हैं, कोई 38 लाख बोल रहे हैं, इस प्रदेश का दुर्भाग्य है कि आर.बी.आई. का जो रिपोर्ट है 39.9 प्रतिशत लोग गरीबी रेखा के नीचे हैं । इनके शासनकाल में 18 प्रतिशत लोग झोपड़ी में रह रहे हैं, यह इनकी उपलब्धि है । सर्वे में 18 लाख आया है, आप 8 लाख बनाये हैं, 3 लाख स्वीकृत हुये, ग्यारह लाख हुये, 7 लाख बचे । उसके लिये 3200 करोड़ का प्रावधान हमने किया है । अध्यक्ष महोदय, मैंने प्रधानमंत्री को भी पत्र लिखा कि वर्ष 2011 से जनगणना नहीं हुआ है, कुछ लोग बोलते हैं कि मनमोहन सिंह के समय का है । बिल्कुल सही बात है, मनमोहन सिंह का कार्यकाल था । उस समय आपकी सरकार नहीं थी । उस समय जनगणना हुआ था, लेकिन अब तो वर्ष 2023 आ गया । बारह साल बीत गये, कितने लोग और उसके हितग्राही हो सकते हैं ? कितने परिवार और बढ़ गये हैं, क्या इसकी गणना नहीं होनी
चाहिये ? वर्ष 2011 में जो लड़का 15 साल का था, आज 12 साल बाद 27 साल का हो गया है । उसके परिवार नहीं है, क्या उसको मकान की जरूरत नही है, उसको मिलना चाहिये या नहीं मिलना चाहिये ? मिलना चाहिये, अजय जी ने उस दिन ठीक कहा है । जनगणना करने का अधिकार आपका नहीं है । मैं आपसे सहमत हूँ । मैं इसीलिए प्रार्थना किया कि जनगणना कराने का अधिकार आपका नहीं है, मैं आपसे सहमत हूँ । मैंने इसलिए प्रार्थना किया कि जनगणना करा दो, लेकिन गरीबों का हित किसी भी हालत में खत्म नहीं होना चाहिये ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

समय :
9.00 बजे

इसीलिये मैंने 01 अप्रैल से सर्वे कराने का निर्णय लिया, मैंने इस पवित्र सदन में घोषणा की, उसकी शुरूआत होगी। (मेजों की थपथपाहट)

डॉ. रमन सिंह :- आपके पूरे चार, साढ़ चार साल के कार्यकाल में कुल कितने आवास बने ? एक प्रश्न के जवाब में आया है कि आपके पूरे कार्यकाल के दौरान 87 हजार आवास बने हैं। वर्ष 2011 की आबादी के सेंसस के आधार पर 07 लाख मकान फिर बाद में वर्ष 2016 में 09 लाख आवासों की अतिरिक्त स्वीकृति दी गयी। यह 9 लाख और 7 लाख मिला के 16 लाख। आप सुन लीजिये। उस 16 लाख में से आप लोगों ने 04 सालों में सिर्फ और सिर्फ 87 हजार मकान बनाये हैं। बाकी सारे के सारे आवास भारतीय जनता पार्टी के शासन काल में बने हैं और जो नहीं बने हैं, उसके लिये आपने मैचिंग ग्रांट नहीं दिया।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जब आर.बी.आई. का सर्वे आया। जो भारत सरकार की जनगणना हुई, उसमें गरीबी रेखा से नीचे कितने लोग जीवनयापन करते हैं, कितने लोग आवासहीन है, कितने लोग सिंगल कमरे के मकान में है, कितने लोग दो कमरे के मकान में है, कितने लोग कच्चे मकान में है, उसमें जो सर्वे हुआ उसमें 18 लाख है। अब 18 लाख से और अतिरिक्त है। मैं तो रमन सिंह जी और आपके पूरे साथियों से कहना चाहता हूं कि इस सर्वे में जो भी..। अब सुन तो लीजिये।

डॉ. रमन सिंह :- आपके आवास नीति की वजह से यहां दु:खी बैठे हैं।

श्री भूपेश बघेल :- आप रहने दीजिये। अब आप राजनीति मत करिये, वह नहीं चलने वाला है।

डॉ. रमन सिंह :- नहीं तो टी.एस. सिंहदेव जी को पत्र लिखकर इस्तीफा क्यों देना पड़ा ? आप इसका भी तो जवाब दे दीजिये।

श्री भूपेश बघेल :- उन्होंने कोई इस्तीफा नहीं दिया है। क्या विभाग छोड़ना कोई इस्तीफा देना होता है ?

डॉ. रमन सिंह :- उन्होंने व्यथा में इस्तीफा दिया है।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय मुख्यमंत्री जी, उन्होंने लिखा कि मैं 8 लाख लोगों को आवास नहीं दिला पा रहा हूं। लगातार मेरे आग्रह करने के बाद उनके लिये राशि आवंटित नहीं की जा रही है। व्यथा व्यक्त करते हुए पत्र लिखा।

श्री टी.एस. सिंहदेव :- वह तो मैंने मेरी कमी बताई।

श्री शिवरतन शर्मा :- आपने मुख्यमंत्री जी को पत्र लिखा है ना ?

श्री टी.एस. सिंहदेव :- मैंने पत्र लिखा कि मैं नहीं कर पा रहा हूं। आपने मुझे जिम्मेदारी दी लेकिन मैं नहीं कर पा रहा हूं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- आप शासन के अधीक्षक नहीं है ?

श्री शिवरतन शर्मा :- आपने लिखा ना कि मैं लगातार.. (व्यवधान)

डॉ. रमन सिंह :- आप सरकार के हिस्सा है। आप मंत्री है।

श्री नारायण चंदेल :- जिस प्रकार से इस सदन में राजनीतिक खेल हो रहा है।

श्री टी.एस. सिंहदेव :- ऑटोकॉम्ब है, इसलिये मैंने कहा कि मैं अभी बैठा हूं।

श्री शिवरतन शर्मा :- आप सरकार के हिस्सा रहे हैं और आपने मुख्यमंत्री जी से आग्रह किया है। आपने मुख्यमंत्री से आग्रह की है और आपने व्यथा व्यक्त करते हुए इस्तीफा दिया है। माननीय मुख्यमंत्री जी, मैं आपसे एक निवेदन कर लेता हूं। आपने इस साल के बजट में 02 लाख 30 हजार प्रधानमंत्री आवास के लिये 03 हजार 02 सौ करोड़ रूपये की व्यवस्था की है।

श्री कवासी लखमा :- शिवरतन जी..।

श्री शिवरतन शर्मा :- दो मिनट सुन लीजिये।

श्री कवासी लखमा :- बैलाडीला को क्या कर दिये ? बेच दिये।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री टी.एस. सिंहदेव जी ने जो इस्तीफा दिया है, उसमें 08 लाख आवासों का जिक्र था। 02 लाख 30 हजार हो भी जायेगा। उसके बाद भी कितना बचेगा। उसके बाद भी 05 लाख 70 हजार बचेगा। क्या आप उसकी व्यवस्था करेंगे ?

श्री टी.एस. सिंहदेव :- शिवरतन जी, आपने जो पत्र बताया है उसमें एक जगह इस्तीफा शब्द लिखा हो तो बता दीजिये।

श्री शिवरतन शर्मा :- अगर आपने पद त्यागा ..।

श्री टी.एस. सिंहदेव :- वह भी लिखा हो तो बता दीजिये।

श्री शिवरतन शर्मा :- आपने अपने आप को विभाग के दायित्व से पृथक किया ना ?

श्री टी.एस. सिंहदेव :- हां।

श्री शिवरतन शर्मा :- आपने पंचायत एवं ग्रामीण विकास के दायित्व से अपने आप को पृथक किया। उसमें जो कारण लिखे हैं। आपने उस कारण में लगभग 08 लाख प्रधानमंत्री आवास का जिक्र किया है।

श्री टी.एस. सिंहदेव :- इन्होंने जो जिम्मेदारी दी, मैं उसको नहीं कर पा रहा हूं। मैंने कहा कि बेहतर है कि मैं पीछे हो जाऊं।

श्री शिवरतन शर्मा :- अभी 02 लाख 30 हजार की व्यवस्था की गयी है, उसके बाद भी 05 लाख 70 हजार मकान और बाकी है। उसके लिये माननीय मुख्यमंत्री जी व्यवस्था करेंगे क्या बता दें ?

डॉ. रमन सिंह :- आप आवासहीनों की सहानुभूति पूरा पा गये, बस।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री शिवरतन शर्मा :- अभी 05 लाख 70 हजार आवास बाकी है। क्या आप उसकी व्यवस्था करेंगे क्या बता दें।

श्री कवासी लखमा :- शिवरतन जी, तुम बैलाडीला के चेयरमेन बने थे। बैलाडीला को बेचे कि नहीं ? हां या ना बोलिये। वह फर्जी ग्राम सभा हुई थी या नहीं ? यह बताईये।

श्री शिवरतन शर्मा :- किसने बेच दिया बैलाडीला को?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- आपके समय में कोयले की दलाली चालू हुई थी। जब सी.एम.डी.सी. के चेयरमेन बने थे। दलाली का काम तो आपके समय में चालू हुआ था।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने पहले ही कहा कि कैमिकल लोचा है। जब 18 लाख के आंकड़े आ गये और मैं यह कह रहा हूं कि मैं 01 अप्रैल से फिर सर्वे करा रहा हूं और यह 18 लाख के अलावा भी जितना आ जाये, हम उन सबको क्रमबद्ध आवास देंगे। (मेजों की थपथपाहट) यह सर्वे इसलिये कराया जा रहा है। उसके साथ-साथ जो उज्ज्वला योजना और शौचालय है, उसका भी सर्वे होगा। अब मैं भारतीय जनता पार्टियों के साथियों से कहता हूं कि आप इसमें सहमत है या नहीं ? आप यह बताये।

श्री नारायण चंदेल :- मुख्यमंत्री जी, यह बताईये कि आप एक तो मैचिंग ग्रांट की बात नहीं कर रहे हैं। दूसरा, यह बताईये कि आपके पास समय कितना बचा है ? आप उसकी नींव नहीं रख पायेंगे।

श्री शिवरतन शर्मा :- पहले जो 05 लाख 70 हजार है, वह तो दे दो। उसके बाद सर्वे की बात करना।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सुनो भई। जब शुरू हुआ था तो कितना में हुआ था। आपको वर्ष 2015, 2016, 2017, 2018 में मौका मिला। 1 साल 2 लाख, 1 साल 3 लाख और आखिरी में यह है कि वर्ष 2018 में यह स्थिति थी कि जब चुनाव आचार संहिता लग गई, जब चुनाव संपन्न हो गया। तब आपने ऋण लेकर भुगतान किया। तो यह स्थिति थी।

श्री अजय चन्द्राकर :- उस समय के जो अधिकारी ने ऐसा किया, उसके ऊपर आप कार्यवाही करेंगे क्या ?

श्री भूपेश बघेल:- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपका निर्णय था। आपको दण्ड ...।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप जो कार्यवाही करेंगे, जिन्होंने यह किया है, उनके ऊपर करिए। आप सक्षम हैं। जिन्होंने गलत किया है, आप उस अधिकारी के ऊपर कार्यवाही कीजिए।

श्री कवासी लखमा :- अब दबाव डालकर नहीं किया तो वह क्या करेंगे ?

श्री अजय चन्द्राकर :- आप उदाहरण क्यों देते हैं, आप कार्यवाही कीजिए।

खाद्य मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- जनता ने जो दण्ड दिया है, वह सामने है इससे बड़ा दण्ड और क्या चाहिए ?

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- माने जो प्रशासनिक गलती हुई कोई अधिकारी नियम कानून नहीं जानता तो आपके ऊपर है। आप उसमें कार्यवाही कीजिए।

श्री भूपेश बघेल:- अरे, भईया, आचार संहिता लगने के बाद...।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप उसमें कार्यवाही कीजिए।

श्री भूपेश बघेल:- माननीय अध्यक्ष महोदय, ठीक है। मैं सुन तो रहा हूँ। मैं आपकी बात को सुन रहा हूँ। जनसंपर्क विभाग, माननीय डॉ. रमन सिंह जी के पास था और उन्होंने आचार संहिता लगने के बाद भी उसमें विज्ञापन के लिए हस्ताक्षर किएं। आप समझ गये, हम किस-किस पर कार्यवाही करें? आप एक रूपये में होटल के लिए जमीन दे देते हैं उस पर कार्यवाही करें(शेम-शेम की आवाज) हम किस-किस पर कार्यवाही करें। हममें बदला लेने वाली बात नहीं है।

श्री अजय चन्द्राकर :- जो आपको गलत लगता है आप सब पर कार्यवाही कीजिए।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अजय जी, हम उस मान्यता के नहीं हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- तो फिर उसको गिनाईए मत।

श्री भूपेश बघेल:- माननीय अध्यक्ष महोदय, जो आपने किया है, हम उसको बताए भी नहीं।

श्री अजय चन्द्राकर :- नहीं। आप उन पर कार्यवाही कीजिए। आप गिनाईए मत।

श्री अमितेष शुक्ल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी अपना बड़प्पन दिखा रहे हैं। उसके बदले यह बात कर रहे हैं। वह किसी को भी जेल में भेज सकते थे, उन्होंने जेल नहीं भेजा।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अजय जी, दरअसल में यह है कि हम कार्यवाही करने जाते हैं तो यह हमारे कोर्ट में जाकर पी.आई.एल. लगाने के एक्सपर्ट हैं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- बाजू में हाई कोर्ट है।

श्री धरमलाल कौशिक :- क्या है जहां गलत है और लगेगा तो हाईकोर्ट इसलिए है कि किसी की मनमानी नहीं चलेगी। कोई मनमानी करेंगे तो कोर्ट जाना है और हमने पी.आई.एल. लगाया है और आगे भी लगाएंगे।

श्री भूपेश बघेल:- गरीबों का चावल खाकर, उसमें यदि कार्यवाही हो रही है, जिसकी आप मांग कर रहे थे वही काम के लिए कोई कोर्ट चला जाए।

श्री धरमलाल कौशिक :- आप उसमें चर्चा कराईए। हमने उस दिन भी कहा था कि आप इस पर चर्चा कराईए।

श्री भूपेश बघेल:- माननीय अध्यक्ष महोदय, गरीबों का चावल खाने वाले स्टे ले लिए।

श्री धरमलाल कौशिक :- अभी तो आपके यहां से साढ़े 6 हजार करोड़ रूपए का आया है और पहले का भी लगता है तो आप दोनों में चर्चा कराईए और दोनों में कार्यवाही करिए। आप कार्यवाही करिए।

श्री भूपेश बघेल:- माननीय अध्यक्ष महोदय, जब कोर्ट से स्टे लेकर आ रहे हैं तो क्यों पी.आई.एल. लगाएं? मैंने पहला आदमी देखा है।

श्री धरमलाल कौशिक :- कलम, कुर्सी की ताकत है, आप कार्यवाही करिए। आपको किसने रोका है?

श्री भूपेश बघेल:- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम न्यायालय का सम्मान करते हैं। आपके कानून मंत्री की तरह नहीं करते कि नेता प्रतिपक्ष की भूमिका निभाओ।

श्री धरमलाल कौशिक :- आप करिए।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय मुख्यमंत्री जी, आप न्यायालय की सम्मान करने की बात कर रहे हैं आज जो डिसीजन आया, उसमें आपका क्या स्टेटमेंट है? क्या आपके स्टेटमेंट में न्यायालय का सम्मान है क्या?

श्री अजय चन्द्राकर :-नहीं। माननीय मुख्यमंत्री जी, आपने न्यायालय की बात की।

श्री कवासी लखमा :- केन्द्रीय मंत्री सुप्रीम कोर्ट के खिलाफ क्या बोलते हैं?

श्री शिवरतन शर्मा :- आज जो न्यायालय का डिसीजन आया, उसमें आपका क्या स्टेटमेंट है? (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- आप न्यायालय का कितना सम्मान करते हैं, आपके रिजजू का क्या नाम है? रिजजू ने बहुत अच्छा दिया है।

श्री भूपेश बघेल:- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम न्यायालय के फैसले से संतुष्ट भी हो सकते हैं और असंतुष्ट भी हो सकते हैं और यदि उससे संतुष्ट नहीं हैं तो उसके लिए न्यायालय में व्यवस्था है कि यदि आप लोवर में हैं तो सेशन में जाएं और सेशन में है तो हाईकोर्ट में जाएं और आप हाईकोर्ट के फैसले से संतुष्ट नहीं हैं तो आपके पास सुप्रीम कोर्ट तक की व्यवस्था है। इसी कारण से हम जरूर न्यायालय में अपर में जाएंगे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप अभी उच्च न्यायालय की बात कर रहे थे। मैं एक पी.आई.एल. लगाया हूँ । सरकार एक साल से सेस में जवाब नहीं दे पा रही है।

श्री भूपेश बघेल:- माननीय अध्यक्ष महोदय, देखिए। न्यायालय के बारे में ज्यादा चर्चा करना उचित नहीं है। मैं न्यायालय के सम्मान के खिलाफ एक शब्द नहीं बोलना चाहता। नहीं तो जो परिस्थिति है उसके बारे में कभी बंद कमरे में बात कर लीजिएगा। मैं आपको सब बता दूंगा।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके समय में क्या होता था? नान घोटाला, धान घोटाला, खदान घोटाला, चिटफण्ड कंपनी, हजारों करोड़ रूपए, मैं रिपिट न करूं। आपको याद भी न दिलाए। मैं तो यही कह रहा हूँ कि जब तक यह गरीबों का पैसा नहीं होगा, तब तक बोलते रहेंगे। चिट फण्ड कंपनी में कौन स्टे लेकर गया, वह स्टे लेकर बैठे हैं, सबको पता है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

माननीय अध्यक्ष महोदय,चूंकि अब सुनने की क्षमता, धैर्य समाप्त हो गया है। इसलिए मैं उस विषय पर आ जाता हूँ । जो उस दिन मैंने कहा था कि विनियोग में कुछ हमारे विधायक साथी हैं, कुछ मंत्रीगण हैं, कुछ लोग चाहते हैं, कुछ जरूरी है, इसमें से कुछ मांग की घोषणा मैं अभी करता हूं। कुछ साथियों ने बहुत सारी मांग दी हैं।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- माननीय मैं भी जैजेपुर में एक अनुविभाग की मांग किया था।

श्री भूपेश बघेल :- अनुविभाग की विधान सभा में थोड़ी घोषणा करते हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं सबसे पहले अध्यक्ष जी के क्षेत्र से ही शुरू करता हूं। वैसे अध्यक्ष महोदय आपको 03 जिला मिला है, 03 मेडिकल कॉलेज मिला है। (मेजों की थपथपाहट) नया बाराद्वार जिला सक्ती में नवीन स्वामी आत्मानंद विद्यालय की स्थापना। जिला सक्ती में नवीन महाविद्यालय की स्थापना तृतीय अनुपूरक में शामिल है। सारागांव जिला जांजगीर-चांपा के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में उन्नयन करने की घोषणा करता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- आपको धन्यवाद।

श्री भूपेश बघेल :- महाराज साहब ने करजी जिला सरगुजा उप-स्वास्थ्य केन्द्र को प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में उन्नयन किये जाने का प्रस्ताव दिया है, मैं उसकी घोषणा करता हूं।

स्वास्थ्य मंत्री (श्री टी.एस.सिंहदेव) :- धन्यवाद।

श्री भूपेश बघेल :- तराजू विकासखंड में लखनपुर में चूंकि वहां हाईस्कूल हो गया था, मिडिल स्कूल नहीं था इसलिए वहां मिडिल स्कूल की घोषणा करता हूं।

श्री टी.एस.सिंहदेव :- बड़का-बड़का धन्यवाद।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, चौबे जी ने भी बेमेतरा के ग्राम पंचायत मोहगांव में स्वामी आत्मानंद विद्यालय की स्थापना के लिए पत्र लिखा है, मैं उसकी घोषणा करता हूं। पूर्व माध्यमिक शाला पेंड्रिक हाईस्कूल में उन्नयन, विकासखंड धमधा, हाईस्कूल भूस्ताला हायर सेकेण्डरी में उन्नयन विकासखंड साजा। हमारे गृहमंत्री ताम्रध्वज साहू जी ने अंडा में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र की मांग की। मैं उसकी घोषणा करता हूं। पूर्व माध्यमिक शाला कोलियापुर, गनियारी, मोहलई विकासखंड जिला दुर्ग में हाईस्कूल के उननयन की घोषणा करता हूं। और भी मांग है, वह पूरी होगी चिंता मत करिये। डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम- कोगवार विकासखंड वाड्रफनगर जिला बलरामपुर में नवीन प्री-मेट्रिक कन्या विशेष पिछड़ी जनजाति पंडो के लिए 50 सीटर छात्रावास की घोषणा करता हूं। नगर पंचायत जिला छुरीकला जिला कोरबा में स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम स्कूल की स्थापना, शासकीय प्राथमिक शाला पहाड़करवा विकासखंड प्रतापपुर जिला सूरजपूर में शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला का उन्नयन की घोषणा करता हूं। आदरणीय सत्यनारायण शर्मा जी-ग्राम पंचायत टेमरी और बनरसी को सम्मिलित कर नगरपालिका का दर्जा दिये जाने की घोषणा करता हूं। सत्तू भैया कहां गये। पुरूषोत्तम कंवर जी-

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय हरदीबाजार विकासखंड पाली जिला कोरबा 9वीं से 12वीं तक नियमित अनुदान प्रदान करने की घोषणा करता हूं। कुंवर सिंह निषाद जी - बालोद के तिलखैरी देवरी मार्ग तांदुला नदी में उच्चस्तरीय पुल में पहुंच मार्ग निर्माण कार्य की घोषणा करता हूं।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- माननीय मुख्यमंत्री जी बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री भूपेश बघेल :- आशीष कुमार छाबड़ा जी- बेरला में 30 बिस्तर सामुदायिक केन्द्र का उन्नयन कर 50 बिस्तर अस्पताल बनाये जाने की घोषणा करता हूं। रामपुकार सिंह जी- 250 सीटर अनुसूचित जनजाति पोस्ट मेट्रिक कन्या छात्रावास पत्थलगांव जिला जशपुर की घोषणा करता हूं। गुलाब कमरो जी- नागपुर जिला कोरिया उपस्वास्थ्य केन्द्र से प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र का उन्नयन। पुन्नूलाल मोहले जी- मुंगेली से महलगांव में स्वास्थ्य केन्द्र की स्थापना। अजय चन्द्राकर जी- गुरू घासीदास महाविद्यालय कुरूद में पी.जी. स्तर के कम्पयूटर सांइस इनफारमेशन, टेक्नॉलाजी, माइक्रोबायलाजी के नये संकाय प्रारंभ किये जाने की घोषणा करता हूं। अजय चन्द्राकर जी और बृजमोहन अग्रवाल जी ने मेकाहारा जिला रायपुर में मुख्य बजट में 200 पद शामिल करने की मांग की थी, उसकी घोषणा करता हूं। धर्मजीत सिंह जी- पंडरिया रोड से गुरूद्वारा तक ग्राम बैजलपुर में मेघापार्क ग्राम सड़क निर्माण की घोषणा करता हूं। इसके साथ जी सावित्री मनोज मंडावी जी ने जो पुल की बात कही थी, उसकी भी घोषणा करता हूं। परपोड़ी में स्वामी आत्मानंद स्कूल योजना शामिल करने की घोषणा करता हूं। आदरणीय साथियों कुछ और भी मांगे हैं।

श्री अजय चन्दाकर :- मेरी यहां की एल.एल.बी. वाली मांग छूट गई है उसकी घोषणा कर दीजिए। अभी घोषणा कर दीजिए न, मैने ही उसकी शुरूआत की थी। कागज मे जतका लिखाये हे, वह घोषणा मान ली जाये।

श्री भूपेश बघेल :- उसमें तो जो आप लोग सवाल किये थे, उसका जवाब है। माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे राज्य की अर्थव्यवस्था की रीढ़ किसान भाई । संपूर्ण विश्व खाद्यान्न संकट की ओर अग्रसर हो रहा है। उसका मुख्य कारण कृषि का अलाभप्रद होना है। वर्ष 2004 से लेकर 2018 तक किसानों की स्थिति क्या थी। कितने बार वादे किये गये, कितने बार छला गया, कितने बार धोखा दिया गया, वह सब जानते हैं। चुनाव के समय बोनस की घोषणा होती थी। चुनाव के बाद उससे बिछड़ जाते थे। इस धोखे में किसान जीवित रहे, लेकिन जब हमारी सरकार बनी तो हमने कहा कि हम ऋण माफी करेंगे। 2500 रूपये में धान खरीदेंगे। भारतीय जनता पार्टी के साथ हमसे कहते थे कि हम लोग 2100 न्यूनतम समर्थन मूल्य नहीं दे पाये हैं तो आप लोग 2500 कहां से दे पायेंगे? लेकिन हमने इसको कोरोनाकल में भी कर दिखाया। ऋण माफी भी किया और 2500 रूपये क्विंटल में खरीदी किया और अड़ंगा लगाया तो हमने राजीव गांधी किसान न्याय योजना लागू की और आज किसानों को जितना घोषणा किया था, उससे ज्यादा हम लोग दे पा रहे हैं। जब मैं भेंट मुलाकात कार्यक्रम में गया था तो सारे

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

किसान भाई कह रहे थे कि पिछले समय आपने एक-एक दाना खरीदने की बात की बात कही थी। वह 10 क्विंटल कर दिये। किसानों ने आंदोलन किया, कांग्रेस पार्टी ने आंदोलन किया तो 10 से 15 क्विंटल हुआ। अध्यक्ष महोदय, सारे किसान भाई चाहे मैं किसी भी जिला गया। मैं रायगढ़ गया, बिलासपुर गया, जांजगीर गया, चाहे बालोद गया। सब जगह एक ही डिमांड आई कि इसको 20 क्विंटल कर दें। मैं आज पवित्र सदन में घोषणा करता हूं कि हमारी सरकार प्रति एकड़ 20 क्विंटल धान खरीद रही है। (सत्तापक्ष के सदस्यों के द्वारा नारे लगाये गये) (मेजों की थथपाहट) माननीय अध्यक्ष महोदय, अनुदान मांग में सभी माननीय सदस्यों ने भाग लिया, बहुत अच्छे सुझाव भी दिये, आलोचना भी हुई, सुझाव भी आये। मैं सभी साथियों को ह्रदय से धन्यवाद देते हुए जो अनुदान मांग है, उसको सर्वसम्मति से पारित करें, इसी अपेक्षा के साथ अध्यक्ष महोदय, आपने समय दिया, उसके लिए आपको भी ह्रदय से धन्यवाद देते हुए अपनी वाणी विराम देता हूं। धन्यवाद। जय हिन्द। (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि - छत्तीसगढ़ विनियोग (क्रमांक-2) विधेयक, 2023 (क्रमांक 6 सन् 2023) पर विचार किया जाये।

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

अध्यक्ष महोदय :- अब विधेयक के खण्डों पर विचार होगा।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि खण्ड 2, 3 व अनुसूची इस विधेयक का अंग बने।

खण्ड 2, 3 व अनुसूची इस विधेयक के अंग बने।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि खण्ड 1 इस विधेयक का अंग बने।

खण्ड 1 इस विधेयक का अंग बना।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि पूर्ण नाम तथा अधिनियमन सूत्र इस विधेयक का अंग बने।

पूर्ण नाम तथा अधिनियमन सूत्र इस विधेयक का अंग बने।

श्री भूपेश बघेल :- अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि छत्तीसगढ़ विनियोग (क्रमांक-2) विधेयक, 2023 (क्रमांक 6 सन् 2023) पारित किया जाये।

अध्यक्ष महोदय :- प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि कि छत्तीसगढ़ विनियोग (क्रमांक-2) विधेयक, 2023 (क्रमांक 6 सन् 2023) पारित किया जाये।

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

विधेयक पारित हुआ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बहुत-बहुत धन्यवाद और पूरे सदस्यों को भी ह्रदय से धन्यवाद।

उच्च शिक्षा मंत्री (श्री उमेश पटेल) :- अध्यक्ष जी, 20 क्विंटल की घोषणा हुई है, उसके लिए आपको बधाई।

अध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद।

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे मुख्यमंत्री जी ने 20 क्विंटल का घोषणा किया तो यह लोग इधर-उधर चेहरा देखने में व्यस्त हो गये। उनको फिक्र पकड़ गया।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये छोड़िये।

श्री उमेश पटेल :- कुछ समझ में नहीं आ रहा है कि आपने क्या बोला है।

आबकारी मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मुख्यमंत्री जी और आपको भी बधाई देता हूं कि बस्तर और पूरे छत्तीसगढ़ की जनता बहुत खुश हुई होगी । उस दिन 6 तारीख को आंगनबाड़ी में होली मनाये, अब किसान होली मनायेंगे, पूरे देश में ज्यादा धान खरीदी होगी । यह देश किसान प्रधान देश है । यह किसान का बेटा है इसीलिये 20 क्विंटल करवाया । हम लोग इतना लड़े, 10 क्विंटल, 15 क्विंटल करने के लिये मार भी खाये । पुलिस खूब मारी उसके बाद ले-देकर 15 क्विंटल ।

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, किसानों की बहुत प्रतीक्षित मांग थी । किसान लोग बहुत पहले से मांग कर रहे थे और माननीय मुख्यमंत्री जी ने 20 क्विंटल की घोषणा की है उनको बहुत-बहुत बधाई देते हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- उनको बधाई । आप सबको बधाई ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- विपक्ष की देख लीजिये क्या हालत है ? सांप सूंघ गया है । कुछ बोलने की स्थिति में नहीं हैं । (हंसी)

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, मेरे पास भी बहुत सारे सदस्य आ रहे हैं और उन्होंने निवेदन किया है कि यह जो सत्र हमने जो तारीख दी है आज, कल, परसों को वह सब नवरात्रि का महीना है इसलिये मैं आप लोगों से चाहता हूं कि इस पर आप लोगों की सहमति बन रही है तो आज खत्म कर दें ? (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, नवरात्रि चल रही है । हमारी बहुत सारी महिलायें भी उपवास रख रही हैं ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, देखिये, मैं नवरात्रि ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसलिये आज ही खत्म कर दिया जाये । कोई दिक्कत नहीं है ।

श्री अजय चंद्राकर :- मुझे बोलने के लिये कहा गया है । मुझे अनुमति दी गयी है, प्लीज ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- मुझे भी तो अनुमति दी है न । माननीय अध्यक्ष महोदय, नवरात्रि का पर्व चालू हो गया है । हमारी बहुत सारी महिलाएं उपवास हैं । आज शकुंतला साहू जी तो आयी नहीं हैं, वो दर्शन करने गयी हैं । बहुत सारे लोग जाना चाहते हैं । हम लोग आपसे यही निवेदन कर रहे हैं कि कोई बिजनेस भी नहीं है तो आज खत्म कर दिया जाये । अधिकांश सदस्यों की मांग भी है ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप मुझे सुनेंगे ।

अध्यक्ष महोदय :- सुनूंगा, क्यों नहीं सुनूंगा ? मेरा काम सुनना ही है ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 2-3 बातें हैं और संसदीय परंपरा के लिये बहुत गंभीर है । जिस दिन नोटिफिकेशन हुआ उस दिन भी मालूम था कि नवरात्रि लग जायेगी, एक बात । कक्ष की बातों का हम उल्लेख नहीं करते, हमने सत्तारूढ़ दल को सहयोग करने के लिये एक दिन के ध्यानाकर्षण को हटाया और एक दिन कहा कि 4 ध्यानाकर्षण लीजिये, आपकी मध्यस्थता में बात हुई थी कि हम 24 तारीख तक चलायेंगे । आपके कक्ष और आपकी बात और माननीय संसदीय कार्यमंत्री और माननीय संसदीय कार्यमंत्री के संसदीय कार्य विभाग से मैंने इसीलिये शुरू की कि उनके सामने बात हुई थी कि विनियोग किस दिन प्रकाशित होगा और उन्होंने आपसे अनुमति लेकर किस दिन प्रकाशित हुई तो आपके कक्ष की वार्ता, हम दोनों के समन्वय के बीच की विश्वसनीयता इस निर्णय से समाप्त होगी और मेरा आग्रह है कि वह परम्परा आपके कार्यकाल की भी टूटे कि जो पहले सत्रावसान होता है । एक दिन की बात है, जो सत्तारूढ़ दल के भाईयों को यह मालूम था कि नोटिफिकेशन के दिन भी नवरात्रि आ रही है करके और या नहीं तो अगली बार से आप एक स्ट्रक्चर पास कर दीजिये कि पक्ष और विपक्ष के बीच में किसी विषय को लेकर चर्चा नहीं होगी । जो संसदीय कार्यमंत्री या सत्तारूढ़ दल चाहेगा वैसा सदन चलेगा फिर हम लोगों को चर्चा के लिये किसी विषय में मत बोलें।(व्यवधान)

खाद्य मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- आप हिंदु धर्म की केवल दुहाई देते हैं, अभी नवरात्रि चल रहा है । सब लोगों को पूजा-पाठ करनी है । (व्यवधान)

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, नवरात्रि का पर्व शुरू हो गया है और सदन का जो मुख्य काम था । (व्यवधान) विनियोग से लेकर बजट तक की चर्चा लगभग पूरी हो चुकी है तो इसलिये मेरे ख्याल से चूंकि बजट के बाद विनियोग भी पारित हो चुका है ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे अनुमति दी है । आप देखिये न ।

अध्यक्ष महोदय :- मैं आपकी सुन रहा हूं न ।

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सदन में अब कोई विशेष काम नहीं रह गया है इसलिये त्यौहार में चूंकि हम लोग साढ़े चार सौ किलोमीटर दूर-दूर से आते हैं । जब काम पूरा हो गया है तो आपसे अनुरोध है कि आज समाप्त किया जाये ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, चूंकि मैंने कक्ष की बात का उल्लेख किया और संसदीय कार्यमंत्री जी से चर्चा का उल्लेख किया तो मेरे व्यक्तिगत तौर पर नहीं बल्कि हम सबकी तरफ से यह आग्रह है कि यह निर्णय संसदीय प्रणाली के लिये अच्छा नहीं होगा ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम लोगों को कल की 24 तारीख की प्रश्नोत्तरी हम लोगों को मिल चुकी है । आपने 139 की चर्चा स्वीकृत की है । ध्यानाकर्षण पेंडिंग हैं और बहुत सारे मामलों में आपने कहा कि किसी न किसी रूप में मैं चर्चा करवाउंगा । किसानों के स्थगन में, कानून व्यवस्था की स्थिति में, माननीय खाद्य मंत्री जी ने कहा कि मैं 24 तारीख तक जांच करवाकर रिपोर्ट प्रस्तुत कर दूंगा और आज ऐसी परिस्थिति में यदि अचानक सत्र को समाप्त किया जाता है। यदि यह पहले से मानसिकता हो, आप पहले से तय कर लेते विपक्ष के साथ में बातचीत करके तो समझ में आता परंतु अचानक अगर इस प्रकार से समाप्ति हो और आखिरी दिन माननीय राज्यपाल के अभिभाषण के मामले में भी हमने बात उठायी थी उस पर भी रिपोर्ट आने वाली थी क्योंकि सचिवालय को इन सब मामलों में बहुत सारे काम करने पड़ते हैं । अचानक सत्र की समाप्ति होने से विपक्ष के लिए भी यह दुविधाजनक स्थिति होती है ।

श्री अमरजीत भगत :- हिंदू धर्म का इतना बड़ा त्यौहार चल रहा है, ये क्या खाली ढोंग करते हैं ? बताइए साहब, हम लोग उपवास में हैं और दाढ़ी वगैरह सब बढ़ गई है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मुझे याद नहीं आता है कि पिछले 4 साल में एक भी सत्र पूरा हुआ हो । पिछले 4 सत्र में एक भी सत्र में अपना पूरा काम किया हो ऐसा मुझे याद नहीं आता । इसलिए हम लोगों ने तय किया कि यह बजट सत्र छोटा होने के बाद भी हम लोग पूरी तरह सहयोग करेंगे, गिलोटिन नहीं होगा । हम इसमें भाग लेंगे और हमने सहयोग करके सरकारी काम को ।

श्री अमितेश शुक्ल :- अध्यक्ष जी, मैं बृजमोहन जी से एक ही प्रश्न करना चाहता हूं । ये नवरात्रि त्यौहार के मामले में सहमत हैं या नहीं ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- विनियोग पास होना जरूरी है और वह समय पर होगा तो पब्लिक के लिए करने का मौका मिलेगा । इसलिए हमने सब चीजों में सहयोग किया है । एक दिन के लिए, मुझे नहीं लगता है कि एक दिन में कोई पहाड़ टूट जाएगा या कोई काम रूक जाएगा या कोई काम हो जाएगा । परंतु अगर संसदीय परम्पराओं को देखें तो जो हमारा पेंडिंग काम है और सदन में कोई व्यवधान भी नहीं है । सदन शांति से चल रहा है । प्रश्नोत्तरी बंट चुकी है, 139 की चर्चा आपने स्वीकार की है । बहुत सारी रिपोर्ट्स आनी हैं । अगर आप इसको समाप्त कर देंगे तो संसदीय परम्पराओं की

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

दृष्टि से यह उचित नहीं होगा । जैसा कि अजय चन्द्राकर जी ने भी कहा कि चर्चा में यह बात तय हुई थी कि हम 24 तारीख तक चलाएंगे । विपक्ष को बिना विश्वास में लिए अगर ऐसा किया जाता है तो मुझे लगता है कि आपसी सामंजस्य टूटेगा । इस बात को ध्यान में रखते हुए एक दिन और चला लें तो औचित्यपूर्ण होगा क्योंकि हम सब लोगों ने अपने 24 तारीख तक के कार्यक्रम स्थगित करके रखे हैं। अचानक स्थगित होने से उसका कोई फायदा नहीं होगा ।

श्री अमितेश शुक्ल :- नवरात्रि पर्व को ध्यान में रखते हुए स्थगित कर दी जाए ।

अध्यक्ष महोदय :- देखिए, बहुत अच्छे समन्वय के साथ यह सत्र चला है इसके लिए मैं आप दोनों पक्षों को धन्यवाद् देता हूं । पूर्व में भी इस तरह के उदाहरण है कि किसी विशेष परिस्थिति में इसे समाप्त किया जाता है इसलिए मैंने आप सबके समक्ष प्रस्ताव रखा है । माननीय मुख्यमंत्री जी सदन के नेता हैं मैं उनसे कहूंगा कि इस पर अपने विचार व्यक्त करें ।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, गवर्नमेंट के सारे बिजनेस कम्पलीट हो चुके हैं । आने वाले समय में पर्व भी है, इस पर्व में हम सबको सम्मिलित भी होना है । अध्यक्ष महोदय, आसंदी से आपने जिस प्रकार की बात कही है मैं समझता हूं कि इसे ज़िद में न लें और स्वस्थ परम्परा के तहत् एक खेल भावना के तहत् आपको लेना चाहिए और इसमें अड़ना नहीं चाहिए । सभी कार्यवाहियां पूरी हो चुकी हैं । आपने सवाल किये, सवाल का जवाब दिये । स्थगन का भी, ध्यानाकर्षण का भी, अनुदान मांगों में सब अवसर मिला । अभी साढ़े नौ बज रहा है आप साथ दे रहे हैं तो थोड़ा समय और उसमें साथ दे दें और आज स्थगित कर दिया जाए ।

श्री अजय चंद्राकर :- अध्यक्ष महोदय, आपसे आग्रह है कि विशेष परिस्थिति क्या है जिसका आपने उल्लेख किया, उस पर प्रकाश डाल दीजिए ?

अध्यक्ष महोदय :- मैंने कहा ना कि नवरात्रि की विशेष परिस्थिति में आप लोगों से निवेदन किया ।

श्री अजय चन्द्राकर :- सुनिये आप । नवरात्रि नोटिफिकेशन के दिन भी थी । जिस सत्र का नोटिफिकेशन हुआ उस दिन सारे सदस्यों को मालूम था और माननीय मुख्यमंत्री जी को भी मालूम था ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अध्यक्ष जी, मुख्यमंत्री जी के बोलने के बाद क्या बच गया है ? फिर भी आरग्यूमेंट कर रहे है ।

श्री कवासी लखमा :- लोक सभा भी नवरात्रि के कारण स्थगित हुई है । उसका भी तो नोटिफिकेशन हुआ था । हम बस्तर जाते हैं, बस्तर के लोग देख रहे हैं कि दंतेवाड़ा में कब पहुंचेंगे ? ये हिंदू की बात करने वाले, धर्म की बात करने वाले।

श्री अजय चन्द्राकर :- नोटिफिकेशन के बाद भी कोई असामान्य स्थिति नहीं है । आप सदन का मत ले रहे हैं तो आपसे विनम्र आग्रह है, भले ही इस सदन का आखिरी सत्र बाकी हो लेकिन सत्तारूढ़

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

दल की मर्जी से चले, आप विपक्ष को किसी चर्चा के लिए आमंत्रित मत कीजिएगा । कभी मत कीजिएगा, यह तो हम आपको कहेंगे ।

श्री बृहस्पत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, नवरात्रि का पर्व है । आपके सारे बिजनेस पूरे हो गए हैं । यह सब सौहर्दपूर्ण वातावरण में हुआ है, इसलिए इसको समाप्त किया जाए ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आपने मेरी 139 की चर्चा को स्वीकार किया है, मुझे उसकी सूचना मिली है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आपके कक्ष की चर्चा की विश्वसनीयता बाकी नहीं रहेगी।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आपने प्रश्नोत्तरी दे दी है, आपने कुछ विषयों में कहा है कि किसी न किसी रूप में चर्चा कराऊंगा ।

श्री अजय चन्द्राकर :- अरे कक्ष की चर्चा की विश्वसनीयता ही बाकी नहीं है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अगर ऐसी परिस्थिति होती है तो हम लोग भी नवरात्रि मनाते हैं, हम लोग भी देवी की पूजा करते हैं ।परंतु आपने सत्र बुलाया तो हम भी उसको छोड़कर सदन में भाग ले रहे हैं । हम चाहते तो हम भी विनियोग का, बजट का बहिष्कार करके नवरात्रि मनाने चले जाते । जब हम पूरा सहयोग कर रहे हैं तो एक दिन के लिए चलाने में मुझे लगता है कि कोई विशेष परिस्थिति नहीं है ।

श्री अजय चंद्राकर :- आपके कक्ष की विश्वसनीयता समाप्त हो रही है।

श्री कवासी लखमा :- सब लोग अनुरोध करते हैं। हम लोग बस्तर वाले कैसे करेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- प्लीज।

नेता प्रतिपक्ष (श्री नारायण चंदेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक तो यह छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद सबसे छोटा बजट सत्र था। इसमें मात्र 14 सीटिंग का प्रावधान था। आपने कल की प्रश्नोत्तरी भी बांट दी। बहुत से लोगों की 139 की चर्चा और कुछ लोगों के ध्यानाकर्षण थे, हमारे स्थगन है, कल अंतिम ढाई घंटे आशासकीय दिवस भी है। हमारे सदस्यों के अशासकीय संकल्प भी लगे हैं। बिजनेस तो पूरा है। खाली सरकारी काम ही बिजनेस थोड़ी है, जनहित के मुद्दे भी तो हैं। जनता से जुड़े सवाल भी तो हैं। इसलिए एक दिन में कुछ नहीं होता। हमारा आपसे आग्रह है कि कल की प्रश्नोत्तरी बंट गयी है, सारी चीजें हैं, कल सदन रहे और सदन चले तो ठीक होगा।

श्री अरूण वोरा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सारे विषय आ गए, पूरे शासकीय कार्य हो गए, इन दिनों जनहित के मुद्दे भी उठे। अब हिंदू पर्व है, नवरात्रि है, चेट्रीचण्ड्र है और भी सामाजिक त्यौहार हैं।

अध्यक्ष महोदय :- आपकी तरफ से तो मुख्यमंत्री जी ने बोल दिया। वे सदन के मुखिया हैं।

श्री अरूण वोरा :- मैं मुख्यमंत्री जी की बात का समर्थन कर रहा हूं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री शिवरत शर्मा :- माननीय अध्यक्ष जी, हम लोगों के स्थगन पर आसंदी से व्यवस्था आई थी, ओलावृष्टि, अंधड़, बारिश से जो रबी और सब्जी की फसल समाप्त हुई। उस विषय पर हम किसी ना किसी तरह से चर्चा लेंगे, यह आसंदी की व्यवस्था थी। आज अगर आप सत्र समाप्त कर देंगे तो आसंदी की व्यवस्था जो चर्चा होने की थी, उसका क्या होगा ? 24 तारीख को आपकी रिपोर्ट आने वाली थी, आसंदी से व्यवस्था दी गयी थी कि राज्यपाल के अभिभाषण पर जो अलग-अलग अंतर आया है, उसमें आखिरी दिन तक रिपोर्ट आएगी, उसका क्या होगा या उन रिपोर्ट को आज दिलवा दीजिए। किसान हितैषी सरकार बनने की बात होती है और किसानों की चर्चा नहीं होगी तो कब होगी।

अध्यक्ष महोदय :- मुझे सदन को सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि 2022 के लिए **"उत्कृष्ट विधायक"** हेतु सत्ता पक्ष से **माननीया श्रीमती संगीता सिन्हा** एवं प्रतिपक्ष के **माननीया श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू** को चयन किया गया है। (मेजों की थपथपाहट)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- अध्यक्ष महोदय जी, धन्यवाद।

डॉ. रश्मि आशिष सिंह :- दोनों महिला विधायकों को सभी महिला विधायकों की तरफ से और पूरे सदन की ओर से मैं बहुत-बहुत बधाई देती हूं।

महिला एवं बाल विकास मंत्री (श्रीमती अनिला भेंडिया) :- मैं अध्यक्ष महोदय को धन्यवाद देना चाहूंगी कि इस समय आपने हमारी महिला बहनों को चयनित किया।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- अध्यक्ष महोदय जी, आप सभी को बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय :- पंचम विधान सभा के कार्यकाल हेतु **जागरूक विधायक** के रूप में **माननीय श्री धर्मजीत सिंह जी** का चयन किया गया है। (मेजों की थपथपाहट)

"उत्कृष्ट संसदीय पत्रकार" हेतु दैनिक समाचार पत्र **"पत्रिका"** के संवाददाता **श्री राहुल जैन** का तथा **"उत्कृष्ट इलेक्ट्रानिक मीडिया रिपोर्टर"** हेतु **"न्यूज 18"** के संवाददाता **श्री देवव्रत भगत** एवं कैमरामैन **श्री रोहित श्रीवास्तव** का चयन किया गया है।

मेरी ओर से एवं सदन की ओर से चयनित माननीय सदस्यों एवं पत्रकारों को बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं। (मेजों की थपथपाहट)

दिनांक 14 मार्च, 2023 को सभा की कार्यवाही के दौरान माननीय सदस्य श्री अजय चंद्राकर द्वारा दिनांक 06 मार्च, 2023 को तारांकित प्रश्न संख्या-03 (क्रमांक 258) पर चर्चा के दौरान "केन्द्र सरकार द्वारा केन्द्रांश एवं राज्य सरकार द्वारा राज्यांश की राशि" के संबंध में माननीय डॉ. शिवकुमार डहरिया, नगरीय प्रशासन मंत्री द्वारा सभा में दिये गये विरोधाभासी उत्तर को लेकर उनके द्वारा दी गयी अवमानना नोटिस के संबंध में आसंदी से व्यवस्था दिये जाने की मांग की गयी थी।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

इस संबंध में "मैं माननीय नगरीय प्रशासन मंत्री को निर्देशित करता हूं कि विभागीय स्तर पर प्रकरण का परीक्षण कर यथाशीघ्र वस्तुस्थिति से विधान सभा सचिवालय को अवगत कराना सुनिश्चित करें।"

अध्यक्ष महोदय :- दिनांक 04 जनवरी, 2023 की कार्यवाही के दौरान घटित घटना के संबंध में माननीय श्री नारायण चंदेल एवं प्रतिपक्ष के अन्य माननीय सदस्यों के द्वारा मुझे माननीय रविन्द्र चौबे, संसदीय कार्य मंत्री के विरूद्ध एक निंदा प्रस्ताव दिया गया था। मैंने तत्संबंधी कार्यवाही का अवलोकन किया। दिनांक 4 जनवरी को सदन में व्यवधान के समय पक्ष एवं प्रतिपक्ष के सदस्यों के द्वारा तत्समय नारेबाजी एवं गंभीर आरोप-प्रत्यारोप के अवसर पर, परिस्थितिजन्य आक्रोश की स्वाभाविक परिणिति के स्वरूप दोनों पक्षों के द्वारा परस्पर एक-दूसरे के खिलाफ...।

श्री अजय चंद्राकर :- उस समय हम बाहर थे।

अध्यक्ष महोदय :- अपनी-अपनी भावनाएं व्यक्त की जा रही थीं। उसी घटना के परिप्रेक्ष्य में संसदीय कार्य मंत्री द्वारा यह कथन प्रतिपक्ष के संबंध में कहा गया था कि "बर्खास्त किया जाए"। आसंदी के द्वारा तत्समय इस पर कोई संज्ञान नहीं लिया गया क्योंकि माननीय सदस्य अपने दलीय राजनीतिक दायित्व और कर्तव्य की परिधि से संचालित होते हैं और सदन में अपना संसदीय दायित्व निर्वहन करते हैं। मेरी यह मान्यता और दृढ़ विश्वास है कि सदन में कभी भी किसी भी पक्ष के सदस्य के द्वारा एक-दूसरे के प्रति अभिव्यक्त विचार व्यक्तिगत द्वेष के आधार पर व्यक्त नहीं होता।

उपयुक्त परिस्थितियों पर विचार करते हुए मैंने प्रतिपक्ष के सदस्यों द्वारा माननीय संसदीय कार्य मंत्री, श्री रविन्द्र चौबे के विरूद्ध प्रस्तुत निंदा प्रस्ताव को अमान्य कर दिया है। आशा है कि आप सभी इससे सहमत होंगे।

<u>सदन को सूचना</u>

अध्यक्ष महोदय :- मार्च, 2023 सत्र में जो कार्य शेष रह गये थे, उनको संपादित करने हेतु सदन की अनुमति की प्रत्याशा में सम्मिलित किया जाकर आज गुरूवार, दिनांक 23 मार्च, 2023 की अनुपूरक कार्यसूची जारी की जा रही है। मैं समझता हूं कि सदन इससे सहमत है।

(सदन द्वारा सहमति प्रदान की गई)

अध्यक्ष महोदय :- पत्रों का पटल पर रखा जाना। माननीय मुख्यमंत्री जी।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

<u>पत्रों का पटल पर रखा जाना</u>

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं जांच आयोग अधिनियम, 1952 (क्रमांक 60 सन् 1952) की धारा 3 की उपधारा (4) की अपेक्षानुसार दिनांक 9 अप्रैल, 2019 को जिला-दंतेवाड़ा अंतर्गत श्यामगिरी मार्ग के मध्य, क्रिकेट ग्राउंड के पास नक्सलियों द्वारा किये गये बारूदी सुंरग विस्फोट में श्री भीमा मण्डावी, विधायक, दंतेवाड़ा तथा अन्य चार सुरक्षा कर्मियों की मृत्यु की घटना की जांच हेतु गठित न्यायिक जांच आयोग का प्रतिवेदन पटल पर रखता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- आज की अनुपूरक कार्यसूची के पद-7 के उप पद (1) से।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप एक मिनट मेरी बात सुन लीजिए। आपकी आसंदी से ही यह घोषणा हुई थी कि माननीय महामहिम राज्यपाल जी के संबंध में हमने जो नोटिस दी थी उसको सदन की कार्यवाही के अंतिम दिन बताएंगे। जब आप नई कार्यसूची पढ़ रहे हैं तो क्या उस विषय में आपके दूसरे आदेश या निर्देश या क्या व्यवस्था है ?

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, मैं देखता हूं।

श्री अजय चंद्राकर :- नहीं, आप देखिये मत। आपने यह व्यवस्था दी थी।

अध्यक्ष महोदय :- उस विषय को आने दीजिए। अभी मुझे बहुत सारे पढ़ने हैं। इसमें कहीं पर होगा। मैं आपकी व्यवस्था दे रहा हूं। आप घबरा क्यों रहे हैं ? आप मत घबराइये।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं घबरा नहीं रहा हूं। मैं सुन रहा हूं।

<u>ध्यानाकर्षण सूचना</u>

अध्यक्ष महोदय :- आज की अनुपूरक कार्यसूची के पद-7 के उप पद (1) से (42) तक की ध्यानाकर्षण सूचनाओं को अध्यक्ष के स्थायी आदेश क्रमांक-22 (6) के तहत शामिल किया गया है। सूचनाओं के संबंध में प्रक्रिया यह होगी कि वे सूचनाएं संबंधित सदस्यों द्वारा पढ़ी हुई मानी जाएंगी तथा उनके संबंध में लिखित वक्तव्य संबंधित मंत्री द्वारा पटल पर रखा माना जाएगा। लिखित वक्तव्य की एक-एक प्रति सूचना देने वाले सदस्यों को दी जाएगी। संबंधित सदस्यों की सूचनाएं तथा उन पर संबंधित मंत्री का वक्तव्य कार्यवाही में मुद्रित किया जाएगा। मैं समझता हूं कि सदन इससे सहमत है।

(सदन द्वारा सहमति प्रदान की गई)

1. श्री पुन्नूलाल मोहले
2. श्री शैलेश पाण्डे
3. श्री बृजमोहन अग्रवाल, श्री धरमलाल कौशिक, श्री शिवरतन शर्मा

4. श्री अजय चंद्राकर
5. श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू
6. श्री धरमलाल कौशिक, श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू
7. श्री रामकुमार यादव
8. श्री शिवरतन शर्मा
9. श्री सौरभ सिंह
10. श्री ननकीराम कंवर, श्री केशव प्रसाद चन्द्रा
11. श्री शैलेश पाण्डे
12. श्री नारायण चंदेल
13. श्री रामकुमार यादव
14. श्री रामपुकार सिंह ठाकुर
15. श्री बृजमोहन अग्रवाल, श्री शिवरतन शर्मा, श्री पुन्नूलाल मोहले
16. श्री प्रकाश शक्राजीत नायक
17. श्री अजय चंद्राकर
18. श्री अजय चंद्राकर
19. श्री केशव प्रसाद चन्द्रा
20. श्री बृजमोहन अग्रवाल
21. श्री सत्यनारायण शर्मा
22. डॉ. विनय जायसवाल
23. श्री धरमलाल कौशिक
24. श्री अजय चंद्राकर, श्री प्रमोद कुमार शर्मा
25. श्री प्रमोद कुमार शर्मा, श्री सौरभ सिंह
26. श्री सत्यनारायण शर्मा
27. श्री चंदन कश्यप
28. श्री प्रकाश शक्राजीत नायक
29. श्री सौरभ सिंह
30. श्री केशव प्रसाद चन्द्रा
31. श्री सौरभ सिंह,
32. श्री धरमलाल कौशिक
33. श्री बृजमोहन अग्रवाल, श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

34. श्री ननकीराम कंवर
35. श्री रामकुमार यादव
36. श्री प्रमोद कुमार शर्मा
37. श्री सत्यनारायण शर्मा
38. श्री कुलदीप जुनेजा
39. श्री प्रमोद कुमार शर्मा
40. श्री बृजमोहन अग्रवाल
41. श्री अजय चंद्राकर
42. श्री बृजमोहन अग्रवाल

अध्यक्ष महोदय :- प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की अवधि में वृद्धि करने का प्रस्ताव। धनेन्द्र साहू जी।

<u>प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की अवधि में वृद्धि का प्रस्ताव</u>

श्री धनेन्द्र साहू (सभापति, जांच समिति) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि "कृषि विभाग में सामग्री प्रदायकर्ता कंपनी/फर्मों को ब्लैक लिस्टेड/डीबार/प्रतिबंधित किये जाने और इससे संबद्ध विषयों पर सदन की जांच समिति" का प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की अवधि में आगामी सत्र के अंतिम दिवस तक की वृद्धि की जाए।

अध्यक्ष महोदय :- प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि "कृषि विभाग में सामग्री प्रदायकर्ता कंपनी/फर्मों को ब्लैक लिस्टेड/डीबार/प्रतिबंधित किये जाने और इससे संबद्ध विषयों पर सदन की जांच समिति" का प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की अवधि में आगामी सत्र के अंतिम दिवस तक की वृद्धि की जाए।

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

अध्यक्ष महोदय :- गुलाब कमरो जी।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की अवधि में वृद्धि का प्रस्ताव

शैक्षणिक संस्थाओं में हाजिरी हेतु बायोमेट्रिक टेबलेट की खरीदी और इससे संबद्ध विषयों की जांच हेतु गठित समिति

श्री गुलाब कमरो (भरतपुर-सोनहट) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि "शैक्षणिक संस्थाओं में हाजिरी हेतु बायोमेट्रिक टेबलेट की खरीदी और इससे संबद्ध विषयों की जांच हेतु गठित समिति" का प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की अवधि में आगामी सत्र के अंतिम दिवस तक की वृद्धि की जाए।

अध्यक्ष महोदय :- प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ ।

प्रश्न यह है कि शैक्षणिक संस्थाओं में हाजिरी हेतु बायोमेट्रिक टेबलेट की खरीदी और इससे संबंधित विषयों की जांच हेतु गठित समिति का प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की अवधि में आगामी सत्र के अंतिम दिवस तक की वृद्धि की जाये ।

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ.

(2) श्री धर्मजीत सिंह, सदस्य छत्तीसगढ़ विधान सभा द्वारा प्रबंध संचालक, छत्तीसगढ़ स्टेट मार्केटिंग कार्पोरेशन लिमिटेड, रायपुर के विरूद्ध एवं माननीय श्री धनेन्द्र साहू, सदस्य छत्तीसगढ़ विधान सभा द्वारा श्री कुंभन दास आड़िया एवं श्री अंबरीश आड़िया के विरूद्ध.

श्री मोहन मरकाम (सभापति) :- अध्यक्ष महोदय, मैं छत्तीसगढ़ विधान सभा प्रक्रिया एवं कार्य संचालन नियमावली के नियम-228 के उप नियम (1) के परंतुक की अपेक्षानुसार -

(1) माननीय श्री धर्मजीत सिंह, सदस्य छत्तीसगढ़ विधान सभा द्वारा प्रबंध संचालक, छत्तीसगढ़ स्टेट मार्केटिंग कार्पोरेशन लिमिटेड, रायपुर के विरूद्ध समिति को संदर्भित विशेषाधिकार हनन की सूचना दिनांक 28.11.2019 एवं

(2) माननीय श्री धनेन्द्र साहू, सदस्य छत्तीसगढ़ विधान सभा द्वारा श्री कुंभन दास आड़िया एवं श्री अंबरीश आड़िया के विरूद्ध समिति को संदर्भित विशेषाधिकार हनन की सूचना दिनांक 10.11.2020 पर जांच, अनुसंधान एवं प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की अवधि में आगामी सत्र के अंतिम दिवस तक की वृद्धि की जाये ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ ।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि :-

(1) माननीय श्री धर्मजीत सिंह, सदस्य छत्तीसगढ़ विधान सभा द्वारा प्रबंध संचालक, छत्तीसगढ़ स्टेट मार्केटिंग कार्पोरेशन लिमिटेड, रायपुर के विरूद्ध समिति को संदर्भित विशेषाधिकार हनन की सूचना दिनांक 28.11.2019 एवं

(2) माननीय श्री धनेन्द्र साहू, सदस्य छत्तीसगढ़ विधान सभा द्वारा श्री कुंभन दास आड़िया एवं श्री अंबरीश आड़िया के विरूद्ध प्रस्तुत विशेषाधिकार हनन की सूचना दिनांक 10.11.2020

को विशेषाधिकार समिति को जांच, अनुसंधान एवं प्रतिवेदन हेतु संदर्भित प्रकरण पर प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की अवधि में आगामी सत्र के अंतिम दिवस तक की वृद्धि की जाये ।

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ.

समय :

9:42 बजे

समितियों का निर्वाचन

अध्यक्ष महोदय :- वित्तीय वर्ष 2023-24 की अवधि के लिए समितियों के निर्वाचन तथा निर्दिष्ट समितियों के सदस्यों के नाम निर्देशन की सूचना पृथक से पत्रक भाग-2 के माध्यम से दी जाएगी ।

मैं समझता हूं कि सभा सहमत है ।

सदन द्वारा सहमति प्रदान की गई.

समय :

9:43 बजे

नियम 239 के अंतर्गत विचाराधीन सूचनाएं

अध्यक्ष महोदय :-

(1) माननीय सदस्य सर्वश्री अजय चन्द्राकर एवं श्री बृजमोहनअग्रवाल द्वारा श्री अमरजीत भगत, खाद्यमंत्री छत्तीसगढ़ शासन एवं माननीय श्री रविन्द्र चौबे, कृषि मंत्री छत्तीसगढ़ शासन के विरूद्ध विशेषाधिकार भंग की सूचना दिनांक 19/2020 दिनांक 19.08.2020,

(2) माननीय सदस्य सर्वश्री अजय चन्द्राकर, श्री शिवरतन शर्मा एवं श्री सौरभ सिंह द्वारा माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल के विरूद्ध प्रस्तुत विशेषाधिकार भंग की सूचना क्रमांक 33/2022 दिनांक 21.07.2022.

(3) माननीय सदस्य सर्वश्री अजय चन्द्राकर, श्री शिवरतन शर्मा एवं श्री सौरभ सिंह द्वारा माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल के विरूद्ध प्रस्तुत विशेषाधिकार भंग की सूचना क्रमांक 34/2022 दिनांक 21.07.2022.

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

(4) माननीय सदस्य सर्वश्री अजय चन्द्राकर, श्री शिवरतन शर्मा एवं श्री सौरभ सिंह द्वारा माननीय विधि मंत्री श्री मोहम्मद अकबर के विरूद्ध प्रस्तुत विशेषाधिकार भंग की सूचना क्रमांक 35/2022 दिनांक 21.07.2022.

(5) माननीय सदस्य सर्वश्री अजय चन्द्राकर द्वारा माननीय सदस्य श्री मोहन मरकाम के विरूद्ध प्रस्तुत विशेषाधिकार भंग की सूचना क्रमांक 36/2022 दिनांक 10.11.2022.

(6) माननीय सदस्य सर्वश्री अजय चन्द्राकर, श्री बृजमोहन अग्रवाल, श्री शिवरतन शर्मा एवं श्री सौरभ सिंह द्वारा माननीय मुख्यमंत्री, मुख्य सचिव, सचिव, सामान्य प्रशासन विभाग, छत्तीसगढ़ शासन के विरूद्ध प्रस्तुत विशेषाधिकार भंग की सूचना क्रमांक 37/2023 दिनांक 13.03.2023.

मेरे समक्ष विचाराधीन है ।

अध्यक्ष महोदय :- छत्तीसगढ़ की पंचम विधान सभा के 16वें सत्र का आज अंतिम दिवस है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक मिनट सुन लीजिए । आपने विधिवत् रूप से घोषित कर दिया कि आज सत्र का अंतिम दिन है । इसलिए सुन लीजिए । एक मिनट लगेगा, ज्यादा देर नहीं लगेगा । पिछले सत्र में आपने माननीय संसदीय कार्यमंत्री के लिए जिसको राजनीतिक द्वेषवश या राजनीतिक दलगत कही, जब बर्खास्तगी की बात हुई तो उस समय हम सदन में अनुपस्थित थे। इसलिए वह बात सही नहीं है । दूसरी बात यह है कि पिछली बार छत्तीसगढ़ विधानसभा की परम्परा टूटी जो हम अंतिम दिन सदन की बैठक की घोषणा करते हैं, हम भाग लेते हैं, वह पिछली बार नहीं हुआ। उसके बाद हमारी अनुपस्थिति मे सत्तारूढ़ दल ने उपाध्यक्ष का चुनाव करवाया गया। उस दिन आपने हमसे जानबूझकर पूछा कि आप लोग बहाल हो गये क्या ? आज भी अकारण, आपके कक्ष की विश्वसनीयता समाप्त हो रही है। आपकी मध्यस्थता में जो 24 तारीख तक सदन चलाने की चर्चा हुई, उसमें जबर्दस्ती प्रस्ताव सदन में लाय गया। सत्तारूढ़ दल के माननीय संसदीय कार्यमंत्री जी की मध्यस्थता में आज के बाद से विपक्ष कोई वार्ता नहीं करेगा। जिस तरह से रवैया आ रहा है।

श्री बृहस्पत सिंह :- यह कौन सी भाषा आ गया, कौन सी भाषा शुरू हो गई ?

श्री अजय चन्द्राकर :- यह संसदीय परम्परा के लिए आज बहुत कठिन दिन है। हम किस पर भरोसा करेंगे। आपके कक्ष के अंदर में आपकी बात पर, आपकी बात पर या दोपहर तक आपके सचिवालय की बात भरोसा करेंगे। इसलिए हम आपके इस क्लोजिंग सिरोमनी से बहिष्कार करते हैं और आप इसको व्यक्तिगत रूप से लें कि हम आपके क्लोजिंग सिरोमनी का बहिष्कार कर रहे हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

समय
9.46 बजे

बहिष्कार

भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों द्वारा सत्र समापन का

(श्री अजय चन्द्राकर, सदस्य के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों द्वारा सत्र समापन का बहिष्कार किया गया)

सत्र समापन

अध्यक्ष महोदय :- छत्तीसगढ़ की पंचम विधानसभा के सोलहवें सत्र का आज अंतिम दिवस है। यह बजट सत्र 01 मार्च, 2023 से 24 मार्च 2024 तक आहूत था। पंचम विधानसभा का यह अंतिम बजट सत्र सभी दृष्टि से उल्लेखनीय रहा। इस बजट सत्र की अवधि अपेक्षाकृत छोटी रही, किन्तु यह इस सदन की उपलब्धि है कि हमने निर्धारित कार्य दिवसों में समय से अधिक कार्य किया। आपने अपने संसदीय कार्यों के माध्यम से यह सिद्ध किया कि सीमित अवधि में भी महत्वपूर्ण कार्यों को कुशलतापूर्वक संपादित किया जा सकता है।

सत्र समापन के इस अवसर पर सदन के नेता माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल जी, माननीय नेता प्रतिपक्ष श्री नारायण चंदेल जी, जनता कांग्रेस की नेता श्रीमती रेणु जोगी, ब.स.पा. के माननीय श्री केशव चन्द्रा जी सहित पक्ष-प्रतिपक्ष के सभी माननीय सदस्यगणों के प्रति मैं सदन के सुव्यवस्थित संचालन में सहयोग के लिए हृदय से साधुवाद देता हूं।

यह बजट सत्र कई मायनों में महत्वपूर्ण रहा है। आप माननीय सदस्यगणों की संसदीय परिपक्वता और जनकल्याण के प्रति अपनी वचनबद्धता इस सत्र में स्पष्ट रूप से नजर आई। मुझे इस बात की हार्दिक प्रसन्नता है कि आप माननीय सदस्यगणों के पक्ष-प्रतिपक्ष के भाव से ऊपर उठकर, जनकल्याण को सर्वोपरि समझा।

पंचम विधानसभा का कार्यकाल अपनी पूर्णता की ओर अग्रसर है। मुझे इस बात की हार्दिक प्रसन्नता है कि आप माननीय सदस्यगणों ने अपने प्रयासों से छत्तीसगढ़ विधानसभा की गौरवशाली परम्पराओं को जीवित बनाये रखा। मैंने यह अनुभव किया कि सदन के वरिष्ठ सदस्यगणों का अनुभव और ज्ञान सदन संचालन में मेरे लिए मार्गदर्शी रहा, वहीं नवोदित सदस्यों की उर्जा से मुझे बेहतर कार्य करने की प्रेरणा मिली। मैं आप सभी सदस्यगणों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूं कि आपने अपने संसदीय कौशल से मुझे मेरे संसदीय दायित्वों की पूर्ति में अपना अधिकतम सहयोग दिया।

आप माननीय सदस्यगणों से मेरा यह विनम्र अनुरोध है कि संसदीय दायित्वों के प्रति और अधिक सजग एवं समर्पित होने की पहल करें। इस सत्र में राज्य की समग्र उन्नति से सम्बद्ध प्रत्येक

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

विषयों पर व्यापक और विस्तृत चर्चा हुई, धान खरीदी, पर्यावरण, प्रदेश की कानून व्यवस्था, शिक्षा, आवागमन, महिला बाल विकास एवं स्वास्थ्य से जुड़े अनेक विषयों पर जो परिणाममूलक चर्चाएं हुई हैं। मैं इसे सदन की सबसे बड़ी उपलब्धि मानता हूं।

बहुत लम्बे समय से माननीय मंत्रियों के लिए गरिमामय कक्ष की आवश्यकता महसूस की जा रही थी। मुझे खुशी है कि इस बजट सत्र के प्रथम दिवस 1 मार्च को विधानसभा में माननीय मंत्रीगणों के लिए निर्मित नवीन कक्षों का लोकार्पण हुआ।

इस सत्र में माननीय सदस्यों के लिए दिनांक 14 मार्च से 16 मार्च, 2023 तक स्वास्थ्य विभाग द्वारा स्वास्थ्य शिविर आयोजित किया, जिसमें रूचि लेते हुए माननीय सदस्यों के द्वारा स्वास्थ्य परीक्षण का लाभ लिया गया। इस स्वास्थ्य शिविर के सफल आयोजन के लिए माननीय स्वास्थ्य मंत्री जी एवं उनके विभाग को मैं धन्यवाद देता हूं।

06 मार्च 2023 को माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा राज्य सरकार ने अपना बजट प्रस्तुत किया । होली के पूर्व विधायक क्लब एवं संस्कृति विभाग छत्तीसगढ़ शासन के संयुक्त तत्वाधान में, लगभग 4 वर्षों के बाद विधान सभा में होली मिलन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। आप माननीय सदस्यगणों ने होली मिलन के इस कार्यक्रम को अपनी सहभागिता से ऐतिहासिक बना दिया। अनेक माननीय सदस्यों ने अपनी शानदार प्रस्तुति दी, और होली मिलन के कार्यक्रम को एक यादगार कार्यक्रम बनाया ।

मैं यह मानता हूं कि असहमति के मध्य सहमति को तलाशने में ही संसदीय लोकतंत्र ही सुन्दरता है, और राज्य और देश की उन्नति है, इसलिए बजट सत्र समापन के अवसर पर प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यगणों से मेरा यह अनुरोध है कि आपने विधानसभा के किसी भी अन्य आयोजनों में बहिष्कार का जो निर्णय लिया है, उस पर पुनर्विचार करें, क्योंकि मैं यह मानता हूं कि विरोध अपनी जगह पर ठीक है, परन्तु विधानसभा के आयोजनों से आपका विरोध और बहिष्कार किसी भी दृष्टिकोण से उचित प्रतीत नहीं होता है। मैं विश्वास करता हूं कि प्रतिपक्ष अपने इस निर्णय पर पुनर्विचार करेगा।

अब मैं आपको इस बजट सत्र में सम्पादित हुए संसदीय कार्यों के संक्षेप में सांख्यिकीय आंकड़ों से अवगत कराना चाहूंगा । इस सत्र के कुल 14 बैठकों में लगभग 97 घंटे 40 मिनट चर्चा हुई। 12 बैठकों में 85 प्रश्न सभा में पूछे गए जिनके उत्तर शासन द्वारा दिए गए। इस प्रकार प्रतिदिन प्रश्नों का औसत 07 प्रश्नों का रहा। इस सत्र में 920 तारांकित प्रश्न एवं 873 अतारांकित प्रश्नों की सूचना प्राप्त हुई। इस प्रकार कुल 1602 प्रश्नों की सूचनाएँ प्राप्त हुईं। इस सत्र में ध्यानाकर्षण की कुल 343 सूचनाएं प्राप्त हुई, जिसमें 96 सूचनाएं ग्राह्य हुईं और 21 सूचनाओं पर सदन में चर्चा हुई । इस सत्र में कुल 130 स्थगन की सूचनाएं प्राप्त हुई। शून्यकाल की 71 सूचनाएँ प्राप्त हुईं जिसमें 31 सूचनाएं ग्राह्य और 34 सूचनाएं अग्राह्य रही। वर्तमान सत्र में 128 याचिकायें माननीय सदस्यों द्वारा प्रस्तुत की गई, जिनमें 48 ग्राह्य व 80 अग्राह्य रही। 16 अशासकीय संकल्प माननीय सदस्यों द्वारा दिये गये, जिनमें 9

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

संकल्प ग्राह्य हुए तथा 2 संकल्प स्वीकृत हुए एवं 2 अस्वीकृत हुए। इस सत्र में 10 विधेयकों की सूचनाएं प्राप्त हुई और सभी विधेयक चर्चा उपरांत पारित हुए।

वित्तीय कार्यों के अन्तर्गत तृतीय अनुपूरक अनुमान पर 1 घंटे 26 मिनट, वर्ष 2023-24 के बजट की अनुदान मांगों पर 37 घंटे 54 मिनट चर्चा हुई तथा विनियोग विधेयक पर 08 घंटे 05 मिनट चर्चा हुई।

इस सत्र में कुल प्राप्त 1793 प्रश्न में से 1755 प्रश्न अर्थात लगभग 98 प्रतिशत प्रश्न ऑनलाईन माध्यम से प्राप्त हुए । आप सभी माननीय सदस्यों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि कुल प्राप्त 1793 प्रश्न में से 1623 प्रश्न अर्थात 90.5 प्रतिशत प्रश्न ग्राह्य हुए, जो महत्वपूर्ण उपलब्धि है, हस हेतु मैं कार्यपालिका, माननीय मंत्रीगणों को भी धन्यवाद ज्ञापित करूंगा कि उनके द्वारा सीमित समयावधि में प्रश्नों के उत्तर तैयार कर प्रेषित किए ।

मैं माननीय सदस्यों को यह भी सूचित करना चाहूंगा कि इस सत्र से ही प्रारंभ "विधान सभा का ऐप" वर्तमान में "प्ले स्टोर" पर भी उपलब्ध हो गया है, अतः आपकी इस सभा से संबंधित कार्यों हेतु कृपया इस "विधान सभा ऐप" को "प्ले स्टोर" से डाउनलोड कर अधिकाधिक उपयोग करें ।

बहुधा माननीय सदस्य बजट सत्र की बैठकों की संख्या कम होने का उल्लेख करते हैं । मैं माननीय सदस्यों को अवगत कराना चाहूंगा कि छत्तीसगढ़ विधान सभा में पंचम विधान सभा के कार्यकाल के दौरान वैश्विक स्तर पर कोरोना कोविड-19 जैसी महामारी के होते हुए भी वर्ष 2019 से अब तक सम्पन्न कुल 5 बजट सत्रों में सभा की बैठकों की संख्या जहां 70 दिवस रही, वहीं इस दौरान सभा में दिनांक 23 मार्च, 2023 की स्थिति में कुल 374 घण्टे 36 मिनट चर्चा सम्पन्न हुई । इस प्रकार इन वर्षों में बजट सत्रों के दौरान हमने अन्य राज्यों की तुलना में अतिरिक्त समय तक बैठकर चर्चा की एवं एक प्रकार से अधिक बैठक दिवसों की प्रतिपूर्ति की । इस हेतु आप सभी माननीय सदस्यों को मैं बहुत-बहुत बधाई देना चाहता हूं ।

अन्त में बजट सत्र के समापन अवसर पर इस सत्र के सुचारू संचालन में सहयोग के लिये मैं सदन के नेता माननीय मुख्यमंत्री जी, माननीय नेता प्रतिपक्ष तथा समस्त माननीय सदस्यों के प्रति पुनश्च हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करता हूं। आप सभी के समन्वित प्रयास से इस सदन का निर्बाध संचालन संभव हो पाया।

मैं इस अवसर पर माननीय विधानसभा उपाध्यक्ष जी, एवं सभापति तालिका के माननीय सदस्यों के प्रति भी धन्यवाद ज्ञापित करता हूं जिन्होंने सभा की कार्यवाही के संचालन में मुझे सहयोग दिया। विशेषकर माननीय उपाध्यक्ष जी को इस बात के लिए बधाई देता हूं कि आपने अत्यंत कुशलता के साथ प्रभावी ढंग से सदन का संचालन किया, मैं आपके सफल उज्जवल भविष्य की कामना करता हूं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

मैं सम्माननीय पत्रकार साथियों एवं प्रिंट एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूं, जिन्होंने सदन की कार्यवाही को बड़ी गंभीरता से प्रचार माध्यमों में प्रमुखता से स्थान देकर प्रदेश की जनता को सभा में सम्पादित कार्यवाही से अवगत कराया। छत्तीसगढ़ दूरदर्शन, आकाशवाणी एवं अन्य मीडिया प्रतिनिधियों के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होने माननीय राज्यपाल महोदय जी के अभिभाषण, माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा प्रस्तुत बजट भाषण का तथा प्रश्नकाल का जीवंत प्रसारण किया।

सत्र की पूर्णता के अवसर पर मुख्य सचिव एवं राज्य शासन के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देता हूँ । सुरक्षा व्यवस्था में संलग्न अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भी बधाई देता हूं, जिन्होंने सुदृढ़ सुरक्षा व्यवस्था पूरे सत्र में कायम रखी।

मैं विधानसभा के सचिव श्री दिनेश शर्मा सहित समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों की भी प्रशंसा करता हूँ, जिन्होंने अपने दायित्वों का निर्वहन पूर्ण कुशलता एवं निष्ठा के साथ किया। सत्र समापन के अवसर पर आगामी सत्र की संभावित तिथि घोषित की जाती है। आगामी सत्र जुलाई माह में संभावित है।

हम सब छत्तीसगढ़ के विकास के लिए कृत संकल्पित हों, इन्हीं भावनाओं के साथ। धन्यवाद

जय हिन्द, जय छत्तीसगढ़

अध्यक्ष महोदय :- अब राष्ट्रगान होगा । माननीय सदस्यगण राष्ट्रगान हेतु अपने स्थान पर खड़े हो जाएं ।

राष्ट्रगान

(राष्ट्रगान जन-गण-मन की धुन बजाई गई)

अध्यक्ष महोदय :- सदन की कार्यवाही अनिश्चित काल तक के स्थगित ।

(रात्रि 9.00 बजकर 56 मिनट पर विधान सभा की कार्यवाही अनिश्चित काल के लिये स्थगित की गई)

दिनेश शर्मा
सचिव
छत्तीसगढ़ विधान सभा

रायपुर (छ.ग.)
दिनांक 23 मार्च, 2023

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं